

भूमिका ।

ज्योतिषं नयनं स्मृतम् ।

प्रिय पाठकगण ! आप सब महाशयोंको विदितही होगा कि, चारों वर्णोंको शिक्षा मणाली बनानेवाला दिव्यपुस्तक वेद है और उसके शिक्षा कल्प व्याकरण निरुक्त छंद और ज्योतिष यह छः अंग हैं और पड़ंग वेद पढ़ना ब्राह्मणोंसे लेकर वैश्यों पर्यंत तीनों वर्णोंका धर्म है उसही हमारे शिरोधार्य वेदका एक अंग ज्योतिष है उसके दो भाग हैं एक व्यक्त कहिये प्रत्यक्ष दृष्टफल ग्रहण अस्तोद्यादि दूसरा अव्यक्त कहिये अदृष्ट भविष्यफल जातक और वर्ष-फलादिक. अब यहां अपनेको जातक के विषे विचार कर्तव्य है कि, माणिके यावज्जन्ममें जो शुभ, किंवा अशुभ फल होता है कहिये कौन २ समयमें जिसको लाभ किंवा हानि जय किंवा पराजय किससे सुखोत्पत्ति किंवा पीडा और कौन समयमें रोगादिकों से भरण प्रायः संकट और शरीरसुख, कुटुम्बसुख, भातृसुख, मित्रसुख, पुत्रसुख, कलत्रसुख, पितृमातृसुख, इत्यादि बातोंका ज्ञान जिस ग्रंथसे होता है कहिये ज्योतिषोलोग जिस ग्रंथके आधारसे जन्मपत्रिका लिखते हैं उसको जातक ऐसा कहते हैं संस्कृतमें जातक पर बहुत ग्रंथ हैं परंतु सबमें प्रसिद्ध और विद्वन्मान्य ऐसा ग्रंथ केशवाचार्यकृत जातकपद्धति जिसको “केशवीजातक” कहते हैं सो यह ग्रंथ संस्कृतभाषामें है इस वास्ते उसका उपयोग मनुष्योंको बहुत होता नहीं इसवास्ते उसका सान्ध्य भाषायाका निर्माण किया कारण इसकी सहायतासे केशवीजातकका यथार्थ ज्ञानहोके पत्रिकाका गणित कैसे करना सो सुलसे मालूम होगा, इसमें केशवीजातकके मूल श्लोक लिखके वह सब श्लोकोंका अन्वय और खड़ी भाषामें अर्थ लिखा है और ग्रह और पद्वल इत्यादि गणित अल्पायाससे करने में आवें इस वास्ते सारणीको योजनाकरके उस सारणीका कैसा उपयोग करना यह स्पष्ट रीतिसे लिखके उनके पृथक् पृथक् उदाहरण लिखे हैं और जन्मपत्रिकाका गणित कैसे करना यह समझनेके वास्ते उत्तम उदाहरण लिखा है इसमें वर्गमूल निकालनेकी रीति और उच्चयल तीन प्रकारसे करनेकी रीति लिखी है और ग्रहोपरि तथा भावोपरि दृष्टि करनेको तीन प्रकारसे लिखा है और अष्टोत्तरीदशा और विंशोत्तरीदशा और योगिनी यह तीनों दशाओंकी नक्षत्रोंसे उत्पत्ति और उनके पति और वर्षादि दशा अन्तर्दशा कोष्ठक प्रत्यंतरदशा लिखके जन्मपत्रिका लिखनेका क्रम बनाया है ।

यह ग्रंथ लोकमें उपयुक्त होनेके वास्ते जो परिश्रमकिया है सो देखनेसे मालूम होगा अब आशा है कि गुणग्राहक सज्जन पुरुष इसको अवलोकन कर मेरे परिश्रमको सफल करेंगे ।

आशा है कि सज्जन पुरुष मत्सरताको छोडकर मुझसे मनुष्यधर्मानुसार जो भूल हुई है उसको क्षमा करें और मेरेको सूचना दें कि जिससे वह भूल पुनरावृत्तिमें दुरुस्त की जायगी ।

श्लोक-विद्वानेव हि जानाति विद्वज्जनपारिश्रमम् ॥ न हि बन्धा विजानाति गुणं प्रसवेवेदनाम् ॥ १ ॥ करोमि केशवीग्रंथोदाहर्ति लोककाम्यया ॥ चाटानां सुखोपाय न तु पांडित्यगर्वितः ॥ २ ॥ इत्यलम् ॥

अथ केशवीजातकस्य सूचिपत्रम् ।



प्रकरण.	पृष्ठ.	प्रकरण.	पृष्ठ.
मंगलाचरण	१	पंचताराचक्रम् ...	३२
अहर्गणादिसाधन ...	२	भौमशीघ्रफलसारणी ...	३३
अहर्गणोदाहरण ...	३	भौममंदफलसारणी ...	४०
मध्यमग्रहसारणीप्रवेश ...	४	बुधशीघ्रफलसारणी ...	४३
रविमध्यमसारणी... ..	५	बुधमंदफलसारणी ...	४६
चन्द्रमध्यमसारणी ...	६	गुरुशीघ्रफलसारणी ...	५०
चन्द्रोच्चमध्यमसारणी ...	७	गुरुमंदफलसारणी... ..	५८
राहुमध्यमसारणी... ..	११	शुक्रशीघ्रफलसारणी ...	६१
भौममध्यमसारणी ...	१२	शुक्रमंदफलसारणी ...	६८
बुधकेन्द्रमध्यमसारणी ...	१५	शनिशीघ्रफलसारणी ...	७१
गुरुमध्यमसारणी ...	१७	शनिमन्दफलसारणी ...	७७
शुक्रकेन्द्रमध्यमसारणी ...	१९	मथमशीघ्रफल ...	८०
शनिमध्यमसारणी ...	२१	मंदफल... ..	८१
मध्यमसूर्यसाधनोदाहरण... ..	२३	अंतिमशीघ्रफल ...	८१
तात्कालिकमध्यमग्रहगतिसहित ...	२३	गत्युदाहरण ...	८२
मध्यमग्रहसे स्पष्ट ग्रह ...	२४	वक्रमार्गे अस्त उदय ...	८३
स्पष्टसूर्यसारणीप्रवेश ...	२४	सूर्यादिस्पष्टग्रहगतिसहित ...	८३
अयनांशसाधन उदाहरण ...	२४	लंकोदयसे स्वदेशका उदय त्यावना ...	८४
चरखंडसाधन उदाहरण ...	२५	लग्नवनावनेकी रीति ...	८४
सूर्य्यकी स्पष्टगति... ..	२५	लग्नसे अभीष्ट काल करनेकी रीति... ..	८६
दिनमान रात्रिमान ...	२५	नतोनतपूर्वकदशमचतुर्थभाव ...	८७
सूर्य्यस्पष्टसारणीचक्र ...	२६	शेष आठभाव साधन संधि ...	८८
स्पष्टविषाधनका उदाहरण ...	२७	और क्षयक्षय फलसाधन	८८
त्रिफलचन्द्रसंस्कार ...	२७	संधिसहित द्वादशभावचक्र... ..	९०
स्पष्टचन्द्रसारणीप्रवेश ...	२८	जन्मलग्नभावोद्धारचक्र ...	९१
चन्द्रकी स्पष्टगति... ..	२८	ग्रहभावफलचक्र ...	९१
चन्द्रस्पष्टसारणी	२९	ग्रहदृष्टिसाधन ...	९१
स्पष्टचन्द्र साधनेका उदाहरण ...	३०	दृष्टिफलसारणीप्रवेश ...	९२
मंगलादिस्पष्टसारणीप्रवेश	३०	रविचन्द्रबुधशुक्रदृष्टिसारणी ...	९३
शुक्र मंगल इनको विशेष स. ...	३१	भौमदृष्टिसारणी ...	९५
भौमादि ग्रहोंकी स्पष्टगति... ..	३१	गुरुदृष्टिसारणी... ..	९७
भौम बुध शुक्र इनकी गतिमें विशेष ...	३१	शनिदृष्टिसारणी ...	९९

प्रकरण.	पृष्ठ.	प्रकरण.	पृष्ठ.
दृष्टिका उदाहरण...	१०१	केन्द्रादिवलोदाहरण	१२४
ग्रहदृष्टिक	"	केन्द्रादिवलचक्र	"
भावदृष्टिक	१०२	देष्काणवलोदाहरण	"
वलसाधन	"	देष्काणवलचक्र	१२५
ग्रहोंका उच्चादिकोष्ठक	१०३	स्थानवलयोगचक्र	"
ग्रहोंकी तात्कालिक मैत्रीकरण	"	दिग्बलकालवल	"
ग्रहोंकी पंचधाऽधिमैत्री...	"	दिग्बलसारणीप्रवेश	१२६
निसर्ग मैत्री तात्कालिकपंचधामैत्री च	१०६	दिग्बलसारणी	"
पद्वर्गचक्रम्	"	दिग्बलोदाहरण	"
उच्चवलसारणी प्रवेश	१०७	दिग्बलचक्रनतोनतवलोदाहरणचक्रसहित	"
उच्चवलसारणीराशिफल अंशकला...	१०८	वर्षपतिमासपति दिनपति	१२८
उच्चवलोदाहरण द्वितीयप्रकार	१०९	होरापतिवनानेकी रीति	१२९
उच्चवलचक्र	"	पक्षवलसारणीप्रवेश	"
मेघराशिसप्तवर्गपतिचक्र	११०	पक्षवलसारणी	"
वृषराशिसप्तवर्गपतिचक्र	१११	पक्षवलोदाहरण	"
मिथुनराशिसप्त०	११२	पक्षवलचक्र	१३०
कर्कराशिसप्त०	११३	दिनरात्रिभिभागवलोदाहरण	"
सिंहराशिसप्त०	११४	दिनरात्रिभिभागवलचक्र	"
कन्याराशिसप्त०	११५	वर्षपतिवलोदाहरण	"
तुलाराशिसप्त०	११६	मासपतिवलोदाहरण	"
वृश्चिकराशिसप्त०	११७	दिनपतिवलोदाहरण	१३१
धनराशिसप्त०	११८	होरापतिवलोदाहरण	"
मकरराशिसप्त०	११९	वर्षमासदिनहोरापतिवलचक्र	"
कुंभराशिसप्त०	१२०	कालवलयोगचक्र	"
मीनराशिसप्त०	१२१	चेष्टावलनिसर्गवल	"
ग्रहसप्तवर्गपतिचक्र	१२२	क्रांतिवनावनेकी रीति	१३२
भावसप्तवर्गपतिचक्र	"	क्रांत्यंकचक्र	"
सप्तवर्गवलोदाहरण	"	क्रांतिसारणीप्रवेश	"
ग्रहसप्तवर्गवलचक्र	१२३	क्रांतिसारणी	१३३
युग्मायुग्मवलोदाहरण	१२४	क्रांत्युदाहरण	"
युग्मायुग्मवलचक्र	"	क्रांतिचक्र	"

प्रकरण.	पृष्ठ.	प्रकरण.	पृष्ठ.
अयनचलसारणीप्रवेश	१३८	सूक्ष्मरीतिसे कलाकलवनावन ...	१५०
अयनचलसारणी	१३९	सावयवअंककामूलनिकालनेही	
अयनचलोदाहरण	"	सवसेअच्छेरीतिही	१५१
अयनचलचक्र	१४०	रदम्युदाहरण	१५२
भौमादिकोंका शीघ्रोच्चवनावना	"	चेष्टाचलउच्चचलचेष्टार० उच्चर०च०	"
चेष्टाकेन्द्रचक्र	१४१	इष्टोदाहरण इष्टचक्र	"
चेष्टाचलसारणीप्रवेश	"	कष्टोदाहरण	"
चेष्टाचलसारणी	१४२	कष्टचक्र	१५३
चेष्टाचलोदाहरण	"	इष्टकष्टचलोदाहरण	"
चेष्टाचलचक्र	१४३	इष्टकष्टचलचक्र	"
अयनचेष्टाचलयोगचक्र	"	इष्टकष्टइष्टयुदाहरण	"
नैसर्गिकचलोदाहरण	"	इष्टकष्टइष्टचक्र	"
नैसर्गिकचलचक्र	"	सप्तवर्गशुभाशुभसाधन	१५४
भौमादिकोंका शीघ्रांकादिकोष्टक	१४५	उच्चमूलत्रिकोणस्वगृहका निर्णय ...	१५५
शरकरनेकेवास्ते शीघ्रकर्णलगताहै ...	"	उदाहरण	१५६
उसकी रीति	"	वर्गेशसहितसप्तवर्गशुभ०	१५७
भौमादिकोंका शरवननेकी रीति	"	वर्गेशसहितसप्तवर्गशुभ च०	"
दृग्वलोदाहरण	१४६	उदाहरण	१५८
दृग्वलचक्र	"	शुभाशुभपंक्तिचक्र	"
पद्वलैक्यचक्र	१४७	उदाहरण	"
भावचलसाधन	"	मध्यमशुभाशुभचक्र	१५९
भावचलोदाहरण	"	इष्टकष्टचलगुणनचक्र	"
भावचलचक्र	"	इष्टकष्टचलगुणनपदचक्र	१६०
रविचन्द्रका चेष्टाचलकेन्द्र	१४९	स्पष्टशुभाशुभचक्र	"
चेष्टाचलोदाहरण	"	अंशायुसाधनार्थचेष्टागुणकउच्चगुणक	"
रदमीष्टकष्टसाधन	"	स्फुटगुणक	१६१
वर्गमूलनिकालनेकी रीति	१५०		

इति केशवीजातकस्य मूचिपत्रम् ।

॥ श्री ॥ अथ केशवी जातकम्

भाषा उदाहरण सहितं प्रारभ्यते.

मंगलाचरणादिश्लोकः

स्रग्धरावृत्तम्.

हेरम्बोम्वायवेधोहरिपशुपतयो भास्कराद्याग्रहाये
पंचैते लोकपाला अथ दशनादितादिकु प्रपाये महान्तः ॥
मेपाद्याराशयश्चाश्विमुखनुरववरायाश्च नक्षत्रतारा
योगाविष्कंभकाद्याः सकल सुरवराः पातु मामत्र कृते ॥ १ ॥

नृगिराकेशवंनत्वा केशवी जातकं स्फुटम्.
जगदीशः प्रकुरुते जगदीशानुकम्पया ॥ २ ॥

मूल श्लोक.

नत्वा विघ्नपशारदाच्युतशिवब्रह्मार्कमुख्यग्रहान्
कुर्वे जातकपद्धतिं स्फुटतरां ज्योतिर्विदां प्रीतये ॥
येनैः स्पष्टतरां ऽत्र जन्मसमयो वेद्यो ऽत्र खेदाः स्फुटा
यत्पक्षेहि घटंत उद्गम इहास्तक्षीसपङ्कः सच ॥ ३ ॥

अन्वयः- अहं केशवाचार्यः जातकपद्धतिं कुर्वे करोमीत्यर्थः किं कृ-
त्वा विघ्नपशारदाच्युतशिवब्रह्मार्कमुख्यग्रहान्त्वा किं विशिष्टां जातक
पद्धतिं स्फुटतरां अतिशयेन स्फुटेति स्फुटतरातां स्फुटतरां ॥ किमर्थं ज्यो-
तिर्विदां प्रीतये ज्योतिषं विदंति जानंति चेत्ते ज्योतिर्विदस्तेषां प्रीतये अत्र
ज्योतिश्शब्देन त्रिस्कंधज्ञेयः गणितसहिता जातक इत्यर्थः होराविदमित्य-
र्थं ये ज्योतिर्विदस्ते एतद्धोराशास्त्रविदो भवन्त्येवेति शम् ॥

अर्थभाषाः- गणपती-सरस्वती-विष्णु-शिव-ब्रह्मा-और सूर्यादिनवग्र-
ह इनको नमस्कार करिके ज्योतिर्विदके संतोषार्थ यह स्पष्ट जातक पद्धति
नामक ग्रंथ करते है- इसमें जन्मकाल घटी शंकु चक्र फलक इत्यादि यं-
त्रोंसे सूक्ष्म रीतिसे जानना और स्पष्टग्रह जिस पक्षके प्रत्यक्ष होय उस पक्ष-
के ग्रह लाभवरीत्या लेना. जन्म कालीन लग्न स्वदेशीय उदयसेवनावना

उदाहरणम्.

वारक्रमचक्रम

०	१	२	३	४	५	६	शेष
चं	मं	बु	वृ	शु	श	सू	वारः

शके १८०८ में १४४२ कमकिया तो शेष-

३६६ इस्को ११ से भाग दिया तो लब्धि

३३ यह चक्रशेष ३ रहा इस्को १२ से गुणा तो ३६ हुवा इस्में गतमास ०

अन्य युक्त किया तो ३६ भया यह मध्यम मास गणभया इस्को दो स्थान

में स्थापित किया एक जगै चक्र ३३ इस्को दूना किया तो ६६ भया इ-

स्में १० युक्त किया तो ७६ भया इस्को दूसरे अंकमें युक्त किया तो ११२ इ-

स्को ३३ से भागदिया तो लब्धि ३ अधिमास आया सो इस्को दूसरामें युक्त

किया तो ३९ हुवा इस्को ३० गुणा किया ११७० हुवा इस्में गततिथि २१ यु-

क्त करी तो ११९१ हुवा इस्में चक्र ३३ का पचाश ५ युक्त किया तो हुवा

११९६ इस्को दो जगै रखके एकमें ६४ का भाग दिया लब्धि १८ अना-

ह इस्को दूसरी जगै ११९६ में हीन किया तो ११७० यह अहर्गणभ-

या जन्मका वार जाननेके लिये इस्में चक्र ३३ को ५ से गुणा तो १६५ भ-

या सो अहर्गणमें युक्त किया तो १३५३ भया. इस्को ७ से भाग दिया.

तो शेष ६ रहा. इसलिये रविवार आया तब यह ११७० अहर्गण शुद्ध

भया इस्को वार अहर्गणसे न मिले तो १ कम करना अथवा युक्त करना.

टीपः— विशेष जिस वर्षमें अधिक मास आवता उस वर्षमें अधिमा-

सके पूर्ववा परमें अहर्गण बनाना होय तो जो सहिना अधिक हो उस स-

हिनाके पूर्व अहर्गण करना होय तो पूर्व वर्षके अपेक्षा अधिमास अधिक

आवे तो लेना नहीं अर्थात् अधिमासमें एक घटा देना जो अधिमासके

आगे अहर्गण साधन करना. होय तो पूर्व वर्षके अपेक्षा अधिक मास

आवे तो लेना नहीं अर्थात् एक युक्त करके अधिमासमें अहर्गण

साधन करना.

मध्यमग्रह सारणी प्रवेशः.

अहर्गणको ६० से भाग देना तो लब्धि और शेष ऐसे २ अंक आवते हैं

सो आगे मध्यम ग्रह सारणीमें सूर्यादि ग्रहोंका १ से ६७ तक शेष ल-

ब्धि कोष्टक है उसके नीचे वह कोष्टक राश्यादिक अंक लिखे हैं वह

शेष कोष्टक ही लब्धि कोष्टक है. परंतु उत्का फल लेनेकी रीति जु-

दी है वह प्रकार ऐसा है जो लब्धि का अंक होय सो शेष कोष्टकमें

देखना नंतर वह कोष्टक के नीचे राशी सहित जो अंक है तस्में

राशीका त्याग करके अंक लेना. अनंतर पहिला अंक जो होय उसको

६ से भाग देके जो शेष रहै तिसको दूनाकरना तो लब्धी कोष्टक का राशी अंक होता है. अनंतर उसके नीचेका अंक अंशस्थानमें आता है इसवासे ३० से अधिक होयतो ३० से भागदेके जो अंक आवे उसको राशि स्थानमें जोड़देना तो लब्धिकोष्टक फल तैयार होता है.

सारणीमेंका अभीष्ट शेषकोष्टकके नीचेका अंक होयसो और अभीष्ट लब्धी कोष्टकका जो अंक होयसो दोनोंका योग करना अनंतर उस अंकको चक्र निम्न ध्रुवोन क्षेपक तैयार सारणीमें ऊपरके वाजू चक्रके नीचे अंक है सो अभीष्ट चक्रके नीचेके अंकमें युक्त करना तो प्रातःकालका मध्यम ग्रह होते है.

इष्टकालका मध्यम ग्रह करना होयतो सूर्योदयके अनंतर जो इष्टघटी और पल होय उस्का कोष्टक ग्रह सारणीके पीछे राश्यादि लिखा है. उस्मेंसे अपना जो इष्ट घटी पल होय उसके नीचेके अंकको प्रातःकालका जो ग्रह उस्में युक्त करना तो इष्टकालका मध्यम ग्रह होता है.

मध्यम राहु बनानेकी रीत कुछ भिन्न है. सो ऐसी है के शेष लब्धी कोष्टकका योगको १२ में कम करके जो बचे उसको चक्र निम्न ध्रुवोनक्षेपक मिलाना तो प्रातःकालका राहु होता है इष्टकालका राहु बनाना होयतो जो अभीष्ट घटी कोष्टकके और पल कोष्टकके नीचेके अंकको लब्धी शेष कोष्टकका जो फल सो युक्त करके जो अंक आवे उसको १२ में कम करना अनंतर चक्र निम्न ध्रुवोनक्षेपक मिलाना तो इष्टकालका राहु होता है.

इति मध्याधिकारः

रविचक्रनिघ्न ध्रुवोनक्षेपक.

२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
१०	१०	१०	१०	१०	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९
०७	०६	०४	०२	००	२८	२६	२५	२३	२१	१९	१७	१५	१४	१२	१०	०८	०६	०५
४९	००	११	२२	३३	४३	५४	०५	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४२	५३	०४
४७	३६	२५	१४	०३	५२	४१	३०	१९	०८	५७	४६	३५	२४	१३	०२	५१	४०	२८

रविशेषलब्धिकोष्ठक.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
०	५८	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८
०	८	१६	२४	३२	४०	४९	५७	०५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२७	३५	४३	५१	५९
०	१०	२०	३०	४१	५१	१	१२	२२	३२	४२	५३	३	१३	२४	३४	४४	५४	५	१५	२५	३६	४६
०	१७	३४	५१	०८	२५	४२	०	१७	३४	५१	८	२५	४२	००	१७	३४	५१	८	२५	४३	००	१७
०	८	१८	२७	३६	४५	५४	३	१२	२१	३०	३९	४८	५७	६	२५	३४	४३	५२	५१	००	८	१८

रविशेषलब्धिकोष्ठक.

२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
४०	३८	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९
७	१६	२४	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	२९	३७	४६	५४	२	१०	१८	२६	३५	४३	५१	५९	७
५६	६	१७	२७	३७	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	१२	२२	३२	४२
३४	५१	८	२५	४३	०	१७	३४	५१	८	२५	४३	०	१७	३४	५१	८	२५	४३	०	१७	३४	५१
२७	३६	४५	५४	३	१२	२१	३०	३९	४८	५७	६	१५	२४	३३	४२	५१	०	८	१८	२७	३६	४५

रविशेषलब्धिकोष्ठक.

४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	०
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०	१	२	३	४	५	६	०
२०	१८	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१	०	०	०
१५	२४	३२	४०	४८	५६	६	१३	२१	२९	३७	४५	५३	२	१०	१८	२६	३४	४२	५१	५९	७	०
५३	३	१३	२४	३४	४४	५४	५	१५	२५	३६	४६	५६	६	१७	२७	३७	४८	५८	८	१८	२८	०
८	२६	४३	०	१७	३४	५१	८	२५	४३	०	१७	३४	५१	८	२६	४३	०	१७	३४	५१	८	०
५४	३	१२	२१	३०	३९	४८	५७	६	१५	२४	३३	४२	५१	०	८	१८	२७	३६	४५	५४	३	०

रविघटीकोष्ठक .

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
५२	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	५०	४९	४८	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४१	४०
२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१
४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	०	०	०
२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३

रविपलकोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४

चंद्रचक्रनिघ्नघुवोनक्षेपक.

१८	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
७	३	२८	२६	२२	१८	१४	११	७	३	२८	२६	२२	१८	१४	१०	७	३	२८	२५	२२	१८	१४
२८	४२	५६	८	२३	३७	५१	५	१८	३२	४६	०	१४	२८	४१	५५	८	२३	३७	५१	६	१८	३२
३१	२०	८	५८	४७	३६	२५	१४	३	५२	४१	३०	१८	८	५७	४८	३५	२४	१३	२	५१	४०	२८

चंद्रशेषलब्धिकोष्टक.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
०	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	९
०	१३	२६	४	२२	५	१८	२	१५	२८	११	२४	८	२१	४	१७	०	१३	२७	१०	२३	६	१८
०	१०	२१	३१	४२	५२	३	१४	२४	३५	४५	५६	६	१७	२८	३८	४८	५८	१०	२१	३१	४२	५२
०	३४	८	४४	१८	५४	२८	४	३८	१३	४८	२३	५८	३३	८	४३	१७	५२	२७	२	३७	१२	४७
०	५१	४३	३५	२७	१८	११	३	५५	४७	३८	३०	२३	१५	७	५८	५०	४२	३४	२६	१८	१०	२
०	५६	५२	४८	४४	४०	३८	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२

चंद्रशेषलब्धिकोष्टक.

२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
१०	१०	१०	११	११	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८
३	१८	२८	१२	२५	८	२०	५	१८	१	१४	२७	११	२४	७	२०	३	१७	०	१३	२६	८	२२
३	१३	२४	३५	४५	५६	६	१७	२८	३८	४८	५८	१०	२०	३१	४२	५२	३	१४	२६	३४	४५	५६
२१	५६	३१	६	४१	१६	५१	२५	०	३५	१०	४५	२०	५५	३०	४	२८	१६	४८	२४	५८	३४	८
५८	५६	३८	३०	२२	१४	६	५८	५८	११	३३	०५	१७	८	१	५३	४५	३७	२८	२१	१३	५	५७
२८	२४	२०	१६	१२	८	४	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४	०

चंद्रशेषलब्धिकोष्टक.

२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८
८	८	८	८	८	१०	१०	११	११	०	०	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	०
६	१०	२	१५	२८	११	२५	८	२१	४	१७	१	१४	२७	१०	२३	६	२०	३	१६	२८	१२	०
६	१७	२७	३८	४८	५८	१०	२०	३१	४१	५२	३	१३	२४	३४	४५	५६	६	१७	२७	३८	४८	०
४१	१८	५३	२८	३	३८	१३	४७	२२	५७	३२	७	४२	१७	५१	२६	१	३६	११	४६	२१	५५	०
२८	४०	३२	२४	१६	८	०	५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४७	३८	२१	२३	१५	७	५८	०
५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	०

चन्द्रघटी कोषक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५
१३	२६	३८	५२	५	१८	३२	४५	५८	११	२४	३८	५१	६	१७	३०	४३	५७	१०	२३	३६	४८	३
१०	२१	३१	४२	५२	३	१४	२४	३५	४५	५५	६	१६	२७	३७	४८	५८	८	२०	३०	४१	५१	२
२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	८	८	९
१६	२८	४२	५५	८	२२	३५	४८	१	१४	२७	४१	५४	७	२०	३३	४७	०	१३	२६	३८	५२	६
१२	२३	३६	४५	५५	६	१७	२७	३८	४८	५८	८	२०	३०	४१	५१	६	१३	२४	३६	४५	५५	६
४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८	३२	४५	५८	११	२५	३८	५१	६	१७	२७	४१	५४	१०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१६	२७	३७	४८	५८	१०	२१	३१	४१	५१	६	१२	२३	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चंद्रपल कोषक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	०
१३	२६	३८	५२	५	१८	३२	४५	५८	११	२४	३८	५१	६	१७	३०	४३	५७	१०	२३	३६	४८	०
२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	०
५	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	८	०
२	१६	२८	४२	५५	८	२२	३५	४८	१	१४	२७	४१	५४	७	२०	३३	४७	०	१३	२६	३८	०
४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	०	०	०	०	०	०	०
५२	६	१८	३२	४५	५८	११	२५	३८	५१	६	१७	२७	४१	५४	१०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रोच्चचक्रनिघ्न ध्रुवो नक्षेपक.

१८	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
०	३	६	९	०	३	६	९	०	३	५	८	११	२	५	८	११	२	५	८	११	१	४
२५	२२	१८	१७	१६	११	८	६	३	०	२७	२५	२२	१८	१६	१४	११	८	५	३	०	२७	२४
१८	३३	४८	३	१८	३३	४८	३	१८	३३	४८	३	१८	३३	४८	३	१८	३३	४८	३	१८	३३	४८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रोच्चशेषलब्धि कोष्ठक.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२
०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६
०	४०	२१	२	४३	२४	५	४६	२६	७	४८	२८	१०	५१	३२	१२	५३	३४	१५	५६	३७	१८	५८
०	५१	४२	३४	२५	१७	८	५१	४२	३४	२५	१७	८	५१	४२	३४	२५	१७	८	५१	४२	३४	२५
०	२५	५१	१७	४२	८	३४	०	२६	५१	१७	४२	८	३४	०	२६	५१	१७	४२	८	३४	०	२६

चन्द्रोच्चशेषलब्धि कोष्ठक.

२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५
२३	४०	४७	५३	०	७	१३	२०	२७	३३	४०	४७	५३	०	७	१३	२०	२७	३३	४०	४७	५३	०
३८	२०	१	४२	२३	४	४६	२५	६	४७	२८	८	५०	३०	११	५२	३३	१४	५५	३६	१६	५७	३८
४२	३४	२५	१७	८	०	५१	४२	३४	२५	१७	८	०	५१	४२	३४	२५	१७	८	०	५१	४२	३४
५१	१७	४३	८	३४	०	२६	५१	१७	४३	८	३४	०	२६	५१	१७	४३	८	३४	०	२६	५१	१७

चन्द्रोच्चशेषलब्धि कोष्ठक.

४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७
७	१४	२०	२७	३४	४०	४७	५४	०	७	१४	२०	२७	३४	४०	४७	५४	०	७	१४	२०	२७	०
१८	०	४१	२२	२	४३	२४	५	४६	२७	८	४८	२८	१०	५१	३२	१२	५३	३४	१५	५६	३७	०
२५	१७	८	०	५१	४२	३४	२५	१७	८	०	५१	४२	३४	२५	१७	८	०	५१	४२	३४	२५	०
४३	८	३५	०	२६	५१	१७	४३	८	३५	०	२६	५१	१७	४३	८	३५	०	२६	५१	१७	४३	०

चन्द्रोच्चयटीकोष्टक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	५	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	५	१३	२०
२३	३०	३६	४३	५०	५६	६३	७०	७६	८३	९०	९६	१०३	११०	११६	१२३	१३०	१३६	१४३	१५०	१५६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	६०	६६	७३	८०	८६	९३	१००	१०६	११३	१२०	१२६	१३३	१४०	१४६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	६०	६६	७३	८०	८६	९३	१००	१०६	११३	१२०	१२६	१३३	१४०	१४६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	६०	६६	७३	८०	८६	९३	१००	१०६	११३	१२०	१२६	१३३	१४०	१४६

चन्द्रोच्चपलकोष्ठक.

[illegible]

राहुचक्रनिघ्न ध्रुवो नक्षेपक.

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
३	७	०	७	१०	३	८	१	६	११	६	८	३	६	११	६	८	२	७	०	५	१०
०	२८	२५	२२	१८	१६	१३	११	८	५	३	२८	२६	२४	२१	१८	१५	१२	८	७	६	३
५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुशेषलब्धिकोष्ठक.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१
०	३	६	८	१२	१५	१८	२२	२५	२८	३१	३४	३८	४१	४४	४७	५०	५४	५७	०	३	६	८
०	१०	२१	३३	४३	५४	६	१५	२६	३७	४८	५८	८	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३६	४६	५७
०	४८	२६	३५	१३	२	५०	३८	२७	१५	४	५२	४१	२९	१७	६	५४	४३	३१	२०	८	५६	४५
०	२५	५०	१६	२१	६	३१	५७	२२	४७	१३	२८	३	२८	५४	१८	४४	८	३५	०	२५	५०	१६

राहुशेषलब्धिकोष्ठक.

२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
१३	१६	१८	२२	२५	२८	३०	३५	३८	४१	४४	४८	५१	५४	५७	०	४	७	१०	१३	१६	१८	२३
८	१८	३०	४०	५१	२	१३	२४	३५	४५	५६	७	१८	२९	३८	५०	१	१२	२३	३३	४४	५५	६
३३	२०	१०	५८	४७	३५	२४	१२	१	४८	३७	२६	१४	३	५१	४०	२८	१६	५	५३	४२	३०	१८
४१	६	२७	५७	२२	१७	१३	३८	३	२८	५४	१८	४४	८	३६	०	२५	५१	१६	४१	६	३२	५७
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुशेषलब्धिकोष्ठक.

५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
२६	२८	३२	३५	३८	४२	४५	४८	५१	५४	५८	१	४	७	१०	१३	१७	२०	२३	२६	२९	३२	०
१७	२७	३८	४८	०	११	२१	३२	४३	५४	५	१६	२६	३७	४८	५९	१०	२०	३१	४२	५३	६	०
७	५५	४४	३२	२१	१०	५७	४६	३४	२३	११	०	४८	३६	२५	१३	२	५०	३८	२७	१५	४	०
२३	४७	१३	३८	३	३८	५४	१८	४४	१०	३५	०	२५	५१	१६	४१	६	३२	५७	२२	४७	१३	०

राहु घटी कोषक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३०	३३	३६	३९	४२	४५	४८	५०	५३	५७	६०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२
६	९	१२	१६	२०	२२	२५	२८	३१	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५७	०	३	७
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३
१०	१४	१७	२०	२३	२६	२८	३३	३६	३८	४२	४५	४८	५२	५५	५८	१	४	७	११

राहुपल कोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३

मंगलचक्रनिघध्रुवोनक्षेपक.

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
७	७	५	३	१	११	१०	८	६	४	२	०	११	८	७	५	३	१	११	१०	८	६
६	१०	१५	१८	२०	२०	३	७	१२	१६	२१	२५	०	६	८	१३	१७	२२	२७	१	५	११
२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	६	३२	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

मंगलशेषलधिकोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	११	११	१२
२१	२	२६	५	३७	८	४०	११	४२	१६	४५	१७	४८	२०	५१	२३	५६	२५	५७	२८	०	३१	३
२६	५३	१८	४६	१२	३५	५	३२	५८	२५	५१	१८	४४	११	३७	६	३०	५७	२३	५०	१६	४३	८
३१	२	३३	६	३५	६	३७	८	३८	१०	४१	१२	४३	१४	४५	१६	४८	१८	५०	२१	५२	२३	५४
३	७	११	१४	१८	२१	२५	२८	३२	३६	३८	४३	४७	५०	५४	५७	१	५	८	१२	१५	१८	२३

मंगलशेषलधिकोष्ठक.

२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
०	०	८	०	८	८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१२	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२३	२४
२४	६	३७	८	४०	११	४२	१६	४५	१७	४८	२०	५१	२३	५६	२५	५७	२८	०	३२	३	३४	६
२६	२	२८	५५	२२	५८	१५	४२	८	३५	१	२८	५६	२१	४७	१६	४०	७	२३	०	२६	५३	१८
२५	५६	१७	५८	२८	०	३१	२	३३	६	३६	७	३८	८	४०	११	४२	१३	४४	१५	४६	१७	४८
२६	३०	३६	३७	४१	४४	४८	५१	५५	५८	२	६	८	१३	१७	२०	२४	२७	३१	३५	३८	४२	४५

मंगलशेषलधिकोष्ठक.

४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	
२४	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२९	०	०	१	१	२	३	३	४	४	५	०	०	
३७	८	४०	१२	४२	१६	४६	१७	४८	२०	५२	२३	५५	२६	५७	२८	०	३२	३	३४	६	०	०
२६	१२	१८	५	३२	५८	२५	५१	१८	४४	११	३७	६	३१	५७	२४	५०	१७	४३	१०	३६	०	०
१८	५०	२१	५३	२४	५५	२६	५७	२८	५८	३०	१	३२	३	३४	५	३६	७	३८	८	४१	०	०
४८	५२	२६	०	३	७	१०	१४	१७	२१	२५	२८	३०	३६	३७	४३	४७	५०	५४	५७	१	०	०

मंगलघटीकोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	१०
३१	२	३४	५	३६	८	३८	११	४२	१४	४५	१७	४८	१९	५१	२२	५२	२५	५६	२७
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
११	११	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०
०	३१	२	३४	५	३६	८	३८	१०	४३	१४	४५	१७	४८	१९	५१	२२	५२	२५	५६
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२१	२२	२२	२३	२३	२४	२४	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२९	२९	३०	३०	३१
२८	०	३१	२	३४	५	३६	८	३८	११	४३	१४	४५	१७	४८	१९	५१	२२	५२	२५

मंगलघटीकोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	१०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
११	११	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२१	२२	२२	२३	२३	२४	२४	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२९	२९	३०	३०	३१

बुधकेन्द्रघटीकोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१
३	६	८	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३१	३४	३७	४०	४३	४६	४८	५२	५५	५९	२
६	१२	१८	२५	३१	३८	४४	५०	५७	६	१०	१७	२३	२८	३६	४२	४८	५५	१	८
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२
५	८	११	१४	१७	२०	२३	२६	३०	३३	३६	३९	४२	४५	४८	५१	५४	५८	१	६
१५	२१	२७	३४	४०	४६	५३	६०	५	१२	१८	२४	३१	३७	४३	५०	५६	२	८	१६
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३
७	१०	१३	१६	१९	२२	२६	२८	३१	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५७	०	३	६
२२	२६	३५	४१	४८	५४	०	७	१३	२०	२७	३३	३८	४६	५१	५८	५	११	१७	२४

बुधकेन्द्रघटीकोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१
३	६	८	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३१	३४	३७	४०	४३	४६	४८	५२	५५	५९	२
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२
२	८	११	१४	१७	२०	२३	२७	३०	३३	३६	३९	४२	४५	४८	५१	५४	५८	१	६
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३
७	१३	१३	१६	१९	२२	२६	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५५	५७	०	३	६

गुरुचक्रनिघ्न ध्रुवोनक्षेपक.

[illegible]

गुरुशेषलब्धिकोष्टक.

[illegible]

गुरुशपलब्धिकोष्ठक.

[illegible]

गुरुभैषज्यो कोषक.

[illegible]

गुरुपल्लकोष्टक.

[illegible]

शुक्रकेन्द्रचक्रनिघ्नध्रुवनक्षेपक.

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
२	८	११	८	८	६	५	४	२	१	११	१०	८	७	५	४	२	१	११	१०	८	७
८	२५	११	२७	१३	२८	१५	१	१७	३	१८	५	२१	७	२३	८	२६	१०	२६	१२	२८	१०
२८	२७	२५	२३	२१	१८	१७	१५	१३	११	९	७	५	३	१	५९	५७	५५	५३	५१	४८	४७
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रकेन्द्रशीपलब्धिकोष्टक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	१	२	३	३	४	४	५	६	६	७	८	८	८	८	१०	११	११	१२	१२	१३	१४
३६	१३	५०	२७	४	४१	१८	५५	३२	८	४६	२३	०	३७	१४	५१	२८	५	४२	१९	५६	३३	१०
५८	५८	५८	५८	५८	५८	५७	५७	५७	५६	५६	५६	५५	५५	५५	५४	५४	५४	५३	५३	५३	५३	५३
४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	१	४१	२१	१	४१	२१	१	४१	२१	१	४२	२२	२	४२	२२
६	१३	२०	२१	१३	४०	४६	५३	०	६	१३	१८	२६	३३	३८	४६	५३	५८	६	१३	१८	२६	३२
३८																						

शुक्रकेन्द्रशीषलब्धिकोष्टक.

२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१४	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१८	२०	२०	२१	२२	२२	२३	२३	२४	२४	२५	२५	२६	२७	२८
४७	२४	१	३८	१५	५२	२९	६	४३	२०	५७	२४	११	४८	२५	२	३९	१६	५३	३०	७	४४	२१
५३	५१	५१	५१	५०	५०	५०	४९	४९	४९	४८	४८	४८	४७	४७	४७	४६	४६	४६	४५	४५	४५	४४
२	४२	२२	२	४३	२३	३	४३	२३	३	४३	२३	३	४४	२४	४	४४	२४	४	४४	२४	४	५५
३८	४६	५२	५९	६	१२	१८	२५	३२	३८	४५	५२	५९	५	१२	१९	२५	३२	३८	४६	५२	५८	५

शुक्रकेन्द्रशीपलब्धिकोष्टक.

४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	०
०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०
२८	२९	०	०	१	२	२	३	३	४	५	५	६	८	७	८	८	९	१०	११	०	०	
५८	३५	१२	४८	२६	२	४०	१७	५४	३१	८	४५	२२	५८	३६	१३	५०	२७	४	४१	१८	०	०
४४	४४	४३	४३	४३	४२	४२	४२	४१	४१	४१	४०	४०	४०	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३८	०	०
२५	५	४५	२५	५	४५	२५	५	४६	२६	६	४६	२६	६	४६	२६	८	४७	२७	७	४७	०	०
१२	१८	२५	३२	३८	४५	५१	५८	५	११	१८	२५	३१	३६	४४	५१	५८	५	११	१८	२५	०	०

शुक्रकेन्द्रघटीकोषक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	१	२	२	३	४	४	५	६	६	७	८	८	९	९	१०	११	११	१२
३७	१६	५१	२८	५	४२	१८	५६	३३	१०	४७	२४	१	३८	१५	५२	२९	६	४३	०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
५७	३४	११	४८	२५	२	३९	१६	५३	३०	७	४४	२१	५८	३५	१२	४९	२६	३	४०
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३
१७	५४	३१	८	४५	२२	५९	३६	१३	५०	२७	४	४१	१८	५५	३२	९	४६	२३	०

शुक्रकेन्द्रपलकोषक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	२	३	३	४	४	५	६	६	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
५१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३

शानिचक्रनिघ्न ध्रुवो नक्षेपकः.

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
३	७	११	४	८	१	५	१०	२	७	११	४	८	१	५	१०	२	७	११	४	८	१
१	१५	२०	१४	२८	१२	२७	११	२५	१०	२४	८	२२	७	२१	५	२०	४	१८	३	१७	१
२१	३८	५७	१५	३३	५१	८	२७	४५	३	२१	३९	५७	१५	३३	५१	९	२७	४५	३	२१	३८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शानिषेपलब्धिकोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	६	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६
०	०	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०
२३	४६	८	३२	५५	१८	४१	६	२७	५०	१३	३६	५९	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	६	२७	५०
४	८	१४	१८	२३	२७	३२	३७	४१	४६	५१	५५	५९	६	८	१४	१८	२३	२७	३२	३७	४१	४६
३७																						

शानिषेपलब्धिकोष्ठक.

२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
८	०	८	०	८	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
४८	५०	५२	५४	५६	५८	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२
८	८	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७
१३	३६	०	२३	४६	८	३२	५५	१८	४१	६	२७	५०	१३	३६	०	२३	४६	८	३२	५५	१८	४१
५१	५६	०	५	८	१४	१८	२३	२७	३२	३७	४१	४६	५१	५६	०	५	८	१४	१८	२३	२७	३२

शानिषेपलब्धिकोष्ठक.

४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	०
२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	०
१८	१८	१८	१८	१८	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५	२५	२५	०	०
४	२७	५०	१३	३६	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	६	२७	५०	१३	३६	०	२३	४६	९	०
३७	४१	४६	५१	५५	०	५	८	१४	१८	२३	२७	३२	३७	४१	४६	५१	५५	०	५	८	१४	०

शनि घटी कोष्टक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२
२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	६०

शनि पल कोष्टक.

[illegible]

मध्यम रवि साधनका उदाहरण.

इहां ग्रहर्गण ११७८ आया है. इस्को ६० से भाग देनेसे लब्धी १८ शेष २८ तो यह शेष को एक इस्के नीचेका अंक १।७।२७।१०।३० इस्को लब्धी अंक १८ तो लब्धी अंक के नीचे अंक राशी छोड़के यह १८।२३।३५।१५।२५ अंक है. इस्के ऊपरका अंक १८ के ६ से भाग दिया तो शेष ० शून्य रहा दूना किया तो ० शून्य रहा यद्वा राशी अंक भया. अब भाग स्थानमें ६३ आया ये ३० से अधिक हैं इसवास्ते इस्के ३० का भाग दिया तो लब्धी १ यह राशीमें युक्त किया तो १।१३।३५।१५।२५ यह अंक भया इस्को शेष ३८ को एकका पल युक्त किया तो २।२१।२।२५।५५ यह अंक भया. इस्को चक्र ३३ सारणीमें इस्के नीचेका अंक ८।१८।३७।५७ यह युक्त किया तो ०।१०।४०।२३ यह प्रातः कालका मध्यम सूर्य्य बुध युक्त भया. अब इस्को इष्टकालका मध्यम करना है. इसवास्ते इष्ट वर्ग ३२ यह इस्के सारणीमेंका पल ०।०।३१।३३ और पल ०१ इस्का पल पल सारणीका ०।०।०।०१ यह दोनूफल प्रातः कालके मध्यम ग्रहमें युक्त किया तो ०।११।११।५६ यह सूर्य्य इष्टकालका मध्यम ग्रह भया. इसी रीतिसे प्रातः कालका इष्टकालका मध्यम सब ग्रह करना.

प्रातः कालिक सूर्य्यादि मध्यम ग्रह.										अथ ताल्कालिक मध्यमाग्रहाः ८									
सू.	चं.	चं.उ.	रा.	मं.	तुके.	वृ.	शुक्र.	श.		सू.	चं.	चं.उ.	रा.	मं.	तुके.	वृ.	शुक्र.	श.	
०	८	८	४	५	७	५	७	२		०	८	८	४	५	७	५	७	२	
१०	२६	१७	२१	२१	५	१२	१३	१६		११	३	२८	२१	२२	७	१२	१३	१६	
२०	२६	५८	४१	५०	२३	१५	१२	३८		११	२८	१	४०	७	३	१७	४२	३८	
३०	२८	१०	५०	३८	५१	११	२८	३३		५६	२०	२३	५	२४	११	५१	३७	३७	

श्लोकः- जगदाशनराचुत केअवाग्रघटिण्ण मयाधिकारपूर्णाचंतद्रापावप्रकाशक ५८ ७८ ६ ३ ३१ १८६ ८ ३७ २ ५८ ३५ २१ ११ २६ २४ ० ० ०.

अथ सप्तधिकारः

श्लोकः

मंदोच्चग्रहवर्जितं निगदितं केन्द्रतदारण्यं बुधैः केन्द्रे स्यात्स्व-
मृणफलं क्रियतुलाद्य इति. दोल्लिभोनत्रिभोद्धं विशेप्यरसै-
श्वकतोंकाधिकः स्याद्भुजोनं त्रिभकोटिर केक त्रिभि मीस्या-
त्यदं सूर्य्यमंदोच्चमष्टाद्वि योंशा भवेत् ॥

टी०- मंदोच्चमें ग्रह कम करनेसे मन्दकेन्द्र होता है. वह केन्द्र मेष राशीसे
६ राशीतक होयतो फल धन और तुलादि ६ राशी होयतो फल ऋण जानना.

केन्द्र अथवा ग्रह ३ राशीसे कम होयतो वही भुज जानना. और तीनसे ३ अधिक होयतो ६ राशीमें कमकरना तो भुज होय. ६ से अधिक होय तो ६ राशी घटायदेतो भुज होय ९ से अधिक होयतो १२ में कमकरना तो भुज होय इस प्रकारसे केन्द्रका वा ग्रहका भुजकरना.

स्पष्टसारणी प्रवेश.

२ राशी १० अंश ० कला ० विकला यह सूर्यका मंदोच्च है. इसमें मध्यम सूर्य कमकरना तो सूर्यका मंद केन्द्र होता है. वह केन्द्रका भुजकरके उसका अंश करना अनंतर जो अंश आवितो अंश कोष्टकके नीचे स्पष्ट ग्रह सारणीमें लिखा है सो देरवके भागादि फल लेना. अनंतर भुज भागके नीचे जो कला विकला होय उसको इष्ट भुजांश कोष्टकके नीचे गुण लिखा है. उससे गुणके वही कोष्टकके नीचे जो हर लिखा है. उससे भागदेके जो फल आविसो भुज भाग फलके विकलामें जोड़ देना तो सूर्यका मंद फल होता है. वह फल धन होय तो मध्यम सूर्यमें युक्त करना. और ऋण होय तो मध्यम सूर्यमें कमकरना. तो सूर्य मंद स्पष्ट होता है.

अयनांशः

श्लोकः- वेदाध्यध्ययूनः रवरसंज्ञतः शकोयनांशाः ॥

टीकाः- इष्टशालिवाहन शकमें से ४४४ लब्धि यह कमकरना जो बाकी रहै. उसको ६० का भाग देना जो भागाकार लब्धि आवै वह अयन अंश होता है. उदाहरणम्:- शके १८०० इससे ४४४ यह कम किया तो १३६ यह बचा. तो कला जानना. इसको ६० से भाग दिया तो लब्धि अंश २२ कला ४४ विकला ० ० अब महिना प्रति ५ विकला युक्त करे तो यह अयनांश आया. २२।४४।०३

चरखण्ड.

श्लोक.

मेपादिगसायनभागसूर्ये दिनार्द्धजाभापलभापवेत्ता ॥

त्रिषाहतास्युर्दशभिर्भुजैर्दिग्भिश्चराधीनिगुणोधृतांस्यात् ॥ १ ॥

टीकाः- मेपका सायन सूर्य अन्यराशि ० अंश ० कला ० विकला इतना सूर्य जिस दिन होय उस दिन मध्याह्नमें सम भूमिपर अंगुलका शंकु रखने के जो छाया आवै सो पल भा जानना. अगिजो पल भा आवै उसको ३ जंग रखके क्रमसे १०।८।१० यह अंक से गुणदे जो गुणाकार आवै उसको क्रमसे १।१।३ यह अंकसे भाग देना जो भागाकार आवै सो क्रमसे पहली दूसरी तीसरी चरखण्ड होता है.

उदाहरणम्.

पलभा ७ अंगुल इस्को १० से गुणातो ७० भया १ से भाग देनेसे ७० यह पहला चरखंड-पलभा ७ अंगुल इस्को ८ से गुणातो ५६ भया १ से भाग दिया-तो ५६ यह दूसरा चरखंड-पलभा ७ अंगुल इस्को १० से गुणातो ७० भया १ से भाग देनेसे ७० यह तीसरा चरखंड इस प्रकारसे क्रम करके चरखंड ७०।५६।२३ यह हुवा.

टीका.

मंद स्पष्ट सूर्यमें अयनांश युक्त करनेसे सायन सूर्य होता है. उस्का भुज करना अनंतर भुजका जो ०।१।२ इसमेंसे राश्यंक होय उस्के समान चर खण्डका योग करना अनंतर भुज राशीके नीचे अंशादिक जो होय उस्को चरखण्डसे गुणके जो गुणाकार आवै उस्के घट्यादिकमें ६० का भाग दे अंशमें ३० का भाग देना जो लब्धी आवै उस्को पहले किया जो योगतिस्में युक्त करना तो चरस्पष्ट होता है. वह सायन सूर्य मेषादि ६ राशिमें होय तो फल ऋण तुलादि ६ राशिमें होय तो फल धन जानना सायन कालका ग्रह करना. होय तो चर विपरीत देना सो ऐसा सायन सूर्य मेषादि पट्टकमें होय तो धन तुलादि पट्टकमें होय तो ऋण जानना वह आया जो चर उस्को मंद स्पष्ट सूर्यके विकलामें धन होय तो युक्त करना ऋण होय तो कम करना तो स्पष्ट सूर्य होता है.

सूर्यकी स्पष्ट गती.

केन्द्र भुजभाग कोष्ठकके नीचे गति फल लिखा है. वह केन्द्र कंकादि ६ राशि तक होय तो धन इसवास्ते पहिली रवीकी जो मध्यम गति उस्में युक्त करना और केन्द्र मकरादिक ६ राशितक ऋण जानना इसवास्ते मध्यम गतिमें कम करना तो सूर्यकी स्पष्ट गती होती है.

दिनमान— रात्रिमान.

टीका.

तब सायन ग्रह मेषादि ६ राशिमें होय तब उत्तर गोलमें जानना. और सायन ग्रह तुलादि ६ राशीमें होय तब दक्षिण गोलमें जानना. जो चर आ होय उस्को पल जानके उत्तर गोलमें होय तो १५ घडीमें युक्त करना और दक्षिण गोलमें कम करना. तो दिनार्द्ध होता है. वह दिनार्द्ध ३० में कम करना तो रात्र्यर्द्ध होता है अनंतर दिनार्द्ध और रात्र्यर्द्ध इस्को दूना करना तो दिनमान रात्रिमान होता है.

सूच्यं स्पष्ट सारणी.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	२	४	६	८	११	१३	१६	१८	२०	२३	२५	२७	२८	३१	३४	३६	३८	०
०	२०	३८	५८	८८	१२६	१५५	१९२	२२८	२६६	३०३	३४०	३७६	४१२	४४८	४८४	५२०	५५६	०
७	७	७	७	७	२३	२३	३४	३४	३४	८	८	११	११	११	११	१२	१३	७
३	३	३	३	३	१०	१०	१५	१५	१५	४	४	५	५	५	५	५	६	३
१५	१५	१६	१३	१३	१३	१२	११	१०	१०	८	८	७	७	६	५	४	३	१५
१८	२८	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	७
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
४०	४२	४५	४७	४८	५१	५३	५५	५७	५८	१	३	५	७	८	११	१३	१५	५
४५	४६	३	११	१७	२३	२८	३२	३५	३६	३७	३६	३५	३२	२८	२२	१५	७	
१३	३२	३२	२१	२१	३१	३१	४१	२	२	२	२	२	२	२	१८	२८	११	७
६	१५	१५	१०	१०	१५	१५	२०	१	१	१	१	१	१	१	१०	१५	६	७
२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
३	२	१	०	५८	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४८	४७	४६	४५	३
३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४८	५०	५१	५२	५३	७
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१६	१८	२०	२२	२४	२६	२७	२८	३०	३२	३४	३५	३७	३८	४०	४१	४२	४४	१
५८	५७	३५	२१	६	५२	३१	१२	५१	२८	३	३७	८	३८	८	३६	५८	२२	१
११	८	८	७	७	५	५	५	८	८	८	३	३	३	७	७	७	७	७
६	५	५	४	४	३	३	३	५	५	५	२	२	२	५	५	५	५	५
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
४३	४२	४१	३८	३७	३७	३५	३४	३३	३१	३०	२६	२५	२३	२२	२०	१८	१८	१
५६	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२
४५	४७	५८	४८	५०	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५८	०	१	२	२	३	१
४५	२	२१	३६	४८	१	१०	१८	२२	२६	३१	३७	३३	१८	११	१	४८	३५	१
१३	६	५	५	६	७	७	११	११	१	१	११	११	८	५	४	३	३	७
१०	३	१	४	५	६	६	१०	१०	१	१	१२	१२	१०	६	५	४	४	७
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	१
१६	१५	१३	११	८	७	६	४	३	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	१
७३	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७८	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८८	७
१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	८	८	८	१०	१०	१०	१०	१०	१
१८	०	१०	१८	५०	२२	५२	२०	४५	८	२८	४६	१	१५	२५	३६	४०	५३	४५
२	२	३	७	८	१	१	५	५	१	३	१	१	१	१	१	१	१	१
३	३	५	१२	१५	२	२	१२	१२	३	१०	४	४	६	६	१०	१०	३०	१६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४२	१०	३८	३५	३३	३१	२८	२६	२४	२२	१८	१७	१५	१२	१०	७	५	२	०

॥ स्पष्टग्रह ॥ स्पष्ट सूर्य साधनका उदाहरणम् ॥

यह सूर्यका मंदोच्च २१८।०० इस्में मध्यम सूर्य ००।११।११।५६ कम किया तो २।६।४८।४ यह शेषरहा इस्कानानकेन्द्र अब इस्का भुज २।६।४८।४ तोयही रहा भाग किया तो ६६।४८।४ यह भया इसवास्ते इहां सारणी कोष्ठक ६६ इस्के नीचेका अंक १।५८।२३ इस्को गुण ११ से ४८ को गुणा तो ५२८ पल ४ को गुणा तो ४४ इस्के ६० का भाग दिया तो ० लब्धि हुई अब गुणके नीचे हर १२ से ५२८ में भाग लिया तो ४४ लब्ध हुवा इस्को विकलमें युक्त किया तो २।००।७ यह सूर्यका मंदफल भया अब केन्द्र मेपादि ६ राशिमें है इसवास्ते फल धन ग्रह मध्यम सूर्यमें युक्त किया तो ०।१३।१२।३ यह मंदस्पष्ट सूर्य भया इस्में अयनांश २२।४४।३ युक्त किया तो यह १।५।५६।०६ सायन सूर्य इस्का भुज १।५।५६।६ यही रहा यहां भुज राशी अंक १ है इसवास्ते चरखंड ७० भोग्यखंड ५६ भुजभाग ५।५६।६ इस्से पूर्वगती करके आया फल ११ यह युक्त करके ८१ यह चर भया अब सायन सूर्य मेपादिक है इसवास्ते मंदस्पष्ट सूर्यके विकलमें कम किया तो यह ००।१३।१०।४२ स्पष्ट सूर्य भया इहां केन्द्र मकरादिक है इसवास्ते भुजभाग कोष्ठक ६६ इस्के नीचे गतिफल ०।५४ यह है तो ५८।०० मध्यम गतिमें कम किया तो यह ५८।१४ स्पष्टगती भाई सायन सूर्य मेपादिक है इसवास्ते उत्तर गोल ऊपर आया जो पलात्मक चर ८१ यह १५ घटीमें युक्त किया तो ४६।२१ यह दिनाई भया इस्को ३० घटीमें कम किया तो १३।३८ यह रात्रिदल भया दिनमान ३२।४२ रात्रिमान २।७।१८ दैनिक योग ६५।०० अहोरात्र भया.

त्रिफल चंद्र संस्कार.

प्रथमफल अपने देशसे दक्षिणोत्तर रेखा कितने योजन है वह देखके जो योजन होय उसको ६ से भाग देकर के जो भागाकार आवे वह कला होगी तो अपना देश दक्षिणोत्तर रेखाके पश्चिम होय तो फल धन और पूर्वमें होय तो फल ऋण जानना दक्षिणोत्तर रेखाके ऊपरके देश लंका, देवकन्या, कांची, उतपर्वत वत्स गुल्म, परली, उज्जैन, नगराट, कुरुक्षेत्र, मेरु, द्वितीयफल पहिले जो चर किया है उसको २ से गुणके ८ से भाग देना जो भागाकार आवे सो कलादि जानना और चर जैसा धन ऋण होय वैसा वह फल धन ऋण जानना तृतीय फल सूर्यका जो मंदफल आया है उसको २७ से भाग दे-

आवे सो धन कण जानना अवतीनों फलोंका एकी करण जो धन किंवा
ण आवेगा वह मध्यम चन्द्रमें धन होय तो युक्त करना कण होय तो कम
रना तो त्रिफल संस्कृत चन्द्र होता है।

उदाहरण.

इस उदाहरणमें मध्य रेखाका अंतर ५ योजन है इस्को ६ से भाग दिया
तो ० कला ५० विकला यह फल धन कारण अंतर पश्चिम है. चर ८१ इस्को १
से गुणा तो १६२ यह इस्को ८ से भाग दिया तो २०।०० यह कलादि द्विती
य चर फल कण है इसवास्ते कण सूर्य फल २।००।७ इस्को २७ से भा
ग दिया तो ०।१२६ यह अंशादि तृतीय फल धन है इसवास्ते धन
यह तीनों फलोंका एकी करण ००।१२।१४ अंशादि कण यह मध्यम
चंद्र ८।३।२८।२१ इस्में कम किया तो ८।३।१५।३० यह त्रिफल संस्कृ
त चंद्र भया अथवा देशांतर कला और चर फल और सूर्य मंद फल य
ह तीनों फलोंको अलग अलग कण धन समत्व कर मध्यम चंद्रमें कण
धन करना तो पूर्व तुल्य चन्द्र त्रिकर्म संस्कृत होता है.

स्पष्ट चन्द्र.

चंद्रोच्चमें त्रिफल चन्द्र कम करना तो चन्द्रका मंद केन्द्र होता है अनंतर
वह केन्द्रका भुज करना भुजका अंश करना अंश करके जो अंशांक
आवे सो अंश कोष्ठकके आगे स्पष्ट सारणीमें देखना और उसके नीचे कां
भागादिक फल लेना. अनंतर भुज भागके नीचे जो कला विकला होय उ
स्को इष्ट भुजांश कोष्ठकके नीचे जो गुण लिखा है. उस्से गुण कर वही कोष्ठ
कके नीचे जो हर लिखा है उस्से भाग देने से जो भागाकार आवेगा सो
भुज भाग फलके विकलामें युक्त करना तो चन्द्र मंद फल होता है वह फ
ल धन होय तो त्रिफल चंद्रमें युक्त करना और कण होय तो त्रिफल चंद्रमें
कम करना तो स्पष्ट चन्द्र होता है.

चंद्रकी स्पष्ट गति:- पूर्वोक्त केन्द्र भुज कोष्ठकके नीचे गति फल लि
खा है वह लेना अनंतर भुज भागके नीचे जो कला विकला उस्की गति फ
लके नीचे गुण लिखा है उस्से गुण करके ६० से भाग दे जो फल आवे सो वि
कलात्मक वह लिया जो गति फल उस्में कम करके वह गति फल सूर्यके
ऐसा केन्द्र परसे चंद्रके मध्यम गतीमें धन होय तो धन करना किंवा कण
होय तो कण करना तो चंद्रकी स्पष्ट गति होती है.

चन्द्रस्पष्टसारणी.

[illegible]

स्पष्टचंद्र साधनेका उदाहरण.

चंद्रोच्च ८१२८।१४४ इसमें त्रिफल चंद्र ८।३।१५।३० कम करके बाकी ००।२६।४६।०६ यह केन्द्र इस्का भुज भाग किया तो २४।४६।०६ इस पास्त ० हां सारणी कोष्ठक २४ इसके नीचे अंश आदि फल २।२।५० इस्को गुण हर फल २१८ विकला युक्त किया तो २।६।२८ यह चंद्र फल तथा यह केन्द्र मेषका है इस वास्ते फल धन यह त्रिफल चंद्र ८।३।१५।३० इस युक्त किया तो ८।५।२२।७ यह स्पष्ट चंद्र भया अब इहां केन्द्र भुज भाग कोष्ठक २४ इस्का गति फल कलादि ५८।१६ इस्में गति फल के नीचे का गुण ३१ इस्से भुज भाग के नीचे की कला ४६।०६ विकला इस्को गुण के यह १४२६।१०६ इस्को ६० से भाग दिया तो फल २४ यह विकलामें कम किया बाकी ५८।५२ यह केन्द्र मेषका है इस वास्ते मध्यम गति ७८०।३५ में कम किया तो ७३१।४३ यह स्पष्ट चंद्र गति भई.

मंगल बुध गुरु शुक्र शनि स्पष्ट सारिणी प्रवेश.

मध्यम सूर्यमें मध्यम ग्रह भीम गुरु शनि कम करना तो भीम गुरु शनि इनका प्रथम शीघ्र केन्द्र होता है. मध्यम बुध और शुक्र इनका केन्द्र पूर्वमें मध्यम ग्रह के बराबर लिखा है. अभीष्ट ग्रह का केन्द्र ६ राशि से अधिक होय तो १२ में कम करना अनंतर ६ से अल्प जो केन्द्र उस्का अंश करना जो अंश आवे सो आगे लिखा शीघ्र फल ग्रह सारिणीका अंश कोष्ठक तैयार होता है. अनंतर अभीष्ट कोष्ठक के नीचे का अंश आदि फल लेना अनंतर अंश फल के नीचे ६० कला विकला कोष्ठक लिखा है उस्में से अंश के नीचे जो कला विकला होय तत्परिमित कोष्ठक के नीचे का कला का फल कलादि वैसा विकलादि ए फल करके धन किंवा अशुभ सारिणीमें लिखा है उस्के प्रमाण लिया जो अंश फल युक्त करना किंवा कम करना तो ग्रहोंका प्रथम शीघ्र फल होता है. शीघ्र फल का अर्ध करके केन्द्र के प्रमाण मध्यम ग्रहमें युक्त करना किंवा कम करना तो दल संस्कृत ग्रह होता है. भीमादि ग्रहोंका राश्यादि मंदोच्च भीमका ४ बुधका ७ गुरु ६ शुक्रका ३ शनिका ८ अब अभीष्ट ग्रह का मंदोच्च लेकरके दल संस्कृत ग्रहमें कम करना तो मन्द्र केन्द्र होता है. वह केन्द्र का पूर्वोक्त रीति करके भुज करना. भुज का भाग करना जो अंश आवे सो आगे लिखा मंद फल सारि

णीका अंश कोष्ठक तयार हैं अनंतर अभीष्ट कोष्ठकके नीचे का अंश-
 आदि फल लेना. अनंतर फलके नीचे ६० कला विकला कोष्ठक लिखे
 हैं उसमेंसे अंशके नीचे जो कला विकला होय तत्प्रमित कलाका कला-
 दि और विकलाका विकलादि फलको एकत्र करिके उसको पूर्व फलमें युक्त
 करना तो उन ग्रहोंका मन्दफल होता है. ऋण धन मन्दकेन्द्र परसे जानिके
 उस फलको मध्यम ग्रहोंमें धन वा ऋण करना तो मन्द स्पष्ट ग्रह होगा और
 उसी मन्द फलको प्रथम शीघ्र केन्द्रमें विलोम अर्थात् धन होय तो ऋण
 और ऋण होय तो धन करना तो द्वितीय शीघ्र केन्द्र होता है. उस शी-
 घ्र केन्द्र परसे प्रथम शीघ्र फलके रीतिसे फल आनिकर मन्द स्पष्ट में
 ऋण धन करना तो वह स्पष्ट होता है. यही रीति भीमादिकोंकी है ॥ ॥
 मंगल शुक्रका विशेष ॥ ॥ शुक्रारयोश्चल भवोन्त्यगतो यदाङ्ग-
 इति ॥ टीका:- जब भीम और शुक्रका अंतिम शीघ्र केन्द्रको पङ्क-
 जाल्य करिके अंश करते हैं तो वह अंश यदि १६५ से १८० तक होय तो सं-
 स्कार करनेका पृथक् पृथक् सारिणी लिखी है उत्कानाम अन्त्याङ्क फल
 सारिणी है. उसमेंसे शीघ्र फलके सदृश फल ले आना और उस फलको
 केन्द्रके वड़ा करिके ऋण धन करना तो स्पष्ट शुक्र० भीममें तो वह शीक
 २ स्पष्ट होते हैं ॥ भीमादि ग्रहोंकी गति स्पष्ट करनेका प्रकार ॥
 मन्द फल सारिणीमें दहनी तरफ गति फल लिखा है पन्द्रह २ कोष्ठका
 उसको कर्कादि मकरादि केन्द्र बसकर धन ऋण जानना. और शीघ्र सा-
 रिणीमें दहिनी तरफ १५ कोष्ठका गति फल धन वा ऋण लिखा है उन दो-
 नों गति फलोंको एकत्र करना अर्थात् दोनों धन होय वा ऋण होय तो येन
 ग करना और एक धन एक ऋण होय तो अन्तर करना तो उस फलके
 सदृश ग्रह गति स्पष्ट होती है जब योग वा अन्तर ऋण वचै तो वक्र-
 गति जानना यह स्पष्ट गतिको मध्यम गतिका कारण लगता नहीं.

भीमबुधशुक्रइनकी गतिमें विशेष.

भीमबुधशुक्र इनका पङ्काल्य अंतिम शीघ्र केन्द्रका अंश १६५ से १८०
 तक अंश आवे तो यह संस्कार करनेके वास्ते वह ग्रहोंका शीघ्र फल सा-
 रिणीके अंत्यमें पृथक् अंत्यांक गति फल सारिणी लिखी है अनंतर यह
 सारिणीमें जो अभीष्ट अंश आवे तत्प्रमित कोष्ठकके नीचे का कलादि
 ऋण फल लिखा है वह लेकरके अंश फलके नीचे ६० कोष्ठक लिखा है
 उसमेंसे अंशके नीचे जो कला विकला होय तत्तत्प्रमित कोष्ठकके
 नीचे का कलाका फल कलादि वही कलादि फल विकलाका विकलादि

फल एकत्र करके वह सर्वकाल कृण्वे इस वास्ते लिपाजी अंश फल
उस्में युक्त करना तो शीघ्र गति फल तैयार होता है- अनंतर यह फल का
पहिले प्रमाण मंद स्पष्ट गति फल को संस्कार करना तो भीम बुध भृगु
इनकी स्पष्ट गति होती है.

प्रथमशीघ्रकेन्द्रम्.						आशुफलं भीमादि.					
मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.
६	७	६	७	८		२८	१७	६	४५	५	
१८	७	२८	१३	२४	फ.	८	२२	२२	५६	१	फ.
४	३	५४	४२	३२		०	५३	४८	४०	७	
३२	१८	५	१३	१८							

आशुफलार्द्धम्.						आशुफलार्द्धसंस्कृता भीमादि.					
मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.
१४	८	३	२२	२		५	०	५	११	२	
४	४१	११	४८	३०		८	२	८	१८	१४	
०	२६	२४	२०	३३		३	३०	६	१३	८	
						२४	३०	२७	३६	४	

मन्दकेन्द्रम्.						मन्दफलम्.					
मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.
१०	६	०	३	५		७	१	१	१	५	
२१	२७	२०	११	१५		१२	५६	५४	३०	४७	
५६	२८	५३	४६	५०		१४	५८	३९	०	३२	
३६	३०	३३	२४	५६		३६	३६	२६	०	१५	

मन्दस्पष्टभीमादि.						द्वि०-शीघ्रकेन्द्रम्.						द्वि०-शीघ्रफलम्.					
मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.
५	०	५	०	२		६	७	६	७	८		३३	१७	५	४५	५	
१६	९	१६	१२	१८		२६	८	२६	१२	२२		५०	५४	५९	४५	५	
५५	१४	१२	४१	२७		१६	०	५९	१२	४४		५४	५	५३	५२	२४	
१०	५८	३०	५६	८		४६	१७	२६	१३	४७		७	११	५	५४	४	
												३८	८	०	३८	२४	
												ध.	ध.	क.	ध.	ध.	

भौमशीघ्रफलसारिणी.

अंको	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	गण
फ०	११ ४२ ०	१२ ४ ४८	१२ १७ ३६	१२ ५० २६	१३ १३ १२	१३ २६ ०	१३ ५८ ४८	१४ २१ २६	१४ ४५ २६	१५ ७ १२	१५ ३० ०	१५ ५२ ४८	१६ १५ ३६	१६ ३८ २६	१७ १ १२	४२ ५०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घ०	० ०	० २३	० ४६	१ ८	१ २२	१ ५६	२ १७	२ ४०	२ २५	३ ४८	३ १०	४ ३६	४ ५६	४ १८	५ ४२	५ ६२
१६	१७	१८	१८	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२८	३०	३१	३२
६	६	६	७	७	७	८	८	८	८	९	१०	१०	११	११	११	१२
५	२८	५०	१३	३६	५८	२२	४६	७	३०	५३	१६	३८	१	२६	४७	१०
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३८	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४८
१२	१२	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८
३२	५५	१८	४८	६	२६	४८	१२	३५	५८	२०	४३	६	२८	५२	१४	३६
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५८	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६
१८	१८	२०	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२२	०	०	०	०	०	०	०
०	२३	४६	१८	३१	५६	१७	४०	२	५	४८	०	०	०	०	०	०
अंको	४५	४६	४७	४८	४८	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५८	६०
फ०	१७ २६ ०	१७ ४५ ३६	१८ १७ १२	१८ २८ ४८	१८ ५० २६	१८ १२ ०	१८ ३३ ३६	१८ ५५ १२	२० १६ ४८	२० ३८ २६	२१ ० ०	२१ २१ ३६	२१ ४३ १२	२२ ६ ४८	२२ २६ २६	४२ १४
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घ०	० ०	० २२	० ४३	१ ५	१ २६	१ ४८	२ १०	२ ३१	२ ५३	३ १४	३ ३६	४ ५८	४ १८	४ ४१	५ २	५ २६
१६	१७	१८	१८	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२८	३०	३१	३२
५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	८	९	१०	१०	१०	११	११
४६	७	२८	५०	१२	३६	५५	१७	३८	०	२२	४३	५	२८	४८	१०	३१
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३८	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४८
११	१२	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७
५३	१४	३६	५८	१८	४१	२	२६	४६	७	२८	५०	१२	३६	५५	१७	३१
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६
१८	१८	२०	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२२	०	०	०	०	०	०	०
०	२३	४६	१८	३१	५६	१७	४०	२	५	४८	०	०	०	०	०	०

भौमशीघ्रफलसारिणी.

क्र०	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	गण.
फ०	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२७	२७	४१
	४८	८	२८	४८	८	३०	५०	१०	३१	५१	१२	३२	५२	१३	३३	४१
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	३८
फ०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घ०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५
	०	२०	४१	१	२२	४२	२	२३	४३	४	२४	४४	५	२५	४५	६
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	८	८	८	१०	१०	१०
२६	४७	७	२८	४८	८	२८	४८	१०	३०	५०	११	३१	५२	१२	३२	४२
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४८
११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६
१३	३६	५६	१४	३५	५५	१६	३६	५६	१७	३७	५८	१८	३८	५८	१०	४०
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६
१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	२०	२०	०	०	०	०	०	०
०	२०	४१	१	२२	४२	२	२३	४३	४	२४	०	०	०	०	०	०
अंकी	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	गण.
फ०	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३२	४०
	५६	१२	३०	४८	७	२६	४६	२	२१	३८	५६	१६	३६	५३	११	४०
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	३८
फ०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घ०	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५
	०	१८	३७	५५	१४	३२	५०	८	२७	४६	४	२२	४१	५८	१८	३६
१६	१७	१८	१८	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८
५६	१३	३१	५०	८	२६	४५	३	२२	४०	५८	१७	३५	५४	१२	३०	४८
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४८
१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१५
७	२६	४६	२	२१	३८	५८	१६	३५	५३	११	३०	४८	७	२५	४३	२
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६
१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	०	०	०	०	०	०
२०	३८	५७	१५	३६	५२	११	२८	४७	६	२४	०	०	०	०	०	०

भौमशीघ्रफल सारिणी.

श्रीकी	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	गण
फ०	३०	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३६	३६
क०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
घ०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	४
१६	१७	१८	१८	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८
२६	३२	४०	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२
३३	३६	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
८	८	८	८	८	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३
४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६
१३	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१६	०	०	०	०	०	०	१
२७	२६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	०	०	०	०	०	०

श्रीकी	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	गण
फ०	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घ०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२
१६	१७	१८	१८	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२८	३०	३१	३२
२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५
५८	१८	२१	३३	४४	५५	६	१८	२८	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५८
३३	३६	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
८	८	८	८	८	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	११
१०	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६
८	८	८	८	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	११	११
२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६

भौमशीघ्रफलसारिणी-

श्रीको	१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	ग.ध.
फ०	३८ १८ ०	३८ २० ४८	३८ २३ ३६	३८ २६ २४	३८ २८ १२	३८ ३२ ०	३८ ३४ ४८	३८ ३७ ३६	३८ ४० २४	३८ ४३ १२	३८ ४६ ०	३८ ४८ ४८	३८ ५१ ३६	३८ ५४ २४	३८ ५७ १२	३२ ५०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
ध०	० ०	० ३	० ६	० ८	० ११	० १४	० १७	० २०	० २२	० २५	० २८	० ३१	० ३४	० ३६	० ३८	० ४२
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
४५	४८	५०	५३	५६	५८	२	४	७	१०	१३	१६	१८	२१	२४	२७	३०
३३	३४	३५	३६	३७	३८	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	४९
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
३२	३५	३८	४१	४३	४६	४८	५२	५५	५८	०	३	६	९	१२	१४	१७
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	०	०	०	०	०	०
२०	२३	२६	२८	३१	३४	३७	४०	४२	४५	४८	०	०	०	०	०	०
श्रीको	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	ग.ध.
फ०	४० ४८ ०	४८ ५० १२	४८ ५३ २४	४८ ५६ ३६	४८ ५८ ४८	४८ ६० ०	४८ ६३ १२	४८ ६५ २४	४८ ६८ ३६	४८ ७० ४८	४८ ७३ ०	४८ ७६ १२	४८ ७९ २४	४८ ८१ ३६	४८ ८४ ४८	२५
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
श्री.	० ०	० १३	० २६	० ३८	० ५१	० ६४	० ७७	० ९०	० १०२	० ११५	० १२८	० १४१	० १५४	० १६६	० १७९	१२
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
२५	३८	५०	३	१६	२८	४२	५४	७	२०	३२	४६	५८	११	२४	३७	५०
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३८	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१०	१०	१०
२	२५	२८	४२	५४	६	१८	३२	४५	५८	१०	२३	३६	४८	२	१४	२७
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६
१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	०	०	०	०	०	०
५०	५३	६	१८	३१	४४	५७	१०	२३	३५	४८	०	०	०	०	०	०

भौमशीघ्रफल सारिणी.

क्रं.	१५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	ग.ध.
फं.	३६ ४८ ०	३६ ० २४	३५ १२ ४८	३४ २५ १२	३३ ३३ ३६	३२ ५० ०	३२ २ २४	३१ १४ ४८	३० २७ १२	२९ ३८ ३६	२८ ५२ ०	२८ ४ २४	२७ १६ ४८	२६ २८ १२	२५ ४१ ३६	७
कं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
क्रं.	० ०	० ४८	१ ३५	२ २३	३ १०	४ ५८	५ ४६	६ ३३	७ २१	८ ८	९ ५६	१० ४४	११ ३१	१२ १८	१३ ६	१४ ५६
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
४२	२८	१७	४	५२	६०	२७	१५	२	५०	३८	२५	१३	०	४८	३६	२३
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
२६	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
११	५८	४६	३४	२१	८	५६	४४	३२	१९	७	५४	४२	३०	१७	५	५२
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	०	०	०	०	०
२८	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	०	०	०	०	०	०
४०	२८	१५	३	५०	३८	२६	१३	१	४८	३६	०	०	०	०	०	०
क्रं.	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	ग.ध.
फं.	२४ ५६ ०	२३ १४ २४	२१ ३६ ४८	१९ ५५ १२	१८ १५ ३६	१६ ३६ ०	१४ ५६ २४	१३ ३७ ४८	११ ३७ १२	९ ५७ ३६	८ १८ ०	६ ३८ २४	४ ५८ ४८	३ १८ १२	१ ३८ ३६	०
कं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
क्रं.	० ०	१ ४०	२ १८	३ ५८	४ ३८	५ १८	६ ५८	७ ३७	८ १७	९ ५६	१० ३६	११ १६	१२ ५५	१३ ३५	१४ १४	१५ ५४
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
२६	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
३६	१३	५३	१२	१२	५२	३१	११	५०	३०	१०	४८	२८	८	४८	२८	७
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
५४	५६	५८	५९	६१	६३	६४	६६	६८	६९	७१	७३	७४	७६	७८	७९	८१
५७	२६	६	४६	२५	५	४४	२४	४	४३	२६	२	४२	२२	१	४१	२०
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०	०	०	०	०	०
८३	८४	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
०	४०	१८	५८	३८	१८	५६	३७	१७	५६	३६	०	०	०	०	०	०

अन्त्यांकफलसारिणी.

अंकी	१६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
फ०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०
	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
फ०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३
	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६	६	६
१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०	०	०	०	०	०
१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	अन्त्यांकगतिफलसारिणी.					
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०						
अंकी	१६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
क०	३	५	६	७	८	१०	१२	१३	१४	१६	१७	१८	२०	२२	२३	०
	३६	०	२५	५१	१७	६३	८	३४	०	२५	५१	१७	६३	८	३६	०
	क०	क०	क०	क०	क०	क०	क०	क०	क०	क०	क०	क०	क०	क०	क०	क०
क०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
क०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१	३	४	६	७	८	१०	११	१३	१४	१६	१७	१८	२०	२१	२३
१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२४	२६	२७	२८	३०	३१	३२	३४	३६	३७	३८	४०	४१	४३	४४	४६	४७
३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
४८	५०	५१	५३	५४	५५	५७	५८	०	१	३	५	६	७	८	१०	११
५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०
१३	१४	१६	१७	१८	२०	२२	२३	२४	२६	०	०	०	०	०	०	०

भौममंदफलसारिणी.

अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	गफ
फं.	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	५
कं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	०
	०	१२	२३	३४	४५	५६	६७	७८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	०
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	०
५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	५	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	०
०	६८	०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	०
०	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	०
०	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	०
०	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	०
अं.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	गफ
फं.	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	०
कं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
फं.	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	०
०	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	०
०	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	०
०	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	०
०	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	०

भीममंद फल सारिणी.

श्रीको	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०	प.क.
५	५	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८		५
४२	५३	६	१५	२६	३८	४८	०	११	२२	३४	४५	५६	७	१८	०	५
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८		३६
फ०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
फ०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	०
फ०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
फ०	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	०
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
५	५	५	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८
२६	४७	५८	१०	२१	३२	४३	५४	६	१६	२८	३८	४०	५१	६	१३	२४
४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३
८	८	८	८	८	८	८	९०	९०	९०	९०	९०	९१	९१	०	०	०
४६	५८	१०	२०	३०	४२	५४	६	१६	२८	३८	५०	१	२	०	०	०
श्रीको	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	प.क.
फ०	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	९०	९०	९०	९०	९०	८
०	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१०	२०	३०	४०	५०	६०	८
फ०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	०
फ०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
फ०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	०
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	०
४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	०
१८	५८	८	१७	२६	३६	४६	५५	६	१६	२६	३६	४६	५२	६	१२	०
४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२
७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	०

भौममंदफल सारिणी.

अंको	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
फ०	१०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२
क०	५४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	५४	०	०	०	०
फ०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
क०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१
फ०	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
फ०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	०
क०	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०
फ०	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
क०	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४
फ०	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०
क०	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०
फ०	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
क०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	०
अंको	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
फ०	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
क०	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४
फ०	०	२४	४८	७२	९६	०	२४	४८	७२	९६	०	२४	४८	७२	९६	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
फ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
फ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१
क०	३६	३८	४१	४३	४५	४८	५०	५३	५५	५८	०	२	५	७	१०	१२
फ०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
क०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
फ०	१४	१७	१८	२२	२४	२६	२८	३१	३६	३९	४२	४५	४८	५१	५४	५७
क०	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२
अंको	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६
फ०	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
क०	५२	५५	५८	०	२	५	७	१०	१२	१६	१७	१८	२२	२४	०	०

बुधशीघ्रफल सारिणी.

श्रीको	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	गन्ध
फ०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	३	३	३	३	१०८
	०	१६	३२	४८	५	२२	३८	५४	११	२७	४४	०	१६	३३	४८	२०
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	२०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	३	३	३	३	०
	०	१६	३२	४८	५	२२	३८	५५	११	२८	४४	०	१७	३३	५०	०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
ध०	४	४	४	४	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	०
	६	२२	३८	५५	१२	२८	४४	१	१७	३४	५०	६	२३	३९	५६	०
क०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
ध०	८	८	८	८	८	८	८	१०	१०	१०	१०	११	११	११	१२	०
	१२	२८	४५	१	१८	३४	५०	७	२३	४०	५६	१२	२८	४५	१	०
क०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
ध०	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१६	१६
	१८	३४	५१	७	२३	४०	५६	१३	२९	४६	२	१८	३५	५१	८	२४
श्रीको	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	गन्ध
फ०	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	१०७
	६	२२	३८	५४	१०	२६	४२	५८	१४	३०	४६	२	१८	३४	५०	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	३	३	३	३	०
	०	१६	३२	४८	५	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
ध०	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	०
	०	१६	३२	४८	५	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०
क०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
ध०	८	८	८	८	८	८	८	८	१०	१०	१०	१०	११	११	११	०
	०	१६	३२	४८	५	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०
क०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
फ०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	०	१६	३२	४८	५	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०

बुधशीघ्रफलसारिणी.

[illegible]

सप्तग्रहबुधशीघ्रफलसारिणी.

६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	०	ग.घ.
१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	८२
फ०	११	२२	३३	४४	५५	७	१०	२०	३०	४०	५२	६	१६	२५	३६	४४
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	४४
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	क०	०
०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	३	घ०	०
०	११	२२	३३	४४	५५	७	१०	२०	३०	४१	५२	६	१६	२५	३७	४०
१५	१६	१७	१८	१८	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२८	क०	०
२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	घ०	०
४८	५८	१०	२२	३३	४४	५५	६	१०	२०	३०	४१	५	१६	२५	३७	४०
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३८	४०	४१	४२	४३	४४	क०	०
५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	घ०	०
३६	४७	५८	१०	२१	३२	४३	५४	६	१७	२८	३९	५०	६	१३	२४	३५
४५	४६	४७	४८	४८	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५८	६०	०
८	८	८	८	८	८	८	८	८	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	०
२६	३५	४६	५८	६	२०	३१	४२	५३	६	१२	२७	३८	५०	६	१२	०
७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८८	ग.घ.	न.श्री
१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	क०	८४
४८	५६	६	१३	२१	३०	४०	५५	६	१२	२०	३०	४०	५०	६५	७०	२०
०	२४	३८	५२	६६	८०	९४	१०८	१२२	१३६	१५०	१६४	१७८	१९२	२०६	२२०	२३४
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	क०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	घ०	०
०	८	१७	२५	३४	४२	५०	५८	७	१६	२४	३२	४१	५०	५८	६०	६२
१५	१६	१७	१८	१८	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२८	क०	०
२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	घ०	०
६	१६	२३	३१	४०	४८	५६	६	१३	२०	३०	४०	५३	६५	७६	८७	९८
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३८	४०	४१	४२	४३	४४	क०	०
४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	घ०	०
१२	२०	२८	३७	४६	५५	६	११	१८	२६	३५	४४	५३	६	७	८	९
४५	४६	४७	४८	४८	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५८	६०	०
४	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	०
१०	१६	२५	३३	४२	५२	६	१७	२५	३४	४३	५०	५८	७	१५	२४	०

स्पष्टग्रहबुधशीघ्र फल सारिणी.

अं.	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	१	२	३	१०४	ग.ध.
फ.	१८ ५४ ०	१८ ५८ १२	२० २४ २४	२० ८ ३६	२० १४ ४८	२० २० ०	२० २५ १२	२० ३० २४	२० ३५ ३६	२० ४० ४८	२० ४५ ०	२० ५० १२	२० ५५ २४	२१ १ २६	२१ ६ ३६	७४ ४४
क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध.	०	५	१०	१६	२१	२६	३१	३६	४२	४७	५२	५७	६२	६७	७२	०
क.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
ध.	१ १८	१ २३	१ २८	१ ३४	१ ३९	१ ४४	१ ४९	२ ५४	२ ५९	२ ६४	२ ६९	२ ७४	२ ७९	२ ८४	२ ८९	०
क.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
ध.	२ ३६	२ ४१	२ ४६	२ ५२	२ ५७	३ ६२	३ ६७	३ ७२	३ ७७	३ ८२	३ ८७	३ ९२	३ ९७	३ १०२	३ १०७	०
क.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
ध.	३ ५४	३ ५९	४ ६४	४ ६९	४ ७४	४ ७९	४ ८४	४ ८९	४ ९४	४ ९९	४ १०४	४ १०९	४ ११४	४ ११९	४ १२४	०
अं.	१०५	८	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	ग.ध.
फ.	२१ १२ ०	२१ १० ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	५८ ८
क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध.	०	५	१०	१६	२१	२६	३१	३६	४२	४७	५२	५७	६२	६७	७२	०
क.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
ध.	०	५	१०	१६	२१	२६	३१	३६	४२	४७	५२	५७	६२	६७	७२	०
क.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
ध.	०	५	१०	१६	२१	२६	३१	३६	४२	४७	५२	५७	६२	६७	७२	०
क.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
ध.	०	५	१०	१६	२१	२६	३१	३६	४२	४७	५२	५७	६२	६७	७२	०

बुधश्रीफल सारिणी.

१२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	गण	श्रीको
२१	२१	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	१८	१८	१८	१८		
१२	५	५८	५१	४४	३८	३१	२४	१७	१०	४	५७	५०	४३	३६	२८	फ०
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	४८	
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
श्री०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०
	०	७	१४	२०	२७	३४	४१	४८	५४	१	८	१५	२२	२८	३५	
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
श्री०	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	०
	४१	४५	५६	२	८	१६	२३	३०	३६	४३	५०	५७	६	१०	१७	
क०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
श्री०	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	०
	२६	३१	३८	४६	५१	५८	५	१२	१८	२५	३२	३९	४६	५३	५९	
क०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
श्री०	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६
	६	१३	२०	२६	३३	४०	४७	५४	०	७	१४	२१	२८	३६	४१	४८
श्रीको	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	गण
क०	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१७	१७	१७	१७	१६	१६	१६	१६	१५	११
	३०	१६	५८	४२	२६	१०	५६	३८	२२	६	५०	३४	१८	२	४६	८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
श्री०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	०
	०	१६	३२	४८	६	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	०	०
०	१६	३२	४८	६	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	०
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०	०
८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	०	०
०	१६	३२	४८	६	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	०
४१	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०
१३	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	०
६	१६	३२	४८	६	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	

बुधशीघ्रफल सारिणी.

श्रीको	१५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५
फ०	१५	१५	१५	१५	१३	१३	१२	१२	११	११	११	११	१०	९	९	२०
क०	०	३	३	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
श०	०	०	०	१	१	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	०
क०	१५	१६	१७	१८	१८	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
श०	६	७	७	७	८	८	८	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	०
क०	३६	२	२९	५५	२२	४८	१४	४१	७	३४	०	२६	५३	१९	४६	०
क०	३०	३१	३१	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
श०	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१८	१८	०
क०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
श०	१९	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२२	२३	२३	२४	२४	२५	२५	२५	२६
क०	६८	१६	४१	७	३४	०	२६	५३	१९	४६	१२	३८	५	३१	५८	२६
श्रीको	१६५	१६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
श०	८	८	७	७	६	५	५	४	४	३	२	२	१	१	०	०
क०	५६	१८	४३	७	३१	५६	१०	४६	९	३३	५८	२२	४६	२१	३५	०
क०	०	२६	४८	३२	३६	०	२६	४८	३२	३६	०	२६	४८	३२	३६	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
श०	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	७	७	०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
श०	२६	३०	५	५१	१६	५२	०	३	३९	१६	५०	२६	१	३७	२२	०
क०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
श०	१७	१८	१८	१९	२०	२०	२१	२१	२२	२३	२३	२४	२४	२५	२६	०
क०	६८	२६	५०	३५	१०	४६	२२	५७	३३	८	४४	२०	५५	३१	६	०
क०	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
श०	२६	३७	३७	३८	३९	४०	४०	४१	४२	४२	४३	४३	४४	४५	४५	४६
क०	४२	१८	५३	२९	४	४०	१६	५१	२७	२	३८	१४	४८	२५	०	२६

अत्यांकगतिफलसारिणी.

अंकी	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
फ०	३७	३८	४०	४२	४३	४५	४६	४७	४८	५०	५२	५३	५५	५६	५७	५८
श०	५२	१८	४३	८	३५	१	३६	५२	१८	४३	८	३५	१	३६	५२	१८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
श०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२१	२३	२४	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	०
०	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	०
०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
०	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०

बुधमंद फलसारिणी.

अंकी	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	गफ०
फ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	४
	०	६	८	१४	१८	२४	२८	३३	३८	४३	४८	५२	५७	६	७	४
	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	१४
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	०
	०	५	१०	१४	१८	२४	२८	३३	३८	४३	४८	५२	५८	६	७	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	०
	१३	१७	२२	२६	३१	३६	४१	४६	५०	५५	०	५	८	१६	१८	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	०
	२६	२८	३३	३८	४३	४८	५२	५८	६	७	१२	१७	२२	२६	३१	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	०
	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	२५	४१	४६	५०	५५	०	५	१०	१६	१८	२४	२८	३६	३८	४३	०

बुध मंद फल सारिणी.

अंको	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	गफ
फ०	१ १२ ०	१ १५ ३६	१ १८ १२	१ २२ ४८	१ २६ २४	१ ३० ०	१ ३३ ३६	१ ३७ १२	१ ४० ४८	१ ४४ २४	१ ४८ ०	१ ५१ ३६	१ ५५ १२	१ ५८ ४८	२ ६२ २४	३ ६६ ३६
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० ४	० ७	० ११	० १४	० १८	० २२	० २५	० २८	० ३२	० ३६	० ४०	० ४३	० ४७	० ५०	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	० ५४	० ५८	१ १	१ ५	१ ९	१ १२	१ १६	१ १९	१ २३	१ २६	१ ३०	१ ३६	१ ३७	१ ४१	१ ४४	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	१ ४८	१ ५२	१ ५५	१ ५८	२ ६२	२ ६६	२ ७०	२ ७३	२ ७६	२ ८०	२ ८४	२ ८८	२ ९२	२ ९५	२ ९८	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	२ ४२	२ ४६	२ ४८	२ ५३	२ ५६	३ ०	३ ४	३ ७	३ ११	३ १४	३ १८	३ २२	३ २५	३ २८	३ ३२	३ ३६
अंको	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	गफ
फ०	२ ६ ०	२ ८ ४८	२ ११ ३६	२ १४ २४	२ १७ १२	२ २० ०	२ २२ ४८	२ २५ ३६	२ २८ २४	२ ३१ १२	२ ३४ ०	२ ३६ ४८	२ ३८ ३६	२ ४२ २४	२ ४५ १२	२ ४८ ४८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० ३	० ६	० ९	० ११	० १४	० १७	० २०	० २२	० २५	० २८	० ३१	० ३४	० ३६	० ३९	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	४२	४६	४८	५०	५३	५६	५९	६२	६६	७०	७३	७६	८०	८४	८८	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	१ २४	१ २७	१ ३०	१ ३२	१ ३५	१ ३८	१ ४१	१ ४४	१ ४६	१ ४८	१ ५२	१ ५५	१ ५८	२ ०	२ ३	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	२ ६	२ ८	२ १२	२ १४	२ १७	२ २०	२ २२	२ २५	२ २८	२ ३१	२ ३४	२ ३७	२ ४०	२ ४२	२ ४६	२ ४८

बुध मंदफल सारिणी.

अंको	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	ग.फ.
०	२ ४८ ०	२ ५० ०	२ ५२ ०	२ ५४ ०	२ ५६ ०	२ ५८ ०	३ ० ०	३ २ ०	३ ४ ०	३ ६ ०	३ ८ ०	३ १० ०	३ १२ ०	३ १४ ०	३ १६ ०	२ ०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	० ०	० २	० ४	० ६	० ८	० १०	० १२	० १४	० १६	० १८	० २०	० २२	० २४	० २६	० २८	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	१ ०	१ २	१ ४	१ ६	१ ८	१ १०	१ १२	१ १४	१ १६	१ १८	१ २०	१ २२	१ २४	१ २६	१ २८	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	१ ३०	१ ३२	१ ३४	१ ३६	१ ३८	१ ४०	१ ४२	१ ४४	१ ४६	१ ४८	१ ५०	१ ५२	१ ५४	१ ५६	१ ५८	०
अंको	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	ग.फ.
फ०	२ ३८ ०	२ ४० ०	२ ४२ ०	२ ४४ ०	२ ४६ ०	२ ४८ ०	३ ५० ०	३ ५२ ०	३ ५४ ०	३ ५६ ०	३ ५८ ०	३ ६० ०	३ ६२ ०	३ ६४ ०	३ ६६ ०	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	० ०	० १	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ७	० ८	० ९	० १०	० ११	० १२	० १३	० १४	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	६०

बुधमंद फल सारिणी.

अंको	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१
फ०	३०	३०	३०	३१	३१	३२	३२	३२	३३	३३	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
०	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०
०	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१
०	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२४	२४	२५	२५	२६

अथ गुरु शीघ्र फल सारिणी.

अंको	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
प०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	३०	३०	३०	३१	३१	३२	३२	३२	३३	३३	३४	३४	३४	३५	३५	३६
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
०	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	७	७	७	७	८
०	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०
०	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०

गुरुश्रीघ्नफलसारिणी.

अंश	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग.घ.
फ०	२ ३० ०	२ ३० ४८	२ २७ ३८	२ ५६ २४	३ ५ १२	३ १४ ०	३ २२ ४८	३ ३१ ३६	३ ४० २४	३ ४८ १२	३ ५८ ०	४ ६ ४८	४ १५ ३६	४ २४ २४	४ ३३ १२	१२ २०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० ८	० १८	० २६	० ३५	० ४४	० ५३	१ २	१ ११	१ १९	१ २८	१ ३७	१ ४६	१ ५५	२ ३	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	२ १२	२ २८	२ ३०	२ ३८	२ ४७	२ ५६	३ ५	३ १४	३ २२	३ ३१	३ ४०	३ ४८	३ ५८	४ ६	४ १५	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	४ २४	४ ३३	४ ४२	४ ५०	४ ५८	५ ६	५ १७	५ २५	५ ३४	५ ४२	५ ५२	६ १	६ १०	६ १८	६ २७	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	६ ३६	६ ४५	६ ५४	७ २	७ ११	७ २०	७ २९	७ ३८	७ ४६	७ ५५	८ ६	८ १२	८ २१	८ ३०	८ ३८	६०
अंश	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग.घ.
फ०	४ ४३	४ ५०	४ ५८	५ ७	५ १५	५ २४	५ ३३	५ ४०	५ ४६	५ ५७	६ ६	६ १४	६ २२	६ ३१	६ ३९	१३
०	२४	२५	२८	२९	३६	०	३४	४०	४३	४६	०	२४	३८	४२	४६	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० ८	० १८	० २५	० ३४	० ४३	० ५०	० ५८	१ ७	१ १६	१ २४	१ ३२	१ ४१	१ ५०	१ ५८	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	२ ६	२ १४	२ २३	२ ३१	२ ४०	२ ४८	३ ५६	३ ५	३ १३	३ २२	३ ३०	३ ३८	३ ४७	३ ५५	४ ६	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	४ १२	४ २०	४ २८	४ ३७	४ ४६	५ ५४	५ ६	५ ११	५ १९	५ २७	५ ३६	५ ४४	५ ५३	६ १	६ १०	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	६ १८	६ २६	६ ३५	६ ४३	६ ५२	७ ०	७ ८	७ १७	७ २५	७ ३४	७ ४२	७ ५०	७ ५८	८ ६	८ १६	२६

गुरुडीघ्रफलसारणी.

श्रीको	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	गण.
फ०	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	१०
	४८	५४	१	८	१५	२२	२८	३५	४२	४९	५६	२	९	१६	२३	३०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०
	०	७	१४	२०	२६	३१	३६	४१	४६	५१	५६	१	८	१५	२२	२९
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	०
	४३	४८	५६	२	८	१६	२३	३०	३६	४३	५०	५६	६	१०	१७	०
०	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	०
०	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	०
	२४	२९	३८	४६	५१	५८	५	१२	१८	२५	३२	३८	४६	५२	५८	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६
	६	१३	२०	२६	३३	४०	४७	५४	०	७	१४	२१	२८	३६	४०	४८

श्रीको	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	गण.
फ०	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१८
	३०	३५	४०	४५	५०	५६	१	६	११	१६	२२	२७	३२	३७	४२	४८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०
	०	१५	१०	१६	२१	२६	३१	३७	४२	४७	५३	५७	२	८	१३	१८
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	०
	१८	२३	२८	३४	३९	४४	४९	५४	०	५	१०	१५	२०	२५	३१	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	०
	३६	४१	४७	५२	५७	६	७	१२	१८	२३	२८	३३	३८	४४	४९	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५
	५४	५८	६	१०	१५	२०	२५	३०	३६	४१	४६	५३	५६	२	७	१२

गुरुशीघ्र फल सारिणी.

श्रीको	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	ग.घ.
फ०	८	८	८	८	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	७
०	४८	५१	५४	५७	०	४	७	१०	१३	१६	२०	२३	२६	२९	३२	४०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	४८	५१	५४	५७	१	४	७	१०	१३	१६	२०	२३	२६	२९	३२	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३
०	२४	२७	३०	३४	३७	४०	४३	४६	५०	५३	५६	५९	६२	६५	६८	७१
श्रीको	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	१	२	३	१०५	ग.घ.
फ०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	५
०	३६	३६	३७	३८	३९	४०	४०	४१	४२	४३	४४	४४	४५	४६	४७	४०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	२४	२५	२६	२६	२७	२८	२९	३०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	२४	२७	३०	३४	३७	४०	४३	४६	५०	५३	५६	५९	६२	६५	६८	७१

गुरुशीघ्र फल सारिणी.

श्रीको	१०५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	ग.ध.
फ०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२
०	४८	४५	४३	४०	३८	३६	३३	३१	२८	२६	२४	२१	१८	१६	१४	१२	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	०
म०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
०	३६	३८	४१	४३	४५	४८	५०	५३	५५	५८	०	१	१	१	१	१	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	०
०	१२	१४	१७	१८	२२	२४	२६	२८	३१	३४	३६	३८	४१	४३	४५	४८	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०
०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
०	४८	५०	५३	५५	५८	०	२	५	७	१०	१२	१४	१७	१८	२२	२४	०
श्रीको	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	ग.ध.
फ०	१०	१०	१०	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	०
०	१२	६	१	५६	५१	४६	४०	३५	३०	२५	२०	१५	८	४	५८	४०	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	०
म०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	०
०	१८	२३	२८	३४	३८	४४	४८	५४	०	५	१०	१५	२०	२६	३१	३६	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	०
०	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	०
०	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	०
०	२	२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
०	५६	५८	६	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	६०	६५	७०	०

स्पष्टग्रह गुरुतीव्र फल सारिणी.

श्रीको	१३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	गुरु
फं०	८	८	८	८	८	८	७	७	७	७	७	७	७	६	६	२
क०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
श्री०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	८
श्रीको	१५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	गुरु
०	६	६	६	६	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	३	५
क०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
श्री०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	०
०	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	६०
०	८	८	८	८	८	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२

गुरुशीघ्र फल सारिणी चक्रम्.

श्रंको	१६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	गक
क०	३	३	३	२	२	२	२	१	१	१	१	०	०	०	०	०	७
	३६	२१	७	५२	३८	२६	८	५५	६०	२६	१२	५७	६३	२८	१६	७	
क०	०	३६	१२	६८	२६	०	३६	१२	६८	२६	०	३६	१२	६८	२६	०	
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०	
क०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	०	
	०	१६	२८	६३	५८	१२	३६	६१	५५	१०	२६	३८	५३	७	२२		
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०	
क०	३	३	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	०	
	३६	५०	५	१८	३६	६८	२	१७	३१	४६	०	१६	२८	४३	५८		
क०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०	
क०	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	१०	१०	१०	०	
	१२	३६	६१	५५	१०	२३	३७	५२	६	२१	३८	५०	५	१८	३६		
क०	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	
क०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१४	१४	
	६८	२	१७	३१	४६	०	१६	२८	४३	५८	१२	२६	४१	५५	१०	२४	

गुरु मंद फल सारिणी.

श्रंको	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	गक
क०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	०
	०	५	११	१६	२२	२८	३३	३८	४४	५०	५६	१	७	१२	१८	०
क०	०	३६	१२	६८	२६	०	३६	१२	६८	२६	०	३६	१२	६८	२६	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
क०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	०
	०	६	११	१७	२२	२८	३४	३८	४५	५०	५६	२	७	१३	१८	
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
क०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	०
	२६	३०	३५	४१	४६	५२	५८	३	८	१६	२०	२८	३१	३७	४२	
क०	०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	०
क०	०	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	०
	५८	५४	५८	५	१०	१६	२२	२७	३३	३८	४४	५०	५५	१	५	
क०	५५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
क०	६	६	६	६	६	६	६	६	६	५	५	५	५	५	५	५
	११	१७	२२	२८	३४	४०	४६	५१	५७	२	८	१६	२८	३५	४०	

स्पष्टग्रहगुरुमंदफलसारिणी.

श्रां.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग.फ.
०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	०
०	२६	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	०
०	१८	२३	२८	३३	३८	४३	४८	५३	५८	६३	६८	७३	७८	८३	८८	०
०	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	०
०	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	०
०	३६	४१	४६	५१	५६	६१	६६	७१	७६	८१	८६	९१	९६	१०१	१०६	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५
०	५४	५८	६३	६८	७३	७८	८३	८८	९३	९८	१०३	१०८	११३	११८	१२३	०

गुरुमंदफलसारिणी.

श्रां.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग.फ.
०	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	०
०	४२	४६	५१	५६	६१	६६	७१	७६	८१	८६	९१	९६	१०१	१०६	१११	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	०
०	१२	१७	२२	२७	३२	३७	४२	४७	५२	५७	६२	६७	७२	७७	८२	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	०
०	२६	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५
०	३६	४१	४६	५१	५६	६१	६६	७१	७६	८१	८६	९१	९६	१०१	१०६	०

गुरुमंदफलसारिणी.

ग्रंको	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	वि.
फ०	३	३	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	०
	५५	५७	१	६	८	१२	१५	१८	२२	२६	३०	३३	३७	४०	४४	४८	१८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	०
ध०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
	५५	५८	१	५	८	१२	१६	१९	२३	२६	३०	३४	३७	४१	४४	४८	०
	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	०
	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	०
	६८	५२	५५	५८	२	६	१०	१३	१७	२०	२४	२८	३१	३५	३८	४२	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०
	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३

गुरुमंदफलसारिणी.

ग्रं.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	गफ.
०	६	४	६	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	०
	६८	५०	५३	५६	५८	२	४	७	१०	१३	१६	१८	२१	२४	२७	०
	०	६८	३६	२६	१२	०	६८	३६	२६	१२	०	६८	३६	२६	१२	१६
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	०
	५२	४५	४८	५०	५३	५६	५८	२	४	७	१०	१३	१६	१८	२१	०
	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	०
	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	०
	२४	२७	३०	३३	३५	३८	४०	४४	४६	४८	५०	५५	५८	०	३	०
	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
	१२	१६	१७	२३	२६	२८	३१	३४	३६	३८	४०	४५	४८	५०	५५	५८

स्पष्टग्रहगुरुमंदफलसारिणी.

अंश	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
फ०	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
क०	३०	३०	३१	३२	३३	३४	३४	३५	३६	३७	३८	३८	३८	३९	४०	४०
ध०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
०	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२
०	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८

स्पष्टशुक्रशीघ्रफलसारिणी.

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	ग०
फ०	०	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	५	७४
क०	०	२५	५०	१५	४०	६५	९०	११५	१४०	१६५	१९०	२१५	२४०	२६५	२९०	३१५
ध०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
०	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२
०	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८

शुक्रशीघ्रफलसारिणी.

अको	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००																																																																																																																																																																																																																																																																										
फ०	६	६	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५९	५९	५९	६०	६०	६०	६१	६१	६१	६२	६२	६२	६३	६३	६३	६४	६४	६४	६५	६५	६५	६६	६६	६६	६७	६७	६७	६८	६८	६८	६९	६९	६९	७०	७०	७०	७१	७१	७१	७२	७२	७२	७३	७३	७३	७४	७४	७४	७५	७५	७५	७६	७६	७६	७७	७७	७७	७८	७८	७८	७९	७९	७९	८०	८०	८०	८१	८१	८१	८२	८२	८२	८३	८३	८३	८४	८४	८४	८५	८५	८५	८६	८६	८६	८७	८७	८७	८८	८८	८८	८९	८९	८९	९०	९०	९०	९१	९१	९१	९२	९२	९२	९३	९३	९३	९४	९४	९४	९५	९५	९५	९६	९६	९६	९७	९७	९७	९८	९८	९८	९९	९९	९९	१००	१००	१००	१०१	१०१	१०१	१०२	१०२	१०२	१०३	१०३	१०३	१०४	१०४	१०४	१०५	१०५	१०५	१०६	१०६	१०६	१०७	१०७	१०७	१०८	१०८	१०८	१०९	१०९	१०९	११०	११०	११०	१११	१११	१११	११२	११२	११२	११३	११३	११३	११४	११४	११४	११५	११५	११५	११६	११६	११६	११७	११७	११७	११८	११८	११८	११९	११९	११९	१२०	१२०	१२०	१२१	१२१	१२१	१२२	१२२	१२२</

शुक्रशीघ्रफल सारिणी.

[illegible]

शुक्रशीघ्रफल सारिणी.

अं.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	ग.घ.
फ०	१८ ३६ ०	१८ ० ०	१८ २४ ०	१८ ४८ ०	२० १२ ०	२० ३६ ०	२१ ० ०	२१ २४ ०	२१ ४८ ०	२२ १२ ०	२२ ३६ ०	२३ ० ०	२३ २४ ०	२३ ४८ ०	२४ १२ ०	७४ ८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	० ०	० २४	० ४८	१ १२	१ ३६	२ ०	२ २४	२ ४८	३ १२	३ ३६	४ ०	४ २४	४ ४८	५ १२	५ ३६	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	६ ०	६ २४	६ ४८	७ १२	७ ३६	८ ०	८ २४	८ ४८	९ १२	९ ३६	१० ०	१० २४	१० ४८	११ १२	११ ३६	०
०	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	०
०	१२ ०	१२ २४	१२ ४८	१३ १२	१३ ३६	१४ ०	१४ २४	१४ ४८	१५ १२	१५ ३६	१६ ०	१६ २४	१६ ४८	१७ १२	१७ ३६	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	१८ ०	१८ २४	१८ ४८	१८ १२	१८ ३६	२० ०	२० २४	२० ४८	२१ १२	२१ ३६	२२ ०	२२ २४	२२ ४८	२३ १२	२३ ३६	०

शुक्रशीघ्रफल सारिणी.

अं.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	ग.घ.
फ०	२४ ३६ ०	२४ ५८ २४	२५ २० ४८	२५ ४८ १२	२६ ५ ३६	२६ २८ ०	२६ ५८ २४	२७ १२ ४८	२७ ३६ १२	२७ ५८ ३६	२८ ० ४८	२८ २४ १२	२८ ४८ ३६	२९ १२ ४८	२९ ३६ १२	७३ ८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	० ०	० २२	० ४८	१ ७	१ ३०	१ ५२	१ १४	२ ३७	२ ५९	३ २२	३ ४४	४ ६	४ २८	४ ५१	५ १४	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	५ ३६	५ ५८	६ २१	६ ४३	६ ७	७ २८	७ ५०	८ १३	८ ३५	८ ५८	९ २०	९ ४२	९ ५	१० २७	१० ५०	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	११ १२	११ ३६	११ ५७	१२ १८	१२ ४१	१३ ६	१३ २६	१३ ४८	१४ ११	१४ ३६	१४ ५८	१५ १८	१५ ४१	१५ ६	१६ २५	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	१६ ४८	१७ १०	१७ ३३	१७ ५५	१८ १८	१८ ४०	१८ ६	१९ २४	१९ ४७	२० १०	२० ३२	२० ५४	२१ १७	२१ ३९	२२ ६	२२ २८

शुक्रशीघ्रफलसारिणी.

श्रंकी	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१
फ०	३० १२ ०	३० ३२ ४८	३० ५३ २६	३१ १४ २४	३१ ३४ १२	३१ ५६ ०	३२ १६ ४८	३२ ३७ ३६	३२ ५८ २४	३३ १८ १२	३३ ४० ०	३४ ० ४८	३४ ३१ ३६	३४ ५२ २४	३४ १ १२	३५ १२ १२	७२ ८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०	
घ०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	०	
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०	
०	५	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	८	८	९	०	
०	३३	१२	५४	१४	३५	५६	१७	३८	५८	१९	४०	१	२२	४२	३	०	
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०	
०	१०	१०	६	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१५	०	
०	२४	४५	११	२६	४७	८	२८	५०	१०	३१	५२	१३	३४	५५	१५	०	
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	०	
०	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९	२०	२०	२०	
०	३६	५७	१८	३८	५९	२०	४२	२	२३	४३	६	२६	४६	६	२७	४८	

शुक्रशीघ्रफल सारिणी.

श्रंकी	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६
फ०	३५ २६ ०	३५ ४३ १२	३६ ४ २४	३६ २१ ३६	३६ ४० ४८	३७ ० ०	३७ १८ २६	३७ ३७ २६	३७ ५७ ४८	३८ १६ ४८	३८ ३६ ०	३८ ५५ १२	३८ १४ २८	३९ ३३ २६	३९ ५३ ४८	४० ५३ ४८	७१
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०	
घ०	० ०	० १८	० ३८	० ५७	१ १७	१ ३६	१ ५५	२ १४	२ ३३	२ ५२	३ १२	३ ३१	३ ५०	४ १०	४ २८	०	
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०	
०	४ ४८	५ ७	५ २६	५ ४५	६ ४	६ २४	६ ४३	७ २	७ २२	७ ४०	८ ०	८ १८	८ ३८	८ ५७	९ १७	०	
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०	
०	८ ३६	८ ५५	१० १४	१० ३४	१० ५३	११ १२	११ ३१	११ ५०	१२ ११	१२ ३८	१२ ४८	१३ ७	१३ २६	१३ ४६	१४ ५	०	
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
०	१६ ४	१६ ४३	१५ २	१५ २२	१५ ४१	१६ ०	१६ १८	१६ ३६	१६ ५८	१७ १७	१७ ३६	१७ ५५	१८ १४	१८ ३४	१८ ५३	१९	१९

शुक्रशीघ्रफलसारिणी.

श्रीको	१०५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	ग.घ
फ०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	
०	१२	२७	४२	५७	१२	२८	४३	५८	१३	२८	४४	५९	१४	२८	४४	६८
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	०
घ०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	०
०	१५	३०	४६	१	१६	३१	४६	२	१७	३२	४७	२	१८	३३	४८	०
०	१६	१७	१८	१८	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	०
०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	०
	७	८	८	८	८	८	८	८	८	१०	१०	१०	१०	११	११	०
०	५१	६	२२	३७	५२	७	२२	३८	५३	८	२३	३८	५४	८	२४	०
	४६	४७	४८	४८	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०
०	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१५	०
	३८	५८	१०	२४	४०	५५	१०	२६	४१	५६	११	२६	४२	५७	१२	०

शुक्रशीघ्रफलसारिणी.

श्रीको	१२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	ग.घ
फ०	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	६४
०	०	८	१६	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२४	३२	४०	४८	५७	२३
०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	०
०	१५	१६	१७	१८	१८	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	०
०	६	१४	२३	३१	४०	४८	५६	५	१३	२२	३०	३८	४७	५५	६	०
०	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	०
	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	०
०	१२	२०	२८	३७	४६	५४	२	११	१८	२८	३६	४४	५३	१	८	०
०	४५	४६	४७	४८	४८	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	०
०	१८	२६	३५	४३	५२	०	८	१७	२५	३४	४२	५०	५८	७	१५	२४

शुक्रशीघ्रफलसारिणी.

अंको	१३५	२६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	ग.ध.
फं०	४६	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४४	४६	४६	४६	४६	५४
कं०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
मं०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	०
	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	०
	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	०

शुक्रशीघ्रफलसारिणी.

अंको	१५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	ग.ध.
	४६	४३	४२	४१	४१	४०	३९	३८	३८	३७	३६	३५	३४	३४	३३	२८
फं०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
मं०	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	११	१२	१३	१४	१४	१५	१६	१७	१७	१८	१९	२०	२१	२१	२२	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	२३	२४	२४	२५	२६	२७	२८	२८	२९	३०	३१	३१	३२	३३	३४	०
	२४	११	५०	४४	३१	१८	५	५२	२८	२५	१२	५८	४६	३२	१९	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	२५	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	०

शुक्रशीघ्रफलसारिणी.

अक्षर	१६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	गण
फ०	१२	३०	२८	२६	२३	२१	१८	१७	१५	१३	१०	८	६	४	२	०	
३२६	२६	२५	१५	६	५४	४४	२३	२३	१२	२	५२	४१	३१	२०	१०	०	
	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०	
३३	०	२	४	६	८	१०	१३	१५	१७	१८	२१	२३	२६	२८	३०	०	
	०	१०	२१	३१	४२	५३	६	१३	२३	३४	४४	५४	६	१५	२६	०	
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०	
	११	३४	३६	३८	४१	४३	४५	४७	४८	५२	५४	५६	५८	६०	६३	०	
	३६	४६	५७	७	१८	२८	३८	४८	५८	१०	२०	३०	४०	५१	६२	०	
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०	
	६५	६७	६८	७१	७३	७६	७८	८०	८२	८४	८६	८८	८९	९०	९१	०	
	१२	२१	३३	४३	५४	६	१४	२५	३५	४५	५६	६	१७	२७	३८	०	
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	८७	८८	१०२	१०४	१०६	१०८	११०	११२	११५	११७	११८	१२१	१२३	१२६	१२८	१३०	
	४८	५८	८	१८	३०	४०	५०	१	११	२२	३२	४२	५३	६३	७३	८४	

अंत्यांकफलसारिणी.

अक्षर	१६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	गण
फ०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	२	१	१	१	१	१	०	
३३	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	
	ध.	ध.	ध.	ध.	ध.	ध.	ध.	ध.	ध.	ध.	ध.	ध.	ध.	ध.	ध.	ध.	
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०	
३३	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	०	
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०	
	५	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	८	८	८	०	
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०	
	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	०	
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	
	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	
	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	२०	
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	

अंशंकगतिफल सारिणी.

अंश	१६५	१६६	१६७	१६८	६८	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
६	०	०	३	७	१०	१३	१७	२०	२३	२७	३०	३३	३७	४०	४३	४७
८	४८	३२	५२	१२	३२	५२	१२	३२	५२	१२	३२	५२	१२	३२	५२	१२
९	४८	३२	५२	१२	३२	५२	१२	३२	५२	१२	३२	५२	१२	३२	५२	१२
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
८०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
८०	०	३	७	१०	१३	१७	२०	२३	२७	३०	३३	३७	४०	४३	४७	५०
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
५०	५३	५७	०	३	७	१०	१३	१७	२०	२३	२७	३०	३३	३७	४०	४३
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
४०	४३	४७	५०	५३	५७	०	३	७	१०	१३	१७	२०	२३	२७	३०	३३
४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१
३०	३३	३७	४०	४३	४७	५०	५३	५७	०	३	७	१०	१३	१७	२०	२३

शुक्रमंद फल सारिणी.

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	२	४	७	८	१२	१६	१९	२२	२४	२६	२८	३१	३३	३५	३७	३९
०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	६०	८४
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
५०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५०	०	२	५	७	१०	१२	१६	१७	२०	२२	२४	२६	२८	३१	३३	३५
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
३५	३८	४१	४३	४५	४८	५०	५३	५५	५८	०	२	५	७	१०	१२	१६
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१२	१६	१७	१८	२२	२४	२६	२८	३१	३३	३५	३७	४०	४३	४५	४७	४९
५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
६८	५०	५३	५७	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१

शुक्रमंदफलसारिणी-

श्रिका	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	गण
फ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	
क०	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	०	२	४	२
ध०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	०
	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	०
	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२
	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	०

शुक्रमंदफलसारिणी-

श्रिका	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	गण
	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	
	६	६	७	८	८	१०	१०	११	१२	१३	१४	१४	१५	१६	१७	०
	०	४८	२६	२६	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	४८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	०
	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	२६	२५	२६	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	०

शुक्रमंदफलसारिणी-

अक्षि	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	मि
फ०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	०
ध०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	६	६	७	७	८	८	८	८	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१८	१८	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२२	२३	२३	२४	२४	०

शुक्रमंदफलसारिणी-

अक्षि	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	मि
फ०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	६	६	७	७	८	८	८	८	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१८	१८
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२२	२३	२३	२४	२४

शुक्रमंदफलसारिणी.

अंक	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	ग.
०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	०

शनिशीघ्रफलसारिणी.

अंक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	ग.प.
	० ४ ०	० ६ ०	१२ ०	१८ ०	२४ ०	३० ०	३६ ०	४२ ०	४८ ०	५४ ०	० ०	१ ६ ०	१ १२ ०	१ १८ ०	१ २४ ०	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	० ०	० ६	० १२	० १८	० २४	० ३०	० ३६	० ४२	० ४८	० ५४	१ ०	१ ६	१ १२	१ १८	१ २४	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	१ ३०	१ ३६	१ ४२	१ ४८	१ ५४	२ ०	२ ६	२ १२	२ १८	२ २४	२ ३०	२ ३६	२ ४२	२ ४८	२ ५४	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	३ ०	३ ६	३ १२	३ १८	३ २४	३ ३०	३ ३६	३ ४२	३ ४८	३ ५४	४ ०	४ ६	४ १२	४ १८	४ २४	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	४ ३०	४ ३६	४ ४२	४ ४८	४ ५४	५ ०	५ ६	५ १२	५ १८	५ २४	५ ३०	५ ३६	५ ४२	५ ४८	५ ५४	०

शनिशीघ्रफलसारिणी.

अंक	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	०
२	३०	३५	४०	४५	५०	५६	१	६	११	१६	२२	२७	३२	३७	४२	४७
३	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	१२
४	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०
६	०	५	१०	१६	२१	२६	३१	३६	४२	४७	५२	५७	०	५	१०	१५
७	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
८	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	०
९	१८	२३	२८	३४	३९	४४	४९	५४	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	०
१०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
११	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
१२	३६	४१	४६	५२	५७	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०
१३	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०
१४	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	०
१५	५८	४	१०	१५	२०	२५	३०	३६	४१	४६	५१	५६	०	५	१०	१५

शनिशीघ्रफलसारिणी.

अंक	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
१	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
२	४८	५२	५६	१	५	१०	१६	२१	२७	३२	३७	४२	४७	५२	५७	६२
३	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	६०
४	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०
६	०	५	१०	१६	२१	२६	३१	३६	४२	४७	५२	५७	०	५	१०	१५
७	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
८	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	०
९	६	१०	१५	२०	२६	३१	३६	४२	४७	५२	५७	०	५	१०	१५	२०
१०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
११	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
१२	३६	४१	४६	५२	५७	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०
१३	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०
१४	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	०
१५	५८	४	१०	१५	२०	२५	३०	३६	४१	४६	५१	५६	०	५	१०	१५

स्पष्टग्रहः शनिशीघ्र फल सारिणी.

अंको	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	गण
फ०	३५४	३५७	३६०	३६३	३६६	३६९	३७२	३७५	३७८	३८१	३८४	३८७	३९०	३९३	३९६	३९९	४०२
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	५४	५७	६०	६३	६६	६९	७२	७५	७८	८१	८४	८७	९०	९३	९६	९९	१०२
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
	४८	५२	५५	५८	६२	६५	६८	७२	७५	७८	८२	८५	८८	९२	९५	९८	१०२
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१
	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३

शनिशीघ्र फल सारिणी.

अंको	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	गण
फ०	४०	४५	५०	५५	६०	६५	७०	७५	८०	८५	९०	९५	१००	१०५	११०	११५
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१
	३६	३८	४१	४३	४५	४८	५०	५३	५५	५८	६०	६३	६५	६८	७०	७३
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	१२	१४	१७	१९	२२	२४	२६	२८	३१	३३	३६	३८	४१	४३	४५	४८
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२

शनिशीघ्रफलसारिणी.

श्रीको	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१
फ.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
ध.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१
	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	५४	५५	५६	५७	५८	५९	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०

शनिशीघ्रफलसारिणी.

श्रीको	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	१	२	३	४	५	६
फ.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
ध.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	५४	५५	५६	५७	५८	५९	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०

शनिशीघ्रफल सारिणीः

श्री	१०५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	ग	घ
फ.	५ ४२ ०	५ ४० २६	५ ३८ ६८	५ ३७ १२	५ ३५ ३६	५ ३४ ०	५ ३२ २४	५ ३० ४०	५ २८ १२	५ २७ ३६	५ २६ ०	५ २६ २४	५ २२ ६८	५ २१ १३	५ २१ ३६	०	२६
क.	०	१	३	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०	
ख.	० ०	० २	० ३	० ५	० ६	० ८	० १०	० ११	० १३	० १४	० १६	० १८	० १८	० २१	० २२	०	
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०	
	० २४	० २६	० २७	० २८	० ३०	० ३२	० ३४	० ३५	० ३७	० ३८	० ४०	० ४२	० ४३	० ४५	० ४६	०	
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०	
	० ४८	० ५०	० ५१	० ५३	० ५४	० ५६	० ५८	० ५९	१ १	१ २	१ ४	१ ६	१ ७	१ ९	१ १०	०	
	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	
	१ १२	१ १४	१ १५	१ १७	१ १८	१ २०	१ २२	१ २३	१ २५	१ २६	१ २८	१ ३०	१ ३१	१ ३३	१ ३४	१ ३६	

शनिशीघ्रफलसारिणी.

श्री	१२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
फ.	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६
क.	१०	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	५४	५९	६४	६९	७४	७९	८४
श.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१५	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	५४	५९	६४	६९	७४	७९	८४	८९
२	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
३	४०	५३	५८	५९	१	६	७	१०	१४	१७	२०	२३	२७	३०	३३	०
४	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	=
५	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	०
६	३६	३९	४२	४६	४९	५२	५५	५९	६	६	६	११	१६	१८	२१	०
७	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
८	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
९	२४	२७	३०	३६	३७	४०	४३	४६	५०	५३	५६	५९	६	६	६	१०

शनिशीघ्रफलसारिणी.

श्रीको	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	१५०
फं०	४	४	४	४	४	४	४	३	३	३	३	३	३	३	३	३
कं०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
फं०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	०
	१२	१७	२२	२६	३१	३६	४१	४६	५०	५५	०	५	८	१४	१८	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	०
	२६	२८	३३	३८	४२	४८	५३	५८	६३	६८	७३	७८	८३	८८	९३	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	३६	४१	४६	५०	५५	०	५	१०	१४	१८	२३	२८	३३	३८	४३	४८

शनिशीघ्रफलसारिणी.

श्रीकी	१५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५
फं.	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
कं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
मु.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३
	३५	४२	४८	५४	०	६	२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	
	३२	३३	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८
	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	६०	६६	७२	७८	८४	९०	९६
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१
	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६

शनिशीघ्रफलसारिणी.

मार्ग	१६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	गण
फ	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	५
क	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	५
म	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	५
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७
३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५
४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१

शनिमंदफलसारिणी.

मार्ग	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	गण
फ	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	५
क	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	५
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५
४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०

शनिमंदफलसारिणी-

अं.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	गफ
फ.	१ ५४	२ २४	३ ४८	४ १२	५ २४	६ ३६	७ ४८	८ ६०	९ ७२	१० ८४	११ ९६	१२ १०८	१३ १२०	१४ १३२	१५ १४४	०
क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४	०
	६	१४	२२	३१	४०	४८	५५	६	१३	२१	३०	३८	४७	५५	६	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	०
	१२	२०	२९	३७	४६	५४	६	११	१८	२८	३६	४४	५३	६	७	०
	४४	५६	६७	७८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	०
	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	०
	१८	२६	३५	४३	५२	०	८	१७	२५	३४	४२	५०	५९	६७	७५	२४

शनिमंदफलसारिणी-

अं.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	गफ
फ.	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	०
क.	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	०
	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	६	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	०
	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	६	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	०
	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	०
	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	६	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०

शनिमंदफल सारिणी.

श्र.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	म.फ.
फ.	६ ०	६ ०	६ १३	६ २०	६ २७	६ ३४	६ ४०	६ ४७	६ ५४	७ १	७ ८	७ १६	७ २१	७ २८	७ ३५	०
क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ.	० ०	० ७	० १४	० २०	० २७	० ३४	० ४१	० ४८	० ५४	१ १	१ ८	१ १५	१ २२	१ २८	१ ३५	१
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	१ ४२	१ ४९	१ ५६	२ २	२ ९	२ १६	२ २३	२ ३०	२ ३६	२ ४३	२ ५०	२ ५७	३ ४	३ १०	३ १७	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	३ २४	३ ३१	३ ३८	३ ४४	३ ५१	४ ५८	४ ५	४ १२	४ १९	४ २५	४ ३२	४ ३९	४ ४६	४ ५२	४ ५९	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	५ ६	५ १३	५ २०	५ २६	५ ३३	५ ४०	५ ४७	५ ५४	६ ०	६ ७	६ १४	६ २१	६ २८	६ ३५	६ ४०	६८

शनिमंदफल सारिणी.

श्र.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	म.फ.
फ.	७ ४२	७ ४९	७ ५६	७ ५६	८ १	८ ६	८ १०	८ १५	८ २०	८ २५	८ ३०	८ ३६	८ ४२	८ ४८	८ ५४	०
क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ.	० ०	० ५	० १०	० १४	० १९	० २४	० २८	० ३४	० ३९	० ४३	० ४८	० ५३	० ५८	० ६२	० ६७	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	१ १२	१ १७	१ २२	१ २६	१ ३१	१ ३६	१ ४१	१ ४६	१ ५०	१ ५५	२ ०	२ ५	२ ९	२ १४	२ १९	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	२ २४	२ २९	२ ३३	२ ३८	२ ४२	२ ४८	२ ५४	२ ५९	३ ०	३ ७	३ १२	३ १७	३ २२	३ २६	३ ३१	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	३ ३६	३ ४१	३ ४६	३ ५०	३ ५५	४ ०	४ ५	४ १०	४ १६	४ २१	४ २६	४ ३१	४ ३६	४ ४०	४ ४५	६८

शनिमंदफलसारिणी.

अ.	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
फ०	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
क०	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९
घ०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
घ०	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९
क०	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५
घ०	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१
क०	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७
घ०	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३
क०	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९

॥ इति पंचतारा स्पष्टी करण सारिणी संपूर्णम् ॥

प्रथमशीघ्रफल.

यह मध्यम सूर्य ००।११।११।५६ इस्मेंसे मध्यम भौम ५।२२।०७।२४ कम किया तो यह ०६।१२।०४।३२ भौम का प्रथम शीघ्र केन्द्र भया यह ६ राशी से जादा है इसवास्ते १२ में पतित किया ५।१०।५५।२८ यह भया इसके अंश १६०।५५।२८ इसवास्ते इहां भौम शीघ्र फल सारिणी कोषक १६० के नीचे का अंक २८।५२।०० इसको और अंश के नीचे कला ५५ है. इसवास्ते ५५ कला वि कला कोषक के नीचे का कलादि फल ४३।२८ अब अंश कला के नीचे वि कला २८ है. इसवास्ते २८ कला विकला कोषक के नीचे का विकलादि फल २२।१३ यह ऋण सारिणी में लिखा है. इसवास्ते लिया जो फल २८।५२।०० इस्में फल ००।००।०० यह प्रथम शीघ्र फल भया इसका अर्द्ध कि या तो ००।५१।००। अब केन्द्र तुलका है इसवास्ते ऋण यह मध्यम भौम ५।२२।०७।२४ इस्में अर्द्ध कम किया तो ५।०८।३२ यह दल संस्कृत भौम भया इसी री तिसे और ग्रह करना केन्द्रादि सहित सब ग्रह ३२ के पत्र में लिख दिये हैं.

भौमादिमंदोच्चम्-

मं	बु	रु	शु	श
४	७	६	३	८
०	०	०	०	०
०	०	०	०	०

मंदफल-

भौमका मंदोच्च राशी ४।०।० इ-
स्से दल संस्थित भौम ५।८।३।२४
कमकिया तो बाकी १०।२१।५६।३६
यह भौमका मंदकेन्द्र भया इस्का

भुज १।८।३।२४ इस्के अंश ३८।३।२४ हैं। इसवास्ते इहा भौम मन्दफ-
ल सारिणी कोष्ठक ३८ इस्के नीचेका अंक ७।११।३६ अब अंशके नीचे
कला ३ है इसवास्ते ३ कला विकला कोष्ठकके नीचेका फल कलादि ०।
३४ अब अंशकलाके नीचे विकला २४ है इसवास्ते २४ कला विकला
कोष्ठकके नीचेका फल विकलादि ४।२८ एकत्र करके पूर्व फलमें युक्त
किया तो यह ७।१२।१४ भौमका मंदफल भया। यह मंदकेन्द्र तुलादि
क है इसवास्ते ऋणतो यह मध्यम भौम ५।२२।७।२४ इस्में कम किया
तो ५।१६।५५।१० यह मंदस्पष्ट भौम भया। इसी रीतिसे बुधादिक यह
करना + अब यह मंदफल ७।१२।१४ विपरीत कहिये धन इसवास्ते
प्रथम शीघ्र केन्द्र ६।१८।४।३२ इस्में युक्त किया तो ६।२६।१६।४६ य-
ह भौमका अंतिम शीघ्र केन्द्र भया।

अंतिम शीघ्र फल-

यह केन्द्र षडाधिक है इसवास्ते १२ में पतित किया ५।३।४३।१४ यह बु-
वा अब इस्के अंश १५३।४३।१४ इस्का पूर्वोक्त शीघ्र फल सारिणी कोष्ठ-
क १५३ का नीचेका अंशदि फल ३४।२५।१२ यह अब अंशके नीचे
कला ४३ है इसवास्ते ४३ कला विकला कोष्ठकके नीचेका फल कलादि
३४।७ यह अंशकलाके नीचे विकला १४ है इसवास्ते १४ कला विकला
कोष्ठकमेंका विकलादि फल ११।६ यह सब फल ऋण सारिणीमें लिखा है इ-
सवास्ते प्रथम जो फल ३४।२५।१२ इस्में कम किया तो ३३।५०।५४ यह
अंतिम शीघ्र फल भया यह केन्द्र तुलाका है इसवास्ते ऋण मंदस्पष्ट भौम
५।१६।५५।१० इस्में कम किया तो ४।११।४।१६ यह स्पष्ट भौम भया।

भौम शुक्र अंतिम शीघ्र केन्द्रका अंश १६५ से १८० तक अंश आवते
हैं जद उस्का शीघ्र फल लेनेके खातर और उदाहरण कहते हैं मंगल का
अंतिम शीघ्र केन्द्रका अंश १७०।२०।२२ कल्पना करके अब मंगल शी-
घ्र केन्द्र सारिणीमें अंत्यांक सारिणीमें १७० अंशके नीचे अंशाद फल
१।०।० यह अब अंशके नीचे कला २० इस्का फल ४।०।० और क-

लाफे नीचे विकला २२ इस्का फल ४।२४ एकत्र करके ४।४ इस्की पू
र्वमें लियो जो फल सो सारणीमें धन लिखा है इसवास्ते कला विकला
फल युक्त करके १।४।४ यह फल केन्द्र का वससे ऋण धन ग्रहमें करना
गत्युदाहरणम्.

भौमका अंतिम शीघ्र केन्द्रका अंश १५३ आया है इसवास्ते १५३ को
एकका गतिफल ७।३८ कलादि धन यह और मंद फल सारिणी को एक
३८ इस्का गतिफल ५।३६ कलादि यह मंद केन्द्र नकरादिक है इसवा
त्ते ऋण सो पूर्व गति फलमें घटाया तो बाकी २।२ यह धन फल आया य
ही मंगलकी स्पष्ट गति भई इस्के प्रमाण ऊपरके सारिणी परसे स्पष्ट
बुधगुरु शुक्र शनि इनकी स्पष्ट गति वनावना राहू जो अध्यम है वही
सर्वदा स्पष्ट समझना विशेष यह उस्में ८ राशी युक्त करना तो केनू होता है
श्लोक.

जगदीशेनरचिते केशवीग्रंथटिप्पणे ॥
स्पष्टाधिकारपूर्णोचितद्रावार्थप्रकाशकः ॥

इति स्पष्टाधिकारः

भौमादिकोंका द्वितीय शीघ्र केन्द्रांश परसे अस्तादि
जाननका प्रकारः

श्लोक

त्रिभूपैः शरत्त्रिण्युभिः शरत्केन गमूषैः स्थितैः क्रमालुक्ताद्याः ॥
चलकेन्द्रलवैः प्रयाति वक्रं भगणान्तेः पतितैर्भ्रजंति मार्गम् ॥
क्षितिज्ञोऽयमैरुदेति पूर्व गुरुरिन्द्रे रविजस्तु सप्तचन्द्रेः ॥
स्वन्वोदयभागसंविहानं भोगणां शरपरत्रयातिचास्तम् ॥
स्वयारेभ्यजितैः परे जातृणैरुदयोस्तोः क्षादिनेर्नगाद्रिभूमिः ॥
उदयोदयसंन्यस्य हीन्दुभिः प्रागस्तोदिन्दहनैश्च पटसुरैः स्यात् ॥

टीका:- अंतिम शीघ्र केन्द्रके अंश क्रमसे भौमका १५३ बुधका १५५ गुरु
का १५५ शुक्रका १६७ शनिका ११३ इतने अंश होय तो क्रमसे वक्राग्रह हो
गिं. और अगले भौम १५७ बुध १५५ गुरु १५५ शुक्र १६३ शनि १६७
इतने अंतिम शीघ्र केन्द्रके अंश होय तो क्रमसे वह ग्रह मार्ग होत हैं.

अंतिमशीघ्रकेन्द्रके अंशक्रमसे भीमका २८ गुरुका १४ और शनिका १७ होय तो भीमगुरु शनि इनका उदय पूर्वमें होता है- और अंतिमशीघ्रकेन्द्रके अंश अनुक्रमसे ३३२।३४६।३४३ इतने होय तो भीमगुरुशनि इनका अस्त पश्चिममें होता है- और अंतिमशीघ्रकेन्द्रके अंशबुधका ५० शुक्रका २४ यह होय तो बुधशुक्र इनका पश्चिममें उदय होता है- और अंतिमशीघ्रकेन्द्रके अंशक्रमसे १५५।१७७ यह होय तो बुधशुक्र इनका अस्त पश्चिममें होता है- और अंतिमशीघ्रकेन्द्रके अंशक्रमसे २०५।१८३ यह होय तो बुधशुक्र इनका पूर्वमें उदय होता है + और अंतिमशीघ्रकेन्द्रके अंशक्रमसे ३१०।३२६ यह होय तो बुधशुक्र इनका पूर्वमें अस्त होता है.

वक्रोदयादिगदितांशकतोऽधिकार्याः केन्द्रांशकाः क्षि-
 श्लोक } तिसुताद्विगुणास्त्रिभक्ताः सांकाशका दशहतांगहताः कु-
 भक्तावक्राद्यमासदिवसैः क्रमतो गवैष्यम् ॥

टीका:- ग्रहोंका वक्र- उदय- अस्त- मार्ग इन्होंके जो अंतिमशीघ्रकेन्द्रांशक है वह उक्त शीघ्रकेन्द्रांश और अभीष्ट शीघ्रकेन्द्रांश इनका अंतर करके अंतरांशक्रमसे भीमका दूना करना और बुधको ३ से भाग देना गुरुको १० से गुणके ८ से भाग देना और शुक्रको १० से गुणके ६ से भाग देना और शनिको १ से भाग देना तो भागाकार आवे सो वह दिन भया अनंतर उक्त शीघ्रकेन्द्रसे अभीष्ट शीघ्रकेन्द्रांश अधिक होय तो वक्र उदय अस्त और मार्ग यह होयके उतने दिन भये ऐसा जानना. और जो उक्त शीघ्रकेन्द्रसे अभीष्टकेन्द्रांशकमती होय तो वक्र- उदय- अस्त और मार्ग यह होनेका इतने दिन आगे होगा ऐसा समझना.

स्वगाः स्वघाः सजवाः

सू.	च.	मं.	बु.	बु.	शु.	श.	रा.	के.	लंकोदयल.		
१३	५	११	११	५	१०	३	४	१०	ग.	२७८	मं.
१०	२३	१४	२३	१२	२६	१३	२१	२१	ए.	२८८	जु.
४३	३५	१६	५३	३७	४	२३	४०	८	कि.	३२३	ग.
५८	७३१	२	१४	५. व.	५४	४	३	३	फ.	३२३	घ.
१६	४३	२	४४	२६	३८	३८	११	११	हि.	२८८	ख.
									क.	२७८	ग.

लग्न बनानेके लिए लंकोदयसे स्वदेशोदयत्यादने कि रीति ॥

लङ्कोदयानागतुरङ्गदस्त्रा २७८ गोङ्गागन्धिनो-
 श्लोक } २८८ रामरदा ३२३ विनाडयः ॥ क्रमोक्रमस्थाश्चर-
 स्वण्डकैः स्वैः क्रमोक्रमस्थाश्च विहीनयुक्ताः ॥

लंका में मेष राशीका उदय २७८ पल वृषभ राशीका उदय २८८ पल. मिथुन

राशीका उदय ३२३ पल. कर्क राशीका उदय ३२३ पल सिंह राशीका उदय २८८ पल कन्या राशीका उदय २७८ पल रहता है और लंका में तुला राशीसे मीन राशीतक उदयके पल कन्या राशीसे उलटा मेष राशीतक लिखा है सो जानना. जिस देशका उदय करना होय उस देशका चरखंडालेके क्रमसे मेष वृष मिथुन इनका पलात्मक जो उदय उस्में कम करना और वही चरखंडा उलटा कर्क सिंह कन्या इनका जो पलात्मक उदय उस्में युक्त करना तो स्वदेशका उदय मेषसे कन्यातक होता है. और वही उदय उलटा तुलासे मीनतक होता है.

स्वदेशोदय बनानेका उदाहरण कहते हैं:

टी०- मेषका पलात्मक उदय २७८ इस्मेंसे प्रथम चरखण्ड ७० यह कम किया तो २०८ यह पलात्मक स्वदेशका मेषका उदय वृषभका पलात्मक उदय २८८ इस्में द्वितीय चरखण्ड ५६ यह कम किया तो २५३ यह स्वदेशका वृषका उदय मिथुनका उदय ३२३ इस्में तृतीय चरखंड २३ यह कम किया तो ३०० यह मिथुनका स्वदेशी उदय कर्कका उदय ३२३ सिंहका उदय २८८ कन्याका उदय २७८ इन सबमें क्रमसे ३३, ५६, ७० यह युक्त किया तो क्रमसे कर्कका ३५६ सिंहका ३५५ कन्याका ३४८ यह पलात्मक स्वदेशका लग्न बना अथ यह उलटे रीतिसे तुलाका ३४८ दशिकका ३५५ धनका ३६६ मकरका ३०० कुम्भका २४३ मीनका २०८ यह पलात्मक स्वदेशका उदय बना

लग्न बनानेका प्रकार:

राशीका	१	२	३	४	५	६	तात्कालिकः
२४८	३५५	३५६	३००	२६३	२०८		सायनः स्वोदयमा
७५	८५	९५	१०५	११५	१२५		भोग्यांशः स्वच्युद्धता भोग्यकालः

॥ एवमांशो भवेद्यत्कालो भोग्यः ॥
गोध्योऽतीतनाडी पलेभ्यः ॥

तदनुर्जहा हि ग्रहोदयांश्चोपेगगनगुणध्रमशुद्धत्वाद्यम् ॥
सहितमजादिग्रहेरशुद्धपूर्वे भवति विलम्बमदोचनांशहीनम् ॥
भोग्यतोत्प्रेका कालात्तरा माहतात्स्वोदयाभांशसुभास्कर-
स्यान्तनुः निशितुसपद्धाकात्स्यान्तनूरिष्टकालः ॥

टीका- जिस कालका लग्न करना होय उस कालका स्पष्ट सूर्य करके उसी अयनांश युक्त करना जो अंक आवे उस्मेंसे राशीका आग करके जो अंशदिक फल रहे सो युक्त होता है और जो युक्त हो गो १० अंशमें कम करनेसे अंशदि भोग्य फल होता है. अनंतर पूर्वमें जिस राशीका लग्न

गकिया है उसमें १ युक्त करके नत्परिमित राशीके उदयसे भुक्त और भोग्य गुण देना जो गुणाकार आवै उसको ३० से भाग देना जो भागाकार आवै सो क्रमसे भुक्त काल और भोग्य इनका पल होता है अब अभीष्ट घटिका जो होय उसका पल करके उसमें भोग्य कालका पल कम करना जो शेष रहै उसमें से जिस उदयसे गुणन किया होय उसके आगेके जितने पलात्मक उदय कम होय उतने कम करना और जो पलात्मक शेष रहै उसको ३० से गुणके जो गुणाकार आवै उसको जो उदय कम न भया होय वह उदयसे भाग देको फल अंशादि आवेगा उसमें मेष राशीसे जितना राशीका उदय कम भया होय उतनी राशी युक्त करना जो फल आवै उसमें से अयनांशा कमती करना तो अभीष्ट कालका राश्यादिलभ होता है

भुक्त कालसे लग्न करना होय तो अभीष्ट काल रखते बरवत जो इष्ट घटी पल होय उसको ६० में घटायकर जो शेष रहै उसको अभीष्ट काल रखना भुक्त घटायकर जब लग्न घटावै उस बरवत उलटालग्न घटावै जैसे मेषका उदयसे गुणीतो मीनकुंभादिक कमती करै और सब क्रिया भोग्यवत् करै.

रात्रीका लग्न करना होय तो स्पष्ट सूर्य्य में ६ राशी युक्त करना अनंतर पूर्वरीति प्रमाण लग्न बनावना परंतु अभीष्ट काल रखते बरवत जो इष्ट काल होय उसमें दिनमान कम करके जो शेष रहै सो अभीष्ट रखना.

जन्म काल सूर्य्योदयसे ३२ घटिका १ पल उस बरवतका लग्न साधन कर तात्कालिक स्पष्ट सूर्य्य ००।१३।१०।४२ इस्में अयनांशा २२।४४।०३ यह युक्त करके १५।५४।४५ यह सायन सूर्य्य इस्की राशी त्याग करके ५।५४।४५ यह भुक्त भया यह ३० अंशमें कम करके अंशादि २४।०५।१५ यह भोग्य भया इस्की त्याग किया जो राशी उसमें १ युक्त करके एषके उदय २४३ से गुणके अंशादि फल ५८५३ कला १५ विकला ४५ इस्को ३० से भाग देके १८५।३।१५।४५ यह पलात्मक भोग्य काल भया इसही प्रकार भुक्त काल साधन करना अब सूर्य्योदयसे अभीष्ट घटी ३२ पल ०१ इस्का पल किया तो १८२।१ इस्में भोग्य काल १८५।३।१५।४५ यह कम करके शेष १७२५।२६।४४।१५ यह इस्में मियुनोदय ३०० कर्कोदय ३४६ सिंहोदय ३५५ कन्योदय ३४८ तुलोदय ३४८ यह कम करके शेष २८ पल इस्में एश्विकोदय कम होतानहीं इसवास्ती शेष पल २८ इस्को ३० से गुणके नीचेका अंक २६ युक्त करके ८६६ यह इस्को एश्विकोदय ३५५ से भाग देके अंश २ लब्ध भया शेष १५६ इस्को ६० से गुण जो ८३६० इस्में कला ४४ युक्त करी तो यह ८४०४ इस्को ३५५ से भाग देने से

कला २६ शेष १७४ इस्को ६० से गुणा तो १०४४० इस्में विकला १५ युक्त कि
या तो १०४५५ यह इस्को दशमिकोदयः ३५५ से भाग देने से २८ विकला प्राप्त
भई अब पूर्वमें प्राप्त भया अंश ०२।२६।२८ यह इस्में भयादि हुद्ध पर्यं
त राशी ७ युक्त किया तो ७।२।२६।२८ इस्में अयनांशा २२।४४।३ कम कि
या तो राश्यादिक लग्न स्पष्ट भयाः ६।८।४२।२६ इस्में ६ राशी युक्त करी
तो यह ००।८।४२।२६ सप्तम भाव भयाः

अभीष्ट कालमें भोग्य काल कमती न होय तो लग्न बना-
वने की रीति.

पलात्मक अभीष्ट काल ३० से गुणके उसको सायन ग्रह की जो राशी हो-
य वह राशीके उदयसे भाग देके अंश ०२।२६।२८ यह इस्में भयादि हुद्ध पर्यं
त राशी ७ युक्त किया तो ७।२।२६।२८ इस्में अयनांशा २२।४४।३ कम कि
या तो राश्यादिक लग्न स्पष्ट भयाः ६।८।४२।२६ इस्में ६ राशी युक्त करी
तो यह ००।८।४२।२६ सप्तम भाव भयाः

लग्नसे अभीष्ट काल करने की रीति

श्लोकः } अर्कभोग्यस्तनो भुक्तकालान्वितो युक्तमध्योदयोऽभीष्टका-
लो भवेत् ॥ यदितनुदिननाथावेकराशौ तदंशान्तरहृत उदयः
स्यात्स्वाभिहृति कालः इत उदय ऊनश्चेत्तदंशो धुराव्रात् ॥

टीका- लग्नमें अयनांशा युक्त करके जो अंक आवे उससे भुक्त काल करना.

और स्पष्ट सूर्यसे भोग्य काल करना अनंतर सायन लग्न और सायन सूर्य
इनके मध्यके जो उदय होय उतका अंक लेके उसमें भुक्त काल और भोग्य
काल इस्का अंक युक्त करना तो पलात्मक अभीष्ट काल होता है.

सायन लग्न और सायन सूर्य एक राशीमें होय तो लग्नसे अभीष्ट काल
साधने सायन लग्न और सायन सूर्य इनका अंतर करके उसको सायन सूर्यके
उदयसे गुणके ३० से भाग देना जो भागाकार आवे सो पलात्मक अभीष्ट का-
ल पलात्मक होता है. जो सायन सूर्यके अपेक्षा सायन लग्न कमती होय तो
पूर्व प्रमाण साधन किया जो कला सो ६० मे से कम करना तो इष्ट काल होता है. ऊ
पर कहावै सा प्रमाण जन्म कालका लग्न ६।८।४२।२६ यह इस्में ६ राशी
युक्त किया तो यह सप्तम भाव हुवा ०।८।४२।२६

नतोन्नत पूर्वकदशमचतुर्थ भाव साधन.

श्लोकः } रात्रेः शेषमितं युतं दिनदले नान्हो गतं शेषकं विश्ले.
ष्यं स्वलु पूर्वपश्चिमनतं त्रिशिष्युतं चोन्नतम् ॥ यत्पूर्वो-
न्नतपङ्क युक्तरवितः पश्चान्नतादित्यतो यल्लोकोदयके-
श्च लग्नमिव तन्माध्यसपङ्क सूरवम् ॥ २॥

अन्वयः- रात्रिः शेषं वागतं दिनार्द्धेन युतं अन्वहो दिनस्य गतं वा शेषं दिनदले न विष्टलेष्यं खल्विति निश्चयेन क्रमेण पूर्व पश्चिमनतं स्यात् तन्मतं त्रिंशच्चतुर्तं च पुन उन्नतं स्यात् ॥ पूर्वोन्नतपङ्क्त्युक्त रात्रिः लंकोदयैर्लग्नमिव यल्लुन्नतन्मा व्यं दशमं स्यात् एवं पश्चिमान्नता दित्यतः केवलार्कालं लंकोदयैर्लग्नमिव यल्लुन्नतं दशमं स्यात् सचः पङ्काडी युक्तं सुखंचतुर्थं स्यात्.

भाषा- दिनमें पूर्वोन्नत दिनमें पश्चिमनत रात्रीमें पूर्वोन्नतरात्रीमें पश्चिमनत ऐ सा चार प्रकारका नत होता है. मध्यरात्रिके अनंतर जो शेष रात्र होय उसमें दिनार्द्ध युक्त करना. तो रात्रीका पूर्वोन्नत होता है. और मध्यरात्रके पूर्वमें जो गत रात्र हो उसमें दिनार्द्ध युक्त करना तो रात्रीका पश्चिमनत होता है और मध्याह्नके पूर्व जो दिनगत घटिका होय वह दिनार्द्ध घडीमें से कम करना तो दिनका पूर्वोन्नत होता है. और मध्याह्नके अनंतर जो दिन शेष होय वह दिनार्द्ध में से कम करना तो दिनमें का पश्चिमनत होता है. यह नत ३० में कम करने से उन्नत होता है यह पूर्वोन्नत कम करे तो पूर्वोन्नत होता है और पश्चिमनत कम करे तो पश्चिमोन्नत होता है. पूर्वोन्नत आया होय तो उन्नत को इष्टकाल कल्याण करके तात्कालिक सूर्य में ६ राशी युक्त करके लंकोदयसे पूर्व रीति प्रमाण लग्न साधनके ऐसा लग्न साधन करे और पश्चिमनत आया होय तो नतको इष्टकाल कल्याण करके तात्कालिक सूर्य से लग्नके प्रमाण लंकोदयसे लग्न साधन करे तो दशम भाव होता है. दशम भावमें ६ राशी युक्त करे तो चतुर्थ भाव होता है.

टिप्पणः- वरोवर मध्याह्नमें जन्म होय तो तात्कालिक सूर्य दशम भाव होता है. अथवा वरोवर मध्यरात्रीमें जन्म होय तो तात्कालिक सूर्य चतुर्थ भाव होता है.

उदाहरणम्.

मध्याह्नके अनंतर शेष ०१११ दिन इस्को दिनार्द्ध १६।२१ इस्में कम करके १५।४० यह पश्चिमनत भया. इस्को ३० में कम किया तो पश्चिमोन्नत १६।२० भया. अत्र नत १५।४० को इष्टमान कर तात्कालिक सूर्य ००।१३।१०।४२ इस्में अयनांश २१।४५।०३ युक्त करके ०१।५।५६।४५ यह भुक्तांश भया इस्को ३० में कम किया तो १६।५।१५ यह भोग्यांश भया इस्को लंकोदय दृष्टका मान २८८ से गुणा तो ७३०२।८।४५ इस्को ३० से भाग दिया तो २४०।२।८।४५ यह भोग्यकाल पलात्मक भया इस्को नत १५।४० इस्की पल ८४० में कम किया तो ६८८।२७।५०।१५ इस्में विधुनोदय ३२३ कर्कोदय ३२३

यह कम करके शेष ५३२७।५०।१५ इस्में सिंहोदय २८८ कम नहीं होता
इस वासे शेष ५३ को ३० से गुणा तो १५८० इस्में नीचे का अंश २७ युक्त
किया तो १६१७ इस्को सिंहोदय २८८ से भाग दिया तो अशादि ५।२४
।३८ इस्में मेषादि शुद्ध पर्यंत राशी ४ युक्त करी तो ४।५।२४।३८ इस्में
अयनांश २२।४४।३ हीन किया तो यह ३।१२।४०।३४ दशम भाया इस्में
६ राशी युक्त करी तो ८।१२।४०।३४ यह चतुर्थ भाव भयाः

शेष आठ भाव साधन संधी और क्षय चय फल साधनम्.

श्लोकः

अंशो व्यस्तरवमस्य भूय महतो योज्यस्तनो द्विच्युतो बंधी
नैपिचसांगभास्तनुमुरवाः संधिर्द्वियोगोर्द्वितः ॥ शून्यं संधि-
षु भावगेखिलफलं स्याद्भावसंध्यंतरेणासं संधिखगांतरं द-
यचयं भावाधिकत्येखगे ॥ ३ ॥

अन्वयः- व्यस्तरवमस्य अंशो भूय महता नो योज्यस्तदा द्वितीय
तृतीय भावो भवतः विगतं मस्तं यस्मात्खभात्त इत्यस्तरवमंतस्येत्यर्थः
स एव अंशो द्विच्युतो द्वाभ्यां अच्युतो भूय महतश्चतुर्थ भावे योज्यस्त-
दा पंचषष्ठ भावो भवतः एक गुणित युक्ते पंचम भावः द्विगुणित युक्ते ष-
ष्ठ भावः स्यादित्यर्थः तेऽनंतरानीताश्चत्वारो भावाः सांगभाः षड्राशिसहि-
तास्तदा ऽष्टमनयमैकादशद्वादश भावाः स्युः अपिच शब्दावनुक्त बंध-
कौचत्वारो भावाः प्रथमं साधितास्तद्बोधकमित्यर्थः अयं संधिः संधिर्द्वि-
योगो ऽर्द्वितः द्वयोर्योगो द्वियोगो ऽर्द्वितो द्व्याप्तः सन् संधिः स्यात्प्रथम
भावस्य विरामसंधिर्द्वितीयस्यारामसंधिर्भवतीति ॥ संधिसमे ग्रहे
शून्यं फलं स्यात् भावगेभावांशादिसमे अखिलं संपूर्णं रूपफलं मित्य-
र्थः भावाधिके ग्रहे सति संधिखगयो रंतरं भाव संध्यंतरेण भक्तं क्षया-
ख्यं फलं स्यात् भावात्ये खगे संधि खगांतरं भाव संध्यंतरेणासं भाक्तं
सञ्चयाख्यं स्यात् तयोरवरो हारो ह संज्ञाच स्यात् ॥

अर्थभाषा.

दशम भावमें से सप्तम भाव कम करके जो शेष रहे उसका तृतीयांश लग-
में युक्त करना तो द्वितीय भाव होता है. वही तृतीयांश दूना करके लग्नमें युक्त
करे तो तृतीय भाव होता है और वही तृतीयांश २ राशीमें कम करके जो शेष
रहे सो चतुर्थ भावमें युक्त करना. तीसरा भाव होता है. वही शेष दूना
करके चतुर्थ भावमें युक्त करना तो षष्ठ भाव होता है अब यह भावमें

द्वितीय तृतीय पंचम यष्ट ६ राशी युक्त करे तो क्रमसे अष्टम नव एकादश द्वादश और पूर्वोक्त प्रथम चतुर्थ सप्तम दशम यह तन्वादि द्वादश भाव होते हैं दो भावको युक्त करके उसका अर्द्ध करे तो संधि होती है सो ऐसी प्रथम द्वितीय भावको योगः र्द्ध करे तो प्रथम भावकी विराम संधि और द्वितीय भावकी आरंभ संधि होती है. इसी प्रमाण द्वादश भावकी संधि होती है.

विशेष.

यह संधि करनेके बरबत भाव योग १२ से अधिक आवे तो उसमेसे १२ कम नहीं करना अथवा भाव ०० होय तो योग करनेके बरबत ० के बदले में १२ लेना नहीं. संधितुल्य ग्रह होय तो द्रव्य फलवा भाव तुल्य ग्रह होय तो पूर्ण फल ग्रह भावसे कमती होय तो वह ग्रहमें से आरंभ संधिकम करना वा ग्रह भावसे अधिक होय तो वह ग्रहमें से विराम संधिकम करना अनंतर जो अंतर आवे उसको भाव मंथीके अंतरसे भाग देना तो ग्रह भाव फल होता है वह ग्रह भावसे अधिक होय तो क्षय अवरोह इफल अथवा ग्रह भावसे कमती होय तो चय आरोह फल जानना.

टीप-१- ग्रह आरंभ संधिसे कमती होय तो पीछेके भावका फल देता है और विराम संधिसे अधिक होय तो आगेके भावका फल देता है.

टीप-२- चतुर्थ भावमेसे प्रथम भाव कम करके जो शेष रहे उसका पष्ठांश प्रथम भावमें युक्त करना तो प्रथम भावकी विराम संधि और द्वितीय भावकी आरंभ संधि होती है. और यह संधिमें यही पष्ठांश युक्त करे तो घन भाव होता है. इसी प्रमाण पष्ठांश युक्त करनेसे संधि सह चतुर्थ भावतक भाव होते हैं अनंतर यह पष्ठांश १ में कम करके जो शेष रहे सो चतुर्थ भावमें युक्त करे तो चतुर्थ भावके विराम संधितक भाव होते हैं. अनंतर यह ६ भावकी और संधिको ६ + ६ राशीक्रमसे युक्त करे तो आगेके सर्व भाव संधि सुगम रीतिसं होते हैं.

उदाहरणम्.

यह दशम भाव ३।१२।१०।३४ इस्मेसे सप्तम भाव ०।१।४२।२६ कम करके ३।२।५८।८ यह इस्का तृतीयांश १।०।५९।२२।१० इस्मे लग्न ६।८।४२।२६।० युक्त करके ७।१०।४१।४८।४० यह द्वितीय भाव भया तृतीयांशको दूना २।१।५८।४५।२० इस्मे लग्न ६।८।४२।२६।० युक्त करके ८।११।४१।११।२० यह तृतीय भाव भया यह तृतीयांश १।०।५८।१२।४० इस्को २ राशीमें से कम करके शेष ००।२८।०।३७।२० यह इ-

स्मै चतुर्थ भाव ८।१२।४०।३४।० युक्त करके १०।११।४१।११।२० यह पंचम भाव भयावही शेष दूना १।२८।१।१४।४० इस्को चतुर्थ भाव ८।१२।४०।३४।० युक्त करके ११।१०।४१।४८।४० यह षष्ठ भाव भयावही तीसरी तृतीय पंचम षष्ठ यह भावों में ६ राशी क्रमसे युक्त करे तो अष्टम नवमेकादश द्वादश यह स्पष्ट भाव होते हैं।

लग्न ६।८।४२।२६।० द्वितीय भाव ७।१०।४१।४८।४० इनका योग १३।२०।२४।१४।४० इसका अर्द्ध ६।२५।१२।० ७।२० यह प्रथम भावकी विराम संधि और द्वितीय भावकी आरंभ संधि होती है इसी प्रमाण सर्व भावकी संधि करना। अथवा चतुर्थ भाव ८।१२।४०।३४।० इस्में लग्न ६।८।४२।२६।० कम किया तो ३।२।५८।८ यह इस्का षष्ठांश ०।१५।२८।४१।२० इस्से लग्न ६।८।४२।२६।० युक्त किया तो ६।२५।१२।० ७।२० यही रीतिसे क्रमसे युक्त करना तो संधिकरकर सहित चतुर्थ भाव होता पुनः षष्ठांशकी १ मे हीन करना चतुर्थ भावसे युक्त करना तो सप्तम भाव तक संधि सहित होता है आगे पूर्वोक्तवत्।

१	०	२	०	३	०	४	०	५	०	६	०	सा.
६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	
४२	२५	१०	२६	११	२७	१२	२७	११	२६	१०	२५	
२६	७	४८	३०	११	५२	३४	५२	११	३०	४८	७	
०	२०	४०	०	२०	४०	०	४०	२०	०	४०	२०	
७	०	८	०	९	०	१०	०	११	०	१२	०	सा.
९	२५	१०	२६	११	२७	१२	२७	११	२६	१०	२५	
४२	१२	४१	११	४१	१०	४०	१०	४१	११	४१	१२	
२६	७	४८	३०	११	५२	३४	५२	११	३०	४८	७	
०	२०	४०	०	२०	४०	०	४०	२०	०	४०	२०	

क्षयचयउदाहरणम्

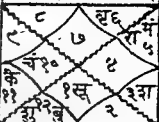
जन्मलग्नमिदम्.

सूर्य ०।१३।१०।४२ यह निकट भाव सप्तम ०।८।४२।२६ इस्से अधिक है इसवास्ते सूर्य यह भावकी विराम संधि ०।२५।१२।० ७ इस्में कम करके ०।१२।०१।२५ इस्की विकला ४३२८५ यह अंतर इस्को सप्तम ०।८।४२।२६ और विराम संधि ०।



२५।१२।०७ इस्का अंतर ०।१५।२८।४१ इस्की
विकला ५५७८१ इस्से भाग देके ००।४६।३३
यह सूर्य भाव फल भया यह फल सूर्य निकट
भावसे अधिक है इसवास्ते क्षय जानना इसी
प्रमाण सर्व ग्रहोंका भाव फल करना इ०

भावोद्धारचक्रमिदम्



ग्रहभावफलचक्रम्

सू.	चं.	मं.	बु.	रु.	शु.	श.	ग्रहः
४६ ३३ क्षय	३१ ४४ क्षय	५७ २७ क्षय	१५ ५६ क्षय	६८ ६२ क्षय	३६ ३६ क्षय	५३ ३१ क्षय	फ०

श्लोकः } जगदीशेन रचिते केशवी ग्रंथटिप्पणे
भावाधिकारः पूर्णो यंतद्भाषार्थप्रकाशकः ॥
इति भावाऽध्यायः

टिप्पण- भावोनकः स्वर्गः पूर्व संधिना रहितस्तदा ॥ अधिकश्चेद्विरा-
मारब्ध संधेः शीघ्रस्तदंतरम् ॥ भावसंध्यंतरेणाप्तं तद्भावफलमुच्य-
ते क्षयंचैव तदाज्ञेयमधिकेऽत्येचयं भवेत् ॥ १ ॥

अथ दृष्टीसाधनाध्यायः

श्लोकः } रैकाग्निद्विरववेदरामयमभूरवाभ्राभ्रमेकादि-
भेदद्रष्टावर्जित दृश्यकस्यगुरुणाचेदष्टवेदेकताः
मंदेनांकयमेसृजानगगुणेकाभादिजाः संस्कृता-
भागद्रक्षयवद्विरवानललेवेनावधुद्धतादृग्भवेत् ॥ ४ ॥

अन्वयः पश्यतीति दृष्टा दर्शनयोग्यो दृश्यः द्रष्टावर्जित दृश्य कस्यैकादि
एकादिराशिषुशेषेपुरैकाग्नित्यादयोकाः ०।१।३।२।०।४।३।२।१।०।०।० स्युः त-
त्रैकभेदोपेखंशून्यं द्वित्तद्वितीये एक इत्यादि द्वादशभेदार्थात् शून्यशेषेऽभ-
शून्यं किं भूता एते अंकाभादिजागदभादिजाः गुरुशानिभीमाना विशेषश्चे-
दिति चेद्गुरुणा द्रष्टावर्जित दृश्यकस्याष्टवेदभेदशेषेकताश्चत्वारोकाः स्युस्तदा
पूर्वोक्तं नैत्यर्थः मंदेनांकयमेकचाश्चत्वारोकाः असृजानोमेन द्रष्टावर्जित
दृश्यकस्यनगगुणेभेदत्वारोकास्तुः पूर्वोक्तानेति भावः एवं राश्यादायंकानुक्ता

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	राशी
०	१५	३०	४५	६०	७५	९०	१०५	१२०	१३५	१५०	१६५	कला

का नीचिका अंकलेके अंतर
करे जो अंतर आवे उससे नीचे
जो भागादिक होय तो गुण देना फेर उस भाग
देना पावे सो फल अंक में संस्कार करना सो ऐसा कि अगिका अंक जादा होय तो युक्त
करना पिछला में आगा को कमती होय तो पिछला में घटाव देना तो दृष्टी हो-
ती है. यह दूसरा प्रकार होगा.

इसा दृश्य में कम करके जो १ राशी रहितो अंशादिक आधा करे तो दृष्टी होय और २
राशी वचे तो अंश में १५ युक्त करे तो दृष्टी होय और तीन राशी रहितो अंशादिक आधा
करे अंश में ३० में घटाव दे तो दृष्टी होय और चार राशी रहितो अंशादिकाने ३० में घटाव
दे दृष्टी होय.

रविचंद्रबुध शुक्र दृष्टी सारिणी.

गति	अंश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
वृष	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
मिथु	२	१५	३०	४५	६०	७५	९०	१०५	१२०	१३५	१५०	१६५	१८०	१९५	२१०
कर्क	३	३०	४५	६०	७५	९०	१०५	१२०	१३५	१५०	१६५	१८०	१९५	२१०	२२५
सिंह	४	४५	६०	७५	९०	१०५	१२०	१३५	१५०	१६५	१८०	१९५	२१०	२२५	२४०
कन	५	५०	६५	८०	९५	११०	१२५	१४०	१५५	१७०	१८५	२००	२१५	२३०	२४५
तुल	६	६०	७५	९०	१०५	१२०	१३५	१५०	१६५	१८०	१९५	२१०	२२५	२४०	२५५
दक्षि	७	७५	९०	१०५	१२०	१३५	१५०	१६५	१८०	१९५	२१०	२२५	२४०	२५५	२७०
घन	८	८०	९५	११०	१२५	१४०	१५५	१७०	१८५	२००	२१५	२३०	२४५	२६०	२७५
मकर	९	९०	१०५	१२०	१३५	१५०	१६५	१८०	१९५	२१०	२२५	२४०	२५५	२७०	२८५
कुंज	१०	१०५	१२०	१३५	१५०	१६५	१८०	१९५	२१०	२२५	२४०	२५५	२७०	२८५	३००
मीन	११	११०	१२५	१४०	१५५	१७०	१८५	२००	२१५	२३०	२४५	२६०	२७५	२९०	३०५

और ५ राशी रहितो अंशादिक दूणा करे दृष्टी होय और ६-७-८-९ राशी वचे तो राधादि
क १० में अंशों के अंक करे पीछे आधा करे तो दृष्टी होय और १०-११-१२ राशी वचे तो दृष्टी नही
होय और मंगल की करे जय ३-७ राशी वचे तो अंश में ६० में घटाव दे जय दृष्टी हो
और २ राशी वचे तो अंशादिक आधा करे फेर उसी में आधा जोडे और १५ जोडे
दृष्टी हो. और ६ राशी ऊपर होय तो १०० दृष्टी होय और १२ दृष्टी करे जय ३
राशी वचे तो अंशादिक आधा करे अंश में ६५ जोडे दे तो दृष्टी होय और चार
राशी ऊपर होय तो अंशादिक दूणा करे पीछे ६० में घटाव दे तो दृष्टी होय.

और ८ राशी ऊपर होयतो अंशादिक आधाकरकर सहित करे फेर ६० में घटाय देतो दृष्टी होय शनि और की दृष्टी करी जब १ राशी ऊपर होयतो अंशादिक दूणा करे दृष्टी होय राशी ८ होयतो अंशामें ३० जोड़ैतो दृष्टी होय और २ राशी होयतो अंशादिक आधा करे ६० में घटाय देतो दृष्टी होय और ८ राशी
रविचन्द्र बुध शुक्र दृष्टि सारिणी.

[illegible]

अथ यथा चन्द्रादिकृष्णाय १० मं घटा यदुक्तं दृष्टिं भाष्य १ इति दृष्टिः
नेमगं गतिं दृष्टिः

[illegible]

गुरुदृष्टी.

रा.	अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेघ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
रूप	१	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७
मि.	२	१५	१६	१७	१८	१८	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२८
कर्म	३	४५	४५	४६	४६	४७	४७	४८	४८	४८	४८	५०	५०	५१	५१	५२
सिं.	४	१	०	५८	५८	५९	५९	६०	६०	६१	६१	६२	६२	६३	६३	६४
कन्या	५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
तुल	६	१	०	५८	५८	५९	५९	६०	६०	६१	६१	६२	६२	६३	६३	६४
वृ.	७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मि.	८	१५	१६	१७	१८	१८	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२८
धन	९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
म.	१०	१५	१६	१७	१८	१८	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२८
कुं.	११	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मीन	१२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

[illegible]

दृष्टी उदाहरण.

द्रष्टाचन्द्र ८।५।२२।३५ यह दृश्य सूर्य ०।१३।१०।४२ इस्मेसे कम करके ३।७।४८।७ यह है. इसवास्ते चन्द्र दृष्टी फल सारिणीमें ३ तृतीय राशी कोष्टके सामने ७ अंशके नीचे का फल ०।४१।३० इस्को इष्ट अंशके नीचे कला ४८ विकला ७ है. इस्को राशीकोष्टक ३ इस्के सामने का गुण १ इस्से गुणके कला ४८ विकला ७ इस्को गुणके नीचे का हर २ से भाग देको २४।०३ यह विकलादिफल सारिणीमें ऋण लिखा है इसवास्ते पूर्वमे लिखा जो फल ०।४१।३० इस्सेसे कम करके ०।४१।०६ यह चन्द्र की सूर्यके ऊपर दृष्टी भई. इसीप्रमाण सर्वग्रहोंकी दृष्टीग्रहोंपर और भाव पर वह वह यह दृष्टी फल दूसरी रीति दृष्टी उदाहरण.

सारिणी परसे करना.

दृष्टादृश्यमेसे कम करके
३।७।४८।७ इसवास्ते
३ राशीके नीचेका अंक
४५ आगेकी राशी ४ इ-
स्के नीचेका अंक ३० इस्का
अंतर १५ इसे भागादि
गुणके ११७।१।४५ इ-
स्को ३० से भाग दिया तो
३।५४ अब अगली राशी
का अंक कमती है. इसवा-
स्ते ४५ मे ३।५४ कम किया
तो ४१।६ यह चन्द्र की दृष्टी
भई. उपर राशीका स्था-
न मे ०० धर देना तीसरी
विधि दृष्टीकी अंशादिक
७।४८।७ अर्द्ध किया तो
३।७४।३ इस्को ४५ मे
कम किया तो ०।४१।०६
पूर्व मुख्य चन्द्र दृष्टी
भई.

सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	शुक्र	शनि	ग्रहाः
०	०	०	०	०	०	सूर्यः
०	१८	३१	०	४	१५	
०	५४	३	०	५८	११	
०	०	०	०	०	०	चन्द्रः
४१	०	४१	३०	२८	१०	
६	०	८	५८	३५	४७	
०	०	०	०	०	०	मंगलः
२८	५	०	४८	०	१	
५७	४२	०	४३	०	०	
०	०	०	०	०	०	बुधः
०	७	१०	०	३३	३७	
०	५८	१७	०	४३	१	
०	०	०	०	०	०	शुक्रः
४७	५८	०	५३	०	३७	
२८	३५	०	२६	०	२७	
०	०	२८	०	५४	०	शनिः
७	०	३६	०	२२	०	
०	४८	५५	४४	४७	४३	
२४	५८	२५	२	३४	३४	
१	१	१	१	१	१	शुभैक्यः
२६	६	२०	२४	५६	४८	
४२	२४	४२	२४	४०	१४	
०	१	१	१	०	१	पापैः
०	१३	२६	३३	५२	४३	
२९	३५	०८	४५	३२	३४	

ग्रहोका उच्चारिकोषकः

ग्रहः	स्वः	चः	मं	बु	रु	शु	श
उच्च	रा. ० आ. १०	१ ३	८ ३८	५ १५	२ ५	११ २७	६ २०
नीच	रा. ६ आ. १०	७ ३	३ २८	११ १५	८ ५	५ २७	० २०
मूलत्रि कोण	रा. ४ आ. २०	१ नं. ३	० २०	५ नं. १५ ५	८ २०	६ २०	१० २०
स्वग्रह	सिंह	कर्क	मे. दं.	मि. कं.	ध. भी.	रु. तु.	म. कुं.
नैसर्गिक मित्र	र. मं. गु.	र. बु.	र. चं. गु.	र. शु.	र. चं. मं.	बु. श.	बु. शु.
नैसर्गिक सम	बु.	मं. शु. रु. श.	शु. श.	मं. गु. श.	श.	मं. गु.	शु.
नैसर्गिक शत्रु	श. शु.	०	बु.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.
लिंगः	पु.	स्त्री.	पु.	नपुं.	पु.	स्त्री.	नपुं.

१ ग्रहोंकी तात्कालिक मैत्री.

जिस ग्रहकी तात्काल मैत्री देखना होयतो वह ग्रह जिस स्थानमें होय उस स्थानसे २-३-४-१०-११ और १२ यह स्थानमें जो ग्रह होय सो अप्रीष्ट ग्रहके तात्काल मित्र होते हैं और १-५-६-७-८ और ९ यह स्थानमें जो ग्रह होय सो अप्रीष्ट ग्रहके शत्रु होते हैं.

२ ग्रहोंकी पंचधा अधिमैत्री.

ग्रहोंका नैसर्गिक मैत्र्यादि और तात्कालिक मैत्र्यादि इस्से ग्रहों की पंचधा अधिमैत्री उत्पन्न होती है सो इस प्रकार अप्रीष्ट ग्रहका जो ग्रह नैसर्गिक मित्र और तात्कालिक मित्र होयतो अप्रीष्ट ग्रहका अधिमित्र होता है. अप्रीष्ट ग्रहका जो ग्रह नैसर्गिक में सम और तात्कालिक मित्र होयतो अप्रीष्ट ग्रहका मित्र होता है. अप्रीष्ट ग्रहका जो ग्रह नैसर्गिक मित्र और तात्कालिक शत्रु होयतो अप्रीष्ट ग्रहका सम होता. अप्रीष्ट ग्रहका जो ग्रह नैसर्गिक सम और तात्कालिक शत्रु होयतो अप्रीष्ट ग्रहका शत्रु होता है. और अप्रीष्ट ग्रहका नैसर्गिक शत्रु या तात्कालिक शत्रु होयतो अप्रीष्ट ग्रहका अधिशत्रु जानना + अत्रेदध्ययम्. सम-मित्र-मित्र+ मित्रमित्र अधिमित्र + मित्रशत्रुसम-समशत्रुशत्रु-शत्रुशत्रुअधिशत्रु ॥ इति ॥

नीचोनोभागणाद्युतः षडधिकश्चेत्षडहद्विचंबलं
 श्लोकः स्वर्क्षेर्द्विसप्तमेषु भास्त्रिचरणा मूलत्रिकोणे वलं ॥
 मित्रक्षेत्रे धिरधीष्टमेत्रयद्विभांशा वैरिषेष्टयंशको-
 दंभांशो ध्वरिषेष्टहादिपवसात् खेटस्य सप्तैक्यजम् ॥५॥
 सप्तवर्गवलमिदम्.

स्वक्षेत्रं	ऽमित्रं	मित्रं	समं	शत्रु	ऽशत्रु	मूलत्रि-	
३०	३३	१५	३०	३३	३३	४५	वलं

अन्वयः- नीचो नोग्रहश्चेत्षडधिको द्वादशराशिभ्यः शुद्धः षडहत्तु
 चंबलं स्यात् उच्च संबंधी वल मित्यर्थः अत्रेदं ध्येयं उच्चो न ग्रहेशेषे षड्
 राशिस्तदा षडभागे रूपं वलं पूर्णवलमिति चेत् षड्भात्यस्तदा रूपस्थाने शुद्धं
 स्यात् पुनः शेषं राश्यादिकं पष्ट्यासंगुण्योपरि पडुक्तः संलब्धं कला स्यात्
 नि स्यात् पुनः शेषं पष्ट्यासंगुणा पडुभिर्भागे विंशति कला स्थाने स्यात् पुनः ए
 वं अंशा यं मुच्च वलं स्यात् + स्वर्क्षेर्द्विमित्यस्यार्थः स्वर्क्षे स्वग्रहे ग्रहे संति
 अर्द्धं रूपा र्द्धं वलं लेख्यम् समराशिस्थे षड्भांशो वलम् मूलत्रिकोणे नव
 श्रवणाः मित्रक्षेत्रे चतुर्थीशो वलं अधिमित्रक्षेत्रे त्रयो षड्भांशाः शत्रुराशिस्थे चो
 द्वांशो वलं अधिशत्रुराशिस्थे द्वाविंशदंशो वलं स्यादिति सर्वत्र क्रिया पदं स
 वीचरूपस्येवादीदिकं ग्राह्यं अत्र स्वर्क्षे मित्युपलक्षणं किंतु स्वराश्यादि
 स्थितेऽप्यर्द्धं वलं ग्राह्यं कुतः इत्यतः आह ग्रहादिपवसादिति आदिश-
 द्वाहोरात्रे प्याणादयो ग्राह्याः ग्रहादीन् याति येते ग्रहादियाः ग्रहादि
 सप्तवर्गस्यामिनो ये सन्ति तद्दशात् स्वर्क्षे र्द्धं मित्यादीनि खेटस्य सप्तवर्ग
 यलानि ग्राह्याणि सप्तानामेक्याज्जायत इति सप्तैक्यजम्.

अर्थः- जिस ग्रहका उच्चफल भगाना होय उस ग्रहमें उती
 उती ग्रहकानीच घटाय देना शेषको ६ से भाग देना तो उच्च संबंधी
 वल होता है. कदाचित् शेष ६ राशीसे अधिक होय तो १२ राशीमें
 टायके शेषको ६ से भाग देना यदि शेष ठीक ६ वचे तो ६ राशीमें
 पूर्ण वल अर्थात् रूप १ वल होगा जब ६ राशीसे कम रहेगा तब रा
 शीसे ६ से भाग देनेसे अंशस्थानमें इत्यफल आवेगा पुनः
 राशीको ६० से गुण देना अंश बना करके युक्त करना फिर ६ से
 भाग देना जो पावे मो कला स्थानमें रखना. शेषको ६० से

देना विकला दूना युक्त करना ६ से भाग देना लाब्धि विकला होगी अथवा नीच ग्रहांतरका कला करना १८० से भाग देना तो कलादि सुगम रीतिसे उच्चबल होगा. अथवा नीच ग्रहांतर जो होय उसकी राशीको १० से गुणना अशकला विकलाको २० से गुणना तो उच्चबल होता है.

जो ग्रह स्वग्रहमें होय उसका अर्द्ध ०।३०।० बल समके ग्रहमें होय तो अष्टमांश ०।७।३० मूल त्रिकोणका होय तो चतुर्थांश त्रिगुणित ०।४५।० मित्रग्रहका होय तो चतुर्थांश ०।१५।० अधिमित्रका होय तो अष्टमांश त्रिगुणित ०।२२।३० शत्रुग्रहमें होय तो षोडशांश ०।३।४५ अधिशत्रुका होय तो वत्तीसावांश ०।१।५२ यह बल ग्रह होरादि सप्तवर्गके स्वामी के अनुरोधसे कहिये स्वामी अपने ग्रहमें होय तो अर्द्धबल और स्वामी समग्रहमें होय तो अष्टमांश बल इत्यादि जानना. यह सप्तवर्ग ज बल एकत्र करनेसे ग्रहोंका सप्त योगज बल होता है.

टीपः- मेष वृष मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला वृश्चिक धन मकर कुंभ मीन यह १२ राशी हैं. इस्मेसे मेष मिथुन सिंह तुला धन कुंभ यह विषम ६ राशी और वृष कर्क कन्या वृश्चिक मकर मीन यह ६ राशी सम होती हैं. यह सप्तवर्ग ग्रह होराद्रेष्काण सप्तमांश नवमांश द्वादशांश और त्रिंशांश होते हैं. १ ग्रह (राशी कहिये ३० अंश इसके स्वामी पूर्वमें कहे हैं होरा कहिये राश्यर्द्ध १५ अंश) विषम राशीमें प्रथम होराका स्वामी सूर्य और द्वितीय होराका स्वामी चंद्र और समराशी प्रथम होराका स्वामी चंद्र द्वितीय होराका स्वामी सूर्य ३ द्रेष्काण कहिये राशीका तृतीयांश १० अंश इसवास्ते यह तीन है. प्रथम द्रेष्काणका स्वामी ग्रहाधिप द्वितीय द्रेष्काणका स्वामी ग्रहसे पंचम राश्य धिप तृतीय द्रेष्काणका स्वग्रहसे नवम राश्य धिप. ४ सप्तमांश कहिये राशीका सप्तमांश ४ अंश १७ कला विषम राशीमें अपने ग्रहसे ७ राशिके स्वामी क्रमसे सप्तमांश पती होते हैं. और समराशीमें अपने ग्रहके सप्तम राशीसे सात राशिके स्वामी क्रमसे सप्तमांश पती होते हैं. ५ नवमांश कहिये राशीका नवमांश ३ अंश २० कला मेष सिंह धन यह ग्रह होय तो मेषसे ८ राशीके स्वामी क्रमसे नवमांशाधिपती होते हैं. वृष कन्या मकर यह ग्रह होय तो मकर राशीसे ८ राशीका स्वामी क्रमसे नवमांशाधिपती होते हैं.

मिथुन तुला कुंभ यह राशी होयतो तुला राशीसे ८ राशीके स्वामी क्रमसे नवमांशधिपती होते हैं. कर्क दृश्चिक मीन यह राशी होयतो कर्क राशीसे ८ राशीका स्वामी नवमांशधिपती होते हैं.

६ द्वादशांशकहिये राशीका द्वादश भाग २ अंश ३० कला सवरा-
शीमें स्वस्वग्रहसे १२ राशीके स्वामी क्रमसे द्वादशांशपती होते हैं.

१७ त्रिंशांशकहिये राशीका त्रिंशद्भाग १ अंश विषम राशीमें प्रथम
५ अंशका स्वामी भौम आगे ५ अंशका स्वामी शनि आगे ८ अंश-
का स्वामी गुरु आगे ७ अंशका स्वामी बुध आगे ५ अंशका स्वा-
मी शुक्र समराशीमें उलटे रीतिसे ५ का शुक्र ७ का बुध ८ का गुरु
आगे ५ का शनि आगे ५ का भौम यही रीतिसे जानना.

होरालग्नम्.	द्विष्णुलग्नम्.	सप्तमांशक.
नवमांशक ल.	द्वादशांशक ल.	त्रिंशांशक ल.

उच्चनीचपराह. अजरयपभ मृगांगनाकुलीराक्षपवणिजोचदिवाकरादि
तुंगा. दशशिखिमनुयुक्तिथीन्द्रियांशोस्तिनवक विंशतिमिथ्यतेस्तनीचा.

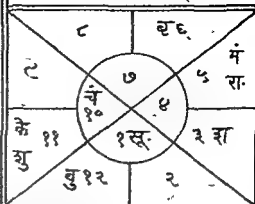
निसर्ग मैत्री चक्रम्.

च.	च.	म.	बु.	रु.	शु.	अ.	ग्रह.
चंग. र.	सू. बु.	चंग. म.	शु. र.	चंग. म.	बु. अ.	शु. बु.	मित्र.
च.	मंग. शु.	मंग. अ.	मंग. अ.	अ.	मंग. र.	र.	सम.
अ. अ.	०	र.	चंग.	बु. शु.	चंग. म.	सू. चंग.	शत्रु.

तात्काल मैत्रीचक्रम्

सू.	चं	मं	बु.	वृ.	शु.	श.	ग्रह
शु.	सू.	श.	सू.	मं	सू.	मं	मि.
बु.	बु.	वृ.	शु.	श.	बु.	वृ.	त्र
चं	शु.	श.	श.	चं	चं	चं	
मं	श.	शु.	मं	सू.	मं	शु.	श.
वृ.	मं	वृ.	वृ.	चं	वृ.	चं	शु.

जन्मलग्नम्.



पंचधा मैत्रीचक्रम्.

सू.	चं	मं	बु.	वृ.	शु.	श.	ग्रहः
बु.	शु.	श.	श.	श.	०	वृ.	मित्रः
चं	सू. बु.	वृ.	सू. शु.	मं	बु.	बु.	५ धिमित्र
श. मं वृ.	सू. बु.	सू. चं	चं	सू. चं	सू. वं श.	सू. शु. नं	सम
०	वृ. मं श.	शु.	मं वृ.	०	मं वृ.	०	शु. शु.
०	०	बु.	०	बु. शु.	०	चं	५ धिशत्रुः

वलाध्याय-उच्चबल सारिणी प्रवेश.

सूर्यादि ७ ग्रहोंका १२ राशी को एक लिखके वह वह ग्रह के सामने राशी को प्रक के नीचे रूप कला दिवल लिखा है उससे प्रहका जो ६ राशी को प्रक होय उसके नीचे का फल लेके राशी को प्रक के नीचे ३० अंश को प्रक और ६० कला को प्रक लिखा है उससे प्रहों के जो ६ अंश और कला होय उसके नीचे का अंश का कला दि और कला का विकला दि फल एक न करके वह धन किंवा ऋण राशी फल में लिखा है उसके प्रमाण लिया जो राशी फल उसमें युक्त करना किंवा कम करना तो उच्चबल होता है परंतु जब ग्रहों की उच्च नीच राशी आदती है तब फल लेने की जुदीरी ति है सो ऐसी कि पृथक् पृथक् ग्रहों का उच्च राशी फल में उक्त अंश लिखे हैं उतने अंश तक मात्र वह फल अंश दि धन आगे जो अंश दि अधिक आवे उतना अंश दि को का सारिणी में का फल लेके वह ऊपर कहने के प्रमाण उच्च राशी फल में न युक्त करके रूप (८१) बल में कम करना तो उच्चबल होता है तैसे ही नीच राशी फल में उक्त नीचांश लिखे हैं उतने अंश तक मात्र वह फल ऋण आगे जो अंश दि अधिक आवे उतना अंश दि को का सारिणी में का फल लेके वह ऊपर कहने के प्रमाण नीच राशी फल में कम न करते जो फल आवे वही उच्चबल जानना.

उच्चफल सारिणी राशीफल.

रा.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	रा.
स.	५६१० ४० घ.	५३ २० म.	४३ २० म.	३३ २० म.	२३ २० म.	१३ २० म.	०३ २० म.	६ ४० घ.	१६ ४० घ.	२६ ४० घ.	३६ ४० घ.	४६ ४० घ.	स.
मं.	४८ ० घ.	५८ ० घ.	५९ ० म.	६९ ० म.	७९ ० म.	८९ ० म.	९९ ० म.	१ ० म.	१८ ० घ.	२८ ० घ.	३८ ० घ.	४८ ० घ.	मं.
मं.	३८ २० म.	२८ २० म.	१८ २० म.	८-२८ २० म.	० ४० घ.	१० ४० घ.	२० ४० घ.	३० ४० घ.	४० ४० घ.	५० ४० घ.	६० ४० घ.	७० ४० घ.	मं.
बु.	५ ० घ.	१५ ० घ.	२५ ० घ.	३५ ० घ.	४५ ० घ.	५५ ० घ.	६५ ० म.	७५ ० म.	८५ ० म.	९५ ० म.	१५ ० म.	२५ ० म.	बु.
बु.	२८ २० घ.	२८ २० घ.	४८ २० घ.	५८ २० घ.	६९ ४० म.	७९ ४० म.	८९ ४० म.	९९ ४० म.	११ ४० म.	१५ ४० म.	२० ४० म.	२० ४० म.	बु.
शु.	५८ ० म.	६८ ० म.	७८ ० म.	८८ ० म.	९८ ० म.	१०८ ० म.	१ ० घ.	११ ० घ.	२१ ० घ.	३१ ० घ.	४१ ० घ.	५१ ० घ.	शु.
श.	६२० ४० म.	२ २० घ.	१३ २० घ.	२३ २० घ.	३३ २० घ.	४३ २० घ.	५३ २० घ.	६३ ४० म.	७३ ४० म.	८३ ४० म.	९३ ४० म.	१०३ ४० म.	श.

अशफल.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
१५	१७	१८	१८	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२८	३०	०
५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	८	८	८	१०	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	०

कलाफल.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
१५	१६	१७	१८	१८	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२८
५	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	८	८	८
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३८	४०	४१	४२	४३	४४
१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
५	५६	५७	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०

उदाहरणम्.

इहां सूर्य ०।१३।१०।४२ है इसवास्ते ०० राशीकोष्ठके नीचे का सूर्य का फल ०।५६।४० यह लेके अनंतर १३ अंश कीष्ठके नीचे का फल ४।२० और कला १० कोष्ठके नीचे का फल ३ यह विकलाभि युक्त करके यह राशी फलमें धन लिखा है इसवास्ते ०।५६।४० यह राशी फलमें युक्त करके ०।१।०१।३ अब इहां रवि उच्च राशी का है इसवास्ते उपर १ नुक्त करके ०।१।३ यह इस्को रूप १ में कम करके ०।५८।५७ यह सूर्य का उच्च बल इसी प्रमाण चंद्रादि द्वितीय सारिणी प्रवेश. जिस ग्रहका उच्च बल घनावना होय उस ग्रहमें उसी ग्रहकानीचे कम करना जो ६ राशी से ज्यादा होय तो १२ राशीमें कम करके जो दोष राश्यंक होय उसके नीचे का अंशदि फल लेके उसके नीचे जो अंश कला होय उसका फल लेकर एकत्र करके युक्त करना तो ग्रहों का उच्च बल होता है. अंश कला विकला का फल पूर्वोक्त सारिणीमें से ना.

उच्च राशीफल.

०	१	२	३	४	५	६	रा.
०	०	०	०	०	०	१	
१०	२०	३०	४०	५०	०	०	फ.

उदाहरणम्

सूर्य ०।१३।१०।४२ यह इस्में इस्का नीचे ६।१०।०० कम किया तो ६।३।१०।४२ यह ६ से अधिक है इसवास्ते १२ में कम करके ५।२६।४८ १२ है. इसवास्ते राशी कोष्ठके नीचे का फल ०।५०।० पहले के अनंतर २६ अंश तक पूर्वोक्त के नीचे का कलादि फल ८।४० और कला ४८ का नीचे विकलादि फल १६।२० यह एकत्र करके ८।५६ यह राशी फल १५०।० इस्में युक्त किया तो ०।५८।५६ यह सूर्य का उच्च बल मायस्ती रीती से चंद्रादिकों का करना तो स्पष्ट बल होता है राशी फलमें अंश कला फल सदा युक्त करना.

उच्च बल चक्रम्.

सु.	च.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	ग्रह.
०	०	०	०	०	०	०	
५८	२०	६	२	३८	४८	१७	फल
५६	४७	२१	७	५५	५८	४७	

कर्कराशिसप्तवर्गपतिचक्रम्.

[illegible]

[illegible]

कन्याराशिसप्तवर्गपति चक्रम्..

[illegible]

तुलराशिसप्तवर्ग पति चक्रम्.

[illegible]

दृष्टिकरश्चिसप्तवर्गयतिचक्रम्.

[illegible]

धनराशिसप्तवर्गपतिचक्रम्.

[illegible]

[illegible]

[illegible]

25.

यह चक्रों में सप्तवर्गपति मेषादि १२ राशीका जुदा जुदा अंशोंका तीस तीसक
लाके अंतरसे ६० कोष्ठक लिखके उसके नीचे सप्तवर्गके सामने उनके स्वामी
लिखके उनके स्वग्रहके स्पष्टताके वास्ते ग्रहके प्राप्त स्वग्रहका राश्यंक लिखा
है इसपरसे सुलभरीतिसे सप्तवर्गपति मालूम होते हैं।

उदाहरणम्

इहां सूर्य ००।१३।१०।४२ है इसवास्ते मेष राशीका १३ अंश १०
कला कोष्ठककी नीचेके सप्तवर्गपति आये।

गृ.प. हो.प. द्वे.प. स.प. न.प. ह.प. त्रि.प. इसी प्रमाण चंद्रादिकोंका
मं. ख. सू. चं. चं. बु. व. राश्यादिकसे चक्र परसे सप्त
वर्गपति होते हैं। इसी रीतिसे भाव सप्तवर्गपति जानना।

ग्रहसप्तवर्गपतिचक्रम्. आश्रयगुणार्थः...

ग्र	सूर्यः	चन्द्रः	मीमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	४ ग्रहाः						
स्वग्रह	मं	स	श	श	ख	स	व	श	बु	श	स	व	मी	स्वक्षेत्र
होरा	ख	ग	चं	ख	ख	स	ख	मि	चं	स	च	स	ख	होरा
द्वेष्काः	ख	स्व	श	श	व	मि	मं	श	बु	श	ख	श	स	द्वेष्काण
सप्त	च	मि	ख	मि	श	श	मि	म	मि	ख	स	व	मि	सप्तमांश
नवमाः	चं	मि	श	श	च	स	श	मि	व	ख	बु	मि	श	नवमांश
दाद	ख	मि	व	श	व	मि	मं	श	व	ख	व	श	मं	दादशांश
त्रिशाः	व	ख	बु	मि	व	मि	श	मि	बु	श	ख	ख	स	त्रिशांश

भावसप्तवर्गपतिचक्र.

भावा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
स्वग्रह	शु	मं	व	श	श	व	मं	शु	बु	चं	ख	गु
होरा	ख	चं	ख	चं	ख	चं	ख	व	ख	चं	ख	चं
द्वेष्का	शु	व	मं	शु	बु	चं	मं	ख	शु	मं	व	श
सप्त	व	चं	श	ख	मं	मं	ख	श	ख	व	शु	शु
नवमा	व	शु	चं	मं	श	शु	बु	मं	श	शु	चं	मं
दाद	ग	व	मं	बु	बु	चं	चं	शु	शु	व	व	श
त्रिशा	श	व	व	व	व	बु	श	व	व	व	व	व

सप्तवर्गवल्लोदाहरणम्.

- सूर्यका गृहपति मीम समके क्षेत्रमे है इसवास्ते ग्रहवल अष्टमांश १७
१२० होगपति सूर्य समके क्षेत्रमे है इसवास्ते होरावल अष्टमांश १७।३० द्वे
पक्षाणपति चर्य समके क्षेत्रमे है इसवास्ते द्वेष्काणवल अष्टमांश १७
१२० मममांशपति चन्द्रशुशुक्षेत्रमे है इसवास्ते सप्तमांशयत्त्रयोदशांश १।

३।४५ नवमांशपतिचन्द्रशत्रु क्षेत्रमें हैं इसवास्ते नवमांशबल षोडशांश ०।३।४५
 १४५ द्वादशांशपतिबुधशत्रु क्षेत्रमें हैं इसवास्ते द्वादशांशबल षोडशांश
 ०।३।४५ त्रिंशांशपतिगुरु अधिशत्रु क्षेत्रमें हैं इसवास्ते त्रिंशांशबल ०।१।
 ५२॥ सूर्यके सप्तवर्गका बलका योग ०।३५।३७॥ इसी प्रमाण चन्द्रदि
 कोका सप्तवर्गबल होता है।

— अथ— ग्रहसप्तवर्गबलचक्रम्.

सू.	चं.	म.	बु.	बु.	शु.	श.	ग्रह.
मं ० स ३०	श २२ स ३०	सू ० स ३०	बु १ श ५२॥	बु १ श ५२॥	श २२ मि ३०	बु ३ श ४५	ग्रह
सू ० स ३०	चं ३ श ४५	सू ० स ३०	सू ० स ३०	चं ३ श ४५	चं ३ श ४५	सू ० स ३०	होरा
सू ० स ३०	श २२ मि ३०	बु १ श ५२॥	मं ० स ३०	बु १ श ४५	शु ० स ३०	शु ० स ३०	द्रेष्काण
चं ३ श ४५	सू ० स ३०	शु ० स ३०	श २२ मि ३०	न ० श ३०	सू ० स ३०	बु ३ श ४५	सप्तमां.
चं ३ श ४५	श २२ मि ३०	चं ३ श ४५	श २२ मि ३०	बु १ श ५२॥	बु ३ श ४५	श २२ मि ३०	नवमां श.
बु ३ श ४५	बु १ श ५२॥	बु १ श ५२॥	मं ० स ३०	बु १ श ५२॥	बु १ श ५२॥	मं ० स ३०	द्वादशां.
बु १ श ५२॥	बु ३ श ४५	बु १ श ५२॥	श २२ मि ३०	बु ३ श ४५	शु ० स ३०	मं ० स ३०	त्रिंशांश
३५ ३७॥	२४ २२॥	३९ ५२॥	३९ ५२॥	०६ ५	५४ २२॥	१ ०	ऐक्य

श्लोक

शुक्रेण समभांशकेहि विषमैर्न्येद्युरंघ्रिवलम्
 केन्द्राद्येषु चरूपकार्दचरणान्यच्छन्ति खेदाः क्रमात् ॥
 स्त्रीखेदोचरमेनराः प्रथमके क्लीबोच्चमस्येतथा
 द्रेष्काणेधितरतिपादमुदितं स्थानारव्यवीर्यं लिदम् ॥६॥

अन्वयः— समभांशके स्त्रियो शुक्रेन्दु हीति निश्चयेनाधिचतुर्थशिवलं
 द्याता अन्येखि भौग बुध गुरुशनचो विषमभांशो स्थितास्तदांघ्रिवलंदपुः म
 आशश्चभांशम् विषमाराशयः १।३।५।७।९।११ शेषाः सभा इति केन्द्राद्ये
 शुकेन्द्रपणफरापोक्लिमेषुस्थिताः खेदाः क्रमाद्वृषकार्दचरणान्वलानियच्छन्ति
 ददन्ति एतदुक्तं भवति केन्द्रे ग्रहे सति रूपं १ वलंपणफरे आर्द ०।३०। वलं
 आपोक्लिमे चतुर्थशं ०।१५। वलं यच्छन्ति स्त्रीखेदो शशिशुक्रौ तृतीय द्रेष्का

णे वर्तमानो पादं बलं दत्तः नराः सूर्य्य मंगल गुरु वः प्रथम द्रेष्काणे पादं बलं
वितरंति कृत्वा वै बुध शनि मध्ये द्रेष्काणे स्थितौ पादं बलं दत्तः इदं यत्पंचधा
बल मुदितं तत्स्थानाख्यं वीर्य्यं पंचानां योगे स्थान बलं स्यादित्यर्थः ॥

अर्थः- शुक्र चंद्र यह समराशीमें किंवा समांशमें होयतो और सूर्य्य मं-
गल बुध गुरु शनि यह विषम राशीमें वं विषमांशमें होयतो चरण ०।१५।०
बल देते हैं- ग्रह केन्द्रमें कहिये लग्न चतुर्थ सप्तम दशम स्थानमें होयतो
रूप १ बल देते हैं- ग्रह पणफरमें कहिये द्वितीय पंचम अष्टम एकादश स्थान-
में होयतो अर्ध ०।३०।० बल देते हैं- ग्रह आपोर्किल ममें कहिये तृतीय षष्ठ नवम
द्वादश स्थानमें होयतो चरण ०।१५।० बल देते हैं- पुरुष ग्रह प्रथम द्रेष्काणमें
होय और नपुंसक ग्रह द्वितीय द्रेष्काणमें होय और स्त्री ग्रह तृतीय द्रेष्का-
णमें होयतो चरण बल ०।१५।० देते हैं यह ५ स्थान बलों के योगकी सी स्था-
न बल ऐसा कहते हैं- **युग्मायुग्म बलों का हरणम्.**

इहां सूर्य्य भौम और शनि यह विषम राशीमें हैं इसवास्ते इनका
चरण बल चन्द्र समराशीमें है इसवास्ते चन्द्रका चरण ०।१५।० बल शुक्र
समराशीमें किंवा सम नापांशमें नहीं इसवास्ते इस्का बल ०।०।० बुध
गुरु विषम राशीमें किंवा विषमांशमें नहीं- इनका बल ०।०।०

युग्मायुग्म बलम्

सू	चं	मं	बु	ए	गु	श	ग्र
०	०	०	०	०	०	०	ब
१५	१५	१५	०	०		१५	ल
०	०	०	०	०		०	

अथ केन्द्रादि बलों का हरणम्.

सूर्य्य चन्द्र केन्द्रमें है इसवास्ते इनका
रूप बल भौम शुक्र पणफरमें है इसवास्ते
इनका अर्ध ०।३०।० बुध गुरु शनि यह आपो-
र्किल में है इसवास्ते इनका चरण बल

इहां गुरु प्रथम द्रेष्काणमें है इसवास्ते
चरण बल शुक्र तृतीय द्रेष्काणमें है इस-
वास्ते चरण बल शनि द्वितीय द्रेष्काणमें
है इसवास्ते चरण बल सू-मं-प्रथम द्रे-
ष्काणमें नहीं और बुध ६।१।५ द्रेष्का-
णमें नहीं और चंद्र तृतीय द्रेष्काणमें
नहीं इसवास्ते इनका बल शून्य-
०।०।०

द्रेष्काण बलों का हरणम्.

केन्द्रादि बलम्.

सू	चं	मं	बु	ए	गु	श	ग्र
१	१०	०	०	०	०	०	म
०	०	३०	१५	१५	३०	१५	ल
०	०	०	०	०	०	०	

द्वैष्काणवलचक्रम्.

सूर्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	ग्रहाः
०	०	०	०	१५	१५	१५	वलः
०	०	०	०	०	०	०	

स्थानवल योगचक्रम्.

सूर्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	दहः	शुक्रः	शनिः	ग्रहाः
५८ ५६	२० ४७	४ २१	२ ७	३८ ५५	४९ ५८	१७ ४७	उच्चवल १
३५ ३७॥	२४ २२॥	३१ ५२॥	३१ ५२॥	२६ १५	५४ २२॥	१ ०	सप्तवर्ग २
१५ ०	१५ ०	१५ ०	० ०	० ०	० ०	१५ ०	युग्मायुग्म ३
१ ०	१ ०	३० ०	१५ ०	१५ ०	३० ०	१५ ०	केन्द्रादि ४
० ०	० ०	० ०	० ०	१५ ०	१५ ०	१५ ०	द्वैष्काण ५
२ ४९ ३३॥	३ ० ८॥	२१ १३॥	४८ ५०॥	३५ १०	२९॥ २०॥	२ २ ४७॥	योगः

दिग्बल
 कालबल
 श्लोकः

मन्दालुग्नमिनाकुजाच्चहिवुकंशोध्यंविधोर्तागिवात्
 माध्यंजादुरुतोस्तमत्रस्समात्पुष्टत्यजेच्चक्रतः ॥
 दिग्वीर्यैरसहृत्वयोसमयजंरूपं सदास्याद्विदः
 त्रिंशद्भक्तनतोन्नतेऽशिकुजाकीर्णांपरेपांवलं ॥ ७

अन्वयः- शनिः सकाशालुग्नं सूर्याद्रीमाच्चहिवुकं चतुर्यं विधोः मार्गवाच्च
 माध्यं दशमं तु धादुरोस्तसकाशादस्तं सप्तमं औध्यमिति सर्वत्र ध्येयं शेषं षडाङ्गपरि-
 कंचेत्स्यात्तदा द्वादशराशिभ्यः शोध्यंततः षडहत् षड्भक्तः सूर्यादीर्वीर्यस्यत्
 तु शब्दादुच्चवलभागप्रकारोऽत्रापि बोध्यइति ॥ अथेत्यनंतरं समयजं का-
 लजं वलमुच्यते विदो बुधस्य सदादिनरात्रोरूपं १ वलं स्यात् त्रिंशद्भक्त
 नतोन्नतेऽशिकुजाकीर्णांपरेपांवलं भवतः ननं त्रिंशताभक्तं यलुध्यंतच-
 द्भौमशनीनां वलं भवेत् उन्नतं त्रिंशद्भक्तं रविगुरुशुक्राणां वलं स्यात्
 अर्थभाषाः- शनिर्मेसे लग्नसूर्यं भौममेसे चतुर्यं भावचन्द्रमेसे शु-
 क्रमेसे दशमभावे बुधमेसे गुरुमेसे सप्तमभावे यहक्रमसे कमकरके शेष ६ रा-

शीके अपेक्षा अधिक होयतो वह १२ राशीमें कम करके अनंतर जो शेष रहे
उस्को उच्चबलमें पूर्वोक्त रीति प्रमाण ६ से भाग देना तो ग्रहोंका दिग्बल होता है।

दिग्बल सारणी प्रवेश।

ग्रहमेंसे लग्नादि कथित भाव कम करके जो शेष रहे उस्को ६ से कम
करना अर्थात् षडभात्य करना अब इहां सारणीमें ६ राशी कोष्ठक लिखके
वह कोष्ठकके नीचे रूपादि फल उसमेंसे अभीष्ट ग्रहका जो ६ राशिमेंसे राश्यं
क होय उस्के नीचेका फल लना राशीकोष्ठकके नीचे ३० अंश कोष्ठक और
उस्के नीचे ६० कला कोष्ठक लिखा है उसमेंसे अभीष्ट ग्रहका जो अंश और
कला आवे तत्परिमित कोष्ठकके नीचेका अंशका कलादि और कलाका
विकलादि फल एकत्र करके पूर्वमें लिया जो राशी फल तिसमें युक्त कर
ना तो ग्रहोंका दिग्बल होता है।

दिग्बल राशी फल.

अंश फल.

०	१	२	३	४	५	६	रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
०	०	०	०	०	०	१	फ	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५	
०	१०	२०	३०	४०	५०	०		२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	
०	०	०	०	०	०	०		१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
फलफलचक्रम.								५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	
								२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०				
०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	६	६	६		
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०		
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०				
७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३		
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०		
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०				
१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	२०	२०		
६०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०		

उदाहरणम्.

इहां सूर्य ०१३१०१४२ यह इस्मेंसे चतुर्थ भाव ७१२१५०१३४ कम
करके शेष ३१०१३०८ आया अथइस्का राश्यं ३ है इसवास्ते ३ राशी फल
०१३०१० और अंश ० है इसवास्ते अंश कोष्ठकका फल ०१०१० और कला
०० है इसवास्ते ३० कला कोष्ठकका फल १०१० यह विकला में युक्त किया तो

०।३०।१० यह सूर्यका दिग्बल भया इसी प्रमाण चन्द्रादिकों का सारणी परसे दिग्बल कुरना. अर्थ काल बल का कहते

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	दिग्बल
३०	५७	५०	६०	४८	४५	३८	लचक्र
१०	३४	३२	७	२०	१४	४७	

बुधका सर्वदा दिनमें किंवा रात्रीमें रूप १ बल नतमें ३० से भाग देने से चन्द्र भीम और शनि इनका और उन्नतमें ३० से भाग देतो सूर्य गुरु और शुक्र इनका नतोन्नत बल होता है अथवा नतद्विगुणित करे तो चंद्र भीम शनि इनका और उन्नत द्विगुणी करे तो सूर्य गुरु शुक्र इनका सुगम रीतिसे कलादि बल होता है.

उदाहरणम्.

नत १५।४० इसको ३० से भाग देके ०।३१।२० यह चन्द्र भीम शनि इनका बल भया उन्नत १४।२० इसको ३० से भाग देके ०।२८।४० यह सूर्य गुरु शुक्र इनका बल भया. और बुधका रूप १ बल ऐसा जानना.

पक्षबल अंश बल वर्णनाश दिन होरा बल.

शुक्ले न्नेतिथिह द्रुतैष्यतिथयो

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	नतोन्नत
२८	३१	३१	१	२८	२८	३१	तबल
४०	२०	२०	०	४०	४०	२०	चक्रम्

क्रमात् ॥ सौम्यार्क के भुवां निशः शशिसिताराणां च रूपम्.

संदेज्यस्याथांघ्रिचयाद्वली किल समा मासद्युहोरे श्वराः ॥ ८ ॥

अन्वयः- शुक्ले-ऽन्तेरुणो गतेष्यतिथयस्तिथिभिः पंचदशः १५ तिथिर्जात्याः फलं सतां शुभग्रहाणां चन्द्रबुध गुरु शुक्राणां बलं स्यात् तदेव बलं भूच्युतं रूपाच्युतं पापानां रवि भीम शनीनां पापयुतं बुधस्य च वीर्यबलं स्यात् इदं चन्द्रबलं द्विगुणं कार्य्यं अथ पक्षबलं कथना नंतरं अंशबलं नुच्यते अन्हो दिवसस्य अंशके पुक्रमात् बुध सूर्य शनीनां रूपं बलं स्यात् निशोरात्रेरुच्यंशके पुक्रमेण चन्द्र शुक्र भीमानां रूपं १ बलं भवति तद्यथा यदि दिने जन्म तदा दिनमानस्य त्रिभागं कार्य्यं चेत्त्रयमंशे जन्म तदा बुधस्य रूपबलं अन्येषां शून्यं यदि द्वितीये शे जन्म तदा सूर्यस्य रूपबलं अन्येषां शून्यं तृतीये शे शनेः रूपबलं अन्येषां शून्यं स्यात् एवं रात्रि आवपि + ईज्यस्य गुरोः सदा दिवा रात्रौ वा जन्म स्यात् तदा रूपं बलं भवति. अथेत्यनंतरं अंघ्रिचयाच्चरणं वृद्ध्या समा मासद्युहोरे श्वरो बली स्यात् एतदुक्तं वर्षेशस्य बलं पादं ०।१५।० मासेशस्य ०।३०।० दिनेशस्य ०।४५।० होरेशस्य १।०।० बलम्.

अर्थ भाषा ५ शुक्ल पक्षमें गत तिथीको १५ से भाग देना और रुणा

पक्षमें ऐष्य तिथीको १५ से भाग देना तो शुभ चन्द्र बुध गुरु शुक्र इन ग्रहोंका और यही १ में कम करके पाप ग्रहोंका रवि भौम शनि इनको जलबल होता है। उसमेंसे आधा जो चन्द्र बलसो दूना करना व तात्कालिक सूर्य और चन्द्र इनका अंतर ६ राशीकी अपेक्षा ज्यादा होय तो १२ में कम करना जो शेष रहै उसको उच्च बलमें पूर्वोक्त रीतिके प्रमाण ६ से भाग देना तो शुभ ग्रहोंका और वही ६० मेंसे कम करके पाप ग्रहोंका पक्षबल होता है। अथ शबल दिनके प्रथम त्रिभागमें जन्म होय तो बुधका रूप १ बल द्वितीय त्रिभागमें सूर्यका तृतीय त्रिभागमें शनिका ऐसा रात्रीमें प्रथम त्रिभागमें चन्द्रका द्वितीय त्रिभागमें शुक्रका तृतीय त्रिभागमें भौमका और सर्व कालमें गुरुका रूप १।०।० जानना वर्ष पतिका चरणबल मास पतिका अर्द्ध बल दिन पती चरणत्रय बल होरापतिका रूप बल यह वर्ष मास दिन होरापती इनका बल जानना इन चारों बलक योगको काल बल ऐसा कहते हैं।

वर्षपतिवनावनेकी रीतिः

श्लोक- } द्विष्टोऽयं ग्रहलाघवद्युनिचयश्चकाहृतैः षट्शरैः
 पट्टदसैश्च युतः स बाणतपनसे पुंश्चरवांगान्निभिः ॥
 खाग्न्यां शैविहृतं फले गुणयमश्चेचक्रनिघ्नाक्षरवोपे-
 तैस त्रियुगनगोर्वरितकेऽस्तोऽर्कात्समामासयौ ॥

अर्थः- अग्नीष्ट चक्रको ५६ से गुणके उसमें अहर्गण युक्त करना अनंतर उसीमें १२५ युक्त करना ३६० से भाग देना जो भागाकार आवे उसको ३ से गुणके गुणाकारको चक्र ५ से गुणके उसमें ३ युक्त करके सब अंक एकत्र करके ७ से भाग देके जो शेषांक रहै सो क्रमसे सूर्यादि वर्तमान वर्षाधिप होता है।

मासपतिवनावनेकी रीतिः

अग्नीष्ट चक्रको २६ से गुणके उसमें अहर्गण युक्त करना अनंतर उसीमें ५ युक्त करना ३० से भाग देना जो भागाकार आवे उसको दूना करके उसमें ४ युक्त करके ७ से भाग देके जो शेषांक रहै सो क्रमसे सूर्यादि वर्तमान मास पति होता है।

दिनपतिवनावनेकी रीतिः

अग्ने देशसे दक्षिणोत्तर मध्य रेखाका जो योजन होय उसमें उसका च-

तुर्थांश कम करके तन्मितफल पूर्वमध्यरेषा होयतो १५ घडीमें कम करना अथवा पश्चिम रेखा होयतो १५ घडीमें युक्त करना अनंतर यह संस्कार युक्त घडी दिनार्धसे जितना पल कमती होय उतना पल सूर्योदयके अनंतर बार प्रवृत्ति होती है अथवा संस्कृत घडी दिनार्धसे जितना पल अधिक होय उतना पलसे सूर्योदयके पूर्ववार प्रवृत्ति होती है यह प्रकार से जन्म कालमें जो वार होयसों वार पति जानना.

होरापति बनावेनेकी रीति.

बार प्रवृत्तिसे लेकर इष्टकालतक जो घटी पल होय-उस्को घूनाकरना उस्को २ स्थानमें रखना प्रथम स्थानमें ५ से भाग देना शेषको द्वितीयस्थानमें घटाय देना और १ युक्त करना तो बारपतीके क्रमसे अर्थात् १ वचै तो सूर्य २ में शुक्र ३ में बुध ४ में चन्द्र ५ में शनि ६ में गुरु ७ में भीम यह क्रमसे इष्टवारपतीसे गणनासे जो वार आवे उस्की वहगत होरा जानना. अनंतर वर्तमान होराका स्वामी होरापति जानना.

पक्षबल सारणि प्रवेश.

तात्कालिक सूर्य और चन्द्र इनका अंतर पङ्काल्य करना अब सारणीमें ६ राशि कोषक लिखके वह कोषकके नीचे रूपादि फल लिखा है उसमेंसे अंतरका जो राश्यंक होय उस्के नीचेका फल लेना राशि कोषकके नीचे ३० अंश को एक और ६० कला कोषक लिखा है उसमेंसे अंतरका जो इष्ट अंश और कला आवे उस्के नीचेका अंशका कलादि और कलाविकलादि फल एकत्र करके पूर्वमें लिखा जो राशिफल उसमें युक्त करना तो शुभग्रहोंका पक्षबल होता है और यह रूप १ में कम करती पापग्रहोंका पक्षबल होता है. इसमेंसे चन्द्रका बल द्विगुणित करना.

राशीफल.							अंशफल.																
०	१	२	३	४	५	६	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
०	०	०	०	०	०	१	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	५
०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
०	०	०	०	०	०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
उदाहरणम्.							१६	३७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०	०
							५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	०	०
							२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०

नका अंतर ८२२।११

कलाकोष्ठक.

१५३ यह ६ से ज्यादा है

इसवास्ती १२ मे से कम

करके ३।७४८।७ यह

इसवास्ती राशिकोष्ठक

३ इस्का फल ०।३०।०

इस्को अंश कोष्ठक ७

इस्का फल २।२० और

कलाकोष्ठक ४८ इस्का

फल १६ एकत्र करके

२।३६ युक्त करके ०।

३२।३६ यह शुभ ग्रहों

को पक्षवल यही रूप में

कम करके ०।२७।२४ यह पाप ग्रहों का पक्षवल और चंद्रका द्विगुणित १।५।१२ जानना.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१५
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९	२०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

पक्षवलचक्रम्

दिनरात्रिभिभागवलोदाहरणम्.

सू.	चं.	मं.	सु.	शु.	श.	प्र.
२७	१५	२७	३२	३२	२२	२७
२४	१२	२४	३६	३६	२४	२४

इहां दिनमान ३२।०।१ इस्का त्रिभा
ग ३०।४० इसवास्ती दिनके तृतीय
त्रिभागमें जन्म इसवास्ती शनिका

रूपवल और उरुका रूपवल जानना. और ग्रहों का अन्यवल जानना.

वर्षपतिवलोदाहरणम्.

दिनरात्रिभिभागवल.

चक्र २३ इस्को ५६ से गुणके १८४८ य
ह इस्में अर्हण ११७८ युक्त करके ३२४

सू.	चं.	मं.	सु.	शु.	श.	प्र.
३	३	३	३	३	३	३
३	३	३	३	३	३	३

यह इस्में १२५ युक्त करके ३२५१ इस्को ३६० में भाग देके ८ यह इस्को
३ से गुणके २४ इस्को चक्र ३३ यह ५ से गुणके १६५ इस्में ३ युक्त कर
के १६८ पूर्णिक अंक २४ युक्त करके १९२ इस्को ७ से भाग देके शेष
क ३ इनवास्ती वर्षपति भीम इस्कावल ०।१५।० जानना.

मासपतिवलोदाहरणम्.

चक्र ३३ इस्को २६ से गुणके ८५८ यह इस्में अर्हण ११७८ यु
क्त करके २०३६ यह इस्में ५ युक्त करके २०४१ इस्को ३० से भाग देके ६८

इस्को दूना करके १३६ यह इस्में ४ युक्त करके १४० इस्को ७ से भाग देके शेषांक ० इसवास्ते मासपति शनि इस्का चल ०१३०१०

दिनपति चलो दाहरणम्.

देशांतर योजन ५ इस्में इसीका चतुर्थीश ११५ कम करके ३४५ पल यह पश्चिम देशांतर है इसवास्ते १५ घडीमें युक्त करके १५१३१४५ यह दिनार्ध १६।२१ इस्से १ घडी १८ पल कमती है इसवास्ते सूर्योदय के अनंतर १ घडी १८ पलसे वार प्रवृत्ति भई जन्मकाल रविवारको ३२ घडी १ पल पर है इसवास्ते रवि यही दिनपति इस्का चल ०१४५१० जानना.

होरापति चलो दाहरणम्.

वार प्रवृत्तिसे लेकर इष्टकालतक ३०४२ इस्को २ से गुणके ६१ घडी २४ पल इस्को ५ से भागदेके १२ आये इहां इष्टवारपतीरवि इस्से गणनामें गत होरापति शनि और वर्त्तमान होरापती गुरु इस्का चल रूप (१) जानना.

वर्षमासदिनहोरापतिवलचक्र							कालवलयोगचक्र.								
सूदि	चं	मं	बु	वृ	शु	श	ग्र	सू	चं	मं	बु	वृ	शु	श	ग्र
दिन	०	वर्ष	०	होरा	०	मास		१	१	१	१	३	१	२	
४५	०	१५	०	१	०	३	व	६१	३६	१३	३२	१	१	२८	व
०	०	०	०	०	०	०		४	३२	४४	३६	१६	१६	४४	

इदानींक्रमप्राप्तचेष्टावलं विवक्षुरादावयन बलमाहः-

श्लोक- } सदाक्रांतिप्रागैर्युताः स्यसिद्धाः शनीन्द्वोर्युतोनाः
 क्रमाद्याम्यसौम्यः ॥ विलोमं परेषांगजाम्प्रोधि
 ४८ भक्ता भवेदायनं वीर्यमर्कस्य दृग्ध्रं ॥ ८ ॥

अन्वयः- इस्य बुधस्य दक्षिणेर्वोच्चरेः क्रान्तिभागेः सिद्धांश्चतुर्विंशत्यंशायुताः शनीन्द्वोर्युतोनाः क्रमात् याम्यैसौम्यैर्युताः सौम्यैरूनाः परेषां रविभौम गुरु शुक्राणां विलोमं सौम्यैर्युताः याम्यैरूनाः सिद्धाः २४ गजाम्प्रोधि ४८ भक्ताः संतः आयनं वीर्यं भवेत् इदमायनबलं अर्कस्य द्विगुणितं सद्भवेत्.

अर्थः- सर्वकाल २४ अंशमें बुधका दक्षिण किंवा उत्तर क्रान्ति भागयुक्त करना २४ अंशमें शनि और चन्द्र इनके दक्षिण क्रान्ति भागयुक्त करना और उत्तर क्रान्ति भाग २४ अंशमेंसे कम करना २४ अंशमेंसे रविभौम गुरु और शुक्र इनका दक्षिण क्रान्ति भागकम करना और उत्तर

क्रांति भाग २४ अंशमें युक्त करना. अनंतर वह सब ६० से भाग देना तो ग्रहोंका अयन बल होता है. परंतु यह बल सूर्यका मात्र द्विगुणित करना अथवा क्रांति भाग संस्कारित २४ अंशमें उसीका चतुर्थी श युक्त करना तो कलादि अयन बल हो.

क्रांतिब्रनावनेका. श्लोक.

स्युःखंडानिरववार्द्धयोऽम्बरकृताशैलान्नयोऽध्ययनयः
त्रिंशत्तत्त्वघटीनवारिनिधयस्तैः सायनांशग्रहात् ॥

बाव्हंशाभ्रकु १० भागसंख्यकचुतिः शैषैष्यघाताद्दशा-
मातृयादिष्विहृत्तालवादिपमस्तद्विक्स्वगोलाभवेत् ॥१॥

अन्वयः- अयनांश युक्तात्वेदात् ग्रहात् बाव्हंशा भुज भागा-
स्तेषां दिग्लबोदशमांशः तन्मितखण्डैक्यं कार्यम् ॥ तच्छेयेण
घाताद्गुणिताद्यत् एष्यं भोग्य खंडं तस्य यो दिग्लबोदशमांशः तेन
युतं खण्डैक्यं कार्यम् ततोदिग्भिर्हृतो दशभक्तः लवायः अंशा-
यः स्वदिक् सायनगोलदिक् अपमः क्रांतिः स्यात्.

अर्थभाषा.

ग्रहमें अयनांशा युक्त करके उसका पूर्वोक्त रीति करके भुज-
करना और उसके अंश करना १० से भाग देना जो भागाकार आवे
तत्परिमित नीचे लिखे अंकमें मिलान करना और भागाकारमें एक युक्त
करके तत्परिमित अंकलेके उसके ऊपरके अंशादि शेषको गुणके वह
गुणाकारको १० से भाग देके जो भागाकार आवे उसमें पीछेके अंक
की मिलान युक्त करना और जो मिलान आवे तत्स्को १० से भाग देना
जो भागाकार आवे सो अंशादि क्रांति जानना जो सायन ग्रह उत्त-
र गोलमें होय तो उत्तर क्रांति और दक्षिण गोल होय तो दक्षिण
क्रांति जानना. गोल ऐसा कि मेपसे ६ राशीतक सायन ग्रह होय तो
उत्तर गोल तुलसे ६ राशीतक सायन ग्रह होय तो दक्षिण गोल जानना.

क्रान्त्यंकचक्रम्.

१	२	३	४	५	६	७	८	९
२०	२०	३७	३४	३०	२५	१८	१२	६

क्रांतिसारिणीप्रवेशः

प्रथम सायन ग्रह करके उस्का भुज करके उस्का भाग करना अ-
नंतर सारणिमें अंश कोष्ठक ९० लिखके उस्के नीचे अंशादिफल लि-
खाहे और दश दश अंशके अंतरसे अलग अलग ६० कला विक-
ला कोष्ठक लिखा है- अब अभीष्ट भुज भाग कोष्ठकके नीचेका
अंशादि फल लेके उस्को भुज भागके नीचे जो कला विकला त-
त्परिमित कला विकला कोष्ठकके नीचेका कलाका कलादि और
विकलाका विकलादि फल एकत्र करके युक्त करना तो ग्रहोंकी अं-
शादि क्रांति होती है- उदाहरणम्- /

सूर्य ००।१३।१०।१२ इस्को अपनांशा २२।१६।०३ युक्त करके ०१।५।
५६।१५ यह सायन सूर्य इस्का भुज किया तो वहीरहा ०१।५।५६।१५
इस्के अंश ३५।५६।१५ यह है इसवास्ते भुज भाग कोष्ठक ३५ के
नीचेका अंशादिफल १३।२६।०० कला ५६का कला विकला कोष्ठक
मेंका कलादिफल १८।२२ विकला ५५का कला विकला कोष्ठकका
विकलादिफल १५।१९ यह कला विकला कोष्ठक फल एकत्र करके १८
। ३७ यह पूर्वोक्त अंशफल १३।२६।०० इस्में युक्त किया तो ३३।६२।३७
यह सूर्यकी क्रांति भई इसी प्रमाणं सब ग्रहोंकी क्रांति बनावना-
अब सायन सूर्य उत्तर गोलमें है इसीवास्ते उत्तर क्रांति जानना-

क्रांतिचक्रम्-

क्रांति	भुज	अंश	क्रांति	भुज	अंश	क्रांति	ग्रहाः
१३	२०	१०	५	०	६	२३	बल.
६२	५६	१७	३७	२२	७	६५	
३७	२६	३१	५८	६०	५७	२२	
उत्तर	दक्षिण	उत्तर	उत्तर	दक्षिण	दक्षिण	उत्तर	दक्षिण

क्रांतिसारिणी.

शुक्रको	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	
अं.	०	०	०	१	१	२	२	२	३	३	फ.
फ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

कलाविकलाफल ॥

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क.	०	०	०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	४	५	५
ध.	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क.	६	६	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११
ध.	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क.	१२	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७
ध.	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	१८	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२२	२३	२३
ध.	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६

क्रांतिसारिणी.

शुक्रको	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	
अं.	४	४	४	५	५	६	६	६	७	७	फ.
फ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

कलाविकलाफल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क.	०	०	०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	४	५	५
ध.	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क.	६	६	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११
ध.	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क.	१२	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७
ध.	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	१८	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२२	२३	२३
ध.	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६

क्रांतिसारिणी.

पु.अं.	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	.
अं.	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	
फ.	०	२३	४४	६	२८	५१	१३	३५	५७	१९	फ.
	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	

कलाविकलाफल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क.	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	४	५
ध.	०	२२	४४	६	२८	५१	१३	३५	५७	१९	४२	६	२६	४८	१०
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क.	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	१०
ध.	३३	५५	१७	३९	१	२४	४६	८	३९	५२	१५	३७	५९	२१	४३
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क.	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१६
ध.	६	२८	५०	१२	३४	५७	१९	४१	३	२५	४८	१०	३२	५४	१६
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९	२०	२०	२१	२१	२१
ध.	२९	१	२३	४५	७	३०	५२	१५	३६	५८	२१	४३	५	२७	४९

क्रांतिसारिणी

पु.अं.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	.
अं.	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	
फ.	४२	२	२३	४३	३	२४	४६	६	२५	४५	फ.
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	

कलाविकलाफल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क.	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	४	५
ध.	०	२०	४०	१	२१	४२	२	२२	४३	३	२४	४४	६	२५	४५
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क.	५	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९
ध.	६	२६	४६	७	२७	४८	८	२८	४९	९	३०	५०	११	३१	५१
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क.	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४
ध.	१२	३३	५२	१४	३४	५५	१६	३६	५६	१६	३७	५७	१७	३८	५८
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	१५	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९	२०
ध.	१९	३९	५९	२०	४०	१	२१	४१	२	२२	४१	३	२३	४४	६

कांतिसारिणी.

मु.अं.	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	
अं.	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	
फ.	६	२६	४२	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	फ.

कलाविकलाफल.

को	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क.	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	३	४
घ.	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२
को	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क.	४	४	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८
घ.	३०	४८	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२
को	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क.	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३
घ.	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२
को	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७
घ.	३०	४८	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२

कांतिसारिणी.

मु.अं.	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	
अं.	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	
फ.	६	२१	३६	५१	६	२१	३६	५१	६	२१	फ.

कलाविकलाफल.

को	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क.	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
घ.	०	१८	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०
को	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क.	३	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
घ.	२५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५
को	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क.	७	७	८	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११
घ.	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०
को	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४
घ.	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५

क्रांतिसारिणी.

सु.अ.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	
अ.	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	फ.
फ.	३६	४६	५७	२४	१९	३०	४०	५१	२३	१३	
	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	

कला विकला फल.

की.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क.	०	१०	४०	६०	८०	९०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२०	२०	३०
ध.	०	१६	२१	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क.	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५
ध.	४२	५२	६	१५	२६	३६	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	६	१६
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क.	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७
ध.	२४	३५	४६	५७	६	१८	२९	४०	५१	६	१२	२३	३४	४५	५६
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०
ध.	६	१७	२८	३९	५०	०	११	२२	३३	४४	५५	५	१६	२७	३८

क्रांतिसारिणी.

सु.अ.	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	
अ.	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	फ.
फ.	२४	३१	३८	४५	५२	०	७	१६	२१	२८	
	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	

कला विकला फल.

की.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क.	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१
ध.	०	७	१४	२१	२८	३६	४३	५०	५७	६	१२	१९	२६	३३	४०
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क.	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
ध.	४८	५५	२	९	१६	२३	३१	३८	४५	५२	०	७	१४	२१	२८
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क.	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५
ध.	२६	३३	४०	५७	६	१२	१९	२६	३३	४०	४८	५५	६	७	१६
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	६	७
ध.	२४	३१	३८	४५	५२	०	७	१४	२१	२८	३५	४२	५०	५७	६

क्रांति सारिणी-

शु. अं.	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
अं.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४
फ.	२६	३८	४०	४३	४५	४८	५०	५२	५५	५७	०
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

कलाविकलाफल-

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
फ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
घ.	०	२	४	७	९	११	१४	१६	१८	२१	२३	२५	२०	२०	२३
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१
घ.	३६	३८	४०	४३	४५	४७	५०	५२	५४	५७	५९	१	४	६	८
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
घ.	१२	१४	१६	१९	२१	२३	२६	२८	३०	३३	३५	३७	४०	४२	४४
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२
घ.	४८	५०	५२	५५	५७	५९	२	४	६	९	११	१३	१६	१८	२०

अयनबलसारिणीप्रवेश.

प्रहोके दक्षिणोत्तर क्रांति संबंधसे अयन बल सारिणीमें शून्य से २४ तक २५ क्रांति भाग कोष्ठक दो ठिकाने लिखा है. जब सूर्य मंगल गुरु शुक इनकी उत्तरक्रांति और शनि चन्द्र इनकी दक्षिण क्रांति बुधकी दक्षिण किंवा उत्तर क्रांति है तब प्रथम क्रांति भाग कोष्ठकमें से अर्ध क्रांति भाग कोष्ठकके नीचे का रूपादिफल केले उसको अंश कोष्ठक के आगे ६० कलाविकला कोष्ठक लिखा है उसमें से क्रांति भागके नीचे जो कलाविकला होय तत्परिमित कलाविकला कोष्ठकके नीचे का ६७ कोष्ठक तक कलाकाविकलादिविकलाका प्रतिकलादि और ४८ कोष्ठकसे कलाकाकलादिवैसा विकलाकाविकलादिफल एकत्र करके युक्त करना तो भिन्नभिन्न प्रहोका अयनबल होता है. जब सूर्य भौम गुरु शुक इनकी दक्षिण क्रांति और शनि चन्द्र इनकी उत्तर क्रांति होय तब द्वितीय क्रांति भाग कोष्ठकमें से अर्ध क्रांति भाग कोष्ठकके नीचे का रूपादिफल लेना अनंतर आगे ६० कलाविकला कोष्ठक लिखा है उसमें से अर्ध क्रांति भागके नीचे जो कलाविकला होय तत्परिमित कलावि

कला कोष्ठकके नीचेका कलाको कलादि और विकलाका विकलादि फल एकत्र करके लिया जाओ अंशफल उससे कम करना तो ग्रहोंका अयनबल तयार होता है यह अयनबल सूर्यका मात्र दूना करना.

प्रथमक्रांति भागचक्र अंशफल-अयनबल सारिणी.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
१०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२
१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८

द्वितीयक्रांति भागअंशफल.

अंको	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
फ.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१

कलाफल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
फ.	०	१५	३०	४५	६०	७५	९०	१०५	१२०	१३५	१५०	१६५	१८०	१९५	२१०	२२५
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
क.	१०	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४
फ.	४५	०	१५	३०	४५	६०	७५	९०	१०५	१२०	१३५	१५०	१६५	१८०	१९५	२१०
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
क.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
फ.	३०	४५	६०	७५	९०	१०५	१२०	१३५	१५०	१६५	१८०	१९५	२१०	२२५	२४०	२५५
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
क.	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१
फ.	१५	३०	४५	६०	७५	९०	१०५	१२०	१३५	१५०	१६५	१८०	१९५	२१०	२२५	२४०

उदाहरणम्.

सूर्यकी उत्तरक्रांति १३४२३७ इस्का अंश १३ है. इसवाले इहां.

प्रथम क्रांति भाग कोष्टक १३ इस्का फल ०।४५घटी १५ इस्को क्रांति भा-
गके नीचेकी कला ४२ विकला ३७ इस्का कलाका विकलादि और
विकलाका प्रतिकलादि फल एकत्र करके ५३।१६ यह विकलामें युक्त
करके ०।४७।८ यह दूनाकरके १।३४।१६ यह सूर्यका अयनबल भ-
या इसी प्रमाण सारणीसे चन्द्रादिकोंका अयनबल होता है।

अयन बल चक्रम्.

सूर्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	बृहः	शुक्रः	शनिः	ग्रहाः
३४ १६	५६ १०	४२ ५२	३७ ९	२९ ३१	२४ ५०	० १८	बल

इदानीं भौमादीनां चेष्टाबल माह.

श्लोक } मध्यस्पष्टयुतेर्दलोनितचलंचेष्टारव्यकेद्रकुजात्
स्थात्तच्चैद्गुणाच्चतुषडधिकंषड्दृष्टत्तेष्टाबलं ॥
स्यादेकोत्तररूपमैद्विविद्वतनैसर्गिकस्याहलं
मंदारज्ञपुरेज्यशुक्रशशभृत्तीक्ष्णद्युतीनां क्रमात् १०

अन्वय मध्यस्पष्टयोर्यहयोगार्धेनोनितचलंतामशीप्रोच्चतदाभौ-
मादीनांचेष्टासंज्ञकं केन्द्रस्यात् तत्केन्द्रेचेष्टषडधिकं तदा द्वादशराशिष्य-
शुक्लततः षड्दृष्टत्तेष्टाबलं भवतिचकारादुच्चबलसाधनवद्भागविधिर-
नापिज्ञयः अत्रैवं ध्येयं यदि मध्यस्पष्टयुतौ द्वादशाधिकं तदा द्वादशभि-
रुत्तरं नकार्यमिति नैसर्गिकबलस्यादित्यस्य पूर्वार्धेन संबंधः एको-
त्तररूपमैद्विविद्वतं तदा क्रमाच्छनिभौमबुधगुरुशुक्रचन्द्रसूर्या-
नां नैसर्गिकं बलं स्यात् तद्यथा एकस्मिन् सप्तभक्ते शनौ नैसर्गिक-
बलं द्वयोस्तप्तभक्ते भौमस्य.

अर्थ तापाः मध्यम और स्पष्ट ग्रहका योगार्ध उसी ग्रहके शीप्रो-
चमें कम करना तो भौमादि ग्रहका चेष्टाकेन्द्र होता है यह केन्द्र साशीसे
ज्यादा होयगा १२ राशीमें कम करना अनंतर उच्चबलमें मंद शक्ति असा-
दिते असादेना तो चेष्टाबल होता है अथवा षड्भाग केन्द्रता असा-
दित करके इस्को ३ से भाग देना तो शुभमंतीसे चेष्टाबल होता है
या अयन और चेष्टाबल इनके योगको चेष्टाबल कहते हैं अनु-
क्रमन १ से ७ तक अंकको ७ से भाग देना तो क्रमसे शनि भौम बु-
ध शक्र गुरु चन्द्र सूर्य इनका नैसर्गिक बल होता है अथवा-

८१३४१७ इनको क्रमसे १ से ७ तक अंकसे गुणनातो शनि भौम इत्यादि ग्रहोंका कला नैसर्गिक बल होता है। अथवा शनिके बलको दुना त्रिगुना चोचुना करते जावो तो वही क्रमसे बल हो जायगा।

भौमादिग्रहोंका शीघ्रोच्च बनावनेकीविधि:-

बुध और शुक्र इनके शीघ्रकेन्द्रमें मध्यम सूर्य्य युक्त करनेसे बुध शुक्रका शीघ्रोच्च होता है। और मंगल चरहस्पति शनि इनका शीघ्रोच्च मध्यम सूर्य्य है-

मध्यमग्रह.						स्पष्टग्रह.					
मं.	बु.	च.	शु.	श.	अ.	मं.	बु.	च.	शु.	श.	अ.
५	०	५	०	२		४	११	५	१०	२	
२२	११	१२	११	१६		११	२१	८	२६	१३	स्पष्ट.
७	११	१७	११	३९	मं.	४	२०	१२	५६	२१	
२६	५६	५१	५६	३७		१६	५३	३७	४	४५	

मध्यस्पष्टयोग:						मध्यस्पष्टयोगदलचक्रम्.					
मं.	बु.	च.	शु.	श.	अ.	मं.	बु.	च.	शु.	श.	अ.
१०	०	१०	११	५		५	०	५	५	२	
३३	३	२०	८	०	यो.	१	१	१०	१६	१५	यो.द.
११	३२	३०	८	१		३५	१६	१५	४	०	
४०	४९	२८	०	२२		५०	२४	१८	०	४१	

शीघ्रोच्चचक्रं.						चैष्टाकेन्द्रचक्रम्.					
मं.	बु.	च.	शु.	श.	अ.	मं.	बु.	च.	शु.	श.	अ.
११	७	०	७	०	गी.	७	३६	७	३	९	
४१	१५	१३	५	११	चै.	३६	५५	५६	५०	११	कै.
५६	१५	५६	९	५६		६	५१	४२	९	१५	

चैष्टाबलसारणी प्रवेशः

चैष्टाकेन्द्र षड् भाग्य करके सारणीमें ६ राशी कोष्ठकें लिखके उत्के नीचे कोष्ठकमें रूपादि फल लिखा है। उन्मेंसे प्रबुद्धतम चैष्टाकेन्द्रका जो बल सम्पक होय उसके नीचेका फल लेना। अनंतर राशी कोष्ठकके नीचे अंश कोष्ठक और ६० कला कोष्ठक लिखा है। उन्मेंसे प्रबुद्धतम केन्द्रका जो डहअंश और कला आवे तत्सारमिति कोष्ठकके नीचेका अंशकलादि और कलाका विकलादि फल एकत्र करके पूर्वमें लिखा जो राशी फल उन्ने युक्त करना तो ग्रहोंका चैष्टाबल होता है। यह सार-

णी प्रवेशसे इष्टकषाध्यायमेकासूर्यचंद्रकाचेषावलकरनेके वास्ते काम पड़
ताहै- ॥ चेषावलसारिणीराशिफल ॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८
०	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०

अंशफल

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

टीप:- आरामरेज्य सीरीणां शीघ्रोच्चस्याहिवांकरः ॥

कलाविकलाफल

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१५
५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०
१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९	२०
५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०

उदाहरणम्

गौनका चेषाकेन्द्र ७।१।३६।६ यह ६ से अधिक है- इसवास्ते
१२ से कम करके ६।२०।२३।५६ यह इसका राश्यंक ५ इसवास्ते
५ राशिकोष्ठकका फल ०।६०।० इसका अंश २० इसवास्ते २० कोष्ठक-

का फलं ६।४० औरकला २३ इसवास्ते २३ कला कोषक का फल ७।
४० एकत्र करके ६।४८ यह राशी फल में युक्त करके ०।६६।६८ यह
भौमका चेष्टावल भया. इसही प्रकार बुधादिकोंका करना.
चेष्टावलचक्र. अयनचेष्टावलयोगचक्र.

मं.	बु.	स.	शु.	श.	०	स्व.	चं.	मं.	बु.	स.	शु.	श.
४६	४४	४९	२१	२१	०	१	०	१	१	१	०	०
४८	२०	४१	५६	१६	०	३४	५६	२९	२१	१९	४६	२१
						१६	१०	४०	२१	१२	४६	२४

५ नैसर्गिक वलोदाहरण.

एकको ७ से भागदेके ०।८।३४ यह शनिका. दोको ७ से भागदे-
के ०।१७।८ यह भौमका. ३को ७ से भागदेके ०।२५।४३ यह बुधका
चारको ७ से भागदेके ०।३४।१७ यह गुरुका. पांचको ७ से भागदेके
०।४२।५९ यह शुक्रका. छको ७ से भागदेके ०।५१।२५ यह चन्द्रका
७को ७ से भागदेके १।०।० यह सूर्यका. इसीप्रमाण ग्रहोंका संवका
ल एकही नैसर्गिक वल होता है. यह वल सिद्ध है.

नैसर्गिक वल.

ग्रहः	स्व.	चं.	मं.	बु.	स.	शु.	श.
व.	१	५१	१७	२५	३४	४३	८
	०	२६	८	४३	१७	५१	३४

श्लोक- युद्धेवाणवियोगहृत्स्वचरयोर्वीर्यैर्व्ययोरंतरम्
स्वसोम्यस्यबलेक्षयंचयमदिकंसंस्थस्यकुप्यद्विले ॥
सहस्यंघ्नियुगुग्रहृष्टिचरणोनरेवदवीर्यंभवेत् भावानां
वलमीशजचनृचतुष्पादारव्यकीटाद्युजा ॥ १ ॥
जायांवाद्यस्वभोनिताःखलुनतोदिग्यीज्यवचद्युतं
सहस्यंघ्नियुगुग्रहृष्टिचरणोनरेज्यद्व्युक्पुनः ॥

अन्वयः- स्वचरयोस्ताराग्रहयोः भौमादिग्रहयोरित्यर्थः युद्धे सति
वीर्यैर्व्ययोरर्बलेक्षयोरंतरं वाणवियोगहृत्स्वचरयोरेण भक्तः सन्पल्लव्यं न
स्त्रीभ्योत्तस्यस्यग्रहस्यबलेक्षयंनकुप्यत् यमदिवसंस्थस्यबले क्षय-

मृणं कुप्यति ग्रहस्य दक्षिणोत्तरस्य ज्ञानंतु शरवशेन भवति तथै
थायस्य ग्रहस्योत्तरः शरः स उत्तरस्यः यस्य दक्षिणः स दक्षिण-
स्यः यदि द्वयोर्दक्षिणशरस्तदायस्याधिकं शरः स उत्तरस्योऽन्यो दक्षिण-
स्यः यदि द्वयोर्दक्षिणशरस्तदायस्याधिकं शरः स उत्तरस्योऽन्यो दक्षिण-
स्य इत्यर्थः इदानीं दिग्बल-ग्रहाणां प्रागानीतबलज्ञतां शुभग्रहाणां
दृष्टिचतुर्थीशेन युतं उभ्राणां पापानां दृष्टिचतुर्थीशेन स्थितं काव्यं
तदा ग्रहाणां दीर्घं भवेत् भावबलं भावानामेकं बलं स्वामिबलं
भवत्येव पुनर्द्वितीयबलं चतुष्पादशब्दकीटास्त्रिज्याभावाः नृचतुष्पाद
कीटजलचरणशयो भावा क्रमेण जायां ह्यदरवभोजिताः सप्तमचतु-
र्थं प्रथम दशम भावेरुनायदिपंडु भाविकांस्तदा द्वादश राशिभ्यः शु-
द्धाः पञ्चाल्यायथास्थित एवतन्तः पंडुक्ता फलं दिग्बलं भवेत् अनयो-
योगः कार्यः सतुशुभं ग्रह दृष्टिचतुर्थीश पापग्रह दृष्टिचतुर्थीशयो-
रन्तरं धनर्णं पूर्वोक्त वलकां चतुर्थीशयोरेक्यं तृतीयबलं त्रया-
णां योगे स्पष्टं भावबलं स्यात्

अर्थः- जब जन्मकालमें २ ग्रहोंका युद्ध होता है कहिये वह ग्रह रा-
शि भाग कलासे सम होने है तब वह ग्रहोंका कलात्मक शर करना अन-
तर वही ग्रहोंका पूर्वोक्त बलका जो एक्य उस्का अंतर करके उस्को शर
के अंतरसे भाग देना जो फल आवे सो उत्तर दिशामें रहने वाला जो
ग्रह उस्के बलमें युक्त करना और दक्षिण दिशामें रहने वाला जो ग्रह
उस्के बलमें से कम करना यह संस्कार चेष्टा बलका भेद है

टीपः- सूर्यसे चंद्रादिकोंका जो समागम उस्को अस्त कहना और
भीनादि ५ ग्रहोंका परस्पर जो समागम उस्को युद्ध कहना

शरका अज्ञानग्रह ग्रह लाघवमें कहा है सो ऐसा उस्में प्रथम
पातांशादि कहने हैं

श्लोक-

रवाम्नुद्ययः स्वयमाः स्वप्नुजंगाः स्वांगमिताः स्वदशक-
मनःस्यः ॥ पातलवाः कुसुतादुधपृग्योर्मध्यमचंचल
केन्द्रविहीनाः कुद्विभ्यांश्रियगोन्विमादलचयश्चेपडुपु-
पंगलं केन्द्रचक्रविशुद्धमस्य समिताद्धैक्यं लवघ्रागता
त्रिशङ्खचयनं कुजात्कुयनलाब्धीन् हृदि भक्तं क्रमात्
तद्दीना प्रतिरिषिलागुणं तु वोगोन्नाइनाद्राकृत्पुति ॥१॥

मं.	बु.	ब.	शु.	श.	ग्रहः	शरकेलिये शीघ्रकर- णका प्रकारः-
४०	२०	८०	६०	१००	पातांशः	भीमादि जिस ग्रहका क-
१	२	३	४	४	शीघ्रांशः	र्णसाधना होय उस्का अंति
१	२	४	१	७	भाज्यांकाः	मशीघ्रकेन्द्रलेके वह ६ रा-
१८	१५	१३	१९	१२	शीघ्रकर्णांकः	शीके अपेक्षा अधिक होय

तो १२ राशीमें कम करना और वह षड्भात्य केन्द्रके राशि परिमित कोष्टक में लिखा जो शीघ्रांक उस्की मिलान लेना. और एकाधिक राशि परिमित शीघ्रांकमेकेन्द्रकी राशि त्याग करके अंशादिकको गुणना और वह गुणाकारको ३० से भाग देना तो फल अंशादि आवेगा उसमें शीघ्रांक की मिलान युक्त करना जो योग आवे उस्को क्रमसे कोष्ठकमेका भाज्यांकसे भाग देना जो फल आवे सो अंशादि जानना. वह क्रमसे कोष्ठकमेका शीघ्र कर्ण किमेंसे कम करना जो शेष रहै. सो ग्रहोंका अंशादि शीघ्रकर्ण होता है. और जो बुध शुक्रका पातांशक है हैं उसमें अहर्गणोत्पन्न जो बुध और शुक्र जो शीघ्रकेन्द्र होय सो ऊपर कहा जो पातांश उसमेंसे कम करके जो शेष अंश रहै सो बुध और शुक्रके पातांश होते हैं.

भीमादिशरवननिका प्रकारः-

श्लोक- } मंदस्पष्टरवगात्स्वपातरहितात्क्रांत्यंशकालेवला-
त्कर्णसास्त्रियमाहताअथगुरोश्चेलोचनासाः पुनः ॥
स्याद्भ्युनामसृजोऽङ्गुलादिकशरः पातो नदिक्स्था-
दसौ त्रिघ्नः स्यात्कलिकादिकः ॥

अर्थ भाषा.

जिस ग्रहका शर बनाना होय उस ग्रहका पातांश मंदस्पष्ट ग्रह मेंसे कम करके जो शेष रहै सो पातो न ग्रह भया अनंतर पातो न ग्रहको अभिनांशा देनेविना उस्से क्रांति त्यागना और वह क्रांतिको २३ से गुणके वह गुणाकारको शीघ्र कर्णसे भाग देना तो अभीष्ट ग्रहका अंगुलादिशर होता है सो पातो न ग्रह उत्तर गोलमें होय तो उत्तर शर दक्षिण गोलमें होय तो दक्षिण शर ऐसा जानना वैसा ही

गुरुका शर करना होयतो ऊपरकी रीतिसेले आये जो शर उसको ३ से भाग देना तो गुरुका अंगुलादि शर होता है. और भीमका शर करना होयतो ऊपरकी रीतिसेले आये जो शर उसमेंसे उसीका चतुर्थी शर कम करना तो भीमका अंगुलादि शर होता है. अनंतर बनाया जो शर उसको ३ से गुण देना तो कलात्मक शर होता है.

दृग्बल भाषा.

ग्रहपर जिस ग्रहकी दृष्टि रहती है उसके बीचमें शुभ ग्रहकी दृष्टिका ऐक्य करके उसका चतुर्थीश लेना तो वह धन दृग्बल होता है. और पापग्रहके दृष्टिका ऐक्य करके उसका चतुर्थीश लेना तो वह ऋण दृग्बल होता है. अनंतर धन दृग्बल और ऋण दृग्बल इनका अंतर करना तो स्पष्ट दृग्बल होता है.

टिप:- चन्द्र बुध गुरु शुक्र यह शुभ ग्रह और रवि भीम शनि यह पाप ग्रह हैं बुध पापग्रह युक्त होयतो पापशुभ ग्रह युक्त होयतो शुभमिश्र ग्रह युक्त होयतो मिश्र फल जानना.

उदाहरणम्.

सूर्यके ऊपर शुभ ग्रहकी दृष्टिका ऐक्य १३६।४२ इसका चतुर्थीश ०।२४।१० यह धन दृग्बल. और सूर्यके ऊपर पाप ग्रहकी दृष्टिका ऐक्य ०।२९।२१ इसका चतुर्थीश ०।७।२० यह ऋण दृग्बल. इनका अंतर ०।१६।५० यह धन दृग्बल. सूर्यका भया इसी प्रमाण चंद्रादिको का करना.

टिप्पण:- शुभ ग्रहकी दृष्टिका चतुर्थीश पापग्रहकी दृष्टिका चतुर्थीशमें घट जायतो ऋण दृग्बल अन्यथा धन दृग्बल जानना.

दृग्बल चक्र मिदम्.

सूर्यः	चन्द्रः	भीमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	ग्रहाः
०	०	०	०	०	१०	०	
१६	१	१	२	१६	१३	२१	दृग्बल.
५०	४७	२६	२०	२	५०	४५	
धन	ऋण	ऋण	ऋण	धन	ऋण	धन	

षड्बलैक्यचक्रमिदम् ॥

सूर्यः	चन्द्रः	मंगः	बुधः	बृहः	शुक्रः	शनिः	ग्रहाः
२८ ३३॥	३० ८॥	२१ १३॥	४८ ५२॥	३५ १०	२८ २०॥	३२ ४७	स्थानबल १
३० १०	५७ ३६	५० ३२	० ७	४० ३०	४५ १४	३८ ४७	दिग्बल २
४१ ४१	३६ ३२	१३ ४४	३३ २६	३० १६	१६ १६	२८ ४४	कालबल ३
३६ १६	५६ १०	२० ४०	२१ २३	१२ १२	४६ ४६	२१ ३४	चैष्टाबल ४
० ०	५१ २६	१७ ८	२५ ४३	३४ १७	४२ ५१	८ ३४	निसर्गबल ५
३५ ३॥	३१ ५१॥	१२ ३७॥	१४ ४६॥	७ २५	४५ ३७॥	४० २६	पाचोका योगः
१६ धन ५०	१ ऋण ४४	१ ऋण २०	२ ऋण २०	१६ धन २	१३ ऋण ५०	२१ धन ४५	दृग्बल
५१ ५३॥	२० ४॥	१० ५१॥	१२ २६॥	३७ २७॥	३१ ३७॥	३१ ११	षड्बलयोगः

भावबल-

अर्थभाषाः-लगादि भावोंके स्वानीका जो बलसोलगादि भावबल होता है. गनुष्य राशी मिथुन कन्या तुला धनका पूर्वार्द्ध और कुंभ इसमेंसे सप्तम भाव कम करना चतुष्यद राशीमें वृष म सिंह धनका उत्तरार्द्ध और मकरका पूर्वार्द्ध इसमेंसे चतुर्थ भाव कम करना. कीट राशी कर्क वृश्चिक इसमेंसे तनु भाव कम करना. जलचर राशी मीन और मकरका पश्चिमार्द्ध इसमेंसे दशम भाव कम करना अनंतर शेष ६ राशीके अपेक्षा अधिक होयतो १२ राशीमेंसे कम करके षड्भात्य शेषसे दिग्बलमें पूर्वोक्त रीति प्रमाण बल साधन करनातो भाव दिग्बल होता हैअंतर यह दिग्बल भाव बलमें युक्त करना भावपर जीन ग्रहोंकी दृष्टी होय उसमेंसे शुभ ग्रहोंके दृष्टीका ऐक्य करना उसीका चतुर्थशिलेना तो वह धन दृग्बल होता है और पापग्रहोंके दृष्टीका ऐक्य करना उसीका चतुर्थशिलेना तो वह ऋण दृग्बल होता है अनंतर धन ऋण दृग्बलका अंतर करनातो स्पष्ट दृग्बल होता है. यह दिग्बल संस्कृत भाव बलको धन होयतो युक्त करना. ऋण होयतो कम करना फेरउरको भावके उपरकी बुध गुरुकी दृष्टी युक्त करना तो स्पष्ट भाव बल होता है.

भावबलोदाहरणः- तनुभावस्वामिशुक्र इस्का षड्बलैक्य ५।३१।३७
 १३० यह तनुभावबल यही रीतिसे धनादि भावों का बल जानना + तनुभाव
 ६।१।४२।२६ यह लग्नराशी मनुष्यराशी है। इस वास्ते इसमें से सप्तम भाव
 ०।१।४२।२६ कम करके ६।०।० यह ६ से ज्यादा नहीं इस वास्ते ६ इस्का फल
 पूर्वोक्त दिक्बल सारणी परसे १।०।० यह तनुभाव दिग्बल और यह तनुभाव
 बल ५।३१।३७।३० इसमें युक्त करके ६।३१।३७।३० यह दिग्बल संस्कृत तनु
 भाव बल-तनुभाव पर शुभ ग्रह दृष्टि योग १।४३।२ इस्का चतुर्थी ०।२५
 १।४५ यह धन दृग्बल और पाप ग्रह दृष्टि १।३९।१२ योग यह इस्का चतुर्थी-
 श ०।२४।४८ यह ऋण दृग्बल इस्का अंतर ०।०।५७ यह धन स्पष्ट दृग्बल
 यह दिग्बल संस्कृत तनु भाव बल में युक्त करके ६।३२।३४।३० यह इस्का
 तनुभाव पर बुध दृष्टि ०।५०।५० उरु दृष्टि ०।०।४४ युक्त करके ७।२४।८
 १३० यह स्पष्ट तनुभाव षड्बल भया यही रीतिसे धनादि भावों का स्पष्ट बल करना
भाव बल चक्रम्.

त.	ध.	स.	सु.	रि.	जा.	मृ.	ध.	क.	आ.	व्य.	भावाः
५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	भावस्वामी बलम्.
५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	भावदिग्बलचक्रम्
५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	योग.
५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	भावदृग्बल.
५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	योग.
५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	बुधदृष्टि:
५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	उरुदृष्टि
५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	स्पष्टभावबलचक्रम्

श्लोक.

जगदीश्वरराजे
 वलाधिकारः

॥ ५ ॥

॥ अथ इष्टकष्टाऽध्यायः ॥ ४ ॥

इष्टकष्टसाधनार्थरविचंद्रचेष्टाबलकेन्द्रसाधनं.

श्लोक- } व्यर्केन्दुस्त्रिभयुक्तसायनरविष्टारव्यकेन्द्रतयो-
गेकष्टेष्टविधौबलेकुरुततः प्राग्बन्धवीर्य्ययति ॥ १२ ॥

अन्वयः- विगतोऽर्केयस्मादिन्दोः सचासीव्यर्केन्दुः त्रिभयुक्तसायनरवि
श्चक्रमेणतपोश्चेष्टारव्यकेन्द्रेभवतः तद्यथा अर्केनश्चन्द्रस्यचेष्टाके-
न्द्रराशित्रयेणायनांशैश्चयुतोरविः सूर्य्यस्यचेष्टाकेन्द्रस्यात्ततस्ता-
भ्यांकेन्द्राभ्यांप्राग्बन्धौमादिचेष्टाबलसाधनवत् षडधिकं चक्राच्छ्रुतं
षडहृदित्यादिनारवीन्दोर्वलंकुरु भोगणकेत्यध्याहारः कस्मिन्विधौ
गोकष्टेष्टविधौगावोरश्मयः कष्टञ्चेष्टचक्रेष्टेष्टेष्टयोर्विधिः कष्टेष्ट
विधिस्तास्मिन्कष्टेष्टविधौ अयनोचेष्टाबलयोः कष्टेष्टसाधने उपयो-
गोऽस्तीत्यर्थः नवीर्य्ययतिभावः यतः द्विसंगुणेचायनपक्षवीर्य्यचे-
ष्टाबलेतिगमकराब्जयोस्त इति ॥

अर्थभाषाः- चन्द्रमेंसे सूर्य्यकमकरनातो चन्द्रका चेष्टाकेन्द्र
होता है. और सायनसूर्य्यमें ३ राशियुक्त करना तो सूर्य्यका चेष्टाके-
न्द्र होता है. अनंतर यह केन्द्रसे रश्मिकष्टेष्ट साधनार्थ उच्च बलमें पू-
र्वोक्त रीति प्रमाण चेष्टाबल बनावना. यह चेष्टाबल पूर्वके ऐसा षड्व-
लार्थ ऐसा समझना. नहीं कारण सूर्य्यका जो अयनबल वही चेष्टाब-
ल है इसवास्ते दूना करना और चन्द्रका जो पक्षबल वही चेष्टाबल है
इसवास्ते दूना करना. उदाहरणम्.

चन्द्र ०५१२२।३५ यह इस्मेंसे सूर्य्य ०१३।१०।४२ यह कम करके
०।२२।११।५३ यह चन्द्रका चेष्टाकेन्द्र भया और ०।१३।१०।४२ यह इस्को
अयनांशा २२।४४।३ युक्त करके १।५।५४।४५ यह सायनसूर्य्य इस्को ३
राशियुक्त करके ४।५।५४।४५ यह सूर्य्यका चेष्टाकेन्द्र अनंतर यह चेष्टा
केन्द्रसे पूर्वोक्त रीतिसे पूर्वमें लिखीजो चेष्टाबल सारणी ऊपरसे ब-
नायासो यह चंद्रचेष्टाबल ०।३२।३६ सूर्य्यका चेष्टाबल ०।४१।५८

रश्मीष्टकष्ट साधन- श्लोकः-

येचेष्टोच्चबलेरसेर्विनिहतेसैकेनिजारश्मयश्चेष्टातुंगवला
हतेःपदमिहेष्टस्याद्वलेनैकयोः ॥ घातान्मूलमिदहिकष्टमय-

तद्द्रुपदशायाः फलं वीर्यं दृक् पृथगिष्टकष्टगुणिते द्वे चै-
ष्टकष्टाव्यये ॥ १३ ॥

अन्वयः

सूर्यादीनां प्रागानीते ये चेषोच्च बले वे षड्भिर्गुणिते सैके रुते सति नि-
जा रश्मयश्चेष्टाबलाच्चेष्टारश्मयः उच्च बलादुच्च रश्मयो भवन्ति इत्यर्थः
चेष्टाबलेनोच्च बलं गुणनीयं गोमूत्रिका गुणनरीत्या तस्य मूल मिष्ट
संज्ञं स्यात् + चेष्टबलतुंगबलो नैकयो र्घातांन्मूलं कष्ट संज्ञं स्यात्
दशाफलं तद्द्रुपं स्यात् अर्थादिष्टकष्टतुल्य फल मिति इष्टेऽधिके सति
शुभमधिकं कष्टेऽधिके ॥ शुभमधिकं साम्ये मिश्रफलं दशायाः स्यात्
ग्रहस्य बलं अर्थात्पड्डलैक्यं स्थान इये स्थाप्यं तथा ग्रहो परिया दृष्टय
स्ता अपि स्थान इये ग्रहस्येष्टकष्टेन गुण्यास्तदा क्रमेणोष्टबलं कष्टबलं
इष्ट दृष्टयः कष्ट दृष्टयश्च भवन्तीति ।

अर्थः - ग्रहोंका जो चेष्टाबल और उच्चबल इस्को दस गुणके गुणा-
कारमें एक युक्त करना तो ग्रहोंका उच्चरश्मी और चेष्टारश्मी होती है
ग्रहोंका चेष्टाबल और उच्चबल इनके गुणाकारका वर्गमूल निकालना
तो ग्रहोंका इष्ट होता है. एक १ में से ग्रहोंका उच्चबल और चेष्टाबल पृ-
थक् पृथक् कम करके शेष जो गुणाकार उस्का वर्गमूल निकालना तो
ग्रहोंका कष्ट होता है. यह इष्ट कष्टके प्रमाण ग्रहोंका शुभाशुभ दशा-
फल जानना. ग्रहोंका पड्डलैक्य और ग्रहोपरि दृष्टी इस्को पृथक् पृथ-
क् ग्रहोंके इष्टसे और कष्टसे गुण देना तो ग्रहोंका इष्टबल और कष्ट-
बल और ग्रहोंकी इष्ट दृष्टी और कष्ट दृष्टि होती है.

वर्गमूलनिकालनेका प्रकार

श्लोक - अतंयावदिहाच्छांकादूर्ध्वतिर्य्यस्थरेखया संज्ञास्या
नाफकानाच्च विषमाख्यसमेकमात् ॥ त्वत्कान्त्याद्विप-
गालरुविदिगुणयेन्मूलं समेतद्भुते त्यक्त्वा लब्धकृतिं
तदाद्यविषमालब्धदिनिघ्नं न्यसेत् पंचत्वापंक्तिद्वतं-
समेऽन्यविषमाल्पत्काप्तवर्गफलं पङ्क्यांतद्विगुणं
न्यसेदिति गुरुः पंक्तिर्दलं स्यात्सदम् ॥ १० ॥

अन्वयः - गणक अतंयादिप्रमाणं कृतिगुत्पत्त्या मूल द्विगुणयेत् समे-
तद्भुते मतिगदाय विषमाल्पव्यकृतिं त्यक्त्वा लब्धं दिनिघ्नं पंचत्वापंक्त्या न्यसेत्
पंक्तिद्वते गति अतंयादिप्रमाणं तत्तत् वर्गमूल त्यक्त्वा तत्फलं द्विगुणं पंचत्वा

न्यसेत् इतिमुहुः कुर्यात् तदापंक्तेः दलपदं स्यात् .

अर्थ भाषा:- जिस संख्याका मूल निकालना होय उसके दहने तरफ से विषम समका चिन्ह करना जब तक अंककी समाप्ती न होय तब तक करना अनंतर सबसे वाई तरफ जो अंश विषम होय उसमें जिस संख्या का वर्ग घटे सो घटाय देना और जिसका वर्ग घटे उस संख्याको मूल कहते हैं उसको दूना करना उसका नाम पंक्ति है उस करके भाग देना जो विषमके पास सम होय उसमें लब्धि ऐसी लेना कि जिसका वर्ग आगेके विषममें घटि जाय तो उस लब्धिका वर्ग आगेके विषममें घटाय देना उसको दूना करके प्रथम जो पंक्ति संज्ञा है उसमें आगे एक स्थानमे बढ़ायके रखना कदाचित् और भी अंक होय तो उसी पंक्ति से पुनः पूर्व रीति से भाग देना लब्धिका वर्ग आगेका विषममें घटाना लब्धि दूनी पंक्तिमें रखना ऐसा अंक समाप्ती तक करते जाना फिर उस पंक्तिका आधा करना तो मूल होता है .

सावयव अंक का मूल निकालने की रीति .

० मूलावशेषकं सैकं षष्टिर्घ्नविकलान्वितं ॥ द्वियुक्तेन द्विनिघ्नेन मूलेनासंस्फुटं भवेत् ॥

अर्थ:- जब मूल निःशेष न होय तो शेषमें १ युक्त करिके ६० से गुण देना उसको आया जो मूल उसमें २ युक्त करके दूना करिके भाग देना तो मूलका अवयव होता है यह स्थूल रीति है .

सूक्ष्म रीति यह है .

सैके न द्विघ्न मूलेन भक्त मूलावशेषकम् ॥ लब्धन्तुत ०
दधः स्थाप्य मूलं सूक्ष्मतरं भवेत् ॥

अर्थ:- मूल आया जो उसको दूना करके १ युक्त करिके मूल शेषमें भाग देना लब्धिको उस मूलके नीचे रखना तो सूक्ष्म मूलके आसन्न होगा .

और यह सबसे अच्छी रीति है . ०

जिसका मूल लेना होय उसको ६० से गुण देना कलायुक्त करना फिर ६० से गुणना उसका मूल लेना उसको ६० से भाग देना तो ठीक मूल होगा यदि ऊपरका अंश शून्य होय तो नीचेके अंकको ६० से गुणिके विकला युक्त करके मूल लेना उसको ६० से भाग देना तो मूल होता है .

रश्म्युदाहरणम् ॥

सूर्यका चेष्टाबल ०।४१।५८ इसको ६ से गुणके ४।११।४८ यह इसको एक युक्त करके ५।११।४८ यह सूर्यकी चेष्टा रश्मि० सूर्यका उच्चबल ०।५८।५६ इसको ६ से गुणके ५।५३।३६ यह इसको १ युक्त करके ६।५३।३६ यह सूर्यकी उच्चरश्मि० यही रीतिसे चन्द्रादिकोंका चेष्टा रश्मि और उच्च रश्मि बनावना।

चेष्टाबलः

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
०	०	०	०	०	०	०
४१	३२	४६	४४	४८	२१	२१
५८	३६	४८	२०	४१	५६	१६

चेष्टारश्मि०

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
५	४	५	५	५	३	३
११	१५	४०	२६	५८	११	७
४८	३६	४८	०	६	३६	३६

उच्चबलः

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
०	०	०	०	०	०	०
५८	२०	४	२	३८	४९	१७
५६	४७	२१	७	५५	५८	४७

उच्चरश्मि०

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
६	३	१	१	४	५	२
५३	४	२६	१२	५३	५९	४६
३६	४२	६	४२	३०	४८	४२

इष्टोदाहरणम्.

सूर्यका चेष्टाबल ०।४१।५८ यह इसको सूर्यका उच्चबल ०।५८।५६ यह इससे गुणके ४।११।३६ इसका वर्ग मूल ०।४९।४३ सह सूर्यका इष्ट भया इसी प्रकार चन्द्रादिकोंका इष्ट बनावना।

चेष्टाबल गुणनचक्रः

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
०	०	०	०	०	०	०
४१	११	३	१	३२	१८	६
१३	१८	२४	३४	१४	१६	१८

इष्टचक्रम्

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
०	०	०	०	०	०	०
४९	२६	१४	९	४३	३२	१९
४३	३	१७	४२	५८	७	२६

कष्टोदाहरणम्.

सूर्यका चेष्टाबल ०।४१।५८ यह एकमें कम करके ०।१८।२ इसको सूर्यका उच्चबल ०।५८।५६ यह इसको एकमें कम करके ०।१।४ यह इससे गुणके ०।०।१९ यह इसका वर्ग मूल ०।४।२० यह सूर्यका कष्ट भया इसी प्रमाण चन्द्रादिकोंका कष्ट साधना।

एकोनचैष्टोच्चवलगुणन							कष्टचक्रम्.							
सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	ग्र.
०	१७	१२	१५	३	६	२७	६	२२	२७	३०	१४	१९	४०	०
१८	५६	१५	७	३८	२२	१५	२०	४७	७	७	४५	२३	२५	

इष्टकष्टवलोदाहरण- सूर्यका षड्वलैक्य ७।५१।५३।३० इस्को सूर्यका इष्ट ०।४९।४३ यह इस्से गुणके ६।३१।००।५३ यह सूर्य का इष्टबल अथवा सूर्यका कष्ट ०।४।२० यह इस्से सूर्यका षड्वलैक्यको गुणके ०।३४।०४।५२ यह सूर्यका कष्टबल यही रीतिसे चंद्रादिको का इष्टबल और कष्टबल करना.

इष्टबलचक्र.							कष्टबलचक्र.							
सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	ग्र.
३१	१७	१६	५०	२३	३	१७	३६	२७	२९	४७	५१	४३	६	०
५३	५७	६	४१	४०	१०	१८	५२	८	२६	४३	४८	१६	५०	

उदाहरण- चंद्रके ऊपर सूर्यकी दृष्टी ०।१८।५४ इस्को चन्द्रके इष्ट ०।२६।३ यह इस्से गुणके ०।८।१२ यह चन्द्रके ऊपर सूर्यकी इष्टदृष्टी और चन्द्रका कष्ट ०।३२।४७ यह इस्से सूर्यकी दृष्टि ०।१८।५४ गुणके ०।९०।१९ यह कष्ट दृष्टी मई यही रीतिसे सर्वग्रहोंपरकी इष्टदृष्टी और कष्ट दृष्टी करना.

इष्टदृष्टीचक्र.							कष्टदृष्टीचक्र.						
सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
०	१२	२४	०	३८	०	५५	०	१०	१४	०	१३	०	१७
३४	०	१०	५	५०	५	५	०	२८	१०	१५	७	३	१०
५३	०	२	०	५७	५७	१०	५८	०	३	३३	१	३१	६०
५२	२८	०	२	०	३३	०	१५	३	७	०	५७	०	३३
०	२	२	०	३४	०	५२	०	४	२२	०	१७	०	२६
२८	२७	०	०	४२	०	५२	०	३२	३२	०	१७	०	५६
५१	२५	०	२८	०	४०	१	२६	०	३२	०	४२	०	२२
५२	२६	०	२८	०	४०	१	२६	०	३२	०	४२	०	२२
५३	०	५	०	३९	०	५५	०	१२	४६	०	१३	०	३४
५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	२५	०	४६	०	२३	०	४७
५४	११	१३	७	३४	३४	०	३	२६	३	२३	११	१४	०
५४	१३	१३	७	५१	५	०	३	२६	३	२३	११	१४	०

सप्तवर्गशुभाशुभसाधन.

श्लोक-

स्वोच्चेरूपं त्रिकोणे चरणविरहिते स्वर्क्षगेर्द्धत्रयोष्टां
शाश्राधीष्टर्क्षदृष्टर्क्षयुजिचचरणः स्यात्समर्क्षष्टमांशः ॥
भूपांशौ वैरिगेहेऽध्यरिभयुजिरदांशश्च नीचे स्वमीशः
दिष्टगेहेतदूनैकमसदयदलं षट्सुकार्ये तदैक्ये ॥ १४ ॥
पंचत्योः सप्तसुकोष्टयोः प्रथमयोरिष्टासदैक्ये कृता
मेस्याप्येभदलादिषट्सुचतदर्धे वर्गपानां पृथक् ॥
कृत्वा यस्यासदसद्युती निजनिजे तन्निघ्न इष्टाशुभे
वर्गितस्थरवगोजसोः सदसतोर्घातात्पदमे स्फुटे ॥ १५ ॥

अन्यथाः स्वोच्चे मूल त्रिकोणे त्वादिगते ग्रहे रूपं पादोन रूपार्द्धमित्या
दिगेहे गृहस्थाने ईशान्त्वामिनदृष्टस्यात् ॥ तद्यथा ॥ ग्रहो यस्मिन्
गृहे वर्तते तत्त्वामी यदि स्वयंतदा रूपार्द्धं बलं च यधिमित्र गृहे नदात्रयो
ष्टांशः मित्रगृहे चतुर्षांशः सप्तगृहेऽष्टमांशः शत्रुगृहे भूपांशः अपिशत्रु
गृहे दंतांशः नीचरपे शून्य एतदूनं रूपार्द्धं गेहे गृहस्थानस्थयोरिष्टक
पयोरर्द्धे होरादिषट्सुस्थाप्ये ॥ एतदुक्तम् ॥ सप्तमस्थानस्थितानां
शुभानामैक्यं शुभम् अशुभानामैक्यं मशुभं स्यात् ॥ १४ ॥

पंचत्योरिति ॥ इष्टासदैक्ये चतुर्भक्ते पंचत्योः स्थाप्ये एतदुक्तं भव-
ति ॥ प्रागानीतमिष्टैक्यं चतुर्भक्तं शुभपंचत्योः स्थाप्यं कष्टैक्यं चतुर्थं शि-
मशुभं पंचौ स्थाप्यं प्रथमयोर्ग्रहे कोष्टयोरित्यर्थः भदलादिषट्सुहोरा-
दिषट्सुतदर्द्धे गृहस्थापितफलस्थार्द्धे स्थाप्यं वर्गपानां गृहादि सप्तपर्वशा-
नां पृथक् प्रत्येकं निजनिजे स्वस्वे सदसद्युती शुभाशुभयोरैक्ये उत्पद्ये-
तित्यनेन त्वोच्चेरूपमित्यादिना स्थापितयोरैव शुभाशुभयोरैक्ये कार्येन
चानरं स्थापितयोरिति कृत्वा तन्निघ्न इष्टाशुभेताभ्यां निघ्नैकार्ये इष्ट शुभे
पंचत्योः सप्तसुकोष्टयोः स्थापितफले अनयारीत्या आनीते ये इष्टाशु-
भेते वर्गितस्थरवगोजसोः सदसतोर्घातात् पदमे स्फुटे स्याताम् ॥
वर्गित्वं वर्गं स्वामी तत्स्थरवगो वर्गस्थग्रहः ओजसोः यलयोः तयोर्घा-
त पदेन पूर्वफले गुणिते सति स्फुटेस्तः ॥ १५ ॥

अर्थभाषाः

गृहे श परमोच्चने होयतो रूपबल १ त्रिकोणमे होयतो तीन
चतुर्थं शि० ॥ १५ ॥ स्वगृहमे होयतो अर्द्ध ० ॥ २० ॥ अपिमित्रके

गृहमें होयतो तीन अष्टमांश ०।२२।३० मित्रगृहमें चतुर्थांश ०।१५।०
 समके गृहमें अष्टमांश ०।७।३० शत्रुगृहमें षोडशांश ०।३।४५ अग्नि
 शत्रुगृहमें दत्तांश ०।१।५२।३० परमनीचमें होयतो शून्य ० यह गृह
 स्थानमें शुभजानना यह शुभ एक १ में हीन करनेसे अशुभ होता है
 गृहस्थानमें यह शुभाशुभ होरादि षड्वर्ग स्वामी परसे गृहस्थान-
 के फल प्रमाणसे जो फल आवे उसका अर्थ जानना अनंतर सप्तव-
 र्गोत्पन्न शुभका और अशुभका ऐक्यता करना.

टिप्पण.

ग्रह परम उच्चमें किंवा परमनीचे में वा मूल त्रिकोणमें प्राप्त होय-
 तो मित्रादिज फल न लेना ते उच्च किंवा नीच वा मूल त्रिकोण इसीका फ-
 ल लेना.

**उच्चमूलत्रिकोणवास्वगृहइस्मेंसेतीन-
 कावादीकासंभवहोताहैउस्कानिर्णय.**

सिंह २० अंशतक सूर्यका त्रिकोण अनंतर स्वगृह- वृष ३ अं-
 शतक चन्द्रका उच्च अनंतर मूल त्रिकोण- मेष १२ अंशतक भौमका
 त्रिकोण अनंतर स्वगृह- कन्या अंशतक बुधका उच्च आगे ५ अंश-
 तक मूल त्रिकोण आगे स्वगृह- धनु १० अंशतक गुरुका त्रिकोण अ-
 नंतर स्वगृह- तुला १५ अंशतक शुक्रका त्रिकोण अनंतर स्वगृह-
 कुंभ २० अंशतक शनिका त्रिकोण अनंतर स्वगृह जानना- जबग्र-
 ह उच्च किंवा नीच राशीका उक्तांशमें रहता है तब ग्रहका परमोच्च
 किंवा परमनीच जानना.

अर्थज्ञापा.

दो सात सात कोष्ठककी शुभाशुभ पंक्ति लिखना अनंतर शुभ
 पंक्तिका प्रथम कहिये गृह कोष्ठकमें ग्रहोंके समवर्गोत्पन्न शुभैक्य
 का चतुर्थांश लिखना और होरादि ६ कोष्ठकमें यह चतुर्थांशका अ-
 र्ध लिखना और अशुभ पंक्तिके प्रथम कोष्ठकमें ग्रहका सप्तवर्ग
 उत्पन्न अशुभैक्यका चतुर्थांश लिखना और होरादि षट् ६ कोष्ठकमें
 यह चतुर्थांश अर्ध लिखना अनंतर गृह होरादि सप्तवर्ग स्वामीका
 जुदाजुदा किया जो सप्तवर्गोत्पन्न शुभैक्य उसको क्रमसे यह शुभ पंक्ति
 में लिखा जो गृह होरादि सप्तवर्ग फलसे अलग अलग गुण देना तो मध्य
 मशुभ होता है और गृह होरादि सप्तवर्ग स्वामीका पृथक् पृथक् किया

जो सप्तवर्गोत्पन्न अशुभैव्य उस्को क्रमसे यह अशुभ पंक्तिमें लिखा जो ग्रह हो
रादि सप्तवर्ग फलसे पृथक् पृथक् गुण देना तो मध्यम अशुभ होता है-

अनंतर जिस ग्रहका स्पष्ट शुभ साधन करना होय तो उस ग्रहके दृ-
ष्टबलको उसी ग्रहके ग्रह होरादि सप्तवर्ग स्वामीके दृष्टबलसे पृथक्पृ-
थक् गुणके उनके वर्ग मूलसे स्वस्व वर्गस्थ मध्यम अशुभको गुण देना तो
ग्रहोंका स्पष्ट शुभ होता है- और जिस ग्रहका स्पष्ट अशुभ साधन करना
होय तो वह ग्रहके कष्टबलको उसी ग्रहके ग्रह होरादि सप्तवर्ग स्वामीके क-
ष्टबलसे पृथक् पृथक् गुणके उनके वर्ग मूलसे स्वस्व वर्गस्थ मध्यम अ-
शुभको गुण देना तो ग्रहोंका स्पष्ट अशुभ होता है-

टिप्पण:- विंशतिरंशाः सिंहे त्रिकोण परे स्वभवनमर्कस्य ॥ उच्चभागान्त्रितयंद-
प इन्द्रास्याधिकोणमपरंशाः ॥ द्वादशतागामे त्रिकोणमपरंस्वभंतु पौमरय उच्च-
मथो कन्यायां दुषस्थतुगांशकैः सदा चिंत्यम्, पस्तस्त्रिकोणजातपेन भिरंशैस्स्वरा-
शिजपरतः, दशाभिर्तागैर्जविस्य त्रिकोणं वगुपितत्परं स्वग्रहम् शुक्रत्यवतिथिगंशा-
स्थिकोणमपरंस्वभंतुलायां तु कुंभे त्रिकोणस्वग्रहे रविजत्यरवे र्वाधासिंहे ॥

उदाहरणम्:- सूर्य मंगलके ग्रहमें है इसवास्ते ग्रह स्वामी भीम- सो स-
मके ग्रहमें है इसवास्ते सूर्यके ग्रह स्थानमें ०१७३० शुभ यह एकमे कम कर
के ०१५२१३० यह अशुभ होरा स्वामी सूर्य यह समके ग्रहमें है इसवास्ते सूर्य
के होरा स्थानमें ०१७३० शुभ यह एकमे कम करके ०१५२१३० अशुभ इनके
अर्द्ध होरा स्थानमें ०१३४५ शुभ और ०१२६१५ अशुभ द्रेष्काण स्वामी सूर्य
यह समके ग्रहमें है इसवास्ते सूर्यके द्रेष्काण स्थानमें ०१७३० शुभ यह एकमे
कम करके ०१५२१३० अशुभ इनके अर्द्ध द्रेष्काण स्थानमें ०१३४५ शुभ और ०१२६१५
अशुभ सप्तमांश स्वामी चन्द्र यह शत्रु ग्रहमें है- इसवास्ते सूर्यके सप्तमांश स्था-
नमें ०१३४५ शुभ यह एकमे कम करके ०१५६१५ अशुभ इनको अर्द्ध सप्तमांश-
स्थानमें ०११५२१॥ शुभ और ०१२८१७॥ अशुभ नवमांश स्वामी चन्द्र यह शत्रु
ग्रहमें है इसवास्ते सूर्यके नवमांश स्थानमें ०१३४५ शुभ यह एकमे कम कर
के ०१५६१५ अशुभ इनका अर्ध नवमांश स्थानमें ०११५२१॥ शुभ और ०१२८
१७॥ अशुभ द्वादशांश स्वामी बुध शत्रु ग्रहमें है इसवास्ते सूर्यके द्वादशांश
स्थानमें ०१३४५ शुभ यह एकमे कम करके ०१५६१५ अशुभ इनका अर्ध द्वा-
दशांश स्थानमें ०११५२१॥ शुभ और ०१२८१७॥ अशुभ त्रिंशांश स्वामी गुरु ऽधि-
शत्रुके ग्रहमें है इसवास्ते सूर्यके त्रिंशांश स्थानमें ०११५२१॥ शुभ यह
एकमे कम करके ०१५८१७॥ अशुभ इनका अर्ध त्रिंशांश स्थानमें ०१०१५६१

शुभ और ०१२९।३॥ अशुभ सूर्यके सप्तवर्ग शुभका ऐक्य ०१२९।३३॥
और सूर्यके सप्तवर्ग अशुभका ऐक्य ३।३८।२६ यह प्रमाणसे चन्द्रादि
क ग्रहोंका शुभाशुभ करके उनका ऐक्य करना.

वर्गेश सहित सप्तवर्ग शुभचक्रम्.

ग्रह	सूर्यः	चंद्रः	मंग	बुधः	बृह	शुक्रः	शनिः	ग्रहः
ग्रह	मं ७ स ३०	श २३ मि ३०	स ७ स ३०	ब १ श ५२॥	ब ३ श ४५	श २३ मि ३०	ब ३ श ४५	ग्रह
होरा	ब ३ स ४५	चं १ श ५२॥	स ३ स ४५	ब १ स ४५	ब १ श ५२॥	चं १ श ५२॥	ब ३ स ४५	होरा
द्रेष्का	स ३ स ४५	श ११ मि १५	ब ० श ५६॥	मं ३ स ४५	ब १ श ५२॥	श ३ स ४५	ब ३ स ४५	द्रेष्का
सप्त	चं १ म ५२॥	ब ३ स ४५	श ३ स ४५	श ११ मि १५	मं ३ स ४५	ब ३ स ४५	ब ३ श ५२॥	सप्त
नवमां	चं १ म ५२॥	श ११ मि १५	चं १ श ५२॥	श ११ मि १५	ब ० श ५६	ब १ श ५२॥	श ११ मि १५	नव
द्वाद	ब १ श ५२॥	ब ० श ५६॥	ब ० श ५६॥	मं ३ स ४५	ब ० श ५६॥	ब ० श ५६॥	मं ३ स ४५	द्वाद
त्रिंशां	ब ० श ५६॥	ब १ श ५२॥	ब ० श ५६॥	श ११ मि १५	ब १ श ५२॥	ब १ श ५२॥	मं ३ स ४५	त्रिंशां
ऐक्य	२१ ३३॥	५३ २६॥	१९ ४१॥	६६ ५२॥	१५ ०	३८ २६॥	३१ ५२॥	ऐक्य

सप्तवर्ग अशुभचक्रमिदम्.

ग्रहः	सूर्यः	चं	मं	बु	बृ	शु	श	ग्रहः
ग्रह	५३ ३०	३० ३०	५३ ३०	५८ ७॥	५५ १५	३० ३०	५५ १५	ग्रह
होरा	२६ १५	२८ ७॥	२६ १५	२६ १५	२८ ७॥	२८ ७॥	२६ १५	होरा
द्रेष्का	२६ १५	१८ ४५	२२ ३॥	२६ १५	२८ ७॥	२६ १५	२६ १५	द्रेष्का
सप्त	२८ ७॥	२६ १५	२६ १५	१८ ४५	२६ १५	२६ १५	२८ ७॥	सप्त
नव	२८ ७॥	१८ ४५	२८ ७॥	१८ ४५	२२ ३॥	२८ ७॥	२८ ७५	नव
द्वाद	२८ ७॥	२२ ३॥	२२ ३॥	२६ १५	२२ ३॥	२२ ३॥	२६ १५	द्वाद
त्रिंशां	२० १॥	२८ ७॥	२२ ३॥	१८ ४५	२८ ७॥	२६ १५	२६ १५	त्रिंशां
ऐक्य	३८ २६॥	३३ २३॥	३८ २८॥	१३ ७॥	५३ ०	३३ २३॥	३३ ७॥	ऐक्य

उदाहरण- सूर्यका शुभैक्य ०११३३॥ इस्को ४ से भागदेके ०५१२०
यह सूर्यके शुभपंक्तिके गृह कोष्ठकमें लिखना और इस्का अर्ध ०११३३
यह शुभपंक्तिके होरादि कोष्ठकमें लिखना.

सूर्यका अशुभैक्य ३३८१२६ इस्को ४ से भागदेके ०५४१३५ यह सूर्यके अशुभपंक्तिके गृह कोष्ठकमें लिखना और इस्का अर्ध ०१७११८ यह अशुभपंक्तिके होरादि कोष्ठकमें लिखना. इसी प्रमाण चन्द्रादिकोंका भी जानना.

शुभपंक्तिचक्रम्.

अशुभपंक्तिचक्रम्.

ग.	सू.	चं.	मं.	बु.	व.	शु.	श.	ध.	सू.	चं.	मं.	बु.	व.	शु.	श.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	१३	४	११	३	९	७	२	५४	४६	५५	४८	५६	५०	५२	५३
२३	२१	५५	४३	६५	३६	५८	२	३६	३८	४	१७	१५	२४	२	२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	६	२	५	१	४	३	०	२७	२३	२७	२४	२८	२५	२६	२५
४१	४०	२७	५१	५२	४८	५२	०	१८	१९	३२	८	७	१२	१	१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	६	२	५	१	४	३	०	२७	२३	२७	२४	२८	२५	२६	२५
४१	४०	२७	५१	५२	४८	५२	०	१८	१९	३२	८	७	१२	१	१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	६	२	५	१	४	३	०	२७	२३	२७	२४	२८	२५	२६	२५
४१	४०	२७	५१	५२	४८	५२	०	१८	१९	३२	८	७	१२	१	१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	६	२	५	१	४	३	०	२७	२३	२७	२४	२८	२५	२६	२५
४१	४०	२७	५१	५२	४८	५२	०	१८	१९	३२	८	७	१२	१	१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	६	२	५	१	४	३	०	२७	२३	२७	२४	२८	२५	२६	२५
४१	४०	२७	५१	५२	४८	५२	०	१८	१९	३२	८	७	१२	१	१

उदाहरणम्.

सूर्य मेघकाहे इसवास्ते गृहेश मंगल है. इस्का शुभैक्य ०११३३
इस्को सूर्यके शुभपंक्तिमेका गृहफल ०५१२३ इस्ते गुणके ०११४६ यह सूर्यका ग्रह मध्यम शुभ-गृहेश मंगल इस्का अशुभैक्य ३४०११८॥ इस्को सूर्यके अशुभपंक्तिमेका गृहफल ०५४१३५ इस्ते गुणके ३२०१२८ यह सूर्यके गृह मध्यम अशुभ यह गतिसे होरादिकोंका मध्यम शुभ. शुभ करना और चन्द्रादिकोंका भी गृहादि मध्यम शुभाशुभ करना.

मध्यमशुभचक्रम्.

मध्यमअशुभचक्रम्.

प्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	लु.	शु.	श.	प्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	लु.	शु.	श.
१.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
२.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	२.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
३.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	३.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
४.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	४.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
५.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	५.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
६.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	६.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
७.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	७.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
८.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	८.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
९.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	९.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
१०.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१०.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००

सूर्यकास्पष्टशुभसाधनकरना इसवास्ते सूर्यका इष्टवर्ग ६।३१।०।५३
इस्को सूर्यमेपकाहे. इसवास्ते ग्रहेश भौम इस्का इष्टवर्ग ६।१४।० इस्ते
गुणके ०।२।१६ इस्कावर्गमूल २।००।६ इस्को सूर्यका मध्यम गृह शुभ ०।१
।४६ इस्ते गुणके ०।५।० यह सूर्यका स्पष्टग्रह शुभ भया यही रीतिसे सूर्य
का हीरादिकोंका स्पष्ट शुभ और सूर्यका ग्रहादि स्पष्ट अशुभ और
चंद्रादिकोंका स्पष्ट शुभ और अशुभ करना.

वर्गेशग्रहेश इष्टवर्ग गुणनचक्रम्.

वर्गेशग्रहेश इष्टवर्ग गुणनचक्रम्.

प्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	लु.	शु.	श.	प्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	लु.	शु.	श.
१.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
२.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	२.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
३.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	३.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
४.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	४.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
५.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	५.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
६.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	६.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
७.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	७.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
८.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	८.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
९.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	९.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
१०.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१०.	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००

वर्गेशगृहेशइष्टबलगुणनपदचक्र. वर्गेशगृहेशकष्टवत्तगुणनपदचक्र.

प्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	व.	शु.	श.	प्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	व.	शु.	श.
ग.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	ग.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०
हो.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	हो.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०
प्र.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	प्र.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०
स.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	स.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०
न.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	न.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०
वा.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	वा.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०
किं.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	किं.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०

स्पष्टशुभचक्र.

स्पष्टअशुभचक्रम्.

प्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	व.	शु.	श.	प्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	व.	शु.	श.
ग.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	ग.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०
हो.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	हो.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०
प्र.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	प्र.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०
स.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	स.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०
न.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	न.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०
वा.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	वा.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०
किं.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	किं.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०
ऐ.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	ऐ.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०

श्लोकः

जगदीशेनरचिते केशुवीग्रंथटिप्पणे ॥
इष्टकष्टाधिकारोयं पूर्णोभाषाप्रकाशकः ॥४॥

अथआयुर्दायाध्यायः

अहोकासर्वशुभाशुभफलदशामें ही होता हैं और दशविभाग आयुर्दाय विज्ञानविना मालूम होता नहीं इसकेवास्ते आयुर्दायाध्याय आरंभ करते हैं अब आयुर्दाय दो प्रकारका है ग्रहयोगज और गणितागत उसमें ग्रहयोगज निचता युर्दाय परमायुर्दाय और अमितायुर्दाय ऐसा तीन प्रकारका है गणितागत त अंशोद्भवपिण्डजनैसर्गिक और जीव शर्मादित ऐसा चार प्रकारका है उसमें प्रथम योगजायुर्दायनेसे अमितायुर्दायका उदाहरण कहते हैं-

श्लोक- कर्कहीज्ययुतोदयेबुधसितौकेन्द्रेऽपरीशतैरायु-
विद्धयमितंहियोगजमिवान्यत्रोच्यतेयान्मितम्

अन्वयः- चन्द्रेज्ययुक्ते कर्किलगे यदि बुध शुक्र केन्द्र एकत्र वा पृथक् स्थाताम् इतरैः सूर्यशमीमन्दैरुपरीशत्यानेषु तृतीय पडैकादशस्थान विहासिन् योगे ऽमितमायुर्विद्धिजानोहि अन्यत्र येये योगजनायुर्विद्धि ॥ अथास्मिन् ग्रंथे गणितागतोन्मितमायुः कथ्यते-

अर्थभाषाः- कर्क लग्नमें जन्म होय उसमें चन्द्र गुरु युक्त होय बुधशुक्र केन्द्रमें होय और इतर ग्रह (रवि मंगल शनि) ३६।११ यद्गत्यान में होय इसप्रमाण सात ग्रहोका योग होयतो अमित आयुष्य जानना योगजायुर्दायके दूसरेमें जेद और जातक शास्त्रमें कहै है यह जातक पद्धतीमें गणितायुर्दाय मात्र कहा है-

अंशायुःसाधनार्थचेष्टागुणकउच्चगुणकस्फुटगुणकसाधन-

श्लोक- अस्याश्चेत्किरणाः सरूपकिरणां प्रिश्नेत्रयोर्द्धावि-
भूगोर्द्धचैष्टिकगुणसप्तवगुणोत् हातमूलस्फुटः ॥

अन्वयः- यदि पूर्वोक्ताः चेष्टारश्मयः उच्चरश्मयस्यत्यास्तदासेकचतुर्धाशः कार्यः चेत्रयोर्द्धास्तदाविभूः एक रहितार्द्धकार्यमृतदाचेष्टागुणसप्तवगुणोत् हातस्य मूलस्फुटो गुणः स्यात्

अर्थभाषाः- पूर्वोक्त राशिनीनसे कम होयतो उसमें एक युक्त करके उसका चतुर्धाश लेनातो गुणक होता है यदि तीनसे ज्यादा होयतो उसमेंसे एककम करके उसका अर्द्ध लेनातो गुणक होजहै इसी रीति

... चेष्टागुणक और उच्च राशिसे उच्च गुणक होता है

अनंतर चेष्टागुणक वा उच्च गुणक इनके गुणाकारका वर्गमूल निकालना तो स्फुट गुणक होता है.

उदाहरणम्.

रविका चेष्टारश्मि ५।११।४८ यह तीनसे अधिक है इसवास्ते इस्मेंसे एक कम करके ४।११।४८ इस्का अर्ध २।५।५४ यह रवीका चेष्टागुणक रवीका उच्च रश्मि ६।५३।३६ यह तीनसे अधिक है इसवास्ते इस्मेंसे एक कम करके ५।५३।३६ इस्का अर्ध २।५६।४८ यह रवीका उच्च गुणक भया + भीमकी उच्च रश्मि १।२६।६ यह तीनसे कम है इसवास्ते इस्में एक युक्त करके २।२६।६ इस्का चतुर्थांश ०।१६।३१ यह भीमका उच्च गुणक भया इसी प्रकार अन्य ग्रहोंका चेष्टा गुणक और उच्च गुणक बनावना रवीका चेष्टा गुणक २।५।५४ इस्को रवीका उच्च गुणक २।५६।४८ इस्से गुणके ६।१०।५९ इस्का वर्गमूल २।२९।१२ यह रवीका स्फुट गुणक भया.

इसीप्रमाण चंद्रादिकोंका स्फुट गुणक करना.

चेष्टागुणकचक्रम्.

उच्चगुणकचक्रम्.

स्व.	चं.	मं.	बु.	बु.	शु.	श.	मं.	स्व.	चं.	मं.	बु.	बु.	शु.	श.
२	३७	२	२	२	१	१	०	२	१	२६	०	१	२	०
५४	४८	२४	०	३	५	३	०	५६	२१	२१	१०	५६	२६	५६

स्फुटगुणक चक्रम्.

स्व.	चं.	मं.	बु.	बु.	शु.	श.	स्फु.
२	१	१	१	१	१	१	१
१२	१६	३६	२४	५७	१२	८	७

आश्रयगुणकसाधन

श्लोक- यः स्वाधीष्टसुहृत्समार्यधिरिषोर्वर्गधतिश्चेष्टिला
विश्वंकेपुगुणागृहेद्विगुणितायोगः क्रमान्तं हरेत् ॥
तद्ग्रेपडसुगोशुमद्धतिजिनैः पडग्रेश्ववगोत्तमः
स्वांशत्र्यंशगतेसदारसंशुणैः स्यादाश्रयारव्योगुणः १७
४:- यो ग्रहः स्वाधिभिन्नमित्र समरिष्वधिरिषूणां वर्गे गृहादिसं-
सर्वग्रेस्यान्तस्यक्रमेण १८।१९।१३।१५।३ एते अंकाग्राह्याः ॥ एतः

क्त भवति ॥ यद्यधिमित्र ग्रहे होरायां द्रेष्काणे वा सप्तमांशे न नव
मांशे द्वादशांशे वा त्रिंशांशे स्थितः तदा १८ अंको ग्राह्यः परं यदि गृ-
हे तदा तद्द्विगुणं कृत्वा स्याप्यः एवं होरादिषु हेतु यथागतं स्याप्यं
तेषां सप्तसु स्थानेषु स्थापितानां मंकाणां योगः कार्यः तं योगं तद्दे-
स्वाधिमित्रादिभ्यो राशौ ग्रहे सति क्रमात् ६।८।१२।१८।२४ एते
रक्तैः षड्भैर्भजेत् वर्गेत्तम स्वांशव्यंशगते ग्रहे सति सदा षट् त्रिंशद्भि-
र्भजेत् एवं भक्ते यल्लभ्यते सः आश्रय संज्ञको गुणः स्यात् ।

अर्थभाषा.

ग्रह स्वकीय वर्गमें होयतो १८ अधि मित्रके वर्गमें होयतो १५
मित्रके वर्गमें होयतो १३ समके वर्गमें होयतो ९ शत्रुके वर्गमें हो-
यतो ३ यह प्रमाण होरादि वर्गमें अंकलेना परंतु ग्रह स्थानमें यह
रीतिसे जो आवै उसको दूनां करके लेना. अनंतर ग्रहादि सप्तवर्गके
अंकका योग करके उसको ग्रह स्वग्रहमें होयतो ३६ से अधि मित्र-
के ग्रहमें होयतो ४८ से मित्रके ग्रहमें होयतो ५४ समके ग्रहमें हो-
यतो ७२ से शत्रुके ग्रहमें होयतो १०८ से अधि शत्रुके ग्रहमें हो-
यतो १४४ से भाग देना परंतु ग्रह वर्गेत्तम कहिये राशीके स्व नव-
मांशमें होयतो वा स्व नवमांशमें किंवा स्व द्रेष्काणमें होयतो पूर्वा-
क्त अंक नलेना सर्वकाल ३६ से भाग देना जो भागाकार आवै तो
आश्रय गुणक होता है.

उदाहरणम्.

रवि समके ग्रहमें है इसवास्ते ९ अंक यह ग्रह स्थानमें द्विगु-
णित १८ रवि स्वहोरामें है. इसवास्ते होरा स्थानमें १८ रवि स्व द्रे-
ष्काणमें है. इसवास्ते द्रेष्काण स्थानमें १८ रवि अधि मित्रके
सप्तमांशमें है. इसवास्ते सप्तमांश स्थानमें १५ सूर्य अधि मि-
त्रके नवमांशमें है. इसवास्ते नवमांश स्थानमें १५ सूर्य मित्रके
द्वादशांशमें है. इसवास्ते द्वादशांश स्थानमें १३ सूर्य समके
त्रिंशांशमें है. इसवास्ते त्रिंशांश स्थानमें ९ यह सप्तवर्गिक कायो-
ग १०६ इसको सूर्य समके ग्रहमें है इसवास्ते ७२ से भाग देके
१।२८।१९ यह सूर्यका आश्रय गुणक. यही रीतिसे चंद्रादिकोंका
आश्रय गुणक करना.

आश्रयगुणकसाधनचक्रम्.

ग्रह	स्व.	चं	मं	बु	रु	शु	श	ग्रह
गृह	१८	१०	१८	१०	६	१८	३०	गृह
होरा	१८	१८	९	१५	९	९	९	होरा
द्रेष्काण	१८	५	१५	५	३	१८	९	द्रेष्काण
सप्तमांश	१५	१५	५	१३	१५	९	१५	सप्तमांश
नवमांश	१५	५	९	१३	१८	१५	१८	नवमांश
द्वादशांश	१३	५	१५	५	१८	३	९	द्वादशांश
त्रिंशांश	९	१५	१५	१३	३	१८	९	त्रिंशांश
योग	१०६	७३	८६	७४	७३	९०	९९	योग
हर	३६	१०८	७२	१०८	३६	३६	३६	हर
आश्रय गुणक.	३ ५६ ६०	० ४० ३३	१ ११ ४०	० ४१ १७	३ ० ०	३ ३० ०	३ ४५ ०	आश्रयगुणक

आश्रयगुणकविशेषसंस्कारकर्मयोगगुणक-

औरजायुर्गसाधन.

श्लोकः- चेद्वर्गेत्तमपूर्वगोध्यरिसुहृद्देतद्गृहांकास्त्रिषड्
लब्धो नोयुगरोष्टमेब्धिनवकास्यास्वसमेकेवलः ॥
कार्यस्त्वाश्रयकः सतत्स्फुटहृत्तमूलसयोग्योगुणः
खेतानां चतनोर्लवाः खयुगत्तद्देपाइहार्थुलवाः ॥ १८

अन्वयः

चेद्यदिग्रहो वर्गेत्तम पूर्वगः वर्गेत्तमः नवमांशे वा स्पनवमांशे
स्वद्रेष्काणे स्थितः सन् आदिशत्रु गृहे वा अधिमित्र गृहे तदा त-
द्गृहांकाद्गृहवर्गे स्थापितांकात् त्रिषड् लब्ध्या वाप्त फलेन स आश्रय
क ऊनोयुक्तार्यः यदि वर्गेत्तमादि चेत्तमानो ग्रहः शत्रु गृहे वा मित्र
गृहे भवेत् तदा तद्गृहांकात् अधिनवकास्या फलेन स आश्रयको
गुणो हीन युक्तार्यः मित्रादि मित्र गृहे युक्तः आदिशत्रु शत्रु गृहे हीन-
इत्यर्थः- यतः आश्रयार्यगुणकस्फुटगुणकयोर्घातांमूलसयोग्योगुणः
तमेतानां ग्रहाणां तनोर्लवस्यांशाः ५६००, ४०००, ३३००, ४१००, १७००, ३०००, ४५००, ००००
वति.

अर्थभाषा.

जो ग्रह वर्गोत्तिममें स्वनवमांशमें वा स्व द्रेष्काणमें होयके अधिश-
त्रुग्रहमें वा अधिमित्र ग्रहमें होयतो उसके ग्रहांकको ६३ से भाग देके
जो भागाकार आवे सो क्रमसे पूर्वानीत आश्रयगुणकमें कम करना वा
युक्त करना और ग्रह शत्रुग्रहमें वा मित्र ग्रहमें होयतो उसके ग्रहां-
कको ९४ से भाग देके जो भागाकार आवे सो क्रमसे पूर्वानीत
आश्रयगुणकमें कम करना वा युक्त करना तो आश्रय गुणक होता
है परंतु ग्रह वर्गोत्तिमादि ३ स्थानमें होके स्वग्रहमें वा समे ग्रह-
में होयतो संस्कार नहीं अनंतर आश्रय गुणक वा स्फुट गुणक इ-
स्के गुणाकारका वर्गमूल निकालना तो कर्म योग्य गुणक होता है
ग्रह वा लग्न इसके अंश करके ४० से भाग देना जो शेष रहे सो आ-
शुभांगि होते हैं ॥ १८ ॥

उदाहरणम्.

वर्गोत्तिमादि ३ स्थानमें गुरुशनि स्वनवमांशमें है इसवास्ते गुरुशनिका
आश्रय गुणक संस्कार योग्य है सो ऐसा गुरु अधिशत्रूके ग्रहमें है इस-
वास्ते गुरुकी ग्रहांक ६३ इस्को ६३ से भागके ०।५।४२ यह गुरुका आश्र-
यगुणक २।०।० इस्में कम करके १।५।१८ यह गुरुका आश्रय गुण-
क भया और शनि अधिमित्रके ग्रहमें है इसवास्ते शनिका ग्रहांक
३० इस्को ६३ से भागके ०।२८।३४ यह शनिका आश्रय गुणक २।४५
।० इस्में युक्त करके ३।१३।३४ यह शनिका आश्रयगुणक भया और वर्गोत्तिमा-
दि ३ स्थानमें सूर्यशुक्र स्वद्रेष्काणमें है तथापि समके ग्रहमें है इसवास्ते
इस्को आश्रय गुणकको संस्कार नहीं.

आश्रयगुणकचक्र.

सु.	च.	मं.	ख.	ब.	शु.	श.	ग्र.
३६ ४०	४० ३३	११ ४०	४१ १७	५४ १८	३० ०	३ १३ ३४	०

कर्मयोग्यगुणकी उदाहरणम्.

सूर्यका आश्रय गुणक २।५६।४ वा स्फुट गुणक २।२९।१२
इस्का गुणाकार ७।१०।१२ इस्का वर्गमूल २।६०।१५ यह स-
ूर्यका कर्म योग्य गुणक भया यही रीतिमे चन्द्रादिको का क-
र्म योग्य गुणक करना.

स्मै जोग्रह बलिष्ठ होय उस्का मात्र गुण करना अनंतर यह गुणक से
 स्वकीय आयुर्भागि इस्को गुणना कहिये रविके गुणक से रविके आयु-
 र्भागि गुणना यह प्रमाण इहां गुण करके चक्रार्द्ध हानि कथित किया है
 उदाहरणम्- इहां रवि भौम गुरु शनि इन्होंका चक्रार्द्ध हानि संभव
 है- इसवास्ते लग्न ६।१।४२।२६ यह इस्में सूर्य्य ०।१३।१०।४२ कम क-
 रके ५।२६।३१।४४ इस्की पल ६३५५०४ इस्में ३० अंशकी १०८०००
 इस्में भाग दिया तो ०।१०।११ यह एकमें कम करके ०।४९।४९ यह सूर्य्य
 का गुणक इस्से सूर्य्यका आयुर्भागि १३।१०।४२ यह गुणके १०।
 ५६।३० यह सूर्य्यका हानि संस्कृत आयुर्भागि भया- इसी प्रमाण से
 भौमका गुणक ०।२९।१९ गुरुका ०।३२।२६ शनिका ०।४४।३२ इन
 गुणकों से इनोंका आयुर्भागि गुणा तो भौमका ५।२६।३४ गुरुका २०।
 ११।५ शनिका २४।४५।४४ यह हानि संस्कृत इनोंका आयुर्भागि भया
 इसी प्रमाण जिस्का संभव होय उस्का आयुर्भागि करना इहां जो ३०
 अंशकी पल १०८००० के भाग दिया है यह पल सिद्ध है।

वर्षादि अंशायुर्दयानयनमाह.

श्लोक. } दायंशोत्थकलाः स्वयोग्यगुणकं घ्राः रयाभनेत्रोद्धृता
 अंशायुर्दयसमादितुतनोर्दयांशकार्त्त्याहताः ॥
 दिग्भक्ताहिसमादिक्तेतुबलवल्लभतदालग्नभै-
 स्तुल्याब्देः सहितं हि निघ्नशरत्तद्भागादितो मासयुक् २०

अन्वयः- चक्रार्द्ध हानिकृतानां दायंशानां कलाः कार्त्त्याः स्वयोग्यगुण
 के गुण्यादिशत्या भक्ताः फलं वर्षायमंशायुर्भवति ॥ एतदुक्तं भवति
 ॥ दायंशकलाशतद्वयेन भक्ते फलं वर्षे शेषमंशाद्यं द्वादशभिः संगुण्य
 तेनैव हरेण भक्ते फलं मासः एवं त्रिंशता गुणिते भक्ते दिनानि षष्टया
 गुणिते भक्ते घटयः पुनश्चष्टया गुणिते हरेण भक्ते फलं पलानि ॥
 लग्नस्य दायंशास्त्रिंशति ३ गुण्या उक्तरीत्या दशभिर्भक्ते वर्षादिलमा-
 युर्भवेत् यदि बलवल्लभं षडधिकं बलं तदालग्नराशितुल्ये वर्षे धुक्तं का-
 र्त्त्य अपितु लग्नस्य भागाद्यं हि गुणतलं च भक्ते सति नासाद्यं भवति तदुक्तं
 तदालग्नराशुः स्पष्टं स्यात् अधिक बलं ज्ञानं तु अत्येहीन बल इत्यादि ना-
 र्थभाषाः- पूर्वानीत केवल और हानि संस्कृत आयुर्भागकी फल
 करके उस्को स्वकर्म योग्य गुणक से गुणके जोगुणाकार आवे उस्को-

२०० से भागके जो भागाकार आये सो ग्रहोंकी वर्षादि अंशायु होता है।
 लम्बके आयुभागिको ३ से गुणके गुणाकारको १० से भागदेके जो भागा
 कार आये सो लग्नका वर्षादि अंशायु होता है। और जो लग्नवल्लवक
 हिये ६ रूप अपेक्षा अधिक होय तो लग्नराशितुल्य वर्ष पूर्वानीत
 लग्नायुमें युक्त करके उसमें लग्नके भागादिकोंको २ से गुणके ५ से
 भागके मासादि फल युक्त करना तो लग्नायु होता है।

टीप अंशायु फल निकालनेके बखत २०० से भागदेके प्रथम फल
 वर्ष आये बाकी रहे उसको १२ से गुणके २०० से भागके फल मास
 आवता है बाकी रहे उसको ३० से गुणके २०० से भागके फल दि
 न आवता है बाकी रहे उसको ६० से गुणके २०० से भागके फल घटी आवती
 है बाकी रहे उसको ६० से गुणके २०० से भागके फल पल आवता है यही
 रीतिसे लग्नायुमें भी ऐसे मासादि फल लेना।

उदाहरणम्

आयुभागिकलाचक्रम्.						
सू.	यं	मं	बु.	शु.	गु.	श.
६५६	२१२२	३२४	१८८०	१२०१	४१६	१४८५
३०	३५	३४	५३	५	४	४४

कर्मयोग्यगुणगुणितआयुभागिकलाच.

सू.	यं	मं	बु.	शु.	गु.	श.
१७७६	११९०	३८७	१६४१	२४५८	८४६	२६७१
२३	३१	२४	४	१३	२१	२६

त आयुभागिकला १७७६।२३ इस्को २०० से भागके लब्ध ८ व
 र्ष शेष १७६।२३ इस्को १२ से गुणके २११६।३६ इस्को २०० से
 भागके लब्ध १० मास शेष ११६।३६ इस्को ३० से गुणके ३४९८ इ-
 स्को २०० से भागके लब्ध दिन १७ शेष ९८ इस्को ६० से गुणके ५८८०
 इस्को २०० से भागके लब्ध २९ घटी शेष ८० इस्को ६० से गुणके
 ४८०० इस्को २०० से भागके लब्ध २४ पल यह सूर्यका वर्षादि
 अंशायु ८।१०।१७।२९।२४ इसी प्रमाण चन्द्रादिकोंका अंशायु
 करना ॥ लग्नका आयुभागिकला २९।४२।२६ इस्को ३ से गु-
 णके ९८।७।१८ इस्को १० से भागके लब्ध ८ वर्ष शेष ९।७।१८
 स्को १२ से गुणके १०९।२७।३६ इस्को १० से भागके लब्ध १०

सूर्यका आयुभागिकला
 ६५६।३० सूर्यका कर्म योग्य
 गुणक २।४२।२१ इस्को
 गुणके १७७६।२३ यही री-
 तिसे चन्द्रादिकोंकी कला-
 गुणना।

उदाहरणम्

सूर्यकी कर्मयोग्य गुणि

मास शेष १।२।७।३६, इस्को ३० से गुणके २८३।४८ इस्को १० से भागके लब्ध २८ दिन शेष ३।४८ इस्को ६० से गुणके २२८ इस्को १० से भागके लब्ध २२ घटि शेष ८ इस्को ६० से गुणके ४८० इस्को १० से भागके लब्ध ४८ पल यह लग्नका वर्षादि ८।१०।२८।२२।४८ अंशांशु भया इस्को लग्नवल ७।२४।८।३० यह द्रुपद रूपसे अधिक है, इसवास्ते लग्नराशितुल्यवर्ष ६ युक्त करके १४।१०।२८।२२।४८ इस्को लग्नका भागादि ९।४२।२६ इस्को २ से गुणके १९।२४।५२ इस्को ५ से भागके लब्ध ३ मास शेष ४।२५।५२ इस्को ३० से गुणके १३२।२६ इस्को ५ से भागके लब्ध २६ दिन शेष २।२६ इस्को ६० से गुणके १४६ इस्को ६ से भागके लब्ध २९ घटी शेष १ इस्को ६० से गुणके ६० इस्को ५ से भागके लब्ध १२ पल यह मासादि ३।२६।२९।१२ युक्त करके १५।२।२४।५२।०

वर्षादि अंशांशु चक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	रु.	शु.	श.	लग्न	योग
८	९	१	८	११	४	१३	१५	७२
१०	११	११	२	२	२	४	२	११
१७	१२	७	१३	१	२३	८	२४	१९
२९	५५	१९	५५	१२	२५	३६	५२	४४
२४	४८	१२	१२	०	४८	४८	०	१२

पिण्डनिसर्ग और जीवशर्मायु दीय इनके आयु भागः

श्लोक } स्थाञ्जनोद्युचरोंगभात्समधिकोग्राह्योल्पकोनार्कभं
तन्वागाद्युचरोरिप्तेयदिगुणांशानाविनावक्रगम् ॥
इयासाग्रस्तमितेविनाशानिसितोहानिद्वयेत्राधिकै।
कार्यं पिण्डनिसर्गजीवगदिताचक्रार्द्धहानिर्भवेत् २९

अन्वयः- स्वकीयेनोच्चेन हीनो ग्रहो यदि पण्डितः पञ्चराशिन्यो ग्रहो कस्तदा स्यांशाः कार्य्यः यदा पण्डितस्तदा तदा राशिन्यो विशेष्य शेषस्यांशाः कार्य्यः वक्रगविनावक्रग्रहो विनायदिशानुग्रहस्तदा तस्यांशा निज अंशेन हीनाः कार्य्यः यद्यस्त इते प्राप्ते ग्रहे तदा तस्यांशा नामर्धकार्य्यम् शानि शुक्राभ्यां विना अत्र हानिद्वये प्राप्ते अधिकं हानि रेषाग्रान् हानि द्वयम् अर्द्धहानि रेषाग्रान् अत्र निसर्गिकशत्रुरेव ग्रहः पूर्वोक्त स्वकीयचक्रार्द्धहानिगुणेन दायोशा गुणनीया इयं पिण्डनि-

सर्गजीवगदिताचक्रार्द्धहानिर्भवेत् ॥

अर्थभाषा:- ग्रहमें उच्चकम करके शेष ६ राशीसे कम होयतो वह १२ राशिमें कम करके उसके भागकरनातो पिण्ड निसर्गजीवायुभागिहोते है. परंतु जो ग्रह वक्रगतिन होयके शत्रु ग्रहमें होयतो पूर्वोक्त भागों का तृतीयांश वह भागमें कम करना. और जो शनि शुक्र विना ग्रह अस्तंगत होयतो पूर्वोक्त भागोंका अर्धकरना. और जो ग्रह शत्रु ग्रहमें होयके अस्तंगत भी है तो पूर्वोक्त भागका अर्ध मात्र करना यह पिण्ड निसर्गजीवायुर्द्वय भागको पूर्व कथित चक्रार्द्धहानि संस्कारणीकरनातो १० के श्लोकसे ले आये जो गुणक उससे यह आयुर्भाग गुणना इहां नैसर्गिक शत्रुत्व समझना तात्कालिक शत्रुत्व लेना नहीं.

उदाहरणम्. रवि ०१२१ १०१४२ इस्से रविका उच्च ०११० १०० क. म करके ०१३१०१४२ यह ६ राशीसे कम है इसवास्ते १२ राशीमें से कम करके ११२६ १४९१० इस्के अंश ३५६ १४९१० ग्रहस्वर्यका पिंडादि आयुर्भागि भया. इसी प्रकार चन्द्रादिकोंका करना.

सूर्यादिग्रहाः

उच्चचक्रः

सू.	चं.	मं.	बु.	र.	शु.	श.	ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	र.	शु.	श.
०	९	६	११	५	१०	२	०	१	१	९	५	३	११	६
१३	५	११	३१	८	२६	१३	०	१०	३	२८	१५	५	२७	२०
१०	२२	६	२०	१२	५६	२३	०	०	०	०	०	०	०	०
४२	२५	१६	५३	३७	४	४५	८	०	०	०	०	०	०	०

उच्चकम करके.

पञ्चाल्प १२ राशीमें कम करके

सू.	चं.	मं.	बु.	र.	शु.	श.	ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	र.	शु.	श.
०	८	६	६	२	१०	७	०	११	८	६	६	९	१०	७
३	२	१३	६	१	२१	२३	०	२६	२	१३	६	२६	२३	२३
१०	२३	६	२०	१३	५६	२३	०	६३	२३	६	२०	४७	५६	२३
४२	२५	१६	५३	३७	४	४५	०	१८	२५	१६	५३	२३	४	४५

पिंडादिआयुर्भागचक्रम्.

चक्रार्द्धहानि संस्कृत पिंडादिआ

सू.	चं.	मं.	बु.	र.	शु.	श.	ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	र.	शु.	श.
१५१	२४२	१९३	३८६	२९६	३२९	२३२	पि.	२९६	२४२	९४	१८६	१५५	२२९	१७३
४९	२२	४	२०	४७	५६	२१	आ.	१५	२१	२०	२०	२९	५६	१२
१८	२५	१६	५३	३३	४	४५	ता.	४०	२५	३२	५३	५	४	२०

इहां कोई ग्रह अस्तादि नहीं है और शत्रुराशी का भी नहीं इस वास्ते सं-
स्कार नहीं भया केवल चक्रार्द्ध हानि का संस्कार है- उस्का उदाहरण कहते हैं-
सूर्य का चक्रार्द्ध हानि गुणक ०।४९।४९ इस्से सूर्य के आयुरंशः

३५६।४९।१८ इस्को गुणके २९६।१५।४० यह सूर्य का स्पष्ट आयुर्भाग भया

भीम का चक्रार्द्ध हानि गुणक ०।२९।१९ इस्से भीम के आयुरंशः १९३।
४।१६ इस्को गुणके ९६।२०।१२ यह भीम का आयुरंश भया-

गुरु का चक्रार्द्ध हानि गुणक ०।३३।२६ इस्से गुरु के आयुरंश २९६।
४७।२३ इस्को गुणको १५५।२९।५ यह गुरु का स्पष्ट आयुर्भाग भया-

शनि का चक्रार्द्ध हानि गुणक ०।४६।३२ इस्से शनि के आयुरंश २२३।
१२।४५ इस्को गुणके १७३।१२।२४ यह शनि का स्पष्ट आयुर्भाग भया-
या बाकी ग्रहों का पूर्वोक्त ही आयुर्भाग लेना-

लग्न में पापग्रह होय तो उस्का विशेष संस्कार
कहते हैं-

श्लोक } दायंशाद्युसदोपृथक्तनुलवादि प्राः खपट्च्युद्धृता
आद्यो नास्तनुगेखलेचयदि सहृदयार्थे पर ॥
निध्नो ग्रोदयभावजेन तनुगोप्राचेदलिप्तस्य तन् ।
साम्ये पुष्टफलेन न तनुपेऽस्मिन्नांशजेऽसौ क्रिया २२
अन्वयः:- लग्ने पापे सति चक्रार्द्ध हानि गुणिता ग्रहाणां दायंशाः पृथक् स्या-
प्याः लग्नस्य राशिं विहाय अंशादिनिर्गुण्यां पृथक् अधिक शतत्रयेण भाज्याः
आस्थालब्ध फलेनांशादिना पृथक् स्याहीनाः कार्याः पापग्रहास्तुरविभो
मशनयः सौम्ये क्षिते त्वर्धपा शुभग्रह दृष्टे लग्नस्य क्रूरखगंत दालब्ध फल
स्यार्ध पातये दायुः पिंडादीत्यर्थः अथा परेशां मतम् निध्नो ग्रोदय भा-
वजेन तिकेचिदेवं भ्रुवंति लग्नगे क्रूरतदा पृथक् स्याः आयुर्भागाः उग्रो
दयभावजेन गुण्याः पूर्व हरेणाप्याऊनाः कार्याः शुभदृष्टेः र्धपा उग्रोद-
यभावजंतु उग्रपापग्रहस्य यो भावस्तत्पावरोहोह फलेनेत्यर्थः यदि
लग्ने दिनाः क्रूरास्तदा वलिप्तस्य भावजेन गुण्याः तत्साम्ये वलसाम्ये
पुष्टफलेन अपिकावरोहोह फलेन फलसाम्ये दृष्टादिपुणनं कार्यः
मिति भावः तदसन् एकदेहात्वात् अस्मिन् लग्ने क्रूरलग्नाधीशे लग्ने-
सति असौ हानिर्न कार्या अंशजे क्रूरलग्नेऽज्ञान कार्याः ॥

अर्थ भाषा-

जो लग्न में पापग्रह होय तो ग्रह का पिंडाद्याद्युर्भाग पृथक्-

रचना उसको लग्नका राइयंक छोड़के भागादिकसे गुणके गुणाकारको ३६० से भाग देके जो लब्धि आवे सो पृथक् रक्खा जो भाग उससे कम करना परंतु जो पापग्रह शुभग्रह करके दृष्ट होय तो लब्धिका अर्ध पूर्वोक्त भागमें कम करना तो पिंडायु भगि होता है।

दूसरे आचार्योक्तामत यह है के पृथक् रक्खा जो आयु भगि उसको लग्नस्थ पापग्रहको जो भाग उसका जो फल उससे गुणदेना और ३६० से भाग देना लब्धि पूर्वस्थापित भागादिमें हीन करना तो पिंडाद्यायु भगि होता है। शुभग्रह देवता होय तो लब्धिका आधा घटाना और लग्नमें दोया तीन पापग्रह होय तो जो बली होय उसीका भाग फल लेना पापग्रह लग्नपती होकर लग्नमें होय तो यह क्रिया न करना।

उदाहरणम्.

इहां लग्नमें पापग्रह कोई नहीं, इसवास्ते विशेष संस्कार नहीं भया।

पूर्वोक्त हानि संस्कृत पिंडाद्यायु भगि च-

स्व.	च.	मं.	बु.	दु.	शु.	श.	ल.
३६६	२४२	९६	१८६	१५५	३२९	१०३	०
१५	३२	२०	२०	३९	५६	१३	०
६०	३५	१२	५३	५	४	२४	०

इदानीं पिण्ड निसर्ग
जीवशर्मायुर्दया
नयनमाह.

मूलः-

गोब्जातत्वतिथिप्रभाकरतिथिस्वर्गानरवाः पैण्डजे
नैसर्गेनखभृहिगोधतिनखापञ्चाशदर्कादुणाः ॥
दायांशाः स्वगुणैर्हताहिभगणांशाः समाद्यायुपी
स्वर्गसाश्वसमादिजेवमिहत्स्वांशैर्घटीष्वनितम् २३

अन्वयः-

गोब्जेति अर्कादिति अर्केमारभ्य पिण्डाद्यायुर्दये गोब्जा इ-
त्पारभ्यनखा इत्यन्तांका गुणकाः नैसर्गेनख भूरित्पादयो गुणकाः
२ दायांशाः स्वगुणगुणा भगणांशौ ३६० भोज्याः फलानियर्पाद्या
युर्दयाभवन्ति ॥ गोब्जा इत्यादिभिरंके गुणिने पिंडायुः नखभूरित्या-
दिना गुणैर्निसर्गायुः स्यात् दायांशा २५ १५० १५० १५० १५० १५० १५० १५०
फलानियर्पादिजीवशर्मायुः स्यात् पु-
नर्भक्त्योयत्तुर्ध्व घट्यादिकं नयुक्तं २

अर्थभाषाः- १९१२५ १२५ १२२ १२५ १२१ २०

स्व

प्रातः प्रहोके पिंडायुर्दायिके गुणक और २०।१।२।१।२८।२०।५० यह क्रमसे रव्यादि सात ग्रहोंके निसर्गायुर्दायिके गुणक जानना ग्रहोंका आयुर्भाग स्व अपना गुणकसे गुणके गुणाकारको ३६० से भाग देना तो वर्षादि पिंड निसर्गायु होता है पूर्वोक्त आयुर्भागको २१ से भाग देना जो वर्षादि फल आवेगा उसमें पूर्वोक्त आयुर्भागको ८ से भाग देके जो फल आवे सो घटीमें युक्त करे तो जीवशर्मोक्त आयु होता है इहां मासादि फल अंशायुर्दायिके कथित प्रमाण लेना।

पिण्डायुके गुणक.

निसर्गायुके गुणक.

सू.	चं.	मं.	बु.	रु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	रु.	शु.	श.
१९	२५	१५	१२	१५	२१	२०	२०	१	३	९	१८	२०	५०

पिंडायु रुदाहरणम्.

सूर्यका आयुर्भाग २९६।१५।४० इस्को सूर्यका गुणक १९ इस्से गुणके ५६२८।५७।४० इस्को ३६० से भागके लाब्धि १५ वर्ष शेष २२८।५७।४० इस्को १२ से गुणके २७४७।३२ इस्को ३६० से भाग देके लाब्धि मास ७ शेष २२७।३२ इस्को ३० से गुणके ६८२६ इस्को ३६० से भागके लाब्धि दिन ३८ शेष २४६ इस्को ६० से गुणके २०७६० इस्को ३६० से भागके लाब्धि घटी ५७ शेष २४० इस्को ६० से गुणके १४४०० इस्को ३६० से भागके लाब्धि पल ४० इसी प्रकारसे सूर्यके वर्षादि पिंडायु भये १५।७।१८।५७।४० यही प्रमाण चन्द्रादिकोंका करना।

निसर्गायु रुदाहरण.

सूर्यका आयुर्भाग २९६।१५।४० इस्को सूर्यका गुणक २० इस्से गुणके ५९२५।१३।२० इस्को ३६० से भागके लाब्धि वर्ष १६५।१३।२० इस्को १२ से गुणके १९८२।४० इस्को ३६० से भागके लाब्धि मास ५ शेष १८२।४० इस्को ३० से गुणके ५४८० इस्को ३६० भागके लाब्धि दिन १५ शेष ८० इस्को ६० से गुणके ४८०० इस्को ३६० से भागके लाब्धि घटी १३ शेष १२० इस्को ६० से गुणके ७२०० इस्को ३६० से भागके लाब्धि पल २० यह रीतिसे सूर्यका वर्षादि निसर्गायु भया १६।५।१५।१३।२० यही रीतिसे चन्द्रादिकोंका करना।

जीवायु रुदाहरणः- सूर्यका आयुर्भाग २९६।१५।४० इस्को २१।

से भागके लब्धि वर्ष १४ शेष २१५।४० इस्को ३२ से गुणके २७।८ इस्को २१ से भागके लब्धि मास १ शेष ६।८ इस्को ३० से गुणके १०४- इस्का २१ से भागके लब्धि दिन ८ शेष १६ इस्को ६० से गुणके ९६० इस्को २१ से भागके लब्धि घटी ४५ शेष १५ इस्को ६० से गुणके १०० इस्को २१ से भागके लब्धि पल ४२ चहरीतिसे सूर्यका वर्षादिजीवायुर्मया १५।१।८।५।४२ इस्के घटामे सूर्यके आयुर्भाग २९६।१५।४० इस्को ८ से भागके लब्धि ३७ शेष ०।१५।४० इस्को ६० से गुणके १५।४० इस्को ८ से भागके लब्धि २ यह पुक्तकरके सूर्यका वर्षादि स्पष्टजीवायु- मया १५।१।१।२२।४४ चहरीतिसे चंद्रादिकोंका करना.

पिण्डायुचक्र.

निसर्गायुचक्र.

सू.	चं.	मं.	बु.	रु.	शु.	श.	ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	रु.	शु.	श.
१५	१६	३	६	९	११	०	२	१६	०	०	७	७	१८	२४
७	९	११	२	५	३	७	१०	५	८	६	७	९	३	०
१८	२०	५	१६	२२	२८	१४	२८	१५	२	८	२७	८	१८	२०
५७	२४	३	१०	१६	३७	८	२२	१३	२२	४०	७	६३	४१	२०
४०	३५	०	३६	१८	२४	०	४८	२०	३५	२४	५७	३०	२०	०

जीवायुचक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	रु.	शु.	श.	ल.
१४	११	६	८	७	१५	८	२
१०	६	५	१०	४	८	२	१०
९	१५	२७	१४	२५	१६	२९	२८
२२	२१	२३	५५	४६	४२	३७	२१
४४	४२	४०	३४	३४	२२	४	४८

पिण्डादितीनों आयुर्दायमें लग्नायुर्दाय
बनावनेका क्रमः

सि.
श्लोक

स्याद्विज्ञाः खनखोघताविभक्तनो वर्षादिपैण्ड्यिके
लग्नायुर्निर्लेस्तर्दशकसमके श्विन्दतुल्यस्मृतं ॥
यस्येशाधिपलस्तदेवहिपरेस्तेनादृषमन्यैर्यदम्
आयुर्वेत्तयचोदान्तुल्यमासिलोक्तं ग्राह्यमेवादिमं २४

अन्वयः-

पिण्डादितीनों आयुर्दायमें लग्नायुर्दाय बनावनेका क्रमः

त्वा भाज्याः फलं वर्षादिपैडनिसर्गजीवशर्मायुर्दायेषु स्यात् सर्वैराचार्यैः
 सतदंशकसमनवमांशसमंजस्कलभ्रभतुल्यकैश्चिदायुरुक्तं लग्नेशनवमां
 शयोर्मध्ये घोबलीतदेवग्राह्यमित्यन्येतनाढ्यमिति स्यात् लिप्ताखनरवो-
 ऽदृता इत्यादि नानीतंतत्रतेनाढ्यराशीशोबलीतदाराशितुल्यवर्षनवमांशो
 बलवतितदानवमांशतुल्यवर्षं ग्राह्यं कुत्र अंशायुवत् आनीते लग्नायुर्षि-
 इत्यपरमतम् अथ निखिलोक्तं अंशसमभादिममेव ग्राह्यमिति यावत्
 अर्थभाषा- राशिको छोडके भागादि लग्नकी कला करके उसको
 २०० से भाग देना तो पिंडनिसर्ग और जीवशर्मायुर्दीयमें लग्नायु होती है
 यह अंशतुल्य अर्थात् लग्न युक्त नवमांश तुल्य आयु सर्वाचार्य समत है
 कोई आचार्य लग्न के राशितुल्य कहते है लग्नपति अंशपति मे जो बलि होय
 तत्तुल्य (अर्थात्) लग्नपति बलि होय तो लग्न के राशीतुल्य आयु अंश
 पतिवली होय तो अंशतुल्य आयु यह कोई आचार्य का मत है ॥ आयु-
 दीयमें कथित रीतिसे जो आयु आवे उसमें अंशपतिवली होय तो अं-
 शतुल्य लग्नपतिवली होय तो लग्नतुल्यवर्ष युक्त करना यह परमत है
 ऐसा पृथक् पृथक् सब आचार्योंने कहा है तथापि प्रथम प्रकार जो
 है सोई सब का मत है इसलिये उसीको मानना ॥ इति ॥
 उदाहरण- राशि रहित भागादि लग्न १।४२।२६ इस्की कला ५८२।
 २६ इस्को २०० से भागके २।१०।२८।२२।६८ यह पिंडनिसर्गजीवासु-
 दीयके विशेष लग्नायु जानना।

यह अंशादि चार आयुर्दीय मे से कौन आयुर्दीय
 कबलेगा इसके विषे प्रमाण
 चतुर्णांशुपांन्यवस्था माह

श्लोक } अंशायु श्वतं नाविने अधिक बले येयुं निसर्ग विधो.
 स्याच्च तुल्यवलं ह्येयुं तिदलं तज्जायुयो अत्र या ॥
 आयुं धि विवले निर्दल्य च युति वीर्यै च नृदानि जा
 युर्मुत्पात्तिलवोय जैव युदितं चेद्दीन वीर्यस्त्रयः ॥

अन्वयः- अधिक बलायांत नावंशायु-इने मुख्य अधिक बले पिंडायुः
 विधानधिक बले निसर्गायुः माध्यम् ॥ यदा दोसवले तदा तदा युयो योग
 रल मिश्रायुः स्यादिति गणः नुरल्यस्तु ॥ तत्तदायुस्तदलेन संगुण्यत
 योगतपोर्बलेन न जेन्तदा मिश्रायुः स्यादित्यर्थः यरिल नार्क चन्दा

सूर्योऽपितुल्यबलास्तदालम्बबलेनदिनादिकमंशायुःसंगुण्यःसूर्यबलेनपिंडायुःसंगुण्यचन्द्रबलेननिसर्गायुःसंगुण्यसर्वेषांयोगलम्बार्कचन्द्रबलयोगेनभजेफलमिश्रायुःस्फुटंस्यात् ॥ अथवात्रयाणामायुषां योगस्यतृतीयांशोमिश्रायुःस्यात् ॥ चेलम्बार्कचन्द्राख्योऽपिहीनबलास्तदाजीवशर्मायुः स्यादिति ॥

अर्थभाषाः- लम्बबली होयतो, अंशायु सूर्यबली होयतो पिंडायु चन्द्रबली होयतो निसर्गायुलेनाजो दो समबल कहिये पट्टरूपाधिकबल होयतो उसीसे उत्पन्न आयुष्यका योगार्ध आयु होता है. लम्ब और सूर्य समबल होयतो अंशायु और पिंडायुका योगार्ध करना. लम्ब और चन्द्र समबल अंशायु और निसर्गायु इस्का योगार्ध करना. सूर्य और चन्द्र समबल होयतो पिंडायु और निसर्गायु इस्का योगार्ध करना. तो लम्ब सूर्य और चन्द्र यह समबल होयतो तीनों आयुष्य तीनोंके बलसे गुणके ऐक्य करके उसको तीनोंके बलैक्यसे भागके जो भागाकार आवेसो ॥ अथवातीनोंके आयुष्यके योगका तृतीयांश आयुष्यलेना वह मिश्रायु होता है. जो लम्ब सूर्य और चन्द्र यह तीनोंही हीनबल होयके रूपत्रयात्मबल होयतो जीव शर्मायु आयुलेना.

उदाहरण.

सूर्यका अंशायु ८१०।१७।२९।२४ यह दिनादि करके ३९९७।२९।२४ इस्कोलम्बबल ७।२४।८।३० इस्से गुणके २३६६८।५८।३२ इसीप्रमाण चन्द्रादिकोंका अंशायु गुणना.

रविका पिंडायु १५।७।१८।५७।४० यह दिनादि करके ५६२८।५७।४० इस्कोरविबल ७।५१।५३।३० इस्से गुणके ४४२७०।५९।५० इसीप्रकार चन्द्रादिकोंका वसूर्यका निसर्गायु १६।५।१५।१३।२० यह दिनादिकरके ५९२५।१३।२० इस्कोचन्द्रबल ७।२०।६।३० इस्से गुणके ४३।४५९।२।१० इसीप्रकार चन्द्रादिकोंका निसर्गायु करना.

रविका यह गुणित तीनों आयुर्दायका योगदिनादि १११३९९।०।३२ इस्केपल ४०१०३६४३२ इस्कोलम्बबल ७।२४।८।३० रविबल ७।५१।५३।३० चन्द्रबल ७।२०।६।३० इनका योग २२।३।६।६ इस्कीविकला ८३६६ इस्के भागके लब्धि दिनादि ४९२८।४७।६५ यह वर्षादिकरके १३।८।८।६७।६६ यह सूर्यकामिश्रायु मयायही रीतिसे चन्द्रादिकोंका मिश्रायु साधन करना + अथवा रविका अंशायु ८१०।१७।२९।२४ पिंडायु-

१५।७।१८।५७।४० निसर्गायु १६।५।१५।१३।२० यहतीनों आयुर्दाफल
 योन ४०।११।२१।४०।२४ इस्कानृतीयांश १३।७।२७।१३।२८ यहरविका
 वर्षादि मिश्रायु मया यही रीतिसे चन्द्रादिकोंका करना.

अंशायुश्चक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	ल.	यो.	
८	९	१	८	११	४	१३	१५	७२	वर्ष
१०	११	११	२	२	२	४	२	११	मास
१७	१२	१७	१३	१२	२३	२४	२४	१९	दिन
२९	५५	१८	५५	१२	२५	२४	५२	४४	घटि
२४	४८	१२	१२	०	४८	४८	०	१२	पल

पिण्डायुश्चक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	ल.	यो.	
१५	१५	३	६	६	१२	८	२	८०	वर्ष
१७	१५	३	६	६	१२	८	२	१०	मास
१७	१५	३	६	६	१२	८	२	१३	दिन
४०	२५	०	२५	१८	२७	०	४८	२१	घटि
									पल

निसर्गायुश्चक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	ल.	यो.	
१५	१५	३	६	६	१२	८	२	८०	वर्ष
१७	१५	३	६	६	१२	८	२	१०	मास
१७	१५	३	६	६	१२	८	२	१३	दिन
२०	२५	०	२५	१८	२७	०	४८	२१	घटि
									पल

अंशपिण्डनिसर्गायु योग चक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	ल.	यो.	
५०	२७	६	१०	२५	४१	४७	२१	२०९	वर्ष
११	१५	२१	२७	२	२०	१३	२१	२२	मास
४०	४२	२	१३	११	४४	२	३७	१६	दिन
२४	५८	३६	४५	४८	२२	४८	३६	२७	घटि
									पल

योगनृतीयांश मिश्रायु.

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	ल.	यो.	
१३	९	२	६	८	१३	१५	७	७६	वर्ष
१७	१	१७	६	८	११	४	७	२७	मास
१७	१५	१७	६	८	११	४	७	२५	दिन
२८	१९	५२	३२	५६	५१	५६	२२	२६	घटि
									पल

स्वयोऽपितुल्यबलास्तदालम्बनेनदिनादिकमंशायुःसंगुण्यःसूर्यबलेनपिंडायुःसंगुण्यचन्द्रबलेननिसर्गायुःसंगुण्यसर्वेषांयोगंलग्नार्कचन्द्रबलयोगेनभजेफलंमिश्रायुःस्फुटंस्यात् ॥ अथवात्रयाणामायुषांयोगस्यतृतीयांशोमिश्रायुःस्यात् ॥ चेलग्नार्कचन्द्रास्वयोऽपिहीनबलास्तदाजीवशर्मायुःस्यादिति ॥

अर्थभाषा:- लग्नबली होयतो अंशायु सूर्यबली होयतो पिंडायु चन्द्रबली होयतो निसर्गायुलेना जो दो समबल कहिये पदरूपाधिकबल होयतो उसीसे उत्पन्न आयुष्यका योगार्ध आयु होता है. लग्न और सूर्य समबल होयतो अंशायु और पिंडायुका योगार्ध करना. लग्न और चन्द्र समबल अंशायु और निसर्गायु इस्का योगार्ध करना. सूर्य और चन्द्र समबल होयतो पिंडायु और निसर्गायु इस्का योगार्ध करना. तो लग्न सूर्य और चन्द्र यह समबल होयतो तीनों आयुष्य तीनोंके बलसे गुणके ऐक्यकरके उस्को तीनोंके बलैक्यसे भागके जो भागाकार आवेसो ॥ अथवा तीनोंके आयुष्यके योगका तृतीयांश आयुष्यलेना वह मिश्रायु होता है. जो लग्न सूर्य और चन्द्र यह तीनोंही हीनबल होयके रूपत्रयात्यबल होयतो जीव शर्मेक्ति आयुलेना.

उदाहरण.

सूर्यका अंशायु ८१०।१७।२९।२४ यह दिनादि करके ३९९७।२९।२४ इस्को लग्नबल ७।२४।८।३० इस्से गुणके २३६६८।५८।३२ इसीप्रमाण चन्द्रादिकोंका अंशायु गुणना.

रविका पिंडायु १५।७।१८।५७।४० यह दिनादि करके ५६९८।५७।४० इस्को रविबल ७।५१।५३।३० इस्से गुणके ४४२७०।५९।५० इसी प्रकार चन्द्रादिकोंका वसूर्यका निसर्गायु १६।५।१५।१३।२० यह दिनादि करके ५९२५।१३।२० इस्को चन्द्रबल ७।२०।४।३० इस्से गुणके ४३।४५९।२।१० इसी प्रकार चन्द्रादिकोंका निसर्गायु करना.

रविका यह गुणित तीनों आयुर्दायका योगदिनादि १११३९९।०।३२ इस्के पल ४०१०३६४३२ इस्को लग्नबल ७।२४।८।३० रविबल ७।५१।५३।३० चन्द्रबल ७।२०।४।३० इनका योग २२।३।६।६ इस्की विकला ८३६६ इस्के भागके लब्धि दिनादि ४९२८।४७।४६ यह वर्षादिकके १३।८।८।४७।४६ यह सूर्यका मिश्रायु मयायही रीतिसे चन्द्रादिकोंका मिश्रायु माधन करना + अथवा रविका अंशायु ८।१०।१७।२९।२४ पिंडायु-

१५।७।१८।५७।४० निसर्गायु १६।५।१५।१३।२० यहतीनों आयुर्दायिका
 यो ४०।११।२१।४०।२४ इस्का तृतीयांश १३।७।२७।१३।२८ यह रविका
 वर्षादि मिश्रायु ज्ञया यही रीतिसे चन्द्रादिकोंका करना.

अंशायुश्चक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	रु.	शु.	श.	ल.	यो.	
८	९	१	८	११	४	१३	१५	७२	वर्ष
१०	११	११	२	२	२	४	२४	११	मास
१७	१२	१७	१३	१३	२३	२४	५३	१९	दिन
२२	५५	१२	५५	१२	२५	४८	०	४४	घटि
२४	४८	१२	१२	०	४८	४८	०	१२	पल

पिण्डायुश्चक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	रु.	शु.	श.	ल.	यो.	
१५	१५	३	६	५	१२	९	२	८०	वर्ष
१५	२९	३	१५	५	१२	१७	१०	१०	मास
१५	२९	३	१५	५	१२	१७	१०	१३	दिन
५७	३५	०	३५	१८	२४	०	४८	२१	घटि
५७	३५	०	३५	१८	२४	०	४८	२१	पल

निसर्गायुश्चक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	रु.	शु.	श.	ल.	यो.	
१५	१०	०	७	७	१८	२४	३	७५	वर्ष
१५	२०	०	२७	७	३३	२०	१०	४	मास
१५	२०	०	२७	७	३३	२०	१०	१९	दिन
२०	३५	२४	५७	१०	२०	०	४८	३३	घटि
२०	३५	२४	५७	१०	२०	०	४८	५४	पल

अंशपिण्डनिसर्गायु योग चक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	रु.	शु.	श.	ल.	यो.	
४०	२७	६	१०	२५	४१	४७	२१	२२	वर्ष
११	५५	२१	२७	५	२०	१३	११	२२	मास
११	५५	२१	२७	५	२०	१३	११	२२	दिन
४०	५२	२	१३	११	४४	२	३७	१६	घटि
२४	५८	३६	४५	४८	३२	४८	३६	३७	पल

योगतृतीयांश मिश्रायु.

सू.	चं.	मं.	बु.	रु.	शु.	श.	ल.	यो.	
१३	९	२	६	५	१३	१५	७	७६	वर्ष
७	१	२	६	५	११	८	०	४	मास
७	१	२	६	५	११	८	०	२७	दिन
१३	५६	०	४	४३	५६	२०	१२	२५	घटि
२८	१२	५२	३२	५६	५१	५६	३२	२६	पल

इदानीं बलाबलज्ञानंतथेदमायुः केषां घटत इति वदति ॥

मूलं

अत्येहीनबलोवलीषडधिकेवीर्येग्रहश्चोदयो
भिन्नस्वस्वमतेस्मृतायुरितितत्प्राज्ञैर्व्यवस्थापितम् ॥
अंशायुर्वहुसंमतंभवतितत्सत्यंचसत्योदितं
स्याद्भिषिसुशीलपथ्यसुभुजानस्यादिदंपापिनां २६

अन्वयः- ग्रह उदयो लग्नं वा अत्येहीन बलः अधिकपटुभाले सं-
ध्यबलः षडधिके वली स्यादिति प्राज्ञैः श्रीपत्यादिभिर्व्यवस्थापितं व्यव-
स्था कृतानिर्णीतमिति यावत् ॥ अंशायुश्चतनाविनेत्यादिनाभिन्नमि-
ति स्वस्व मतेचतुर्विधमायुः स्मृतं उक्तम् अंशायुर्वहु संमतं बहेनामाचा-
र्याणां संमतं भवति सत्यंच तदेव सत्योदितं स्यात् बहुसाम्यं समुपैति सत्य
वाक्यम् ॥ इदमायुर्धमिष्ठानां सुशीलवत्तां पथ्य सुभुजां पथ्यहितं य-
ज्ञोजनंतत्सेवनं येषां भवति तेषां स्यात् गणिता गतमायुः नपापिनां स्यात्
अर्थभाषाः- ग्रहया लग्नका षडबलैक्य ३ से कम होय तो हीनबल
होते है ३ से अधिक होय तो मध्यबले और ६ से अधिक होय तो बली
होता है सब आचार्याने पृथक् २ आयु कहा है लग्नबली होय तो अंश
युसूर्यबली होय तो पिण्डायु इत्यादि कहा है ऐसा है तथापि सत्याचार्य
कामत अंशायु पर है बहुत आचार्योंका भी मत है और जो धर्मिष्ठ सुशी-
ल पथ्य भोजी है उन्हीकी आयु मिलती है पापियोंकी नहीं और
पथ्यापथ्यसे रहित जो हैं वह अकालमे भी मरते हैं.

शिष्यसंदेह निवारणमाहः-

मूलं

हानिर्यास्तमितेऽप्यनुमतां शोथेल्पबुद्ध्या न तत्
यस्माच्चैष्टिकं आश्रयेऽस्ति निखिलैः पिण्डादिपूक्तात्ततः
आयुः सौरमितः यतोऽहगणनासौरात्ततः सूरिभिः
प्रोक्तं सत्यमसद्वा दल्पकथितनास्तत्रैकसावनम् २७ ॥

अन्वयः- या अस्तमितेऽहं हानिः शत्रुभेद्यंशहानिः सानुपिण्डादिबिध्वा-
युर्हये उक्तकेन विज्ञाप्यैणां शायुर्हये कृता सात्वल्प बुद्ध्या हेतु भूतया
अत्याचासौ बुद्धिश्चाल्प बुद्धिस्तयाल्प बुद्ध्यात् दसत् यस्मात्कारणा-
दस्तं इते हानिश्चैष्टिके चैष्टिकागुणके यतोऽस्तंगतस्य चैष्टिकागुणके रूपार्द्धमेव हानिः
अरिगृहे व्यंशहानिरुक्तास्तीति भावः आयुः सौरमितमेव आस्य यतोऽह-
गणनाशौरात् उक्तं च ॥ वर्षायनं नृयुगपूर्वकमत्र सौरात् मासास्तथा च तति

ययस्तुहिनांशुमानात् ॥ चत्सु छ सूतकविकित्तितवासराद्यं तत्सावनाच्च घटि-
कादिकमार्क्षमानात् ॥ ततः सूरिभिः सत्यं प्रोक्तं अत्यकथितं नाक्षत्रकं साव-
नमिति केचिदत्यज्ञेन नाक्षत्रसाधनेनायुः कथितं तदसादिति शम्.

अर्थभाषा:- पिण्डादि आयुर्दायमे अस्तंगत ग्रह होयतो अर्धहानि-
और शत्रुग्रहमें होयतो अंश हानि जो सब आचार्य्योंने कहा है उसको आ-
नुमान कोई अत्यद्बुद्धीसे अंशायुर्दायमें करेंगे तो वह करना नहीं. कारण
अर्धहानि चेष्टा गुणकमें और अंश हानि आश्रय गुणकमें है वर्ष गुणना
सीरसे है इसचास्ते विद्वानने यह आयुर्दाय सीर मानसे कथित है औ-
र वही सत्य है नाक्षत्र किंवा सावन मान लेगा ऐसा जो कोई कहते हैं सो अ-
सत्य जानना क्योंकि बहुमतसे विरोध है सो ठीक नहीं है.

इहानीमनुष्यपरमायुरन्यप्राणिनां परमायुः

कथनपूर्वकमायुर्दायान्वनमाह-

पंचाहं नरवभूतमानृकरिणां व्याघ्राद्यजादेर्नृपाः

गोकाल्योऽश्वजिनास्तथोष्ट्रवरयोस्तत्त्वानि सूर्याशुनाम् ॥

श्लोक:-

अश्वायुः परमं रदानृवदिहानीयायुरेपापरायुर्निध्नं

नृपरायुषाच विहृतं तेषां स्फुरायुर्भवेत् ॥ २८ ॥

अन्वयः:- पंचदिनाधिक नरवभूतवर्षाणि १२०।०।५ नृकरिणां परमायुः स्यात्
तुल्या व्याघ्राद्यजादेर्नृपाः १६ गोकाल्योर्गोमहिष्योर्जिनाश्चतुर्विंशति २४ मित्तापर-
मायुः हीति निश्चयार्थ बोधकः ॥ तथोष्ट्रवरयोस्तत्त्वानि पंचविंशति २५ वर्षा-
णि परमायुः शुनांकुक्कुराणां द्वादश वर्षाणि परमायुः स्यात् अश्वानां रदाहात्रि-
ंशत् ३२ एषानृवत् मनुष्यवदायुरानीय स्वस्व परमायुर्दायवर्षैः संगुण्य नृपरा-
युषां जजेन्नदातेषां स्फुरायुर्भवेत् ॥ इति आयुर्दायाध्यायः पंचमः ॥
अर्थभाषा:- मनुष्य और हाथी इनका परमायु १२० वर्ष ५ दिन व्याघ्रादि औ-
र अजादि इनका १६ वर्ष गौ में म इनका २४ वर्ष ऊट और गर्दभ इनका २५
वर्ष कुत्तेका १२ वर्ष घोडेका ३२ वर्ष यह प्राणीका मनुष्यके प्रमाण आयुर्दाय
वनायके उसको स्वस्व परमायुसे गुणके गुणाकारको मनुष्यके परमायु १२० व-
र्ष ५ दिनसे भाग देना तो वह २ प्राणीका सदायु होता है. ॥ इति ॥

श्लोक:- } जगदीशेन रचिते केशवीग्रंथे टिप्पणे ॥
} पूर्णायमायुरध्यायो भाषार्थस्य प्रकाशकः ॥ ५ ॥

अथ दशाध्यायः

श्लोक

यस्यायुर्यदसौ दशास्य च शुभे शेषे च स्वभांशे तथा
रोहानी च परिच्युतस्य यदि साकष्टारिनी चांशमे ॥
त्यक्तोच्चैव रोहिणी भवति सामध्योच्च मित्रस्वभा-
शे स हृष्टयुतः स्फुरत्करबलिषेष्ठाधिके स्याच्छुभा २९

अन्वयः- यस्य ग्रहस्य लग्नस्य वा यदायुरसावस्य ग्रहस्य दशा स्यात्
इष्टोच्चस्वभांशे वर्तमानस्य शुभा इष्टस्य मित्रस्य भेदं शेषा उच्चगृहे उच्चा
शेषा स्वभेदांशे वा स्थितस्य ग्रहस्य दशा शुभा स्यात् ॥ तथानीच परिच्युत
स्य ग्रहस्य दशा आरोहा शुभा स्यात् यदि नीच परिच्युत ग्रहोऽरिभांशे अरेः
शत्रोर्नीचस्य वा भांशे तदा तस्य दशा कष्टदानेष्टफलदा ॥ त्यक्तोच्च ग्रहे-
तद्दशाऽवरोहिणी अशुभा अशुभफलदायदित्यक्तोच्च ग्रह उच्च मित्रस्वभां
शे स्थितदा तस्य दशाऽशुभापिमध्या स्यात् । सहृष्टयुत स्फुरत्कर बलिषे
ष्ठाधिके ग्रहे सति तस्य दशा शुभा स्यात् शुभग्रहे ईष्टोयुतश्च स्फुरत्कररश्म
यो यस्य स स्फुरत्करः बलिषेऽधिक बल इष्टाधिके इष्ट इष्टबलमधिकं
यस्य स इष्टबलः

अर्थभाषाः-

ग्रहकाजो आयुर्दीय वही उसकी दशा होती है. ग्रह मित्र ग्रहमें उ-
च्चमें वा स्वग्रहमें अथवा मित्रांशमें उच्चांशमें वा स्वांशमें होय तो वह ग्रह
की दशा शुभ होती है. ऐसा ही यदि ग्रह परमनीचको छोड़कर आगे
जाय तो दशा आरोहा शुभ होती है. परंतु जो वह ग्रह शत्रुग्रहमें वा नीचमें
किंवा शत्रुके अंशमें वा नीचांशमें होय तो आरोहा दशा यह अशुभ होती
है. और ग्रह परम उच्च छोड़के आगे जाय तो दशा अवरोहिणी अशुभ
होती है. परंतु ग्रह उच्चमें मित्रग्रहमें वा स्वग्रहमें अथवा उच्चांशमें मित्रां
शमें वा स्वांशमें होय तो अवरोहिणी दशा यह मध्यम होती है. ग्रह शुभ
दृष्ट शुभयुक्त उदित बलिष्ठ और इष्टाधिक कहिये पूर्वमें ले आये जो
इष्ट अधिक होय तो दशा शुभ होती है.

इदानीं दशाक्रममाह.

स्यादाहयाहि दशाधिकौजस इहार्कन्दूदयानांततः
तत्केन्द्रादियुजामथ हि बहवो वीर्यक्रमेणैव हि ॥
चैदौजस्समतायुषोधिकतयायुस्तुल्यताचेद्दशाः सो-
ढयात्स्यादुदितक्रमात्क्रमविधौ वीर्यहितत्रोच्यते ॥ ३० ॥

अन्वयः- अर्केदू दशानां सूर्य्य चन्द्रलग्नानां मध्ये योधिक बलस्तस्याद्या दशाकल्प्यात तस्तत्केन्द्रादियुर्जातयथा अर्केबलाधिके प्रथमदशाऽर्कस्यततस्तस्यकेन्द्रस्थितानां अर्थात् द्वितीयादशा रविस्थानिस्थितस्य तृतीया चतुर्थस्थितस्य चतुर्थी सप्तमस्थस्य पंचमी दशम स्थितस्य एवं चन्द्रेवालग्ने बलवति सति ॥ ततः पणफरस्थस्य ३।५।८।११ ततः आपोक्लिमस्था ३।६।९।१२ नामयद्येकस्याद्विबहवः संतितदावक्ष्यमाण बलाधिकस्याद्यादशाततो न्यूनस्य द्वितीया एवं तृतीयाद्या बल साम्ये यस्याधिकायुः तत्रापि न्यूनाधिक्यं योज्यं तस्यापि साम्ये यो ग्रहोऽस्तात्प्रथमोदितस्तस्याद्यादशाज्ञेयेति ॥ ३० ॥

अर्थभाषाः- सूर्य्य चन्द्र और लग्न इस्में जो बली होय उसकी दशा प्रथमजानना और उसके बाद केन्द्र १।४।७।१० स्यकी दशा अनंतर पणफर ३।५।८।११ स्यकी दशा अनंतर आपोक्लिमस्थ ग्रहकी दशा ऐसा कम जानना केन्द्रमें पण फरमें और आपोक्लिमस्थानमें एकसे ज्यादा ग्रह होयतो प्रथम दशा किसकी है तब उसमें जो अधिक बल होय उसकी प्रथम दशा अनंतर न्यून बल होय उसकी दशा कदाचित् बलकीभी समता होयतो जिसकी आयु अधिक होय उसकी प्रथम दशा आयुकाभी समता होयतो जो अस्तसे प्रथम उदय हुवा होय उसकी प्रथम दशा होती है ॥ ३० ॥

इदानीं लग्नाद्यदशा प्राप्तबलमाहः

श्लोक- चेद्लग्नाद्यदशास्वभावजफलघ्नौजांसिपाकक्रमे
र्केन्द्रोऽथैत्प्रथमारवगोदयबलांघ्रिर्भेऽन्यवर्गेऽर्दितः ॥
स्वैर्वर्गेशबलेर्दितो बलमिहैक्यं मूलतैक्यं परेऽथैवं
रिष्टदमं कृजेधिकबले भक्तान्तरा रिष्ट हृत् ॥ ३१ ॥

अन्वयः- चेदाद्या लग्न दशातदा भावफलघ्नौजांसि कार्याणि ओजांसि स्वस्व षड्बलैक्यानि ग्रहाणां भावजफलैर्गुण्यानि दशा क्रमेतानि दशा बलानि स्फुटानि भवन्ति चेदर्केन्द्रोः प्रथमादशा अर्कस्य चन्द्रस्य वा प्रथमा दशातदा ग्रहाणां लग्नस्य चयत्षड्बलैक्यं तस्यांघ्रिश्चतुर्थांशो भेदहस्यानेस्थाप्योऽन्यवर्गे होरादिषु चतुर्थांशस्यार्दः स्थाप्यः तैसप्तवर्गस्थितांकाः स्वैर्वर्गेशबलेर्निहत्य गुणं चित्वा तेषामैक्यं बलं स्यात् अपरमन्तुऽपरे एवं भ्रुवन्ति ॥ तेषां गुणनफलं प्रथमं मूलानि गृहीत्वा तेषा-


मैव्यं बलं स्यात् दसदेक देशत्वात् स्वगोदयबलांघ्रीत्यादि प्रकारेणा
नीतबलेरिष्टदभक्तृजग्रहयो र्यदिरिष्टभंकारिष्टदग्रहापेक्षयाधिक
बलस्तदारिष्टहृत्स्यात् ॥ ३१ ॥

अर्थभाषा.

चंद्रिलग्नकी प्रथम दशा होयतो भावफलसे ग्रहके षड्वलैव्यको
गुणदेना तो दशाक्रमसे बल होता है यदि सूर्य या चन्द्रमाकी प्रथम दशा
होयतो ग्रह और लग्न इनके बलका चतुर्धाश सप्तवर्ग बलके ग्रहस्थान
में रखना और उसका आधा होरादि स्थानमें रखना और उनको अपने आप
निर्वागस्वामीके बलसे गुणदेना और सबका योगकरना तो बल होता है और
कोई आचार्य्येका यहमत है कि गुणनफलका मूल लेकर योगकरना तो ब-
ल होता है यह ठीक नहीं है पूर्वरीति आयाजो बल वह यदि रिष्टकर्ता ग्रहके
अपेक्षारिष्टभंगकर्ता ग्रहका बल अधिक होय तो रिष्टको नाश करेगा.

दशाक्रमोदाहरणम्.

इहां सूर्य चन्द्र और लग्न इस्में सूर्य अधिक बल है इसवास्ते
पिंडायुमें सूर्य दशा प्रथमलेके उदाहरण क्रम लिखना. तथापि ग्रंथक
मानुरोधसे लग्न बलाधिक कल्पना करके अंशायुमें प्रथमलग्नदशालेके
दशाक्रम लिखते हैं प्रथमलग्नदशा अनंतरलग्नसे केन्द्रस्थानमें सूर्यचंद्र
हैं और पणफरमें शुक्रमंगल है और आपोक्लिममें गुरुबुध शनि हैं इन
मेंसे प्रथम दशाकिस्की है यह सगद्गनेके वास्ते दशाक्रम बल करते हैं.

दशाक्रमबलचक्रम्.								जन्मलग्नम्	
सू.	चं.	मं.	बु.	द.	शु.	श.	ग्र.		
६	३	४	१	६	०	५	ब ल		
३	५२	५७	२२	३७	१६	२३			
३६	४५	३८	५८	१६	५७	३			

रविका षड्वलैव्य ७।५१।५३ इस्का रविभावफल ०।४६।३३
इस्से गुणके ६।३।३६ चह रविका दशाक्रम बल भयायही रीतिसे चंद्रादिको
का बलकरना इहां किन्द्रमें जो सूर्यचन्द्र हैं इस्में सूर्य अधिक बल है इ-
स्की द्वितीयदशा चन्द्रकी तृतीयदशा अनंतर पणफरमें शुक्रमंगल है इस्में म-
ंगल अधिक बल है इस्की चतुर्थ दशा अनंतर शुक्रकी आपोक्लिममें गुरु

अंशायुचक्रम्.

ल.	रू.	चं.	मं.	शु.	ब.	श.	बु.	यो.
१५	८	९	१	४	११	१३	८	७२
२	१०	११	११	२	२	४	२	११
२४	१७	१२	७	२३	१	८	१३	१९
५२	२९	५५	१९	२५	१२	३४	५५	४४
०	२४	४८	१२	४८	०	४८	१२	१२

बुधशनि है. इसमें गुरु अथवा अधिक बल है. इसकी दशा अनंतर शनिकी दशा अनंतर बुधकी दशा इस प्रकार अंशायु करना. उदाहरणार्थ सूर्यः

अधिक बल कल्पना करके पिंडायुमें दशाक्रम लिखते हैं. प्रथम सूर्य दशा अनंतर सूर्यसे केन्द्रस्थानमें लग्न चंद्र है इसमें प्रथम दशा किस्की है यह समझनेके वास्ते दशाक्रम बल करते हैं.

चन्द्रका षड्वलैक्य ७।२०।४ इस्का चतुर्थीश १।५०।१ यह गृहस्थानमें बल इस्का अर्ध ०।५५।० यह होरादि ६ स्थानमें बल अब चन्द्रका गृहेश शनि इस्का षड्वलैक्य ६।२।११ इस्से चंद्रका गृह बल १।५०।१ इस्को गुणके ११।४।६ यह चन्द्रका होरेश चन्द्र इस्का षड्वलैक्य ७।२०।४ इस्से चन्द्रका होराबल ०।५५।० इस्को गुणके ६।४३।२४ यही रीतिसे द्रेष्काणादिकोंका गुणाकार करके सप्तवर्गमें के गुणाकारका ऐक्य करना तो दशाक्रम बल होता है.

गृह और लग्न इनका बल चतुर्थीश गृह और तदर्ध होरादि ६ स्थानमें.

	रू.	चं.	मं.	बु.	ब.	शु.	श.	ल.
गृह	५७ ५८	५ ५०	५ १७	५ १८	५ ५३	५ २२	५ ३३	५ ५१
होरा	५८ ५९	५५ ०	३८ ५१	३९ ३३	५६ ५६	४१ २७	४५ १६	५५ ३१
द्रेष्का.	५८ ५९	५५ ०	३८ ५१	३९ ३३	५६ ५६	४१ २७	४५ १६	५५ ३१
सप्त.	५८ ५९	५५ ०	३८ ५१	३९ ३३	५६ ५६	४१ २७	४५ १६	५५ ३१
नव.	५८ ५९	५५ ०	३८ ५१	३९ ३३	५६ ५६	४१ २७	४५ १६	५५ ३१
हाद.	५८ ५९	५५ ०	३८ ५१	३९ ३३	५६ ५६	४१ २७	४५ १६	५५ ३१
त्रिंशां.	५८ ५९	५५ ०	३८ ५१	३९ ३३	५६ ५६	४१ २७	४५ १६	५५ ३१

वर्गश बलसे गुणके.

	सू.	चं.	मं.	बु.	शु.	शु.	श.	लग्न
ग्रह	१० ११ १०	११ ४ ६	१० ११ ५	९ ५२ ५१	९ ५२ ५६	८ २० २६	७ ५१ ३१	१० १३ ४१
होरा	७ ४३ ५३	६ ४३ २४	५ ५ ३२	७ ७ ७	६ ५७ ३४	५ ४ १	५ ५६ ०	७ १६ ३७
दृष्टका	७ ४३ ५३	५ ३२ ०	४ ५४ ५४	३ २२ १९	४ ५६ २८	३ ४१ ५	४ १० ११	५ ६ ५०
सप्त	७ १२ ३७	७ १२ ३६	३ ३० ३३	३ ५५ ४३	४ ५४ ५८	५ २५ ५९	३ ५५ ४३	७ २० २५
नव.	७ १२ ३७	५ ३२ ०	४ ४४ ५६	३ ५५ ४३	७ १२ १०	३ २५ ५०	४ ३३ १५	७ २० २५
द्वाद.	५ ७ ८	६ ५७ ३०	६ ५४ ५४	३ २२ १९	७ १२ १०	५ १४ ३८	३ ५४ ३१	५ ३५ ७
त्रिंश.	७ २७ ४४	४ ४६ २४	४ ५४ ५४	३ ५५ ४३	४ ५६ २८	३ ४२ ५	३ ५४ ३१	५ ३५ ७

गुणाकारकाएव्यदशाक्रमबलचक्रम्.

सूर्य	चन्द्र	मंग.	बुध.	गुरु.	शुक्र	शनि	लग्न	योग
५२	४७	३८	३३	४६	३५	३४	४७	३३५
३५	४७	२०	३१	२	१९	१५	५०	४७
२	५८	५८	४५	४४	४	४२	१२	२५

इहां सूर्यसे केन्द्रस्थानमें लग्न चन्द्र है इसमें लग्न अधिक बल है उसको द्वितीय दशा अनंतर चन्द्र की पणफरमें मंगल शुक्र इसमें मंगल अधिक बल है उसकी दशा अनंतर शुक्र की दशा आपोक्लिममें बुध गुरु शनि है इसमें गुरु अधिक बल है उसकी दशा अनंतर शनि दशा अनंतर बुध की दशा इहां मिश्रायुमें सूर्य अधिक बल है इसवासे यही दशा क्रम जानना यह बल पिंडायुमें और निसर्गायुमें लेना अंशायुमें

पहले जो बल किया है उसका प्रमाणसे दशा रखना.

पिण्डायुदशाक्रमचक्रम्.

सू.	ल.	चं.	मं.	शु.	बु.	श.	बु.	यो.	
१५	२	१६	३	१९	६	९	६	८०	व.
७	१०	२९	११	२	५	७	२	१०	म.
१८	२८	२९	५	२८	२२	१४	१६	१३	दि.
५७	२२	३४	३	३७	१६	८	१०	०	श.
४०	४८	३५	०	२४	१८	०	३६	२१	प.

उदाहरणार्थ चन्द्रका अधिक बल कल्पना करके निसर्गायुमें दशाक्रम लिखते हैं. प्रथमचन्द्र दशा अनंतर चन्द्रसे केन्द्र स्थानमें लग्न और सूर्य हैं इसमें सूर्य अधिक बल है इसकी द्वितीय दशा अनंतर लग्नकी दशा चन्द्रसे पणफरमें शुक्र मंगल है इसमें मंगल अधिक बल है उसकी दशा अनंतर शुक्रकी दशा चन्द्रसे आपोक्लिम स्थानमें बुध गुरु शनि हैं इसमें गुरु अधिक बल है इसकी दशा अनंतर शनिकी दशा अनंतर बुधकी दशा पिण्डायुमें जो बल किया है उसी बलका प्रमाणसे निसर्गायुमें भी लेना. और जीवायुमें भी लेना.

निसर्गायुचक्रम्.

चं.	सू.	ल.	मं.	शु.	बु.	श.	बु.	यो.	
०	१६	२	०	१८	७	२४	४	७५	व.
८	५	१०	६	३	९	०	७	४	म.
२	१५	२८	८	२८	८	२०	२७	१९	दि.
२३	१३	३३	४०	४१	४३	१०	७	३१	श.
३५	२०	४८	२४	२०	३०	०	५७	५४	प.

जीवायुर्दायुमें सूर्यचन्द्र लग्नमें हीन बल होय तथापि जो उसमें अधिक बल होय उसकी प्रथम दशा कल्पना करके अनंतर उस्से जो केन्द्रादि स्थानमें होय उनकी दशा इत्यादि क्रम जानना ॥ रिष्ट भंग विचारान्तर और दशाक्रम बल दाढर्थ और मतांतर निराकरणा.

श्लोक- भंक्तुरिष्टकृता हिताहितशुभासत्वं च नीचोच्चभा
स्ताद्यस्वाश्रयताविचार्य मतिमान् रिष्टस्य भंगं वदेत्
श्रेष्ठरिष्टहतो दशाक्रम इहो जः श्रीधराद्योदितम्
कष्टेष्टमवलानरात्कचकृततद्युक्तिः सून्यत्वसत् ॥३२॥

अन्वयः

भंक्तुरितिरिष्टभंक्तुः रिष्टकृतोरिष्टकारकस्य ग्रहस्य हिताहितं शुभाशुभं विचार्य रिष्टभंगं वदेत् हितं इष्टं अहितं कष्टं शुभासत्वं शुभग्रहं पापग्रहं च उच्चस्थितो नीचस्थितो वा अस्तोदितो वा मित्रगृहे शत्रुगृहे वा स्यादित्यादि सर्वं विचार्य रिष्टस्य भंगं वदेत् मतिमान् ॥ इहास्मिन्स्थले दशाक्रमे श्रीधराद्योदितं ओजो बलं श्रेष्ठं इष्टं बलेन गुण्यो दशाविधौ बलं स्यात् ॥ अथपरमतं ॥ कष्टेष्टमेति कचकचनाचार्या कष्टेष्टाभ्यां गुणिते बले तयो रंतरात्तादितं वीर्यं दृक् प्रथमिष्टकष्टगुणितमित्यादिना इष्टकष्टगुणितं षड्बलं तयो रंतरं कार्यं तस्य चतुर्थीशो गृहे होरादावर्धितः ततः स्वस्ववर्गेशचले हतस्ते पामैक्यं स्पष्टं बलं स्यात्तदसत् युक्तिरन्यत्वात्.

अर्थभाषा.

अरिष्टकर्ता ग्रह और अरिष्टभंगकर्ता ग्रह इनके इष्टकष्टवह शुभ हैं किंवा पाप हैं यह और वह नीचमें उच्चमें मित्रग्रहमें शत्रुगृहमें और अस्तगत उदित है इत्यादि इनका आश्रयत्वका विचार करके बुद्धिमान् गणकने अरिष्टभंग कहना यह ग्रंथमें रिष्टभंगके विषे और दशाक्रमके विषे श्रीधरादिक आचार्यों ने कहे प्रमाण बलल्यावनेकी रीति कहा है वही श्रेष्ठ है श्रीपति इत्यादि ग्रंथकारने इष्टसेवा कष्टसे षड्बल गुणके उसके अंतरसे जो बल साधन कथित किया वह अयुक्त है इसवास्ते असत है.

॥ अंतर्दशाकरना ॥

श्लोकः— अर्धस्थैकभगास्त्रिकोणगृहगुरुयंशस्य चास्तेन गां शस्यांघ्रे अतुरस्त्रगोनिजगुणैः पक्षैकभस्याहली ॥ अंगादौ कुरु रूपमत्र समताकृत्वा च नांशं छिदा मंशघ्नाः स्वदशाः पृथक् रवलुलवैक्यामास्युरंतर्दशाः ३३

अन्वयः

मूलदशेशग्रहस्यो ग्रहो निजगुणैरर्धपक्षा पाचको भवति निजगुणैरित्यस्यार्थस्वारोहादराह उच्चनीचकषादिभिरित्यर्थः त्रिकोणगणानवमपंचमस्थानगुरुयंशस्य अस्ते सप्तमस्थे नगांशस्य सप्तमांशस्य चतुरस्रश्चतुर्थाष्टमस्थानगोघ्रे अतुर्थांशस्य पक्षा पाचको भवति

लग्नस्याप्येवं एकमेद्विबुधसत्सुवली एक एव ग्रहः पाचयति न सर्वे अत्रापि दशाक्रमवलं ज्ञेयम् अंशादोरूपकत्वात्ततः प्रथममेक गृहस्थितस्य तत्तस्मिन् स्थ ग्रहस्य ततो अस्तगतस्य न तत्तत्तुरस्त्रः गतस्य ग्रहस्य भागास्चाप्याः ततः समच्छेदीकृत्य छेद गमंच कृत्वा पृथक्तेषां मंशानां योगः कार्यः ग्रहदशा पृथक्वले गुण्या अंशयोगेन भाज्याः अंतर्दशाः स्युः

अर्थभाषा:

मूल दशापति अर्थात् महादशापति जिस राशीमें होय उसी राशीमें जो ग्रह होय वह दशापतिके संबंधसे दशापतिके अर्धफलका पाचक होता है दशापतिसे ५।९ यह स्थानमें रहनेवाला ग्रह दशापतिके तृतीयांश कालका पाचक होता है और दशापतिसे सप्त ७ म स्थानमें का ग्रह दशापतिके सप्तमांशका पाचक होता है और दशापतिसे ४।८ यह स्थानमें का ग्रह दशापतिके चतुर्थांश कालका पाचक होता है सर्वत्र ग्रह आरोहावरोह उच्चनीचादि पूर्वोक्त स्वगुणसे शुभाशुभ फलका पाचक होता है कहिये अन्य दशा में भी अपने पाक कालमें शुभाशुभ फल देता है एक राशीमें एकसे ज्यादा ग्रह होय तो उसमें जो बलिष्ठ ग्रह होय उसी को लेना इहां अंश स्थानमें श्लोक उसके नीचे छेद लिखना अनंतर समच्छेद करके छेदांक त्याग करना अंशांकसे स्वकीय स्वकीय वर्षादि दशा अलग अलग गुणके गुणाकारको अंशांकके मिलानेसे जुदा जुदा भाग देना तो अंतर्दशा होती है अंतर्दशाक्रमः-

प्रथम दशापतीकी अंतर्दशा अनंतर दशापतीके राशीमें रहने वाले ग्रहका अंतर फिर दशापतिसे ९।५ यह स्थानमें रहनेवालोंका अंतर फिर सप्तम स्थानके ग्रहका अंतर अनंतर ४।८ यह स्थानके ग्रहका अंतर कदाचित् पूर्वोक्त स्थानोंमें दोतीन ग्रह होय तो बलका वशसे क्रम जानना जो दशाक्रमके विषे बल है वही अंतर्दशा में भी बल जानना।

समच्छेद करनेकी रीति-

जिन संख्याओंका समच्छेद करना होय उनको बराबरसे रखकर एकके हरसे दूसरेके हर अंशको गुण देना और दूसरेके हरसे और सबके हर अंशको गुणना ऐसा परस्पर गुणनेसे समानच्छेद होता है उदाहरण + जैसे लग्नदशानें अंतर करना है ल १ शु ३ श ३ स ३ च ३ इनको समच्छेद करके २५२ १८४ १८४ १३६ ६३ अं २५२ १२५२ २५२ १२५२ २५२ ह-

इन अंशों की मिलान ५१९ इस्को ३ से भाग के १७३ अंशों में ३ से भाग देने से ८४।२८।२८।३३।२१ इसी प्रकार जहाँ अधिक अंक होय उसके अपवर्तन देके सूक्ष्म अंक कर लेना जो काम उस अंक से होता था वो काम इस अंक से हो जायगा.

उदाहरणम्.

इहाँ सूर्य्यवल अधिक हैं इस वास्ते मिश्रायूमे प्रथम सूर्य्य दशा १३।७।२७।१३।२८ अब सूर्य्य दशामें अंतर्दशा विचार इहाँ कुंडली में सूर्य्य के साथ कोई ग्रह नहीं सूर्य्य से त्रिकोण में मंगल है सो १ पाचक है और सूर्य्य से सप्त मंगल है सो ६ पाचक तब सूर्य्य दशामें मंगल और लग्न पाचक है सूर्य्य १ मं ३ ल ६ यह समच्छेद करके सू ३१ मं ३१ ल ३१ इस्के छेद त्याग करके सू २१ मं ७ ल ३ यह अंशों का भया यहाँ सूर्य्य की मूल दशा १३।७।२७।१३।२८ इस्को सूर्य्य के अंश २१ इस्से गुण के २८६।१०।१।४२।४८ इस्को अंशों की मिलान ३१ इस्से भाग के ९।३।१।१।२२ यह सूर्य्य में सूर्य्य की दशा सूर्य्य की मूल दशा १३।७।२७।१३।२८ इस्को मंगल के अंश ७ इस्से गुण के ८५।७।१०।३४।१६ इस्को अंशों की मिलान ३१ से भाग के ३।१।०।२०।२८ यह सूर्य्य दशामें मंगल की अंतर्दशा सूर्य्य की मूल दशा १३।७।२७।१३।२८ इस्को लग्न के अंश ३ इस्से गुण के ४०।११।२१।४०।२४ इस्को अंशों की मिलान ३१ से भाग के १।३।२५।५१।३८ यह सूर्य्य दशामें लग्न की अंतर्दशा यह तीनों अंतर्दशा का योग १३।७।२७।१३।२८ यह सूर्य्य की मूल दशा यही रीति से लग्नादि दशामें अंतर्दशा करना

अंशच्छेदचक्रम्.

सू.	मं.	ल.	ल.	शु.	श.	सू.	चं.	चं.	चं.	सू.	मं.	मं.	सू.	शु.	ल.
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१	३	७	१	३	३	७	४	१	३	४	४	१	३	७	४

गु. ल. श. मं. ल. श. चं. बु. सू. श. ल. शु. चं. श. ल. च. ल. श.

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १

१ २ ३ ७ ४ १ ३ ७ ४ १ ३ ३ ७ ४ १ ७ ४ ४

समच्छेद चक्रम्.

सू.	मं.	ल.	ल.	शु.	श.	सू.	चं.	चं.	व.	सू.	मं.	मं.	सू.	शु.	वु.
२१	७	३	८४	२८	२८	१२	२१	१२	४	३	३	८४	२८	१२	२१
२१	२१	२१	८४	८४	८४	८४	८४	१२	१२	१२	१२	८४	८४	८४	८४

शु.	ल.	शु.	मं.	व.	व.	चं.	वु.	सू.	शु.	ल.	शु.	चं.	व.	वु.	व.	ल.	श.
८४	२८	२८	१२	२१	८४	२८	१२	२१	८४	२८	२८	१२	२१	२८	४	७	७
८४	८४	८४	८४	८४	८४	८४	८४	८४	८४	८४	८४	८४	८४	८४	२८	२८	२८

सूर्यदशमिं अंतरदशा.	लग्नदशमिं अंतरदशा.	चंद्रदशमिं अंतरदशा.	जीमिं अंतरदशा.
---------------------	--------------------	---------------------	----------------

सू.	मं.	ल.	यो.	ल.	शु.	श.	सू.	चं.	यो.	मं.	व.	सू.	मं.	यो.	मं.	सू.	शु.	वु.	यो.
८	३	१	१३	२	१	१	०	०	७	४	१	१	१	१	१	०	०	०	२
२१	१	३	७	४	१	१	७	१०	०	११	७	२	२	१	२	४	२	३	१
१	०	२५	२७	१७	१९	१९	२५	६	७	२७	२९	२९	२९	२४	२४	२८	३	२१	१७
२२	२०	५१	१३	५	१	१	१७	४६	१२	१३	४	१८	१८	५४	२०	६	२८	५	०
	२८	३८	२८	४	४१	४१	५१	१५	३२	१६	२५	१९	१९	१९	२२	४८	३७	५	५२

शुक्रदशमिं अंतरदशा.	गुरुदशमिं अंतरदशा.	शनिदशमिं अंतरदशा.	बुधदशमिं अंतरदशा.
---------------------	--------------------	-------------------	-------------------

शु.	ल.	श.	मं.	व.	यो.	व.	चं.	वु.	सू.	यो.	श.	ल.	शु.	चं.	व.	यो.	वु.	व.	ल.	श.	यो.
६	२	२	०	१	१३	४	१	०	१	८	७	२	२	१	१	१५	३	०	०	०	६
९	३	३	११	८	११	१०	७	८	२	५	७	६	६	१	१०	८	१०	६	११	११	६
५	१	१	१७	८	६	२७	१९	३२	२१	२५	१०	१३	१३	१	२५	४	१३	१९	१८	१८	९
५७	५९	५९	५९	५९	५४	१९	६	२८	४९	४३	३६	३२	३२	३०	९	२०	२१	३	२०	२०	४
२०	१०	१०	२१	२२	५१	१६	२५	२८	६९	५६	३२	१०	१०	५६	८	५६	२	०	१५	१५	३२

इदानीं सूक्ष्मफलज्ञानार्थं विदशादिसाधनं
माह.

श्लोक- } इत्याभ्योविदशास्ततोऽप्युपदशाताभ्यश्च सूक्ष्मफलं
पंचांशीनदिनद्वयतुकलयत्पायुः कृतं दृश्यते ॥ पक्षीः
स्वेदलवांतरेण च भवेन्मासांतरं चायुषः प्रोक्तं येस्तु-
दशादिलग्नफलं तेभ्योतिष्ठभ्यो-नमः ॥ ३४ ॥

अन्वयः-

इत्सनयारीत्याभ्याभ्यो अंतर्दशाभ्योविदशाः साध्याः परं त्वन्तर्दशा
स्थानेऽन्तर्दशास्थाभ्याः तत उपदशासाध्याविदशादशाप्रकल्प्यताभ्योदशा

अंतर्दशाविदशोपदशाभ्योऽति सूक्ष्मं फलं वदेत् गणक इति.

अनयारीत्याकृतमंशाद्युः कलया एक कलया पंचांशो न दिन द्वयमायुर्दृश्यते ॥ एक कला तुल्येन ग्रहांतरे एव भवति यदि नवांश कलापि २०० रेकं वर्षेन दैक कलया किमिष्येनायुष एक दिन मष्ट चत्वारिंश द्विकायांतर पतति ब्रह्मसौरार्य्य भट्टादिपक्षैः ग्रहाणामंशाद्युः मंतरं भवति तेनायुषामासाद्युः मंतरं भवति । अपि च जन्मकालस्य पलमात्रांतरे लग्नस्य कलापङ्क्त्यांतरस्यास्ति तदंशाविभागे आयुर्दयिऽप्यन्तरं स्यात् एवं यैराचार्य्यैर्दशादिलग्नफलं दशाप्रवेशे लग्नफलमुक्तं तेभ्योऽति ह्यभ्योनम इति वक्रोक्तिः ॥

अर्थभाषा.

जिस प्रकार दशासे अंतर्दशा किया है उसी रीतिसे अंतर्दशासे विदशा करना इहां अंतर्दशाको दशा कल्पना करना और अंतर्दशापतिको दशापति कल्पना करना अनंतर पूर्व श्लोकमें कथित रीति प्रमाण पाचकांशको समच्छेदादि विधि करके विदशा ल्यावना तैसेही विदशाको दशा कल्पना करना और विदशापतिको दशापति कल्पना करके विदशामें उपदशा ल्यावना यही रीतिसे दशामें अंतर्दशापति अपने गुण प्रमाण फल देते हैं और अंतर्दशामें विदशापती अपने गुण प्रमाण फल देते हैं और विदशामें उपदशापती अपने गुण प्रमाण फल देते हैं ऐसे उपदशा सूक्ष्म कालिक फल जानना.

इहां १ कलाका अंशायुर्दयि ल्यावनेकी रीति प्रमाण आयुर्दयि किया तो १ दिन ४८ घड़ी आया ऐसा देखाता है ब्रह्म सौरार्य्य भट्टादि पक्षसे ग्रहका भागादि अंतर आवता है इसवास्ते आयुर्दयि मासादि अंतर आवेगा

जब जन्मकालमें पलमात्र अंतर आवता है तब लग्नमें ६ कलाका अंतर आवता है और ६ कलासे आयुर्दयिमें १० दिनका अंतर आवेगा ऐसा अंतर देवकर यह दशा प्रवेशादिलग्न फल कथित किया है वह दूर दर्शको दण्डवत् है.

सूर्यमहादशांतर्गत तर्गतसूर्यांत- र्दशामध्येविदशा					सूर्यमहादशांतर्गत मंगलांतर्दशामध्ये विदशा.					सूर्यमहादशांतर्गतलगां तर्दशामध्ये विदशाच- क्रम्.				
--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--

स्व.	मं.	ल.	यां.	मं.	स्व.	शु.	बु.	यो.	ल.	शु.	श.	स्व.	चं.	यो.
६	२	०	९	१	०	०	०	३	०	०	०	०	०	१
३	१	१०	३	१	७	३	५	१	७	१७	१७	१	१	३
६	२	२२	१	१३	४	१	१०	१	३	३७	३७	३	२	२५
२६	९	२१	१	१३	२४	५३	४८	२०	३	१	१	०	४५	५१
५७	५२	२६	२२	५६	३८	२५	२२	२८	१४	४	४	२८	४८	३८

लग्नमहादशांतर्गत लग्नांतर्दशामध्येवि- दशा चक्रम्.					लग्नमहादशांतर्गत शुक्रांतर्दशामध्ये विदशाचक्रम्.					लग्नमहादशांतर्गत शनिर्दशामध्ये विदशा चक्रम्.				
---	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--

ल.	शु.	श.	स्व.	चं.	यो.	शु.	ल.	श.	मं.	वृ.	यां.	श.	ल.	शु.	चं.	वृ.	यो.
१	७	६	२	४	३	६	२	२	०	१	१	६	२	२	१	१	१
२५	१८	१८	२५	२८	२७	१८	६	६	२८	१९	१९	८	२	२	१७	१७	१९
४८	३६	३६	६	५७	५५	३६	१२	१२	२२	३२	३२	४६	५५	५५	११	११	११
३५	१२	१२	५६	२	४	११	४	४	१९	३	४१	५५	३९	३९	४४	४४	४१

लग्नमहादशांतर्गत तसूर्यां मध्येवि- दशाचक्रम्.					लग्नमहादशांतर्गत चंद्रांतर्दशामध्येवि- दशा चक्रम्.					चन्द्रमहादशांतर्गत चन्द्रांतर्दशामध्ये वि- दशा चक्रम्.				
---	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--

स्व.	मं.	ल.	यो.	चं.	वृ.	स्व.	मं.	यो.	चं.	वृ.	स्व.	मं.	यो.
३	१	०	५	५	१	१	१	१०	२	१०	८	८	४
३८	१	१६	२५	१७	२५	११	११	६	२०	२६	५	५	११
४४	३५	५७	१७	१९	४६	४९	४९	४६	१८	४६	४	४	३७
५९	०	५२	५१	४६	३७	५६	५६	१५	२	३	२२	२२	१६

चन्द्रमहादशांतर्गत जीवांतर्दशामध्ये विदशाचक्रम्.					चन्द्रमहादशांतर्गत तर्गतसूर्यां म- ध्येवि चक्रम्.					चन्द्रमहादशांतर्गत मंगलांतर्दशामध्ये विदशा चक्रम्.				
--	--	--	--	--	---	--	--	--	--	--	--	--	--	--

वृ.	चं.	बु.	स्व.	यो.	स्व.	मं.	ल.	यो.	मं.	स्व.	शु.	बु.	यो.
०	०	०	०	१	०	०	०	१	०	०	०	०	१
११	३	१	२	७	१०	३	१	२	८	२६	१	५	२९
१७	२५	१९	२५	२९	४	११	१३	२९	२०	२७	११	४	२९
२	४०	३४	४५	४	२२	२७	२८	१८	१७	४५	११	१८	१८
५९	५९	४३	४४	२५	५	२२	५२	१९	१४	४४	३	१८	१९

भौममहादशांतर्गत मंगलांतर्देशा मध्ये विदशाचक्रम्.	भौममहादशांतर्गत सूर्या मध्ये विद- शाचक्रम्.	भौममहादशांतर्गत शुक्रांतर्देशा मध्ये विदशाचक्रम्.
--	---	---

मं	सू	शु	बु	यो	सू	मं	ल	यो	शु	ल	श	मं	सू	यो
०	०	०	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१७	२	१	२	२४	१०	१	१४	२८	१	१०	१०	४	७	२
२४	४८	४६	२१	२०	२०	२६	२०	६	४९	१६	१६	२४	४२	२८
३७	१३	२३	९	२२	५	४२	१	४८	१६	२५	२५	१२	१९	३७

भौममहादशांतर्गत तुलुधांतर्देशा म- ध्ये विदशाचक्रम्	शुक्रमहादशांतर्गत शुक्रांतर्देशा मध्ये विदशाचक्रम्.	शुक्रमहादशांतर्गत लग्नांतर्देशा मध्ये वि- दशाचक्रम्.
--	---	--

बु	सू	ल	श	यो	शु	ल	श	मं	सू	यो	ल	शु	श	सू	कं	यो
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३७	१	१६	१६	२१	३२	१५	१५	२८	२५	१५	११	११	२६	२३	५२	२
१	३४	१५	१५	५	३९	३३	३३	६	३९	३३	३३	३३	३९	३३	५३	१०

शुक्रमहादशांतर्गत शनिंतर्देशा मध्ये विदशाचक्रम्.	शुक्रमहादशांतर्गत तमंगलांतर्देशा म- ध्ये विदशाचक्रम्	शुक्रमहादशांतर्गत गुरुअंतर्देशा मध्ये विदशाचक्रम्.
--	--	--

श	ल	शु	चं	सू	यो	मं	सू	शु	बु	यो	ल	चं	बु	सू	यो
१	०	०	३	३	२	६	०	०	१	११	११	३	१	२	१
१४	४	४	३	३	११	२१	७	२८	२०	१७	२२	२७	२०	२८	८
४५	५५	५५	४१	४१	५९	२५	११	४७	२३	५९	४७	२५	२३	११	५९
४६	१५	१५	२७	२७	१०	४८	५६	५८	५७	१२	२८	४३	५७	५६	२२

गुरुमहादशांतर्गत गुरु मध्ये विद- शाचक्रम्.	गुरुमहादशांतर्गत तचन्द्रांतर्देशा म- ध्ये विदशाचक्रम्	गुरुमहादशांतर्गत बुधांतर्देशा मध्ये वि- दशाचक्रम्.
--	---	--

श	चं	बु	सू	यो	चं	सू	मं	यो	बु	सू	ल	श	यो
१	११	२	८	१०	१८	३	०	३	१७	५	०	१	८
११	११	२६	१५	२७	२१	१७	२०	२८	२१	५७	२५	२५	२८
१६	१५	१५	५७	१९	१९	१९	१९	५८	४५	१५	१२	१२	२८
२३	२५	२४	१४	१४	५२	३७	५८	५८	४५	१५	१२	१२	२८

गुरु महादशांतर्गतसहस्रमविदशाचक्रम्				शनिमहादशांतर्गतशनिंरतदशामध्येविदशाचक्रम्				शनिमहादशांतर्गतलग्नांतदशामध्येविदशाचक्रम्			
------------------------------------	--	--	--	--	--	--	--	---	--	--	--

सू.	मं.	ल.	श.	श.	ल.	शु.	चं.	वृ.	यौ.	ल.	शु.	श.	सू.	चं.	यौ.
०	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१

शनिमहादशांतर्गतशुक्रांतदशामध्येविदशाचक्रम्				शनिमहादशांतर्गतचंद्रांतदशाविदशाचक्रम्				शनिमहादशांतर्गतगुरुअंतदशामध्येविदशाचक्रम्			
--	--	--	--	---------------------------------------	--	--	--	---	--	--	--

शु.	ल.	श.	मं.	वृ.	यौ.	चं.	वृ.	सू.	मं.	यौ.	वृ.	चं.	वृ.	सू.	यौ.
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८
३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४

बुध महादशांतर्गतबुधांतदशामध्येविदशाचक्रम्				बुध महादशांतर्गतशुक्रांतदशामध्येविदशाचक्रम्				बुध महादशांतर्गतलग्नांतदशामध्येविदशाचक्रम्			
---	--	--	--	---	--	--	--	--	--	--	--

बु.	वृ.	ल.	श.	यौ.	वृ.	चं.	बु.	सू.	यौ.	ल.	शु.	श.	सू.	चं.	यौ.
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३
४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९

बुधमहादशांतर्गतशनिअंतदशामध्येविदशा.

श.	ल.	शु.	चं.	वृ.	यौ.	इतिविदशासंपूर्णः जिसप्रकारसेविदशाकरकिहैउसीप्रकारपदशाकरना.किंचिदुशाअभ्येवक्ष्यामि.
०	०	०	०	०	०	
५	१	१	१	१	११	
३०	२३	२३	३०	३०	३०	
४६	३५	३५	४६	४६	४६	
३७	२६	२६	३३	३३	३३	

उपदशा चक्रम्.

सू. म. द. सू. व्यतिस्त्र. विद. शामे उपदशा.				सू. म. द. सू. व्यति मंगल विद. उपद. शा चक्रम् ॥				सू. म. दशा. ल. ग्नात. मध्ये विदशामे उपद. शा चक्रम्.						
सू.	मं.	ल.	यो.	मं.	सू.	शु.	बु.	यो.	ल.	शु.	श.	सू.	चं.	यो.
४	१	०	६	१	०	०	०	२	०	०	०	०	०	०
२	४	७	३	२	४	२	३	१	५	१	१	०	१	१०
२८	२९	८	६	१५	२५	२	१८	२	६	२२	२२	२२	६	२२
३५	३१	२२	२९	४४	१४	१४	५६	९	३१	१०	१०	२१	७	२१
४६	५५	१६	५७	१६	४५	५४	४	५९	१३	२४	२४	३६	४९	२६

इसी प्रकारसे उपदशासव करना इहां ग्रंथका बढणके समयसे तीनहीं लिखा.

श्लोक

जगदीशेनरचिते केशवी ग्रंथे टिप्पणे ॥

दशाधिकारः पूर्णयित्तद्वापार्थ प्रकाशकः ॥ ८ ॥

दशाप्रवेशकालमें सावनाहर्गण साधन.

श्लोक

शाकोब्दाजनिमध्यमार्कभयुतं मासादितद्युग्दशा
ब्दाद्यतत्रशके सप्तादितरणीमध्योदशादौ भवेत् ॥ ९ ॥

घस्त्रीभूतदशापृथक्त्रिकुहतां रवीकाष्टहत्तद्युतो
सास्यात्सात्रनिकादशाब्दपलपुक्तद्युग्जनिद्युव्रजः ३५

अन्वयः- शाकोब्दाजनिशाकएवाब्दावत्तराकल्प्याः जनिमध्यमा
र्कतगुरुमासादिजन्मकालिक मध्यमार्कस्तराश्यादिकं मासादिः कल्प्यः
जन्मशके एवं प्रथमदशाप्रवेशोज्ञेयः द्वितीयस्तुतेनवर्षादिनायुक्तदशाः
द्वाद्यंकार्यम् दशाब्दाशकेषुचोज्याअथमासाद्ये दशमासाद्येयोज्याएवं
तत्रशकं धस्तमासाद्यसमासादितः रणिमध्यमोदशादौ भवेत् एवं तृतीयादि
दशादौमध्यमोरधिज्ञेयः ॥ तात्कालिक मासाद्यानयनंधस्त्रीभूतदशेति
दिनीकृतदशापृथक्स्थाप्याएकत्र त्रयोदश १३ क्षिपुण्यारवाकाष्ट ९०
तिर्मात्कालव्येन दिशाद्येन पृथक्स्थापुक्ताकार्यातिदशासावनादशास्या
त्कदादशाब्दपलपुक्तातदातद्युग्जनिद्युव्रज इतितयादशयायुक्.

अहर्गण करनेकी रीति.

प्रथम सूर्य्यदशा १३।७।२७।१३।२८ यह दिवसादि करके ४९।
 १७।१३।२८ यह पृथक् १३ से गुणके ६३९२३।५५।४ इस्को ८९०
 से भागके लब्धि दिवस ७१ शेष ७३३।५५।४ इस्को ६० से गुणके ४४
 ०३५।४ इस्को ८९० से भागके लब्ध घटिका ४९ शेष ४२५।४ इस्को
 ६० से गुणके २५५०४ इस्को ८९० से भागके लब्धि पल २८ और
 दशावर्षत्पल १३ युक्त करके लब्ध दिवसादि ७१।४९।४१ यह पृ-
 थक् रक्खवा. जो दिवसादि दशा ४९१७।१३।२८ इस्में युक्त करके.
 ४९८९।३८ यह प्रथम सावन दशा भई जन्मकालिक अहर्गण जन्म
 कालीन इष्ट घटि सहित ११७८।३२।१ यह सावयव अहर्गण इस्को
 सावन दशा ४९८९।३१ युक्त करके ६९६७।३५।१० यह बुध दशा
 रंजत समयमें सावयव अहर्गण भया ॥ परंतु जब यह अहर्गण-
 ४०१६ से ज्यादा आवेतव ४०१६ से भागके शेष रहै सो अहर्गण जा-
 नना और लब्धि आवे सो पूर्वमें आया जो चक्र उसमें युक्त करना अव-
 इहां अहर्गण ६९६७।३५।१० यह ४०१६ से अधिक है इस्को ४०१६
 से भागके लब्ध १ शेष २९५१।३५।१० यह अहर्गण भया पूर्वोक्त चक्र
 ३३ में लब्ध १ युक्त करके ३४ चक्र भया.

यह अहर्गण का प्रयोजन माह.

श्लोक- तस्मात्सावयवाद्गुणात्स्वकरणात्साध्यादशादौरवगाः
 क्षेपाज्जन्मरवगान्त्रकल्पय दिवासाध्यादशासावनात् ॥
 तेषामतिथिर्वसंक्रमवसान्मासोदशादौ तनुः पूर्वो-
 क्तजडकर्मचान्तुभयातलाघवं वक्षितम् ॥ ३६ ॥

अन्वयः- तस्मात्सावयवाद्दहर्गणादशादौ स्वकरणाज्जन्मकाले यस्मा-
 त्करणाद्गुहाः साधितास्तेन करणेन दशा प्रवेशाऽहर्गणाद्गुहाः साध्याः
 यदि जन्मरवगान्क्षेपान्त्रकल्पय दशादौ सावयवात्सावनाऽहर्गणात्साधि-
 ता ग्रहाजन्मकालजनिता ग्रहे क्षेप्यास्तदा ते दशादौरवगा भवन्ति एवं कृते
 सावनादशा भवन्ति अस्माद्दहर्गणादानीतोऽर्कः प्राकृजनेन दशा प्रवे-
 श मध्य सूर्य्येण समस्तदाहर्गणः शुद्धो ज्ञेयोनान्यथा ॥ ततो दशा
 दौ साधिता चन्द्रार्कभ्यां भक्ताव्यर्क विधोर्लवा इत्यादिना तिथिः सा-
 ध्या मंक्रमवशांन्मासो ज्ञेयः शुक्लादि मासेषु यास्मिन्मासे मेघ

संक्रांति भवति सचैत्रमासो ज्ञेय इत्यादि वृषभादयो ज्ञेयाः दशाप्र-
वेशोलम्भमपिसाध्यस्वेष्टे पूर्वैः पूर्वाचार्यैः श्रीधराद्यैः सावनी दशानय-
ने जडकर्म महतायासेन कृतमित्यर्थः अतो मया लाघवं दर्शितम्.

अर्थभाषा.

पूर्व कथित सावयव अहर्गणसे जन्म कालमें जिस पक्षके ग्रह
किया होय उसी पक्षसे दशारंभमें ग्रह करना अथवा सावन दशा
तुल्य अहर्गणसे ग्रह करके उसमें जन्म कालीन ग्रह क्षेपक कल्याण क-
रना युक्त करना तो वह दशारंभमें ग्रह होते हैं अनंतर वह स्पष्ट क-
रना और सूर्य चन्द्रसे तिथी ल्यावना यह केवल पांडित्य यह साव-
नी करण पूर्वाचार्यने महान् प्रयाससे किया इस वास्ते वह जड
कर्म है हमने तो उसका इहां लाघवता कथन किया है.

उदाहरणम्.

लग्न दशारंभमें १८२१ शकमें सावयव अहर्गण २१५१।३५।१०
इस्से जो मध्यम सूर्य आवेतो पूर्व सिद्ध दशा प्रवेश मध्यम सूर्य ८।
८।२५।२४ इस्के बराबर होयतो यह अहर्गण शुद्ध है अन्यथा अशु-
द्ध ग्रह समजनेके वास्ते पूर्वोक्त रीति प्रमाण सारणीपरसे मध्यम
सूर्य करते हैं अहर्गण २१५१ इस्को ६० से भागके लब्धि ३५
और शेष ५१ यह शेष कोष्टक इस्के नीचेका सारणीमेका अंक
१।२०।१५।५७ इस्को लब्ध्यंक ३५ इस्के नीचेका राशी छोडके
भागादिअंक ४।२९।४६।० इस्सेसे प्रथमांकको ६ से भागके बा-
की ४ इस्का दुना ८ यह राश्यंक इस वास्ते ८।२९।४६।० यह लब्धि
कोष्टक फल और चक्र ३४ इस्के नीचेका सारणीमेका अंक
९।१७।४८।४६ और घटी कोष्टक ३५ और पल कोष्टक १० इ-
स्के नीचेका अंक ०।०।३४।३० और ०।०।०।१० यह युक्त करके
८।८।२५।२३ यह मध्यम सूर्य पूर्व मध्यम सूर्यके बराबर है.

अथवा दशा सावनी अहर्गण ४९८९।३।९ इस्से चक्रांक फल मिल-
ये विना मध्यम सूर्य ७।२७।१३।२७ इस्को जन्म कालीन मध्यम
सूर्य ०।११।११।५६ युक्त करके ८।८।२५।२३ यह वही मध्यम
सूर्य आया यही रीतिसे चन्द्रादि मध्यम करना.

दशा सावनी अहर्गणसे मध्यम ग्रह करने बरवत उसको सारणीमेके
चक्रके नीचेके अंक युक्त करना नहीं कारण उसको चक्र मंकव.

तजन्मकालीन ग्रह युक्त करना होता है सूर्य मीन राशीको होयके जो सूर्य चन्द्रसे चैत्र मासांतकी तिथी आवे तो शकमें एक युक्तकरना तो अहर्गण बराबर आवेगा.

दशारंभसमये स्पष्ट सूर्यादि.

इहां पूर्व कथित प्रमाण सारणी परसे दशारंभ दिवसमें प्रातः कालीन स्पष्ट सूर्य ८।७।२७।२८ गति ६१।१७ चन्द्र ४।४।१०।२ गति ७३।१।४३ इस्से आई गत तिथि ०४ इसवास्ते धनका सूर्य रहते पोष कृष्ण पक्ष मया.

अवदशारंभसमयलिखते हैं.

संवत् १८५६ शके १८२१ पौष कृष्ण पंचमी शुक्रवार १५ इहां अहर्गण २१५१ इसदिन सूर्योदयके अनंतर घटी ३५ पल १० इस समयमें स्पष्ट सूर्य ८।८।०२।०८ चन्द्र ४।११।५३।२२ लग्न ३।२६।२२।१२ कहिये कर्क लग्नमें रवि दशा निवृत्ति समाप्ति और लग्न दशा प्रवृत्ति प्रारंभ भई यही रीतिसे सर्व ग्रहोंकी दशा अंतर्दशा विदशा उपदशा प्रवृत्ति समयमें स्पष्ट सर्व ग्रह और लग्न करके दशापतिसे फलका विचार करना.

सूर्यचन्द्रसे तिधिकरणनक्षत्र और योग ल्यावने का प्रकार.

स्पष्ट चन्द्रमेंसे स्पष्ट रविकम करके बाकी रहै उसका अंश करके उसको १२ से भागके जो भागाकार आवे वह गत तिथि जानना और जो अंशादिक बाकी रहैगा वह भुक्त तिथि होगी वह १२ अंश मेंसे कम करके जो बाकी रहै सो भोग्य तिथी जानना अनंतर भुक्त तिथि और भोग्य तिथि इनकी बिकला करके उसको क्रमसे ६० से गुणके जो गुणाकार आवे उसको क्रमसे रविचन्द्र स्पष्ट गतीके अंतर्से बिकलासे भागके जो भागाकार घटिकादि आवेगा वही क्रमसे भुक्त तिथि और भोग्य तिथी इनकी घटी जानना.

गत तिथी जो होय उसको २ से गुणके ७ से भागदेना और बाकी भाग देना दत्तव्यकरणसे तिथीके पूर्वार्धमें करण होते हैं उसमें १ युक्त करेता तिथिके उत्तरार्धमें करण होते हैं अनंतर तिथीकी भुक्त भोग्य घटीका योग करके उसका अर्ध करना और उसमेंसे भुक्त घटी कम करना तो करणकी घटिका होती है जो तिथीकी भुक्त घटी

सुमार ३० से घटिका ऊपर होयतो तिथीकी मुक्त भोग्य घटीमेंसे मुक्त घटी कम करना तो करणकी घटिका होती है कृष्णपक्षकी चतुर्दशीके उत्तरार्धमें शकुनी करण और कृष्णपक्षकी अमावस्याको पूर्वार्धमें चतुष्यद करण और उत्तरार्धमें नाग करण और शुद्ध प्रतिपदाको पूर्वार्धमें किंस्तुघ्न करण यह स्थिर करण है. करणोंके नाम:-
 बव १ वालव २ कौलव ३ नैतल ४ गर ५ वणिज ६ तद्रा ७ अथवा विष्टी अथवा कल्याणी नाम है.

स्पष्ट चन्द्रकी कला करके उसको ८०० से भागके जो भागाकार आवे सो गत नक्षत्र जानना और जो बाकी कलादि रहैगा वह गत नक्षत्र के आगेका मुक्त नक्षत्र होता है. वह ८०० से कलामेंसे कम करके जो बाकी रहैगा वह भोग्य नक्षत्र जानना. अनंतर मुक्त नक्षत्र और भोग्य नक्षत्र इनकी विकला करके उसको ६० से क्रमसे गुणना उसको क्रमसे चन्द्र स्पष्ट गतीके विकलासे भाग देना जो क्रमसे भागाकार आवे सो घटिकादि आवेगी वह क्रमसे मुक्त नक्षत्र और भोग्य नक्षत्र इनकी घटिका जानना.

४ स्पष्ट सूर्य चन्द्रके योगकी कला करके उसको ८०० से भागके जो भागाकार आवे सो गत योग जानना और जो बाकी कलादि रहैगा सो मुक्त योग जया सो ८०० कलामेंसे कम करके जो बाकी रहैगा भोग्य योगके आगेका भोग्य योग जानना. अनंतर मुक्त योग और भोग्य योग इनकी विकला करके उसको क्रमसे ६० से गुणना और जो अनुक्रमसे गुणाकार आवे उसको सूर्य चन्द्रके स्पष्ट गतीके अंक विकलासे भाग देना जो अनुक्रमसे भागाकार आवे वह घटिकादि आवेंगे वह क्रमसे मुक्त योग और भोग्य योग इनकी घटिका जानना.

उदाहरणम्.

जन्मकालीन स्पष्ट चन्द्र १५।२२।३५ इस्मेंसे स्पष्ट रवि १३।१०।१२ कम करके ८।२२।११।५३ इस्के अंश २६२।११।५३ इस्में अंशको १२ से भागके २१ गत तिथि शेष १०।११।५३ यह मुक्त तिथि ७ शेषको १२ मेंसे कम करके १।१८।७ यह भोग्य तिथि सप्तमी अथवा मुक्त तिथीकी विकला ३६७१३ इस्को ६० से गुणके २२००।७०० इस्को चन्द्र गति ७३५।१३३ रवि गति ५०।१५ इस्का अनर ६७३।२९। इस्की विकला ४०४०० इस्से भागके ५४ घटी ३० पल अह्नसप्तमीकी मुक्त घटिका नई. अनंतर भोग्य तिथीकी विकला-

६४८७ इस्को ६० से गुणके ३८ ९२२० इस्को स्पष्टरविचंद्र गति के अंतरकी विकला ४०४० ९ इस्से भागके ९ घटी ३८ पल यह सप्तमीकी भोग्य घटिका भई.

गत तिथि ६ इस्की २ से गुणके १२ इस्को ७ से भागके शेष ५ इसवास्ते सप्तमीके पूर्वार्द्धमें गरकरण और उत्तरार्द्धमें वणिजकरण अवतिथिकी भुक्त घटी ५४।३० और भोग्य घटी ९।३८ युक्त करके ६४।८ इस्में भुक्त घटी ५४।३० कम करके ९।३८ यह गरकरण की घटिका भई.

चन्द्र ९।५।२२।३५ इस्की कला १६५२२ विकला ३५ इस्को ८०० से भागके २० गत नक्षत्रवाकी ५२२।३५ यह भुक्त नक्षत्र उत्तराषाढ वाकीका अंककी ८०० से कलामेंसे कम करके शेष २७७।२५ यह भोग्य नक्षत्र उत्तराषाढ भया.

अव भुक्त नक्षत्रकी विकला ३१३५५ इस्को ६० से गुणके १८८१-३०० इस्को चन्द्र गति विकला ४३९०३ इस्से भागके ४२ घटी ५१ पल यह उत्तराषाढ नक्षत्रकी भुक्त घटिका भई अनंतर भोग्य नक्षत्र की विकला १६६४५ इस्को ६० से गुणके ९९८७०० इस्को चन्द्र गति की विकला ४३९०३ से भागके २२ घटि ४५ पल यह उत्तराषाढकी भोग्य घटिका भई.

स्पष्टसूर्य ०।१३।१०।४२ चन्द्र ९।५।२२।३५ इनका योग ९।१८।३३।१७ इस्की कला १७३१३।१७ इस्को ८०० से भागके २१ गत योग वाकी ५१३।१७ साध्य भुक्त योग शेष ८०० सेमेंसे कम करके २८६।४३ यह साध्य योग भोग्य अव भुक्त योगकी विकला ३०७ ९७ इस्को ६० से गुणके १८४७ ८२० इस्को रविगति ५८।१४ चन्द्र गति ७३१।४३ इनका योग ७८९।५७ इस्की विकला ४७३९७ इस्से भागके ३८ घटि ५८ पल यह साध्य योगकी भुक्त घटिका भई.

अनंतर भोग्य योगकी विकला १७२०३ इस्को ६० से गुणके १०३१३८ इस्को रविचन्द्रकी स्पष्ट गतिकी विकला ४७३९७ इस्से भागके २१ घटी ४७ पल यह साध्य योगकी भोग्य घटिका भई इस प्रकार से तिथि नक्षत्र योगकरणकी भुक्त योग्य घटी करना.

इहां जन्मदिनमें भोग्य तिथि नक्षत्र योग इनकी घटिका और जन्म कालीक भुक्त नक्षत्र योग इनकी घटिका युक्त करके जन्म-

समय ३२ घटिकाबराबर मिलते-

श्लोक- } ग्रहदशामें प्रति दिनका चन्द्र फल-
 चन्द्रः प्राप्तदशेश्वरस्य सुहृदुच्चस्वर्क्षसंस्थो दशाना-
 थाधीनवसप्तमोपचयगोदद्याच्छुभानीति च ॥ य-
 स्मिन् भेदविधुः सजन्मनितनुस्वायादिभावो यदा त-
 तदृद्धिकरोथ तत्क्षयकरः प्रोक्तेतरस्यानगः ॥ ३७ ॥

अन्वय-

प्राप्तदशेश्वरस्य सुहृद्भेददुश्चेतस्वांशो भवति चन्द्रस्तदाच पुनर्दशेशात्-
 चम नवमसप्तम तृतीय पष्ठदशैकादशस्थानस्थ चन्द्रो भवति ॥ तदा च-
 न्द्रः शुभानि दद्यात् एवं शुभफलप्रदश्चन्द्रो दशायां यस्मिन् भावे वर्तते
 स राशिर्जन्मकाले यस्मिन् भावे वर्तते तद्भावं शुभं करोति यदि चन्द्र
 राशिस्तनुभावे स्यात् तदा तनु लौरव्यकरः स्यादेवं धनादि भावेषु य-
 दि कथिते तरस्थान गस्तदा क्षयकरो हानिकरः स्यात् प्रोक्ते तरस्थान-
 स्यायमर्थः चन्द्रः प्राप्तदशेश्वरस्य सुहृदादि स्थानादि तरस्थानगः
 वैरिनीचादि स्थित इति.

अर्थभाषा-

जिस ग्रहकी दशा होय उस ग्रहके मित्र ग्रहमें उच्च ग्रहमें वा स्वग्रहमें
 होकर दशापत्तिसे ५।१।७।३।६।१०।११ यह स्थानमें चन्द्र होय तो शुभ
 फल देता है. सो ऐसी दशामें जिस राशीको चन्द्र होय वह राशि जन्म
 कालमें तनु भाव होय तो शरीर दृढ़ि कारक वह राशी धन भाव होय
 तो धन दृढ़ि कारक आश्रय भाव होय तो लाभ कान्क और आदि शब्द
 से सहज भाव होय तो भ्रातृ सुख सुहृद्भाव होय तो मित्र सुख सुत
 भाव होय तो पुत्र सुख रिपु भाव होय तो वैरिनाश कारक जाया भाव
 होय तो स्त्री सुख मृत्यु भाव होय तो मृत्यु नाश कारक धर्म भाव होय तो ध-
 र्म भाग्य कारक दशम भाव होय तो कर्म फल कारक व्यय भाव होय तो
 व्यय नाश कारक सहजादि भावोंका भ्रातृ सुखादि फल कथन किया
 है. तैसाहि पराक्रमादि सुख भां जानना इहां शुभ सूचन कथित है.
 इस वास्ते अरि मृत्यु व्यह यह भावोंके फल विपरीत जानना पूर्व कथित
 स्थानसे इतर स्थानमें कहिये दशेश्वरके शत्रु ग्रहमें किवा नीचमें च-
 न्द्र होयके दशापत्तिसे १।२।४।८।१२ यह स्थानमें होय तो भाव क्षय
 फल कारक होना है. कहिये दशामें जिस राशीको ऐसा चन्द्र है.

वह राशि जन्मकालमें तनुभाव होयतो शरीरकलेश कारक धनभाव
होयतो धन हानि कारक यह प्रमाण सहजादि भावफल योजना क-
रना इहा विपर्यय शत्रुमित्र व्ययभाव होयतो वह भाव शत्रु मृत्यु-
व्यय कारक ही होता है.

दशाफल दशारिष्ट और दशारिष्ट भंग.

श्लोक- } यद्द्रव्यं स्वचरस्य भावग्रहहृद्योगादिसर्वफलं यो-
ज्यं कृत्ति कृत्तिर्वलादिह दशायां चायथो वैरियुक् ॥ पापः
पापदशाविशेषस्तच्च विपत्कृत्तयितव्यं दशस्तत्काले बल-
वान् रयगः शुभसुहृद्दृष्टेष्टसहर्गगः ॥ ३८ ॥

अन्वयः

यस्य ग्रहस्य यद्द्रव्यं नाशं स्यादित्यादि भावफलं राशिफलं दृष्टिफलं
योगफलं आदिशब्दादुच्चनीचमूलत्रिकोण रत्ति कृत्तिर्जीविका इति
सर्वतस्तस्य ग्रहस्य दशायां बाल्यं बलादि तिस बले यथोक्तं पूर्ण फलं
भयति मध्ये मध्यं हीनबले हीन फलदः अथो यो ग्रहो वैरियुक् शत्रु
धुगिरर्थः पापग्रहः पापदशायां विशति अर्थात् पापदशायां पापस्यान्तर
प्राप्ते सपापो विपत्कृत्तयितव्यं कर्तव्यस्यात् यदि कश्चिद्ग्रहो बलवान् शुभ मि-
त्रेण दृष्टेऽप्यमित्रपद्वर्गगोवाङ्घ्राधिकः सतद्भंगदः स्यात् ॥ ३८ ॥

अर्थभाषा.

जिस ग्रहका जीना आदि द्रव्य और भाव फल राशिफल शत्रु नीच
मूल त्रिकोणादि जीविका कर्म इत्यादि सब फल दशामें वह ग्रह देता है ब-
ल सहश अधिक बली होयतो पूर्ण फल मध्यममें मध्य फल हीन बलमें
हीन फल होता है. पाप ग्रहोंके दशामें शत्रु युक्त पापग्रहका अन्तर आ-
यतो विपत्कृत्ता भरण जानना परंतु यदि उस समय कोई शुभ ग्रह ब-
ली होयके देखता होय या मित्रग्रह देखता होय या शुभ मित्रोंके ग्रहा-
दियगोंमें रहनेवाला ग्रह देखता होय तो भंगकर्ता होता है.

अथा एकवर्ग फलमाह.

श्लोक-

यदेतस्मिन् ययदष्टवर्गजफलं पूर्णं शुभं जन्मतन्विन्दो-
यदि पुचन्वभोज्यमसुहृद्दे स्वत्रिकोणस्त्रियः ॥
दृष्टं मध्यफलं विपर्ययगतस्यानिष्टमप्युक्तं शस्त्रं
स्यत्यनररयगस्य च वदं ज्ञात्वा बलं तत्ततः ॥ ३९ ॥

अन्वयः

जन्मनितविन्दोः लक्ष्मचन्द्राभ्यामित्यर्थः वृद्धिपु उपचयस्थानेषु ३।६। १०।११ स्वप्ने स्वोच्चं सुहृद्भे स्वमूल त्रिकोणोत्तियो ग्रहस्तस्वयदृष्टक वर्गजफलं शुभं तत्पूर्णं उक्तस्थानाद्विजगृहस्थः शत्रुनीचादिभ्यस्तस्वशुभफलं मध्यमं अथवा उपचयस्थान रहितः स्वोच्चादिस्थः तस्य शुभफलं मध्यमं दुष्टं एवमनुपचयस्थान ग्राहः शत्रुनाचादिगस्तस्या शुभं अप्युत्कटमं शुभं स्वादित्यादि मर्व ग्रहस्य षड्वर्गबलं ज्ञात्वा तत्पतः फलं वदेत् यथा पूर्णं बलग्रह पूर्णं शुभा शुभफलं मध्ये नध्यं हीने हीनमित्यर्थः ॥ ३० ॥

अर्थभाषा.

जोग्रहजन्मलग्न और जन्मके चन्द्रसे ३।६।१०।११ इस स्थानों में होकर स्वग्रहमें स्वोच्चमें वा स्वमूल त्रिकोणमें होनाहै उसका अष्टवर्गजफल शुभ जानना. अशुभफल स्वल्प जानना और पूर्वस्थानसे भिन्न स्थानोंमें अर्थात् १।२।६।५।७।८।९।१२ इन स्थानोंमें होकर शत्रु ग्रहमें वा नीच राशीमें रहताहै. उसका अष्टवर्गजफल अशुभफल पूर्ण जानना. और शुभफल स्वल्प जानना. जन्मलग्नसे और जन्म राशीमें उपचयस्थानमें और शत्रु ग्रहमें वा नीचमें जोग्रह रहताहै उसका अष्टवर्गजशुभफल मध्यम और अशुभफल किंचिन्म्यून जानना अथवा इतर स्थानमें होयके स्वग्रहोच्चादि स्थित रहते अशुभफल मध्यम और शुभफल किंचिन्म्यून जानना यह अष्टवर्गजफल ग्रहोके षड्वल प्रमाण जानना ग्रहपूर्णबल होयतो यथोक्त फल न्यून बल होयतो न्यून फल और अस्तगत होयतो फल नहीं ऐसा जानना.

अथ कचिज्जातकफलव्यभिचारे कर्तव्यता माह.

श्लोक- जीवेत्कापि विभंगं गिरिजशिखरिष्टं विनाश्रियते चाद्योद्धः शिशुदुस्तरापि च पराकाव्यं युनोययिका ॥ काव्याप्रभनिमित्तं पूर्वशकुनैस्सन्त्यमानं धिया होराज्ञेन सुखुद्धिना हिवह घोदकश्च कालो बली ॥ ४० ॥

अन्वय

कापि कचित्स्थले विभंगं गिरिजशं न रहित इत्यर्थः जीवेत् कापि रिष्टं

विनाश्रीयते इति व्यवभिचारः चाद्योब्दः प्रथमोब्दः शिशोर्दुस्तरः प्र-
सवज्वरादि भयादित्यर्थः तथा ५ परी द्वितीय तृतीयाब्दौ दुस्तरौ दत्त
जननं यावत् अत एषु त्रिषु वर्षेषु पत्रिका नो कार्या भंगादिकं विचा-
रयित्वा वर्षत्रय मध्येपि पत्रिका कार्या कैः प्रभ निमित्त पूर्वशकुनैः प्र-
भे निमित्त पूर्व लगे बलोपश्रुताद्यैस्तथाशकुनैः शुभशकुनैः शुभवस्तु
यदिश्रुति दर्शनं इत्यादिभिः शुभं ज्ञात्वा पत्रिका कार्या ॥
किं कुर्वन्स्वमान रक्षन् गणकने त्यध्याहारः किं विशेषेण होराविज्ञेन
पुनः सुबुद्धिना हि यस्मात् उदर्को भावो कालो बली स्यात्
भाषा अर्थः

कभी कभी अरिष्ट भंग रहते विना बालक जीता है और कभी क-
भी अरिष्ट योग न रहते भी मरण पावता है ऐसा जातक फल व्यभि-
चार देखते हैं। तैसा हि प्रथम वर्ष बालक को दुस्तर है और आगे का दो-
वर्ष यह बालक का दुस्तर है। इस वास्ते ३ वर्ष तक पत्रिका करना नहीं
कारण भावी फल बहुत प्रकार का है और काल भी दुर्विज्ञेय है। बु-
द्धिमान गणकने ताल्कालिक लग्न बलोपश्रुत्यादि शकुन से शुभफल
जानके बुद्धिके योगते अपनी प्रतिष्ठा रखके सर्वदा यह तीन वर्ष में
और आगे भी जन्म पत्रिका करना:

ग्रंथोपसंहारः

श्लोक } नन्दिग्रामे केशवो विप्रवर्यो यो भूद्धोराशास्त्रसंघः
विलोक्य ॥ तेनोक्ते यं पद्धतिं जातकीया चत्वारिं-
शद्वृत्तवद्धा सुबोधा ॥ ४१ ॥

अन्वयः

य. केशवो विप्रवर्यो नन्दिग्रामे आसीत् तेन होराशास्त्रसंघं विलोक्य
होरा एव शास्त्रं होराशास्त्रं होराशास्त्रं समूहं विलोक्य जातकीया पद्धति
रुक्ता किं विज्ञिष्टा चत्वारिंशद्वृत्तवद्धा पुनः कथं भूता सुबोधा ॥ ४१ ॥

अर्थभाषा:

दक्षिण देउ प्रसिद्ध नन्दिग्राममें केशव यह नाम करके ब्राह्मण श्रे-
ष्ठ रहता रहा उसने जातकशास्त्र समूह देखकर उसमें सदुक्त असदुक्त
आत्सुक्त बहुमत अल्पमत क्या है इस्का विचार करके चालीस श्लोक की
सुगम ऐसी यह जातक पद्धति रचना किया ॥ ४१ ॥

ग्रंथप्रशंसा माह

श्लोक } येसुबोधांपठंतीमामग्यांजातकपद्धतिम् ॥
 होरावित्पदवीयांतिलोकेमानंयशश्चते ॥४२॥

अन्वय-

येगणकाइमांसुबोधांजातकपद्धतिंपठंति किंभूतामग्यांतिलोके
 होरावित्पदवीयांतिमानंयशश्चलभंते ॥४२॥

अर्थभाषा-

जो ज्योतिषी इस जातक पद्धतीको अध्ययन करेंगे वह लोकमें देव-
 ज्ञपदवी और गौरव कीर्ति यशको प्राप्त होवेंगे ॥४२॥ इति ॥

इतिकेशवीजातकंसमाप्तं

चरसारणी प्रवेश पलभा.

मंद स्पष्ट सूर्यको अयनांश युक्त करके उसका भुज करके सु-
 जका भाग करना इहां सारणीमें ३० अंशके अंतरसे ३ ठिकाणें ९०
 अंश कोषक लिखके वह कोषकके नीचे प्रत्येक अंशका फल
 विकलादि लिखा है. उसमेंसे अभीष्ट अंश होय उसके नीचेका फल
 लेके इष्टांशके नीचे जो कला विकला होय उसको अंश कोषकके सा-
 मने दहने तरफ जो गुण लिखा है उससे गुणके जो गुणाकार आवे
 उसको गुणके नीचे जो हर लिखा है उससे भागके जो फल निकला
 त्मक आवे वह लेके पूर्व फलमें युक्त करना तो चर होता है. वह चर
 सायन सूर्य नेषादि ६ राशिको होय तो ऋण और नुलादि ६ रा-
 शिको होय तो धन जानना.

चरसंस्कारसारणी.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	गु० १०
०	२	४	७	९	११	१४	१६	१८	२१	२३	२५	२८	३०	३२	हर ३
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	गु० १०
३५	३७	३९	४२	४४	४६	४९	५१	५३	५६	५८	६०	६३	६५	६७	हर ३
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	
३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	गुण २८
७१	७३	७५	७७	७९	८१	८३	८४	८६	८८	९०	९२	९४	९६	९८	हर १५
५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४८	४०	३२	२४	१६	८	०	
४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	गुण २८
९९	१०१	१०३	१०५	१०७	१०९	१११	११२	११४	११६	११८	१२०	१२२	१२४	१२६	हर १५
५२	४४	३६	२८	२०	१२	०४	५६	४८	४०	३२	२४	१६	८	०	
६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	गुण २३
१०६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	हर ३०
४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	
७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	गुण २३
१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	१५०	१५१	१५२	हर ३०
१६	२	४८	३४	२०	६	५२	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	

उदाहरण.

जन्मकालिक मन्दस्पष्ट रवि ०१३१२२।३ इस्में आयनांशा २३।४४
 १३ यह युक्त करके १।५।५६।६ यह सायन रवि इस्का भुज १।५।५६।६
 इस्के अंश ३५।५६।६ इहां ३५ अंश हैं इसवास्ते ३५ अंशको छक
 का नीचेका विकलादिफल ७२।२० इस्को अंशके नीचे कला ५६ और
 रविकला ६ है इस्को अंशको छकके सामने गुण २८ है इस्से गु-
 णक १५७०।४८ इस्को गुणके नीचे हर १५ इस्से भागके १०४
 प्रतिकला युक्त करके ८१।४ यह सायन सूर्य वृष राशिको है इस-
 वास्ते जग जानना.

बहुविध देशोंकी अक्षजा.

नगरनाम.	घ.	प.	नगरनाम.	घ.	प.	नगरनाम.	घ.	प.	नगरनाम.	घ.	प.
अलवर	६	१६	कैदार	७	८	जिलौई	५	१६	नाशिक	४	२५
अमदावाद	५	२	कोन्दापुर	३	३०	जवनपुर	५	१७	नागपुर	४	३९
अहमदनगर	५	०	कोराग्राम	४	२५	जंजूर	४	२८	नागौर	४	२१
अजमेर	५	४५	कौकण	३	१५	जलालाबाद	५	१०	नारनवल	६	१४
अयोध्या	६	७	रुष्णागढ	६	०	जालंधर	६	५१	नैपाल	५	२५
अमरकोट	५	२५	खंभाई	४	५१	जुनागढ	५	३९	नैमिषारण्य	५	५५
अपसरीला	६	१५	खांचार	०	०	जुनेर	५	०	पटियाला	७	१
अवरंगाबाद	४	३०	खमात	४	५१	जोधपुर	५	४०	पंढरपुर	४	०
अग्रपारण	५	४०	गंगासागर	४	५६	झांसी	५	४३	प्रयाग	५	४२
अजमेर	२	६	गढा	६	६	झंकारा	५	३५	प्रकासा	४	४०
अनिबंग	५	१	गर्गराट	५	६	झोंका	५	१७	प्रकाण	४	५
अमृतसर	७	२६	गहीरा	५	४५	टुङ्गा	५	१६	पानिपत	६	२०
आग्रा	६	७	गया	५	५०	ठगनपुर	५	३	पाचप्यी	४	३०
आजमगढ	५	५२	गणशुक्ल	६	४	तंजावरु	२	७	पाडव	५	१
इंदौर	५	३०	गार्जीपूर	५	३५	तरेला	६	३५	पुणे	४	०
इटवा	६	०	ग्यान्हेर	५	५४	ताजपुर	५	४५	पुरुषोत्तमक्षी	५	४५
उज्जनी	५	६	उवरापुर	५	१०	तिलंग	४	४	पुष्कर	५	५२
उचवानगढ	५	१०	उजरात	४	२०	दरभंगा	५	५३	पैठण	४	३०
उदपुर	५	२०	गोमानक	३	२०	दरमेल	५	०	वडावा	४	१४
उन्कल	५	४३	गोपाल	३	३०	दामनपुर	५	४५	वलसाड	४	४०
उमरावती	४	३६	गोलकुंडा	३	२५	द्वारका	६	५	वरदान	५	९
अनकमंद	२	२५	गोलग्राम	४	०	दिल्ली	६	३५	ब्रह्माणपुर	४	३०
ओरछा	५	२५	गौरखपुर	६	८	देवगढ	६	४	ब्रह्मपुरी	५	२०
ओरट	४	६	गोकुल	५	१५	देवग्राम	४	४०	वजवाडा	६	५७
कलकत्ता	४	५७	धनदेवी	४	४०	दौलताबाद	३	३०	वाणपुर	४	३५
कपिला	६	१६	बंदेली	५	०	धवरपुर	५	१२	बाणगंगा	४	३५
कटक	४	२८	चाटसुपुर	५	४५	धालक	५	२	वितिया	६	२
कागिक्षेत्र	५	४५	चित्रोड	५	३०	धामोनिगढ	५	१०	विजापुर	३	३५

कानपुर	५ ५१	चित्रकूट	५ ३०	नवसरी	४ ४२	बिकानेर	६ ११
काश्मिर	७ ५४	छपरा	५ ४७	नगरकोट	७ २०	बूढ़ीकोटा	६ २
काविल	८ २०	जयपुर	६ ४	नडीवाड	५ २	भविपुर	४ ५२
कांची	२ ३०	जंबू	७ ४०	नरवर	५ ४५	भरतपुर	६ १९
कान्यकुब्ज	६ ०	जबलपुर	५ ८	नयनीताल	६ ४५	भृगुक्षेत्र	४ ८
कुरुक्षेत्र	६ ४६	जगन्नाथ	५ ३०	नर्मदा	४ ४७	भोजपुर	५ ४५
भागलपुर	५ ३०	मैसूर	२ २६	वधवमगर	५ २७	सिंहज	५ ०
मकसूदाबाद	५ २४	भूपाल	५ १०	बलघ	८ ७	सिंधपुर	४ ४०
मंडी	७ २४	रत्नागिरी	३ ४१	बटीपुर	४ ३	सिंहनद	७ ३०
मद्रास	२ ४७	रनथंभ	५ ३०	बटेश्वर	५ ४८	सुरत	४ ३९
मगधदेश	६ ९	रनव	६ ६	बडाल	७ ३	सौलापुर	३ ४९
मथुरा	६ ०	रामेश्वर	१ ५८	विजयनगर	४ ३२	सौमनाथ	५ १९
महल	६ ३६	रामनगर	५ ०	बेलगांव	३ २५	सोनपथ	६ ४०
माडा	४ ५०	राजो	५ ३६	बैराठ	६ २७	संगमनेर	४ २०
माडनाचल	४ ४७	राजापिल	४ ४४	शारंगपुर	४ ४६	संभल	६ ३
मालपुर	५ ४५	राजपुर	५ ३०	स्यामगढ	४ २८	संगरपुर	५ १२
मांडवा	५ १	रायपुर	४ ३९	शिरोज	४ ४८	हस्तिनापुर	६ ३०
मालवा	५ ३०	राजमहाल	५ २५	शीतपुर	४ २०	हरिद्वार	६ ५६
माढागढ	४ ५७	रीवा	५ २८	श्रीनगर	६ ४६	हरदा	४ ५९
मिथिल	६ ८	रेवा	४ २६	खुसा	१० ३	हैद्राबादसिंध	५ २१
मिरज	३ ३७	रोहित	६ २९	मपाड	७ १५	हैद्राबादनिजा	३ ४३
मिरजापुर	५ २५	रोहिदाबा	५ २८	समसाबाद	६ ५०	चिलायत लहान	१५ ८
मुंबई	४ ७	लखनऊ	५ ४८	सहस्राव	५ १७	श्रीरंगपट्टण	२ ३९
मुलतान	६ ४०	लवंगपुर	५ ३०	सातारा	३ ५१	सेतबंधराम श्वर	३ ६
मुंगेरी	५ ५६	लक्ष्मवती	५ ४८	सागर	५ १८	हस्ती	६ २५
मुरैर	४ ३०	लक्ष्मनबास	३ ५	सावंतवाडी	३ ५	पटण	५ ४५
मरता	५ ४५	लाहोर	७ ११	सिरी	५ १	नि २२	६ १८

लिखे है. उसमें से स्पष्ट सूर्य जिस राशिको होय वह राशिके सामने सूर्य के इसाशकोष्ठके नीचे का कलादि फल लेके उसको नत घटी और पल पश्चिम होयतो युक्त करना और वह घटी ६० से अधिक होयतो उसमें से ६० कम करना और नत घटी और पल पूर्व होयतो लियाजो अंश फल उसमें से कमती करना और वह अंश फल से अधिक होयतो अंश फलके कलामें ६० युक्त युक्त करके उसमें पूर्व नत घटी पल कमती करना अगंतर जो घटी पल बाकी रहै वह कला और विकला मई अगंतर तन्मि कला विकला सारणीमें जिस अंशकोष्ठके नीचे होय वह अंश और कला विकलाके वा ये तरफ जो राशी होय वह दशम भावकी राशी जानना. यह सर्व देशोंका मध्यम मान है.

उदाहरणम्.

जन्मकालिक स्पष्टरवि ०१३।१०।४२ यह सूर्य मेषराशिको है इस वास्ते मेषराशिके १३ अंशकोष्ठके फल ५।२८ इसमें जन्मकालिक पश्चिम नत घटी १५ पल ४० युक्त करके ११।८ इहां कला विकला २१।३ यह कर्क राशिके १२ अंशके नीचे लिखा है. इस वास्ते दशम यह ३।१२।२१।८ भया इसमें ६ राशी युक्त करी तो १।१२।२१।८ यह चतुर्थ भाव भया.

अष्टोत्तरी महादशा.

आर्द्रासे प्रारंभ करके मृगशिरा तक २८ नक्षत्र और सूर्य चन्द्र जौम बुध शनि गुरु राहु शुक्र यह ८ ग्रहोंका कोष्ठक पृथक् पृथक् किया है उसमें महादशाकी वर्ष संख्या पापग्रह नक्षत्र ४ और शुभग्रह नक्षत्र ३ जानना दशाकी वर्ष संख्या नक्षत्रोंके विभागसे सो. यह सूर्य ४ नक्षत्रकों ६ वर्ष इस वास्ते १ नक्षत्रको १ वर्ष ६ महिना यह प्रकारका जानना. और जन्मकालिक जो दशा सो प्रथम मानके जन्म नक्षत्रकी जन्मकाल तक युक्त घटिका जो होय उसको नक्षत्रके वर्षसे गुणके गुणाकारकी जन्म नक्षत्रका भुक्त भोग्य युक्त करके सर्व घटीसे भागके जो भागाकार आवे सो वर्ष और शेष रहै सो १२ से गुणके पूर्ववद्भागके भागाकार आवे सो मास और शेष रहै सो ३० से गुणके पूर्ववद्भागके भागाकार आवे सो दिवस और शेष रहै सो ६० से गुणके पूर्ववत् भागके भागाकार आवे सो घटी जानना. अनं.

नरआयाजो वर्षादि भुक्तकाल औरजन्म नक्षत्रके पूर्वके दशापत्ती के गतनक्षत्र होयतो उसकाभी भुक्तकाल दशापत्तिके दशावर्षमेंसे कमकरके शेष रहै सो वर्षादि योग्यदशा है ऐसा जानना.

अंतर्दशा बनावनेका क्रम

जिस ग्रहके दशामें अन्य ग्रहकी अंतर्दशा करना है तो वह परस्परोंका दशावर्षके गुणाकारको ९ से भागके जो भागाकार आवे सो मास जानना और शेष रहै उसको पूर्वलिखे प्रमाण उत्तरोत्तरगुणाके ९ से भाग देना दिन घटीका आवती है. यह रीतिसे महा दशा मेंकी अंतर्दशाजानना. और १० का भाग विंशोत्तरीका लेना.

अष्टोत्तरी महादशा चक्र.

सूर्यकी महादशा वर्ष ६
अंतर्दशा. आर्द्रा-पुनर्वसु
पुष्य. आश्लेषा.

चन्द्रकी महादशा वर्ष १५
अंतर्दशा. मघा-पूर्वाफाल्गुनी
उत्तरा फाल्गुनी.

सं.	व.	मं.	पु.	श.	र.	मृ.	मि.	यो.	सं.	व.	मं.	पु.	श.	र.	मृ.	मि.	यो.
०	०	०	०	०	१	०	१	६	२	१	२	१	२	१	२	०	१५
१	१०	५	११	६	०	८	२	०	१	१	४	४	७	८	११	१०	०
०	०	१०	१०	२०	२०	०	०	०	०	१०	१०	२०	२०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

भीमकी महादशा वर्ष ८
अंतर्दशा. हस्त-चित्रा-स्वा
ति विशाखा.

सुधकी महादशा वर्ष १७
अंतर्दशा. अनुराधा-ज्येष्ठा
मूल

सं.	व.	मं.	पु.	श.	र.	मृ.	मि.	यो.	सं.	व.	मं.	पु.	श.	र.	मृ.	मि.	यो.
०	१	०	१	१	१	०	१	८	२	१	२	१	२	०	१	१	१७
७	३	८	४	१०	६	५	१	०	२	६	११	१०	३	११	४	३	०
३	३	२५	२८	१०	२०	१०	१०	०	३	२८	२६	२०	२०	१०	१०	३	०
२०	२०	३०	४०	०	०	०	०	०	२०	४०	४०	०	०	०	०	२०	०

शनि की महादशा वर्ष १०
अंतर्दशा-पूर्वाषाढा-उत्तराषा
ढा-अभिजित्-श्रवण-

श.	स.	रा.	शु.	सू.	च.	मं.	बु.	श.	स.
०	१	१	१	०	१	०	१	१०	
११	१	१	११	३	४	८	६	०	
३	३	१०	१०	२०	२०	२६	२६	०	
२०	२०	०	०	०	४०	४०	०	०	

शुक्र की महादशा वर्ष १८
अंतर्दशा-घनिष्ठा-शततारका
पूर्वाभाद्रपदा-

श.	स.	रा.	शु.	सू.	च.	मं.	बु.	श.	स.
३	२	३	१	२	१	२	१	१९	
४	१	८	०	७	४	११	९	०	
३	१०	१०	२०	२०	२६	२६	३	०	
२०	०	०	०	०	४०	४०	२०	०	

राहु की महादशा वर्ष १२ अंत-
र्दशा-उत्तराभाद्रपदा-रेवती-
अश्विनी-मरणी-

रा.	शु.	सू.	च.	मं.	बु.	श.	स.	रा.	श.
१	२	०	१	०	१	१	२	१२	
४	४	८	८	१०	१०	१	१	०	
०	०	०	०	२०	२०	१०	१०	०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	

शुक्र की महादशा वर्ष २१ अंत-
र्दशा-रुक्मिका-रोहिणी
मृगशीर-

शु.	सू.	च.	मं.	बु.	श.	स.	रा.	श.	स.
४	१	२	१	३	१	३	२	२१	
१	२	११	६	३	११	८	४	०	
०	०	०	२०	२०	१०	१०	०	०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	

इति अष्टोत्तरीदशांस्तर्दशाचक्र-

विंशोत्तरीमहादशाकरण-

जन्म नक्षत्र जो होय उसकी संख्या में २ कम करके ९ से भाग लेना शेष १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १० तक रहेगा तब क्रम से सूर्य-चंद्र-मौम-राहु-शुक्र-शनि-बुध-केतु-शुक्र-पह दशापति जानना और उनकी क्रम से ६-१०, ७-१८, १६-१९, १७-७-२० यह दशा की वर्ष संख्या जानना-जन्म नक्षत्र की जन्म काल तक जो भुक्त पदी होय उसको अष्टोत्तरी में कथित रीति से दशापति के वर्ष संख्या से गुणके और नक्षत्र का भुक्त भोग्य युक्त करके सर्व पदी से भागके भागाकार वर्षमास दिन घटिपल आवेगा सो दशावती के वर्ष संख्या में से कम करके शेष रहै सो वर्षादि संख्या भोग्य है ऐसा जानना इसमें अंतर्दशा बनावने का प्रकार अष्टोत्तरी में कहा है सो जानना-

कात्तिकासे भरणीतक २७ नक्षत्र और दशा अंतर्दशा और प्रत्यंत दशाके अधिपतिके नाम और उनकी वर्षादि संख्या इनके जुदे जुदे कोष्ठक आगे लिखे हैं.

उदाहरणम्.

जन्म नक्षत्र इहां उत्तराषाढ है इसकी संख्या ३१ इसमें २ कम करके शेष १८ इसमें ८ से भागके शेष १ इसवास्ते सूर्यकी दशा भई अब पूर्वाषाढ नक्षत्रकी घटी ४७।३६ इसको ६० में कम करके १२।२४ यह इसमें इष्ट घटी ३२ पल १ युक्त करके ४४।२५ यह भुक्त घटी भई और अगला नक्षत्र उत्तराषाढ नक्षत्रकी घटी पल ५३।३२ इसमें १२।२४ यह युक्त करके ६५।५७ यह भोग्य भया. अब भुक्त और भोग्य की पल क्रमसे २६६५।३९५७ भुक्त पलको सूर्यका वर्ष ६ इससे गुणके १५०।१० इसमें भोग्यकी पलसे भागके लः ४ वर्ष शेष १६२ इसको १२ से गुणके १९४४ यह इसमें भोग्यकी पलसे भागके लः ० मास शेष १९४४ इसको ३० से गुणके ५८३२० यह इसमें भोग्यकी पलसे भागके लः दिन १४ शेष २८२२ इसको ६० से गुणके १७५३२० इसमें भोग्य पलसे भागके लः घटी ४४ शेष १२१२ इसको ६० से गुणके ७२७२० इसमें भोग्य पलसे भागके लः पल १८ एवं वर्षादि रविदशा ४।०।१४।४४।१८ भुक्त भई अब इसकी सूर्यका वर्ष ६ में कम किया तो १।११।१५।१५।४२ यह भोग्यदशा भई इसी प्रकारसे दशा विंशोत्तरी करना.

टिप्पण.

जिस दिन जन्म होय उस दिन अथवा वर्ष प्रवेश होय उस दिन जो नक्षत्रकी घटी पल अभीष्ट घटी पलसे कमती होय तो उती नक्षत्रकी घटी पलको ६० में कम करके दो जघें रखना एक स्थानमें इष्ट घटी पल युक्त करना तो भुक्त घटी हो जाय दूसरी जघा अगला नक्षत्रकी घटी पल युक्त करे तो भोग्य होता है.

दशाकाउदाहरणम्.

प्रथमरविदशा वर्षादि भोग्य १।११।१५।१५।४२ इस्के नीचे जन्म
कालीन संवत् १९४३ यह वर्षमें स्पष्ट सूर्य ०।१३।१०।४२ इस्को प्रथम
म दशा मासादि युक्त करके ११।२८।१६।१४ और संवत्में वर्ष युक्त
करके १९४४ यह संवत्में ११।२८।१६।१४ यह स्पष्ट सूर्य रहते रवि-
दशा पूर्ण होयके चन्द्र दशा प्रवेश भई. यही रीतिसे सब दशा प्रवे-
श करना तथा अंतर्दशा प्रत्यंतर्दशा करना.

विंशोत्तरी दशा चक्रम्.

०	स्व.	चं.	मं.	रा.	बु.	श.	जु.	के.	शु.	ग्र.
	१	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०	च.
	११	०	०	०	०	०	०	०	०	मा.
०	१५	०	०	०	०	०	०	०	०	दि.
	१५	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.
	४२	०	०	०	०	०	०	०	०	प.
३८	१८	१८	१८	१८	१८	२०	२०	२०	२०	सं.
४३	४४	५४	६९	७४	९५	१४	३१	३८	५८	
स्व.	स्व.	स्व.	स्व.	स्व.	स्व.	स्व.	स्व.	स्व.	स्व.	स्व.
०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	रा.
१३	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	आं.
१०	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	क.
४२	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	वि.

टिप्पण.

अथवा जन्मके दिन वा वर्ष प्रवेशके दिन जो नक्षत्र घटी पल
इष्टसे अधिक होय तो पिछला नक्षत्र को ६० में कम करके दो स्थान-
में रखकर एक जर्षे इष्ट युक्त करना तो मुक्त घटिका होती है.
दूसरी जर्षे जन्मका वा वर्ष प्रवेशके दिनका नक्षत्र की घटी पल
युक्त करना तो भोग्य होता है.

सूर्यमध्येअंतर्दशाचक्रम्.										सूर्यमध्येसूर्यतन्मध्येदशाच.									
सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.		सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	क.	शु.	
०	०	०	०	०	०	०	०	१		०	०	०	०	०	०	०	०	०	
३	६	४	१०	९	११	१०	४	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	
१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०		५	९	६	१६	१४	१०	१५	६	१८	
०	०	०	०	०	०	०	०	०		२४	०	१८	१२	२४	६	१८	१८	०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	

रविमध्येचन्द्रतन्मध्येविदशाचक्रं										रविमध्येभौमतन्मध्येविदशाचक्रं									
चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.		मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	
१५	१०	२७	२४	२८	२५	३०	०	९		७	१८	१६	१८	१७	७	२१	६	१०	
३०	०	०	०	३०	३०	३०	०	०		२१	५४	४८	५७	५१	०	१८	०	३०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	

रविमध्येराहुतन्मध्येविदशाचक्रं										रविमध्येगुरुतन्मध्येविदशाचक्रं									
रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.		वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	
१	१	१	१	०	१	०	०	०		१	१	१	०	१	०	०	०	१	
२८	१३	२३	१५	१८	२४	१६	२७	१८		८	१५	१०	१६	१८	१४	२४	१६	१३	
३६	१२	१८	५४	५४	३२	०	५४	०		२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२	
०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	

रविमध्येशनितन्मध्येविदशाचक्रं										रविमध्येबुधतन्मध्येविदशाचक्रं									
श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.		बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	
१	१	०	१	०	०	१	१	१		१	०	१	०	०	१	१	१	१	
२४	१८	१८	२७	१७	२८	१८	२१	१५		१२	१७	२१	१५	२५	१७	१५	१०	१८	
८	२७	५७	०	०	३०	५७	१८	३६		२१	५१	०	३८	३०	५१	५४	४८	२७	
०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	

रविमध्येकेतुतन्मध्येविदशाचक्रं										रविमध्येऋषुतन्मध्येविदशाचक्रं									
के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.		शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	
७	२१	६	१०	७	१८	१६	१९	१८		२	०	१	१	१	१	१	१	०	
२१	०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१		१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	

चन्द्रमध्येऽन्तर्दशाचक्रम्										चन्द्रमध्ये चन्द्रस्तन्मध्ये दशाचक्रम्									
चं	मं	रा	ह	श	बु	के	शु	सू		चं	मं	रा	ह	श	बु	के	शु	सू	
०	०	१	१	१	१	०	१	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	
१०	७	६	४	७	४	७	५	६		०	०	१	१	१	१	१	१	१	
०	०	०	०	०	०	०	०	०		२५	१७	१०	१०	१७	१२	१७	२०	१०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	

चन्द्रमध्ये भौमस्तन्मध्ये वि० च										चन्द्रमध्ये राहुस्तन्मध्ये विदशाच									
मं	रा	ह	श	बु	के	शु	सू	चं		रा	ह	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	
०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	
१२	१	२०	३	२३	१२	५	१०	१७		२१	११	२५	१६	१	०	२७	१०	१	
१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	३०		०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	

चन्द्रमध्ये गुरुस्तन्मध्ये वि० च										चन्द्रमध्ये शनिस्तन्मध्ये वि० च									
ह	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा		श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	ह	
०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	
२	२	२	२	२	१	२	२	२		३	२	१	३	१	१	२	२	२	
४	१६	८	२०	२०	२४	१०	२०	१०		१५	२०	३	५	२०	१७	३	२५	१६	
०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	

चन्द्रमध्ये बुधस्तन्मध्ये वि० च										चन्द्रमध्ये केतुस्तन्मध्ये विदशाच									
बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	ह	श		के	शु	सू	चं	मं	रा	ह	श	बु	
०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	
२	०	२	०	१	२	२	२	२		१	०	०	०	१	२	१	०	०	
१२	२२	२५	२५	१८	२८	१६	८	२०		१२	५०	१०	१७	१२	१०	२८	३	२५	
१५	४५	३०	३०	३०	४५	३०	०	१५		१५	०	३०	३०	१५	३०	०	१५	४५	
०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	

चन्द्रमध्ये पृथुस्तन्मध्ये वि० च										चन्द्रमध्ये सप्तर्ष्यस्तन्मध्ये वि० चक्र									
शु	सू	चं	मं	रा	ह	श	बु	के		सू	चं	मं	रा	ह	श	बु	के	शु	
०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	
३	१	१	१	३	२	३	२	१		८	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१	१	
१०	०	२०	५	०	२०	५	२५	५		८	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	३०	०	३०	३०	३०	३०	०	

भौममध्ये अंतर्दशा चक्रं.									भौममध्ये भीमस्तन्मध्ये दशा चक्रं.								
मं	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
०	१	०	१	०	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	११	१	११	४	२	४	७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२४	१८	६	२७	२७	०	६	०	०	२२	१८	२३	२०	८	२४	७	१२	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३४	३	३६	१६	४८	३४	३०	२१	१५
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	०	३०	३०	३०	३०	०	०	०
भौममध्ये सहस्तन्मध्ये विदशा चक्रं.									भौममध्ये पुरुस्तन्मध्ये वि० चक्रं.								
रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	२	१	१	१	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
२६	२०	२८	२३	२२	३	१८	१	२२	१४	२३	१७	१८	२६	१६	२८	१९	२०
४२	२४	५१	३३	३	०	५४	२०	३	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	२६	२४
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
भौममध्ये शनिस्तन्मध्ये विदशा चक्रं.									भौममध्ये बुधस्तन्मध्ये वि० चक्रं.								
श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं	रा.	वृ.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं	रा.	वृ.	श.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	०	२	०	१	०	१	१	१	०	१	०	०	०	१	१	१
३	२६	२९	४	१८	३	२३	२८	२३	२०	२०	२८	१७	२८	२०	२३	१७	२६
०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	३६	४८	३०	५१	४५	४८	३३	२६	३१
४	३०	३०	०	०	३०	०	०	०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०
भौममध्ये केतुस्तन्मध्ये वि० च०									भौममध्ये मृगुस्तन्मध्ये वि० च०								
के.	शु.	सू.	चं.	मं	रा.	वृ.	श.	बु.	शु.	सू.	चं.	मं	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
८	०४	७	१२	८	२२	१८	२३	२०	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२८	२४
३०	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	४८	०	०	०	३०	०	३०	०	३०	३०
३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	०	०	०	०	०	०	०	३०	३०
भौममध्ये रवस्तन्मध्ये वि० च०									भौममध्ये चन्द्रस्तन्मध्ये वि० च०								
सू.	चं.	मं	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	मं	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६	१०	७	८	१६	१८	१७	७	२१	१७	१२	१	२८	२	२५	१२	५	१०
१८	३०	५१	०	५७	५१	२१	०	०	३०	१५	३०	०	१५	५५	१५	०	३०

राहुमध्ये अंतर्दशा चक्रम

रा	व	श	बु	के	शु	सू	चं	मं
२	२	२	२	१	३	०	१	१
८	४	१०	६	०	१०	६	०	०
१२	२४	६	१०	१०	०	२४	०	१०
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुमध्ये राहुस्तन्मध्ये विदशा च

रा	व	श	बु	के	शु	सू	चं	मं
०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	४	५	४	१	५	१	२	१
२५	८	३	१०	२६	१२	१८	२१	२६
४८	३६	५४	४२	४२	०	३६	०	४२
०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुमध्ये गुरुस्तन्मध्ये विदशा च

व	श	बु	के	शु	सू	चं	मं
०	०	०	०	०	०	०	०
३	४	४	१	४	१	२	१
२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०
१२	४८	२४	२४	१२	०	२४	३६
०	०	०	०	०	०	०	०

राहुमध्ये शनिस्तन्मध्ये विदशा च

रा	व	श	बु	के	शु	सू	चं	मं
०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	४	१	५	१	२	१	५	४
१२	२५	२६	२१	२१	२५	२८	३	१६
२०	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८
०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुमध्ये बुधस्तन्मध्ये विदशा च

बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	व	श
०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	१	५	१	२	१	४	४	४
१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२४
२०	३३	०	५४	३०	३३	४२	२४	५४
०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुमध्ये केतुस्तन्मध्ये विदशा च

रा	व	श	बु	के	शु	सू	चं	मं
०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१
१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२४
२०	३३	०	५४	३०	३३	४२	२४	५४
०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुमध्ये मृगुस्तन्मध्ये विदशा च

बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	व	श
०	०	०	०	०	०	०	०	०
६	१	५	१	२	१	६	५	५
१४	२	१२	२४	२१	३	१६	२०	१८
१२	५४	३६	१२	१८	५४	५४	५४	५४
०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुमध्ये रविस्तन्मध्ये विदशा च

रा	व	श	बु	के	शु	सू	चं	मं
०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१
१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२४
२०	३३	०	५४	३०	३३	४२	२४	५४
०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुमध्ये चन्द्रस्तन्मध्ये विदशा च

चं	मं	रा	व	श	बु	के	शु	सू
०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	२	२	२	१	३	०	०
१५	१	२१	१२	१५	१६	१	२०	१२
०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुमध्ये ज्येष्ठास्तन्मध्ये विदशा च

रा	व	श	बु	के	शु	सू	चं
०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१
१५	१	२१	१२	१५	१६	१	२०
०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुमध्ये श्रंतर्दशा चक्रमू.									गुरुमध्ये गुरुस्तनाध्ये वि० चक्र								
शु.	रा.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	शु.	रा.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
२ १ १८ ० ०	२ ६ १२ ० ०	२ ३ ६ ० ०	० ११ ६ ० ०	२ ८ १८ ० ०	० ५ १८ ० ०	१ ४ ६ ० ०	० ११ ६ ० ०	२ ४ २४ ० ०	० ३ १२ २४ ०	० ४ १ ३६ ०	० ३ १८ ४८ ०	० १ १४ ४८ ०	० ४ ८ ० २४	० १ ८ ० ०	० २ ४ ० ०	० १ १४ ४० ०	० ३ २५ १२ ०

गुरुमध्ये शानिस्तमध्ये विद-च.								गुरुमध्ये बुधस्तन्मध्ये विद-च.								
श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	बु	श
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	०	१	५	१	२	१	४	३	१	४	१	२	१	४	३	४
२४	८	२३	२	१५	१३	२३	१६	२५	१७	१६	५०	०	११	२	१८	८
४	१२	३०	४	२६	०	१२	४०	२६	२६	०	४८	०	२६	२४	४०	१२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

[illegible]

गुरुमध्ये रविस्तन्मध्ये वि० चक्र									गुरुमध्ये चन्द्रस्तन्मध्ये वि० चक्र								
सू.	च.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१४	२४	१६	१३	१	१५	१०	१६	१८	५०	२८	१२	४	१६	८	१८	२०	२४
१४	०	४८	१२	२०	३१	४८	४८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

[illegible]

शनिमध्ये अंतर्देशाचक्रम्.									शनिमध्ये शनिस्तम्भे विदशाच.								
श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.	मं.	रा.	वृ.
३	२	१	३	०	१	१	२	२	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	१	२	११	७	१	१०	६	५	५	२	६	१	३	२	५	४
२	८	८	०	३२	०	८	६	१२	२९	३	३	०	२४	०	३	३२	२४
०	०	०	०	०	०	०	०	०	२८	२५	१०	३०	८	१५	१०	२७	२४
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

शनिमध्ये बुधस्तनाध्ये वि०च०									शनिमध्ये केतुस्तनाध्ये वि०च०								
बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	ह०	श०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	ह०	श०	बु०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	१	५	१	२	१	४	४	५	०	२	०	१	०	१	१	२	१
१७	२८	११	१८	२०	२६	२५	८	३	२३	६	८	३	२३	२०	२३	३	२६
३६	३१	३०	२७	४५	३१	२१	१२	२५	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	१०	३१
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

शनिमध्ये ष्टगुस्तमध्ये वि० च०									शनिमध्ये रविस्त० विदशा चक्र०								
शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६	१	३	२	५	५	६	५	२	०	०	०	१	१	१	१	०	१
१०	२७	५	६	२१	२	०	११	६	१७	२८	१८	२१	१५	२४	१८	१८	२७
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	२०	३०	५७	१८	३६	८	२७	५७	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शनिमध्ये चन्द्रस्तन्मध्ये वि० च०								शनिमध्ये ग्रीमस्तन्मध्ये वि० च०										
चं	मं	रा	सु	श	बु	के	शु	र	चं	मं	रा	सु	श	बु	के	शु	र	चं
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	२	२	३	३	१	३	०	०	१	१	२	१	०	२	०	१	३
३७	३	२७	१६	०	२०	३	५	२८	२३	२८	२३	३	२६	२३	६	१८	३	३
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	१६	५१	१२	१०	३१	१६	३०	५७	१५	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	०

शनिमध्यराहुस्तं विदशाचक्र.								शनिमध्यगुरुस्तन्मध्य वि० चक्र.							
रा.	बु.	श.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	बु.	श.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	४	५	४	१	५	१	२	४	४	४	१	५	१	२	१
३	१६	१२	२५	२९	२१	२१	२५	१	२४	९	२३	२	१४	१६	३६
५४	४८	२७	५१	४०	०	३०	५१	२५	२४	३२	१२	३६	०	१२	४८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

केतुमध्येतर्दशा चक्रम्.

केतुमध्येकेतुस्तन्मध्ये वि० च०

के	शु	र	चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श	बु
०	१	०	०	०	१	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	२	४	७	४	०	११	१	११	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२७	०	६	०	२७	१०	६	८	२७	८	२४	७	१२	८	२२	१८	२३	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३४	३०	२१	१५	२४	३	३६	१६	४८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

केतुमध्येभृगुस्तन्मध्ये वि० च०

केतुमध्येरविस्तन्मध्ये वि० च०

शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	सू	चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	०	१	०	२	१	२	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१०	२१	५	२४	३	१६	६	२८	२४	६	१०	७	१८	१६	१८	१७	७	२१
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	१८	२०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

केतुमध्येचन्द्रस्तन्मध्ये वि० च०

केतुमध्येभोगस्तन्मध्ये वि० च०

चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	र	चं
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	१	०	१	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१७	१२	१	२८	३	१८	१२	५	१०	८	२३	१८	२३	२०	८	२४	७	१२
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	३४	३	३६	१६	४९	२४	३०	२१	१५
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	०	३०	३०	३०	३०	०	०	०

केतुमध्येराहुस्तन्मध्ये वि० च०

केतुमध्येगुरुस्तन्मध्ये वि० च०

रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	०	२	०	१	०	१	१	१	०	१	०	०	०	०	१
२६	२०	२८	२३	२२	३	१८	१	२२	१४	२३	१७	१८	२६	१६	२८	१८	२०	२०
४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

केतुमध्येशनिस्तन्मध्ये वि० च०

केतुमध्येबुधस्तन्मध्ये वि० च०

श	बु	के	शु	र	चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	१	०	२	०	१	०	१	१	१	०	१	०	०	०	१	१	१	१
३	२६	२३	६	१८	३	२३	२८	२३	२०	२०	२८	१७	२८	२०	२३	१७	२६	२६
१०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	३४	१८	३०	५१	४५	४८	३३	२६	३१	३०
३०	३०	३०	०	०	३०	०	०	०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	०	३०

भृगुमध्ये अंतर्दशा चक्रम्.

शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
३	१	२	१	३	२	३	२	१
४	०	८	२	०	८	२	१०	२
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

भृगुमध्ये भृगुस्तन्मध्ये वि० च०

शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
६	२	३	२	६	५	६	५	२
२०	०	१०	१०	०	१०	१०	२०	१०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रमध्ये रविस्तन्मध्ये वि० च०

र.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८	१	०	१	१	१	१	०	२
०	०	११	२४	१८	२७	२१	२१	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रमध्ये चन्द्रस्तन्मध्ये विदुशा

चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	३	२	३	२	१	२	१
२०	५	०	२०	५	२५	५	१०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रमध्ये जौमस्तन्मध्ये वि० च०

मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
२४	२	१	२	१	२	१	१	२
३०	३	२६	६	२८	२४	१०	२१	५
०	०	०	३०	३०	०	०	०	०

शुक्रमध्ये राहुस्तन्मध्ये वि० च०

रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	६	५	५	२	६	१	३	२
१२	२४	२१	३	३	०	२४	०	३
०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रमध्ये गुरुस्तन्मध्ये वि० च०

वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
६	५	४	१	५	१	२	१	४
८	२	१६	२६	१०	१८	२०	२६	२४
०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रमध्ये शनिस्तन्मध्ये वि० च० चक्र

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
६	५	२	६	१	२	२	५	५
१०	११	६	१०	२७	५	६	२१	२
३०	३०	३०	०	०	२०	०	०	०

शुक्रमध्ये पुष्यस्तन्मध्ये वि० च०

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	१	५	१	२	१	५	६	५
२४	२८	२०	०१	२५	२८	३	१६	११
३०	३०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रमध्ये केतुस्तन्मध्ये वि० च०

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	०	०	१	०	२	१	२	१
२४	२०	२१	५	२४	३	२६	६	२८
३०	३०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

इति अंतरप्रत्यंतर.

योगिनी दशाक्रम.

जन्मनक्षत्र जो होय उसमें ३ अक्षर युक्त करके ८ से भाग देना शे-
ष अंक १।२।३।४।५।६।७।८ तक रहेगा तब क्रमसे मंगला-पिंगला-धा-
न्या-भ्रामरी-भद्रिका-उल्का-सिद्धा-संकटा चह योगिनी के नाम जानना.
और उनकी क्रमसे १।२।३।४।५।६।७।८ यह वर्ष संख्या जानना. और
जन्मनक्षत्र के भुक्त योग घटी प्रमाण जन्मकालिक दशावर्ष संख्या में से
अष्टोत्तरी में लिखे प्रमाण भुक्त भोग्य दशा बनावना.

अंतर्दशाक्रम.

दशावर्ष संख्या के दिन करके उसको ३६ से भाग के भागाकार आवे सो
दिवस सर्व दशामे मंगला योगिनी की अंतर्दशा होती है. अनंतर वही भा-
गाकार क्रमसे १।२।३।४।५।६।७।८ इस्से गुणेतो पिंगलादि योगिनी इनके अं-
तर्दशा दिवस होते हैं. इहां दशाधिपति और दशा अंतर्दशा के नाम उनके व-
र्षादि संख्या इस्के जुड़े जुड़े कोष्ठक आगे लिखे हैं. यह योगिनी दशाक्रम
३६ वर्ष का सो भोगने के अनंतर पुनः चली लेना.

मंगला मध्ये अंतरम्.								पिंगला मध्ये अंतर्दशाचक्रम.							
मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.
१००	२००	१००	१००	१००	२००	१००	२००	१००	२००	१००	१००	१००	२००	१००	२००
१००	२००	१००	१००	१००	२००	१००	२००	१००	२००	१००	१००	१००	२००	१००	२००
धान्या मध्ये अंतर्दशाचक्रम.								भ्रामरी दशामध्ये अंतर्दशाच.							
धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.
१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
भद्रिका मध्ये अंतर्दशाचक्रम.								उल्का मध्ये अंतर्दशाचक्रम.							
भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.
१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
सिद्धा दशामध्ये अंतर्दशाचक्रम.								संकटा मध्ये अंतर्दशाचक्रम.							
सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.
१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००

जन्म पत्रिका लिखनेका क्रम.

प्रथम मंगलश्लोक आशिर्वाद श्लोक रक्षार्थ श्रीरामचन्द्र जन्म कुंडली तथा कृष्णचन्द्र जन्म कुंडली अनंतर संवत् शक अथन क्रतु मास पक्ष तिथि वार नक्षत्र योगकरण दिनमान रात्रिमान इष्टकाल घटीफल इस प्रकारसे जन्म समय लिखना. अनंतर मध्यमादि स्पष्टग्रह और लगे लिखना. अनंतर जन्म कुंडली ग्रहन्यास पूर्वक लिखके संवत्सरादि फल लिखना. अनंतर चन्द्र राशि कुंडली लिखके फल लिखना. नन्वादि द्वादशभावसंधि सहित लिखके ग्रहोका क्षयचय फल लिखना. भाव कुंडली लिखके भावगतग्रहफल और भावस्वामीगतफल और भाव लग्नफल और लग्नस्वामी फल लिखना. सप्तवर्गचक्र फल सहित लिखना. ग्रहोंकी परस्परदृष्टी और भावोंपर ग्रह दृष्टी लिखना. अनंतर षड्गुणकुंडली ग्रहसहित लिखना. नैसर्गिक तात्कालिक पंचधामैत्री लिखना और ग्रह भाव सप्तवर्गचक्र और ग्रहोंके स्थानदिक काल निसर्गचिंता दृग्बल और भावबल भी लिखना. तन्वादि द्वादशभाव विचार फल और ग्रहदृष्टी फल और रिष्टारिष्ट भग राजयोग राजयोग जंगादि सुन फा अनफा दुरधरा के मन्त्र मनाभसयोगादि संभवयोग फल और सर्वतोभद्र चक्र सूच्य कालानल चन्द्रकालानल अष्टवर्गादिचक्र. और यमदंष्ट्राचक्र. और फल और राशि फल और दीप्तादि और बालादि जायतादि ग्रहोंकी अवस्था फल सहित और इष्टक लादि और इष्टकष्ट दृष्टी और इष्टकष्ट बल और दृष्टि दृष्टकष्ट और आयुदीय दशाविभाग फल सहित और दशमि अंतर्दशा और विदशा और उपदशा फल सहित लिखना. अनंतर विंशोत्तरीदशा फल सहित लिखके अंतर प्रत्यंतर फल सहित लिखना और योगिनीदशा अंतर्दशा लिखके फल लिखना अष्टोत्तरी दशा लिखना.

समाप्तोयं ग्रंथः

श्लोकः } जगत्पूर्वेण ईशेन नार नील निवासिना ॥
नृगिराकेशवीरुत्वा केशवायार्पिता मुदा ॥१॥

कविवंश प्रशंसा स्रग्धरा छन्दः.

आदौ ब्रह्माततो दिग्भिर्जनिकर भवा ब्राह्मणा गौडवर्षा
स्तब्धारद्वाजगोत्रे प्रथित गुणगणः सुन्दरो लाल युक्तः ॥

आसीत्तस्यापि पुत्री प्रकट समुद्रया वासतुलब्धकीर्ती
यच्छोदीत्यादि युक्तं शुभगुणानि च यं भू रिलोका गुणानि ॥१॥

अर्थभाषा:- अव कविके वंशकी प्रशंसा कही जाती है स्रग्धरा छंदसे

पहिले ब्रह्माजी भये तिनसे दशप्रकारके ब्राह्मण भये तिनमें गौडहिज श्रेष्ठ भये तिनके शुभभारद्वाज गोत्रमे विख्यात गुणगुणवान् सुंदरलालजी भये और तिनके पुत्रजो प्रकटित भाग्योदयवाले और लब्ध कीर्तिवान् जिनके सुशीलपन आदिसे युक्त शुभगुणोंका बहुतसे लोग गान कर रहे हैं । १

श्लोक } शिवदयालु युक् शिवः सहायवान् सुताबुभौ तदीय-
पुत्रतागतौ सुयुग्मकैतुपंडितौ ॥ महद्गरीयगौरवौ ॥
कालवाचकाबुभौ समापनुर्नरेन्द्रसिंहराज्यतोऽधिके यशः २

अर्थभाषा:- ऐसे शिवदयालुजी शिव सहायजी दोनोपुत्र तिनके पुत्र युग्मक जोडीवाले पंडित प्रसिद्ध भये- जो महाभारी गौरववान् और त्रिकालवक्ता ज्योतिर्वित् जिन्होंने पद्मालयाधीश श्रीमन्नेन्द्र सिंह महाराजके राज्यसे बहुत यश कीर्ति तथा महान् आजीवनोदय पाया । २

श्लोक } दुर्गाप्रसादश्च तथा भवानीसहाय एतौ महदासकामौ ॥
जनाभिरामौ नृपतिप्रधानौ ज्योतिर्विदा वासतुरासमानौ ॥ ३ ॥

अर्थभाषा:- सो दुर्गा प्रसाद और भवानीसहाय येदोनी धृतिपूर्णकाम भये जो जनोको अभिराम आनंद देनेवाले जो राज्यमें प्रधान मुख्य ज्योतिषी प्राप्तमान सन्मान अर्थात् भारी प्रतिष्ठित भये-

श्लोक } अथो शिवसहायस्य सुतवितौ महामनी ॥
लक्ष्मीनारायणश्चाथ ज्योतिर्विज्जगदीशकः ॥ ४ ॥

अर्थभाषा:- फिर तिन शिव सहाजीके महान् बुद्धिवान् लक्ष्मीनारायण और ज्योतिर्वित् जगदीश शर्मा पुत्र हैं-

श्लोक } ज्योतिर्विज्जगदीशो सौ जगदीशप्रतोषदम् ॥
केशवाथार्पयत्कृत्वा केशवीजातकं स्फुटम् ॥ ५ ॥

अर्थभाषा:- ज्योतिर्वित् जगदीश प्रसाद शर्मानें जगदीश नारायणको तुष्टिप्रसन्नता देनेवाले इस केशवीजातकको स्फुट अर्थात् प्रकट मनुष्य भाषासे विभूषित करके केशव भगवान्के अर्थ समर्पण किया- अथवा केशव देवज्ञवर्यकी पुजामें अर्पण किया- यह भी श्लेष है-

श्लोक } त्रिपंचांकेन्दुवर्षसहैकमीयेन भास्विते ॥
नृगिरोदाहृतिः पूर्णा पूर्णिमायां स्वेदिने ॥ ६ ॥

अर्थभाषा:- संवत् १८५३ आवण शुक्ल पूर्णिमा रविवारको शुभभारतृत्तु मि मण्डलांतर्गत प्रसिद्ध इन्द्र प्रस्थ नगरसे पश्चिम कोणस्थ आर्चिकडोलतलवर्तिनन्दग्रामनिवासी भारद्वाज गोत्र उपाध्याय कुलोद्भव ज्योतिर्वित् जगदीश प्रसादका बनाया यह नव्य उदाहरण सोमनुष्य भाषासे विभूषित समाप्त भया- सो सबको सदा सदा सुखवादि देवो-

श्लोक } मंगलं लेखकानां च पाठकानां च मंगलं ॥ मंगलं सर्वलो-
कानां भूयो भूयोस्तु मंगलं ॥ ७ ॥ मंगलं भगवान् विष्णुमंगलं-
गरुडध्वजं ॥ मंगलं पुण्डरीकाक्षो मंगलायतना हरि ॥ ८ ॥

अथ सूर्यसे लग्नसे इष्टकाल करने की रीति

श्लोक-

अर्क भोग्यस्तनो भुक्तकाल न्वितो युक्त
मध्योदयोभीष्ट कालो भवेत् ॥ १ ॥

अर्थ भाषा-

स्पष्ट सूर्यमें अयनांशा युक्त करके उसको राशि विना ३० अंशमें कम करके जो राशी ऊपर होय उसके प्रमाण स्वदेशीय लग्न मानसे गुण के भोग्य पल करना और लग्नमें अयनांशा युक्त करके उसके ऊपर जो राशी होय उसके प्रमाणसे भुक्त पल करके फिर लग्न की राशी से सायन सूर्य की राशी तक लग्न मान स्वदेशीय का ऐक्य करके उसमें भुक्त और भोग्य पल युक्त करके ६० से भाग देना तो इष्ट काल घटी पल स्पष्ट होता है.

टिप्पणी

जो सायन सूर्य की राशी से सायन लग्न की राशी तक स्वदेशीय लग्न का ऐक्य करे जब सूर्या लग्न लेना और सायन लग्न की राशी से और सायन सूर्य की राशी तक लग्न का ऐक्य करे जब उलटा लग्न लेना.

उदाहरण-

स्पष्ट सूर्य ०१३१३०१४२ इस्में अयनांशा २१४४।३ युक्त करके १।५।५४।४५ इस्को ३० अंशमें कम करके १।३४।५।१५ इस्से ऊपरके कहे प्रमाण भोग्य साधन किया तो १८५ अब लग्न ६।१।४२।२६ इस्में अयनांशा २१।४४।३ युक्त करके ७।२।२६।२८ इस्से भुक्त पल साधन किया तो २८ अब सायन सूर्य वृष राशी का है इस वास्ते मिथुन काल लग्न ३०० कर्क का ३४६ सिंह का ३५५ कन्या का ३४८ तुल का ३४८ इन का ऐक्य १६८७ इस्में भुक्त भोग्य पल युक्त करी तो इस्के ६० का भाग दिया तो लब्ध ३२ शेष ० यह पल पूर्व तुल्य इष्ट भया इसी प्रमाणसे सूर्य लग्नसे इष्ट काल करना.

जो सायन सूर्य और सायन लग्न एक राशीमें होय तो इन का अंतर करके उसको सायन सूर्य के उदयसे गुण के ३० से भाग देना जो भागाकार आवे तो पलात्मक अभीष्ट काल होता है जो सायन सूर्य के अपेक्षा सायन लग्न कमती होय तो पूर्व प्रमाण साधन किया जो १० से कम करना तो इष्ट काल होता है.

अथ सर्वतोभद्रचक्रं.

अथातः संप्रवक्ष्यामि चक्रं त्रैलोक्यदीपकम् विख्यातं सर्वतोभद्रसद्यः
प्रत्ययकारकम् ॥ १ ॥ याम्योत्तराः प्रागपराश्च कोष्ठानवात्रचक्रे सुधिया विधे-
याः ॥ स्वरक्षवर्णादिकमत्र लेख्यं प्रसिद्धं भावाच्चमयानिरुक्तम् ॥ २ ॥ अत्र मो-
नवेन्द्रेऽक्षरजे च हानिर्व्याधिः त्वरे भीमश्च तिथौ निरुक्ता ॥ राशौ च वेधे सति विघ्नमे-
व जंतुः कथं जीवति पंचविदे ॥ ३ ॥ भरण्यकारो रघुभंचनं दं भद्रांतकारं श्रवणं
विशाखाम् तुलांचविदे दनलक्षसंस्थो ग्रहोक्तचक्रे गदितं स्वरज्ञः ॥ ४ ॥ वका-
रभौकारमुकारदास्त्रे स्वातीरकारं मिथुनचक्रन्याम् ॥ तथा भिजित्संज्ञकभं-
चविदे ब्रह्मक्षसंस्थो हिनमश्च रेन्द्रे ॥ ५ ॥ कर्कककारंच हरिपकारंचित्रां
च पौष्णांच तथा लकारं अकारकं वैश्वभमत्रविदे दलनभा मंडलगो मृगस्थः
॥ ६ ॥ एवं वेधः सर्वतोभद्रचक्रे सर्वक्षेभ्यः चिन्तनीयः सुधीभिः ॥ दद्या-
द्देधः सत्फलसौम्यजातो त्यंतं कष्टं दुष्टवेधः करोति ॥ ७ ॥ यास्मि दृक्षे सं-
स्थितो वेधकर्ता पापः खेदः सोऽत्यर्थाति यस्मिन् ॥ काले तस्मिन् मंगल-
पीडितानां प्रोक्तं सद्भिर्नान्यथा स्यात्कदाचित् ॥ ८ ॥

सर्वतोभद्रचक्रम्.

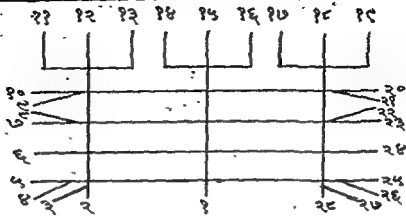
अ.	क.	रा.	स.	आ.	उ.	पु.	आ.	आ.
म.	उ.	अ.	व.	क.	ह.	ड.	उ.	म.
अ.	ल.	लृ.	२	३	४	लृ.	म.	पु.
र.	च.	१	आ.	ने.	ओ.	५	ल.	उ.
उ.	द.	१२	रि.	पु.	म.	६	प.	ह.
पु.	स.	११	अ.	ज.	अ.	७	र.	चि.
श.	ग.	९	१०	८	८	ए.	त.	स्वा.
ध.	न.	ख.	ज.	म.	य.	न.	क.	वि.
इ.	अ.	अ.	उ.	पु.	मु.	ज्य.	अ.	इ.

अथ सूर्यकालानलचक्रं.

सूर्यकालानलचक्रं स्वरशास्त्रोदितं हियत् तदहं विशदं वक्ष्ये चमत्कृतिकरं परंम्
॥ १ ॥ त्रिशूलकायाः मरलाश्च तिस्रः किलोर्ध्वं रेखाः परिकल्पनीयाः ॥ रिरवात्रय-
मध्यगतं च तत्र हेदे च कोणापरिगे विधेये ॥ २ ॥ त्रिशूलकोणांतरगान्यरेखा तद-
नुयोः शृंगयुता विधेयम् ॥ मध्ये त्रिशूलस्य च दंडमूलात् सत्येन भान्यर्कभतोऽ-
भिजिष्णु ॥ ३ ॥ स्वनामभयत्रागतं च तत्र प्रकल्पनीयं सत् सत्फलं हितं लस्य क्र-
तुपक्रमेण चिन्तावधश्च प्रतिवधानम् ॥ ४ ॥ शृंगद्वयं च भवेदभिगच्छ-
लेषु मूलं परिकल्पनीयम् ॥ शेषे शुधिषोपुजयश्चलाभोऽभीष्टार्थसिद्धिर्ह-
पानयोगाम् ॥ ५ ॥ असूर्यकालानलचक्रमे तद्देववादे चरणे प्रयो-
गः ॥ अपत्यपूर्वननुचिन्तनीयं पुरातनानां च न प्रमाणम् ॥ ६ ॥

इति सूर्यकालानलचक्रम्.

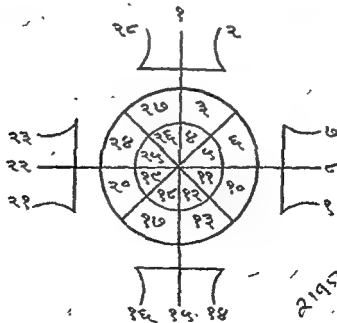
अथसूर्यकालानलचक्र.



अथचन्द्रकालानलचक्रं.

कर्कोटकेनप्रविधायवृत्तं तस्मिंश्चपूर्वापरयाम्यसौम्यैः ॥ वृत्ताद्द्विहिसं
चलितेविधेयेस्वान्निशुलान्चतदग्रकेषु ॥ १ ॥ कोणश्चरेखादितियेनसाध्या
पूर्वनिशुलैकिलमध्यसंस्थम् ॥ चान्द्रलिखेन्दुतदनुक्रमेण सव्येनधिष्णा
निबहिस्तदन्ते ॥ २ ॥ कालानलचक्रमिदं हि चान्द्रणप्रयाणादियुजन्म
भवेत् त्रिशूलसंस्थं निधनायनूनं अंतर्वहिः स्थंत्वशुभप्रदं हि ॥ ३ ॥

अथचन्द्रकालानलचक्रम्.



२१९७३

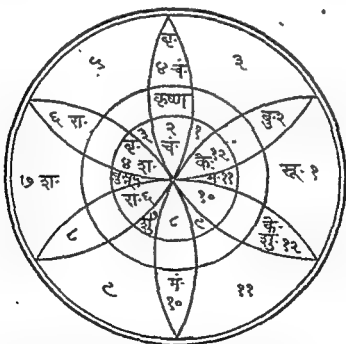
हिमांशोर्भेदेऽसुरगुरुरिषोराहुरनुजेऽद्विगो-
मन्दः पुण्येशिखियुगुशनास्तेऽवनि सुतः ॥ रवौ स्व-
स्थे सौम्येशिवभवनगेमासिमधुके सिते मध्याह्ने
भूद्रघुवरजनिर्विम्बसुरवदा ॥ १ ॥

श्लोक-

भाद्रे मासि सिते तरे वसुतिथौ ब्राह्मे चूपेङ्गे विधौ-
लग्नस्थे सशनौ गुरो सहजगेम्बुस्थे रवौ सेन्दुजे ॥
राहौ पंचमगे भृगोरियुगते भौमे नृपस्थे ध्वजे ला-
भे रात्रिदले बभूव कमलाधी शावतारो बुधे ॥ २ ॥

इति कृष्णचन्द्रजन्मलग्नम्.

॥ उभयोर्जन्मलग्नम् ॥



॥ इति उभयोर्जन्म लग्नम् ॥

योगिनी दशाक्रम.

जन्मनक्षत्र जो होय उसमें ३ अक्षर युक्त करके ८ से भाग देना शे-
ष अंक १।२।३।४।५।६।७।८ तक रहेगा तब क्रमसे मंगला-पिंगला-धा-
न्या-भ्रामरी-भद्रिका-उल्का-सिद्धा-संकटा चह योगिनी के नाम जानना.
और उनकी क्रमसे १।२।३।४।५।६।७।८ यह वर्ष संख्या जानना. और
जन्मनक्षत्र के भुक्त योग घटी प्रमाण जन्मकालिक दशावर्ष संख्या में से
अष्टोत्तरी में लिखे प्रमाण भुक्त भोग्य दशा बनावना.

अंतर्दशाक्रम.

दशावर्ष संख्या के दिन करके उसको ३६ से भाग के भागाकार आवे सो
दिवस सर्व दशामे मंगला योगिनी की अंतर्दशा होती है. अनंतर वही भा-
गाकार क्रमसे १।२।३।४।५।६।७।८ इस्से गुणेतो पिंगलादि योगिनी इनके अं-
तर्दशा दिवस होते हैं. इहां दशाधिपति और दशा अंतर्दशा के नाम उनके व-
र्षादि संख्या इस्के जुड़े जुड़े कोष्ठक आगे लिखे हैं. यह योगिनी दशाक्रम
३६ वर्ष का सो भोगने के अनंतर पुनः चली लेना.

मंगला मध्ये अंतरम्.								पिंगलामध्ये अंतर्दशाचक्रम.							
मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.
१००	२००	१००	१००	१००	२००	१००	२००	१००	२००	१००	१००	१००	२००	१००	२००
१००	२००	१००	१००	१००	२००	१००	२००	१००	२००	१००	१००	१००	२००	१००	२००
धान्यामध्ये अंतर्दशाचक्रम.								भ्रामरी दशामध्ये अंतर्दशाच.							
धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.
१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
भद्रिकामध्ये अंतर्दशाचक्रम.								उल्कामध्ये अंतर्दशाचक्रम.							
भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.
१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
सिद्धादशामध्ये अंतर्दशाचक्रम.								संकटामध्ये अंतर्दशाचक्रम.							
सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.
१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००

जन्म पत्रिका लिखनेका क्रम.

प्रथम मंगलश्लोक आशिर्वाद श्लोक रक्षार्थ श्रीरामचन्द्र जन्म कुंडली तथा कृष्णचन्द्र जन्म कुंडली अनंतर संवत् शक अथन क्रतु मास पक्ष तिथि चार नक्षत्र योगकरण दिनमान रात्रिमान इष्टकाल घटीफल इस प्रकारसे जन्म समय लिखना. अनंतर मध्यमादि स्पष्टग्रह और लंजे लिखना. अनंतर जन्म कुंडली ग्रह न्यास पूर्वक लिखके संवत्सरादि फल लिखना. अनंतर चन्द्र राशिकुंडली लिखके फल लिखना. नन्वादि द्वादशभावसंधि सहित लिखके ग्रहोका क्षयचय फल लिखना. भाव कुंडली लिखके भावगतग्रहफल और भावस्वामीगतफल और भाव लग्नफल और लग्नस्वामी फल लिखना. सप्तवर्गचक्र फल सहित लिखना. ग्रहोंकी परस्परदृष्टी और भावोंपर ग्रह दृष्टी लिखना. अनंतर षड्वर्गकुंडली ग्रहसहित लिखना. नैसर्गिक तात्कालिक पंचधामैत्री लिखना और ग्रह भाव सप्तवर्गचक्र और ग्रहोंके स्थानदिक काल निसर्ग चैष्टा दृग्बल और भावबल भी लिखना. तन्वादि द्वादशभाव विचार फल और ग्रहदृष्टी फल और रिष्टारिष्ट भग्नराजयोग राजयोग जंगादि सुन फा अनफा दुरधरा के मन्त्रमनाभसयोगादि संभवयोग फल और सर्वतोभद्रचक्रसूच्यकालानल चन्द्रकालानल अष्टवर्गादिचक्र और चमदंष्ट्राचक्र और फल और राशिफल और दीप्तादि और बालादि जायतादि ग्रहोंकी अवस्थाफल सहित और इष्टकलादि और इष्टकष्ट दृष्टी और इष्टकष्ट बल और दृष्टदृष्टकष्ट और आयुदीय दशाविभाग फल सहित और दशमि अंतर्दशा और विदशा और उपदशा फल सहित लिखना. अनंतर विंशोत्तरीदशा फल सहित लिखके अंतर प्रत्यंतर फल सहित लिखना और योगिनीदशा अंतर्दशा लिखके फल लिखना अष्टोत्तरी दशा लिखना.

समाप्तोयं ग्रन्थः

श्लोकः } जगत्पूर्वेण ईशेन नार नील निवासिना ॥
नृगिराके शर्वीकृत्वा केशवायार्पिता मुदा ॥१॥

कविवंश प्रशंसा स्रग्धरा छन्दः.

आदौ ब्रह्मान्तो दिग्धिजनिकर भवा ब्राह्मणा गौहवर्था
स्तन्दारद्वाजगोत्रे प्रथित गुणगणः सुन्दरो लाल युक्तः ॥

आसीत्तस्यापि पुत्री प्रकट समुदया वासनुर्लब्धकीर्ती
पञ्चोशीत्यादि युक्तं शुभगुणानि च यं भू रिलोका गुणान्ति ॥१॥

अर्थभाषा:- (अब कविके वंशकी प्रशंसा कही जाती है स्रग्धरा छंदसे)

पहिले ब्रह्माजी भये तिनसे दशप्रकारके ब्राह्मण भये तिनमें गौडहिज श्रेष्ठ भये तिनके शुभभारद्वाज गोत्रमे विख्यात गुणगुणवान् सुंदरलालजी भये और तिनके पुत्रजो प्रकटित भाग्योदयवाले और लब्ध कीर्तिवान् जिनके सुशीलपन आदिसे युक्त शुभगुणोंका बहुतसे लोग गान कर रहे हैं । १

श्लोक } शिवदयालु युक् शिवः सहायवान् सुताबुभौ तदीय-
पुत्रतागतौ सुयुग्मकैतुपंडितौ ॥ महद्गरीयगौरवौ ॥
कालवाचकाबुभौ समापनुर्नरेन्द्रसिंहराज्यतोऽधिके यशः २

अर्थभाषा:- ऐसे शिवदयालुजी शिव सहायजी दोनोपुत्र तिनके पुत्र युग्मक जोड़ीवाले पंडित प्रसिद्ध भये- जो महाभारी गौरववान् और त्रिकालवक्ता ज्योतिर्वित् जिन्होंने पद्मालयाधीश श्रीमन्नेन्द्र सिंह महाराजके राज्यसे बहुत यश कीर्ति तथा महान् आजीवनोदय पाया । २

श्लोक } दुर्गाप्रसादश्च तथा भवानीसहाय एतौ महदासकामौ ॥
जनाभिरामौ नृपतिप्रधानौ ज्योतिर्विदा वासतुरासमानौ ॥ ३ ॥

अर्थभाषा:- सो दुर्गा प्रसाद और भवानीसहाय येदोनी धृतिपूर्णकाम भये जो जनोको अभिराम आनंद देनेवाले जो राज्यमें प्रधान मुख्य ज्योतिषी प्राप्तमान सन्मान अर्थात् भारी प्रतिष्ठित भये-

श्लोक } अथो शिवसहायस्य सुतवितौ महामनी ॥
लक्ष्मीनारायणश्चाथ ज्योतिर्विज्जगदीशकः ॥ ४ ॥

अर्थभाषा:- फिर तिन शिव सहाजीके महान् बुद्धिवान् लक्ष्मीनारायण और ज्योतिर्वित् जगदीश शर्मा पुत्र हैं-

श्लोक } ज्योतिर्विज्जगदीशो सौ जगदीशप्रतोषदम् ॥
केशवाथार्पयत्कृत्वा केशवीजातकं स्फुटम् ॥ ५ ॥

अर्थभाषा:- ज्योतिर्वित् जगदीश प्रसाद शर्मानें जगदीश नारायणको तुष्टिप्रसन्नता देनेवाले इस केशवीजातकको स्फुट अर्थात् प्रकट मनुष्य भाषासे विभूषित करके केशव भगवान्के अर्थ समर्पण किया- अथवा केशव देवज्ञवर्यकी पुजामें अर्पण किया- यह भी श्लेष है-

श्लोक } त्रिपंचांकेन्दुवर्षसहैकमीयेन भास्विते ॥
नृगिरोदाहृतिः पूर्णा पूर्णिमायां स्वेदिने ॥ ६ ॥

अर्थभाषा:- संवत् १८५३ आषण शुक्ल पूर्णिमा रविवारको शुभभारतृत्तु मि मण्डलांतर्गत प्रसिद्ध इन्द्र प्रस्थ नगरसे पश्चिम कोणस्थ आर्चिकडोलतलवर्तिनन्दग्रामनिवासी भारद्वाज गोत्र उपाध्याय कुलोद्भव ज्योतिर्वित् जगदीश प्रसादका बनाया यह नव्य उदाहरण सोमनुष्य भाषासे विभूषित समाप्त भया- सो सबको सदा सदा सुखवादि देवो-

श्लोक } मंगलं लेखकानां च पाठकानां च मंगलं ॥ मंगलं सर्वलो-
कानां भूयो भूयोस्तु मंगलं ॥ ७ ॥ मंगलं भगवान् विष्णुमंगलं-
गरुडध्वजं ॥ मंगलं पुण्डरीकाक्षो मंगलायतना हरि ॥ ८ ॥

अथ सूर्यसे लग्नसे इष्टकाल करने की रीति

श्लोक-

अर्कभोग्यस्तनोर्भुक्तकालन्वितो युक्त
मध्योदयोभीष्टकालो भवेत् ॥ १ ॥

अर्थभाषा-

स्पष्टसूर्यमें अयनांशा युक्त करके उसको राशि विना ३० अंशमें कम करके जो राशी ऊपर होय उसके प्रमाण स्वदेशीय लग्न मानसे गुण के भोग्य पल करना और लग्नमें अयनांशा युक्त करके उसके ऊपर जो राशी होय उसके प्रमाणसे भुक्त पल करके फिर लग्नकी राशीसे सायनसूर्यकी राशी तक लग्नमान स्वदेशीयका ऐक्य करके उसमें भुक्त और भोग्य पल युक्त करके ६० से भाग देना तो इष्टकाल घटी पल स्पष्ट होता है.

टिप्पणी

जो सायन सूर्यकी राशीसे सायन लग्नकी राशी तक स्वदेशीय लग्नका ऐक्य करे जब सूर्या लग्नलेना और सायन लग्नकी राशीसे और सायन सूर्यकी राशी तक लग्नका ऐक्य करे जब उलटा लग्न लेना.

उदाहरण-

स्पष्टसूर्य ०१३१३०१४२ इस्में अयनांशा २२।४४।३ युक्त करके १।५।५४।४५ इस्को ३० अंशमें कम करके १।३४।५।१५ इस्से ऊपरके कहे प्रमाण भोग्य साधन किया तो १८५ अब लग्न ६।१।४२।२६ इस्में अयनांशा २२।४४।३ युक्त करके ७।२।२६।२८ इस्से भुक्त पल साधन किया तो २८ अब सायन सूर्य वृष राशीका है इसवास्ते मिथुनकाल लग्न ३०० कर्कका ३४६ सिंहका ३५५ कन्याका ३४८ तुलका ३४८ इनका ऐक्य १६८७ इस्में भुक्त भोग्य पल युक्त करी तो इस्के ६० का भाग दिया तो लब्ध ३२ शेष ० यह पल पूर्व तुल्य इष्ट भया इसी प्रमाणसे सूर्य लग्नसे इष्टकाल करना.

जो सायन सूर्य और सायन लग्न एक राशीमें होय तो इनका अंतर करके उसको सायन सूर्यके उदयसे गुणके ३० से भाग देना जो भागाकार आवे सो पलात्मक अभीष्ट काल होता है जो सायन सूर्यके अपेक्षा सायन लग्न कमती होय तो पूर्व प्रमाण साधन किया जो १० से २० में से कम करना तो इष्ट काल होता है.

अथ सर्वतोभद्रचक्रं.

अथातः संप्रवक्ष्यामि चक्रं त्रैलोक्यदीपकम् विख्यातं सर्वतोभद्रसद्यः
प्रत्ययकारकम् ॥ १ ॥ याम्योत्तराः प्रागपराश्च कोष्ठानवात्रचक्रे सुधिया विधे-
याः ॥ स्वरक्षवर्णादिकमत्र लेख्यं प्रसिद्धं भावाच्चमयानिरुक्तम् ॥ २ ॥ अत्र मो-
नवेन्देऽक्षरजे च हानिर्व्याधिः त्वरे भीमश्च तिथौ निरुक्ता ॥ राशौ च वेधे सति विघ्नमे-
व जंतुः कथं जीवति पंचविदे ॥ ३ ॥ भरण्यकारो रघुपञ्चनंदो भद्रांतकारं श्रवणं
विशाखाम् तुलां च विदे दनलक्षसंस्थो ग्रहोक्तचक्रे गदितं स्वरज्ञः ॥ ४ ॥ वका-
रभौ कारमुकारदास्त्रे स्वातीरकारं मिथुनचक्रन्याम् ॥ तथा भिजित्संज्ञकभं-
चविदे ब्रह्मक्षसंस्थो हिनमश्च रेन्दः ॥ ५ ॥ कर्कककारं च हरिपकारं चित्रां
च पौष्णां च तथा लकारं अकारकं वैश्वभमत्र विदे दलं नभा मंडलं गोमृगस्थः
॥ ६ ॥ एवं वेधः सर्वतोभद्रचक्रे सर्वक्षेभ्यः चिन्तनीयः सुधीभिः ॥ दद्या-
द्देधः सत्फलसौम्यजातो त्यंतं कष्टं दुष्टवेधः करोति ॥ ७ ॥ यस्मि दृक्षे सं-
स्थितो वेधकर्ता पापः खेटः सोऽत्यर्थाति यस्मिन् ॥ काले तस्मिन् मंगल-
पीडितानां प्रोक्तं सद्भिर्नान्यथा स्यात्कदाचित् ॥ ८ ॥

सर्वतोभद्रचक्रम्.

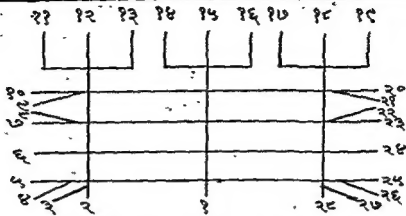
अ.	क.	रा.	सु.	आ.	जु.	पु.	आ.	आ.
म.	उ.	अ.	व.	क.	ह.	ड.	ऊ.	म.
अ.	ल.	लृ.	२	३	४	लृ.	म.	पू.
र.	च.	१	आ.	ने.	ओ.	५	र.	उ.
उ.	द.	१२	रि.	पू.	म.	६	प.	ह.
पू.	स.	११	अ.	ज.	अ.	७	र.	चि.
श.	ग.	९	१०	८	८	ए.	त.	स्वा.
ध.	क्र.	ख.	ज.	म.	य.	न.	क्र.	वि.
इ.	श्र.	अ.	उ.	पू.	मू.	ज्य.	अ.	इ.

अथ सूर्यकालानलचक्रं.

सूर्यकालानलचक्रं स्वरशास्त्रोदितं हियत् तदहं विशदं वक्ष्ये चमत्कृतिकरं परं मू-
॥ १ ॥ त्रिशूलकायाः मरुताश्च तिलः किलोर्ध्वं रेखाः परिकल्पनीयाः ॥ रिरवात्रय-
मध्यगतं च तत्र हेतुकोणापरिगे विधेये ॥ २ ॥ त्रिशूलकोणांतरगान्यरेखा तद-
नुयोः शृंगयुता विधेयम् ॥ मध्यत्रिशूलस्य च दंडमूलात् सत्येन भान्यर्कभतोऽ-
भिजिष्णुः ॥ ३ ॥ स्वनामभयत्रागतं च तत्र प्रकल्पनीयं सत्फलं हितं लस्य क्र-
तितपक्रमेण चिन्तावधश्च प्रतिवधानि ॥ ४ ॥ शृंगहयलृकचमैव दिग्भगश-
लेषु मूलं परिकल्पनीयम् ॥ शेषे शुधिषोपुजयश्च लामोऽभीष्टार्थसिद्धिर्बह-
धानरोगाम् ॥ ५ ॥ असूर्यकालानलचक्रमे तद्गदे च वादे चरणे प्रयागे
॥ अथ तत्पूर्वननुचिन्तनीयं पुरातनानां च न प्रमाणम् ॥ ६ ॥ ॥

इति सूर्यकालानलचक्रम्.

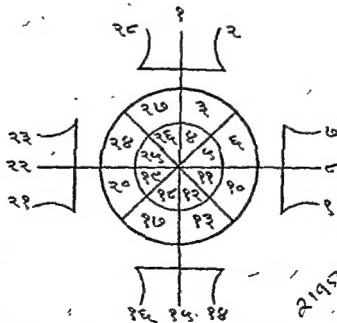
अथसूर्यकालानलचक्र.



अथचन्द्रकालानलचक्रं.

कर्कोटकेनप्रविधायवृत्तं तस्मिंश्चपूर्वापरयाम्यसौम्यैः ॥ वृत्ताद्द्विहिसं
चलितेविधेयेस्वान्निशालाश्चतदप्रकेषु ॥ १ ॥ कोणश्चरेखादितियेनसाध्या
पूर्वनिशालेकिलमध्यसंस्थम् ॥ चान्द्रलिखेन्दुतदनुक्रमेण सव्येनधिष्णा
निबहिस्तदन्ते ॥ २ ॥ कालानलचक्रमिदं हि चान्द्रणप्रयाणादियुजन्म
भवेत् त्रिशूलसंस्थं निधनायनूनं अंतर्विहिः स्थंत्वशुभप्रदं हि ॥ ३ ॥

अथचन्द्रकालानलचक्रम्.



21953

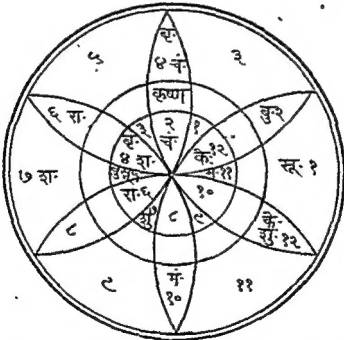
हिमांशोर्भेद्रे स्त्रोऽसुरगुरुरिषीराहुरनुजेऽब्धिगो-
मन्दः पुण्येशिखियुगुशनास्त्रेऽवनि सुतः ॥ रवौ स्व-
स्थे सौम्येशिवभवनगेमासिमधुकेसिते मध्याह्ने
भूद्रघुवरजनिर्विम्बसुरवदा ॥ १ ॥ ॥

श्लोकः-

भाद्रे मासि सिते तरे वसुतिथौ ब्राह्मे चूपे द्वे विधौ-
लग्नस्थे सशनौ गुरौ सहजगे म्बुस्थे रवौ सेन्दुजे ॥
राहौ पंचमगे भृगोरिपुगते भौमे नृपस्थे ध्वजे ला-
भे रात्रिदले बभूव कमलाधी शावतारो बुधे ॥ २ ॥

इति कृष्णचन्द्रजन्मलग्नम्.

॥ उभयोर्जन्मलग्नम् ॥



॥ इति उभयोर्जन्म लग्नम् ॥